मुबल्लिग़ीन व मुबल्लिग़ात के लिए माहे शव्वाल से
मुतअ़ल्लिक़ इस्लाह़ी मौज़ूआ़त का ख़ूबसूरत गुलदस्ता




शव्वालुल मुकर्रम के
17 बयानात



पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दावते इस्लामी)

मुबल्लिग़ीन व मुबल्लिग़ात के लिए माहे शव्वाल से
मुतअ़ल्लिक़ इस्लाह़ी मौज़ूआ़त का ख़ूबसूरत गुलदस्ता

बनाम

शव्वालुल मुकर्रम के 17 बयानात

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दावते इस्लामी)

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

नाम किताब	:	शव्वालुल मुकर्रम के 17 बयानात
सफ़्हात	:	429
पेहली बार	:	शव्वालुल मुकर्रम 1441 हिजरी, मुत़ाबिक़ जून 2020
तादाद	:	वेब ऐडीशन
पेशकश	:	मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शोबा बयानाते दावते इस्लामी)

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (यानी ख़ुद उस इ़ल्म पर अ़मल न किया) ।

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ۱۳۸/۵۱)

इजमाली फ़ेहरिस्त

नम्बर शुमार	बयान का नाम	सफ़हा नम्बर
★	इजमाली फ़ेहरिस्त	4
★	पेहले इसे पढ़ लीजिए !	5
1	आला ह़ज़रत की इ़बादतो रियाज़त	7
2	इत्तिबाए़ शहवात	31
3	तिलावते क़ुरआन की बरकतें	57
4	फ़ैज़ाने सदरुश्शरीआ़	85
5	तिलावत करने वालों के वाक़िआ़त	113
6	इमामे अहले सुन्नत का शौक़े इ़ल्मी	138
7	रियाकारी	160
8	नेकियों के ह़रीस	187
9	सदरुश्शरीआ़ की दीनी ख़िदमात	214
10	अमीरे अहले सुन्नत का इ़श्क़े आला ह़ज़रत	242
11	नमाज़ की अहम्मिय्यत	265
12	**अल्लाह** से मह़ब्बत करने वालों के वाक़िआ़त	291
13	इस्लाम में औ़रत का मक़ाम	317
14	आला ह़ज़रत का आला किरदार	339
15	फ़ैज़ाने इमाम बुख़ारी	362
16	मक्कए मुअ़ज़्ज़मा की शानो अ़ज़मत	385
17	मदीने के फ़ज़ाइल	402
★	शोबा बयानाते दावते इस्लामी का तआ़रुफ़	422

पेहले इसे पढ़ लीजिए !

आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दावते इस्लामी दीन पर अ़मल की दावत देने वाली तह़रीक है, येह मस्जिदें आबाद करने वाली तह़रीक है, येह गुनाहों से तअ़ल्लुक़ तोड़ कर नेकियों से रिश्ता जोड़ने वाली तह़रीक है। दावते इस्लामी के तह़्त ज़ैली ह़ल्क़े के बारह मदनी काम इस सिलसिले में बहुत फ़ाएदामन्द हैं। हज़ारों अफ़राद इन मदनी कामों की बरकत से गुनाहों के रास्ते को छोड़ कर राहे हिदायत पर गामज़न हुवे हैं। इन बारह मदनी कामों में से एक अहम मदनी काम हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत भी है। اَلْحَمْدُلِلّٰه दावते इस्लामी के तह़्त मुल्क व बैरूने मुल्क हज़ारों मक़ामात पर हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त का सिलसिला सालों से जारी व सारी है। इन हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में लाखों इस्लामी बहनें और इस्लामी भाई शिर्कत करते हैं।

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त के लवाज़िमात में से एक अहम जुज़ बयान भी है। येह बयानात दावते इस्लामी के तह़क़ीक़ी व इ़ल्मी इदारे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के तह़्त **"शोबा बयानाते दावते इस्लामी"** तय्यार करता है। अब तक इस शोबे में हफ़्तावार और दीगर इजतिमाआ़त के लिए साढ़े चार सौ (450) से ज़ाइद बयानात तय्यार हो चुके हैं। बयान कैसे मुरत्तब किया जाता है और कितने मराह़िल से गुज़ारा जाता है? हर मर्ह़ले का क्या अन्दाज़ है? नीज़ शोबा बयानाते दावते इस्लामी की अब तक क्या ख़िदमात हैं? येह तमाम तफ़्सील किताब के आख़िर में शोबा बयानाते दावते इस्लामी के तफ़्सीली तआ़रुफ़ में मौजूद है।

शोबा बयानाते दावते इस्लामी के तह़्त तय्यार होने वाले हर इस्लामी महीने के बयानात को जम्अ़ कर के एक किताब की सूरत में दावते इस्लामी की वेबसाइट पर पेश करने का सिलसिला जारी है। इसी सिलसिले में जुमादल ऊला के 22 बयानात, जुमादल उख़रा के 21 बयानात, रजबुल मुरज्जब के 26 बयानात, शाबानुल मुअ़ज़्ज़म के 21 बयानात और रमज़ानुल मुबारक के 26 बयानात के नाम

से पांच ज़ख़ीम (उर्दू) किताबें दावते इस्लामी की वेबसाइट पर अपलोड कर दी गई हैं। तादमे तह़रीर इन किताबों के डाउनलोडर्ज़ की तादाद तक़रीबन 14 हज़ार से ज़ाइद है। अब शव्वालुल मुकर्रम के 21 बयानात (उर्दू) के साथ साथ पेहली बार शव्वालुल मुकर्रम के 17 बयानात (हिन्दी) का मजमूआ़ आप के सामने है।

इस किताब से मुतअ़ल्लिक़ चन्द बातों की वज़ाह़त ज़ेह्न नशीन फ़रमा लें :

❖ इस मजमूए़ में वोह बयानात भी शामिल हैं जो काफ़ी पेहले तय्यार हुवे। इस दौरान दावते इस्लामी की इस्ति़लाह़ात भी तब्दील हुई हैं और बयानात के अन्दाज़ में भी काफ़ी तब्दीली आई है। वोह इस्ति़लाह़ात वग़ैरा इन बयानात में बर क़रार हैं, इस्तिफ़ादा करने वाले क़ारिईन बिल ख़ुसूस मुबल्लिग़ीन इन तब्दीलियों का लिह़ाज़ रखें।

❖ हफ़्तावार इजतिमाअ़ में होने वाले बयान के आख़िर में 6 दुरूदे पाक और 2 दुआ़एं भी शामिल होती हैं, तकरार से बचने के लिए इन तमाम बयानात से दुरूदे पाक और दुआ़एं ख़त्म कर दी गई हैं।

❖ बयान का नाम और जिस तारीख़ को बयान हफ़्तावार इजतिमाअ़ में हुवा था वोह हर बयान के साथ लिख दिया गया है। मज़ीद बरआं कि शुरूअ़ में इजमाली फ़ेहरिस्त भी बढ़ाई गई है ताकि इस्तिफ़ादे में आसानी रहे।

❖ त़वालत व ताख़ीर से बचने के लिए किताब के दीगर लवाज़िमात (तफ़्सीली फ़ेहरिस्त, माख़िज़ व मराजेअ़ वग़ैरा) शामिल नहीं किए गए।

अल्लाह पाक हमारी इस काविश को क़बूल फ़रमाए और दावते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" को मज़ीद बरकतें अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

शोबा बयानाते दावते इस्लामी

अल मदीनतुल इल्मिय्या (दावते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और मुसाफ़ह़ा करें और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। (مسند ابی یعلی، ج۳، ص۹۵، حدیث: ۲۹۵، دار الکتب العلمیہ بیروت)

जो दुरूदो सलाम पढ़ते हैं
उन पे रब का सलाम होता है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج۶ ص۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की नियतें :

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की नियतें :

मैं भी नियत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा । ۞ देख कर बयान करूंगा । ۞ पारह 14 सूरतुन्नहूल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा । ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा । ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा । ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा, बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा । ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शव्वालुल मुकर्रम का बा बरकत महीना जारी व सारी है । येह वोह मुबारक महीना है कि जिस में दुन्याए सुन्निय्यत के अ़ज़ीम पेशवा, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, आ'ला ह़ज़रत, अश्शाह, अल ह़ाफ़िज़, अलह़ाज इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن इस दुन्या में जल्वा गर हुवे ।

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की विलादते बा सआ़दत बरेली शरीफ़ के मह़ल्ला जसौली में 10 शव्वालुल मुकर्रम 1272 हिजरी बरोज़ हफ़्ता ब वक़्ते ज़ोहर ब मुत़ाबिक़ 14 जून 1856 ईसवी को हुई । (ह़याते आ'ला ह़ज़रत जि. 1 स. 58) आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का पैदाइशी नाम "मुह़म्मद" है, आप की वालिदए माजिदा मह़ब्बत में "अम्मन मियां" फ़रमाया करती थीं, वालिदे माजिद व दीगर अइ़ज़्ज़ा "अह़मद मियां" के नाम से याद फ़रमाया करते थे । आप के जद्दे अमजद (दादा जान) ने आप का इस्म शरीफ़ "अह़मद रज़ा" रखा । और आप का तारीख़ी नाम "अल मुख़्तार" है (जब कि कुन्यत अबू मुह़म्मद है) और आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ुद अपने नाम से पहले "अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा" लिखा करते थे । (तजल्लियाते इमाम अह़मद रज़ा, स. 21) चुनान्चे, अपने ना'तिया दीवान "ह़दाइक़े बख़्शिश" में एक जगह फ़रमाते हैं :

ख़ौफ़ न रख रज़ा ज़रा, तू तो है "अ़ब्दे मुस्त़फ़ा"
तेरे लिये अमान है, तेरे लिये अमान है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 179)

चूंकि येह माहे शव्वालुल मुकर्रम आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की पैदाइश का महीना है, लिहाज़ा इसी मुनासबत से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ह़याते त़य्यिबा के एक गोशे या'नी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की **इबादतो रियाज़त** के ह़वाले से सुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगे । आइये ! बयान का आग़ाज़ एक ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत से करते हैं । चुनान्चे,

ट्रेन रुकी रही

ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, हज़रते मौलाना सय्यिद अय्यूब अ़ली रज़वी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मेरे आक़ा आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक बार पीलीभीत से बरेली शरीफ़ ब ज़रीअ़ए रेल (ट्रेन) जा रहे थे। रास्ते में नवाब गंज के स्टेशन पर जहां गाड़ी सिर्फ़ दो मिनट के लिये ठहरती है, मग़रिब का वक़्त हो चुका था, आप ने गाड़ी ठहरते ही तक्बीरे इक़ामत फ़रमा कर गाड़ी के अन्दर ही निय्यत बांध ली, ग़ालिबन 5 अफ़राद आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की इक़्तिदा में नमाज़े बा जमाअ़त के लिये शरीक हुवे, उन में मैं भी था, लेकिन अभी शरीके जमाअ़त नहीं होने पाया था कि मेरी नज़र एक ग़ैर मुस्लिम गार्ड पर पड़ी जो प्लेटफ़ॉर्म पर खड़ा सब्ज़ झन्डी हिला रहा था, मैं ने खिड़की से झांक कर देखा, लाइन क्लियर थी और गाड़ी छूट रही थी, मगर गाड़ी न चली और हुज़ूर आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ब इत्मीनाने तमाम, बिला किसी इज़्तिराब के तीनों फ़र्ज़ रक्अ़तें अदा कीं और जिस वक़्त दाईं जानिब सलाम फेरा तो गाड़ी भी चल दी। मुक़्तदियों की ज़बान से बे साख़्ता سُبْحٰنَ اللهِ سُبْحٰنَ اللهِ سُبْحٰنَ اللهِ निकल गया। इस करामत में क़ाबिले ग़ौर येह बात थी कि अगर जमाअ़त प्लेटफ़ॉर्म पर खड़ी होती तो येह कहा जा सकता था कि गार्ड ने एक बुज़ुर्ग हस्ती को देख कर गाड़ी रोक ली होगी, ऐसा न था बल्कि नमाज़ गाड़ी के अन्दर पढ़ी थी। इस थोड़े वक़्त में गार्ड को क्या ख़बर हो सकती थी कि एक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महबूब बन्दा फ़रीज़ए नमाज़ गाड़ी में अदा कर रहा है।

(हयाते आ'ला हज़रत, 3/189,अज़ तज़किरए इमाम अहमद रज़ा, स. 15)

वोह कि इस दर का हुवा ख़ल्क़े ख़ुदा उस की हुई
वोह कि इस दर से फिरा अल्लाह ही से फिर गया

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 53)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को नमाज़े मग़रिब बा जमाअ़त अदा करना थी, इस लिये 5 अफ़राद की इमामत में नमाज़ शुरूअ़ फ़रमा दी, हालांकि ट्रेन इतनी देर को न रुकती थी कि इत्मीनान व सुकून के साथ नमाज़ अदा कर ली जाती और ऐसा ही हुवा कि कुछ ही देर बा'द गार्ड़ भी रवानगी के लिये हरी झन्डी दिखा रहा था, मगर जब तक इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه नमाज़ में मसरूफ़ रहे ट्रेन न चली और जैसे ही सलाम फेरा, ट्रेन भी फ़ौरन चल पड़ी । इस हिकायत से जहां आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की करामत साबित होती है, वहीं आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की नमाज़े बा जमाअ़त से महब्बत का अन्दाज़ा भी होता है । चूंकि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه रसूले मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सच्चे और पक्के आ़शिक़ थे, इसी लिये सफ़र व हज़र में भी अपने प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखों की ठन्डक या'नी नमाज़ को जमाअ़त के साथ ही अदा फ़रमाते । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ुद फ़रमाते हैं : मुझे बड़े बड़े सफ़र करने पड़े और بِفَضْلِهٖ تَعَالٰی पंज वक़्ता जमाअ़त से नमाज़ पढ़ी । (मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 75)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बड़े बड़े सफ़र किये हालांकि हदीसे पाक में सफ़र को अ़ज़ाब का टुकड़ा कहा गया है, मगर सफ़र की मशक़्क़तें और सुऊ़बतें बरदाश्त करते हुवे नमाज़ छोड़ना तो कुजा आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने हमेशा जमाअ़त के साथ ही नमाज़ अदा फ़रमाई ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब तक कि कोई शरई उ़ज़्र न हो, मस्जिद की जमाअ़त वाजिब है, आइये नमाज़े बा जमाअ़त के मुतअ़ल्लिक़ नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चार फ़रामीन सुनिये और ऐ आ़शिक़ाने रज़ा, ज़ेह्न बनाइये कि اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ हमें नमाज़े बा जमाअ़त का एहतिमाम करना है ।

1. सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''बा जमाअ़त नमाज़ अदा करना तन्हा नमाज़ पढ़ने से सत्ताईस दरजे अफ़्ज़ल है ।'' (صحیح بخاری، کتاب الاذان، باب فضل صلوۃ الجماعۃ، رقم ۶۴۵، ج ۱، ص ۲۳۲)
2. शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मोअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जिस ने कामिल वुज़ू किया और किसी फ़र्ज़ नमाज़ की अदाएगी के लिये चला और नमाज़ बा जमाअ़त अदा की तो उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الصلوۃ، الترغیب فی المشی الی المساجد، رقم ۶، ج ۱، ص ۱۳۰)
3. नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रोबर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने वालों से ख़ुश होता है ।''

(مسند احمد، مسند عبداللہ بن عمر بن الخطاب، رقم ۵۱۱۲، ج ۲، ص ۳۰۹)

4. ख़ातिमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये चालीस दिन बा जमाअ़त तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़ पढ़ेगा उस के लिये दो आज़ादियां लिखी जाएंगी, एक जहन्नम से दूसरी निफ़ाक़ से ।'' (سنن ترمذی، ابواب الصلوۃ، باب ماجاء فی فضل التکبیرۃ الاولی، رقم ۲۴۱، ج ۱، ص ۲۷۴)

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त
हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़त़ा या इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बावन[52] बरस की उ़म्र में जब दूसरी बार सफ़रे ह़ज के लिये रवाना हुवे, मनासिके ह़ज अदा करने के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ऐसे अ़लील (या'नी बीमार) हुवे कि दो माह से ज़ियादा साह़िबे फ़िराश रहे, जब कुछ रू ब सिह़्ह़त हुवे तो ज़ियारते रौज़ए अन्वर के लिये कमर बस्ता हुवे और ''जद्दा

शरीफ़" से होते हुवे ब ज़रीअ़ए कश्ती तीन[3] दिन के बा'द "राबिग़" पहुंचे और वहां से मदीनतुर्रसूल के लिये ऊंट की सुवारी की, उसी रास्ते में जब "बीरे शैख़" पहुंचे तो मन्ज़िल क़रीब थी लेकिन फ़ज्र का वक़्त थोड़ा रह गया था। ऊंट वालों ने मन्ज़िल ही पर ऊंट रोकने की ठानी लेकिन तब तक नमाज़े फ़ज्र का वक़्त न रहता, सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : (येह सूरते ह़ाल देख कर) मैं और मेरे रुफ़क़ा (या'नी साथी) उतर पड़े, क़ाफ़िला चला गया। किरमिच का (या'नी मख़्सूस टाट का बना हुवा) डोल पास था। रस्सी नहीं और कूंआं गहरा, इमामे बांध कर पानी भरा (और) वुज़ू किया। بِحَمْدِ اللهِ تَعَالٰی नमाज़ हो गई। अब येह फ़िक्र लाह़िक़ हुई कि त़ूले मरज़ (त़वील अ़र्सा बीमार रहने की वज्ह) से ज़ो'फ़े शदीद (कमज़ोरी बहुत) है, इतने मील पियादा (पैदल) क्यूंकर चलना होगा ? मुंह फेर कर देखा तो एक जम्माल (ऊंट वाला) मह्ज़ अजनबी अपना ऊंट लिये मेरे इन्तिज़ार में खड़ा है, ह़म्दे इलाही (عَزَّوَجَلَّ) बजा लाया और उस पर सुवार हुवा। उस से लोगों ने पूछा कि तुम येह ऊंट कैसे लाए ? कहा : हमें शैख़ हुसैन ने ताकीद कर दी थी कि शैख़ (आ'ला ह़ज़रत) की ख़िदमत में कमी न करना, कुछ दूर आगे चले थे कि मेरा अपना जम्माल (ऊंट वाला) ऊंट लिये खड़ा है। उस से पूछा तो कहा : जब क़ाफ़िले के जम्माल न ठहरे, मैं ने कहा शैख़ को तक्लीफ़ होगी, क़ाफ़िले में से ऊंट खोल कर वापस लाया। येह सब मेरी सरकारे करम की वसिय्यतें थीं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى وَبَارَكَ وَسَلَّم عَلَيْهِ وَعَلٰى عِتْرَتِهٖ قَدْرَ رَأْفَتِهٖ وَرَحْمَتِهٖ वरना कहां येह फ़क़ीर और कहां सरदारे राबिग़, शैख़ हुसैन, जिन से जान न पहचान और कहां वह्शी मिज़ाज जम्माल (ऊंटों वाले) और उन की येह ख़ारिक़ुल आ़दात रविशें (या'नी ख़िलाफ़े मा'मूल त़र्ज़े अ़मल) ! (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 217, मुलख़्ख़सन)

मुस्त़फ़ा का वोह लाडला प्यारा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की
ग़ौसे आ'ज़म की आंख का तारा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

(वसाइले बख़्शिश, स. 575)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह है ज़ौक़े नमाज़ और शौक़े इबादत कि महीनों की त़वील अ़लालत, शदीद कमज़ोरी व नक़ाहत के बा वुजूद हर त़रह़ की कुल्फ़त व मशक़्क़त से बे परवा हो कर क़ाफ़िले का साथ तो छोड़ दिया, मगर **''अफ़्ज़लुल इबादात''** (सब से अफ़्ज़ल इबादत) नमाज़ को छोड़ना गवारा न किया । इस के साथ साथ जब भी क़ियाम पर कुदरत होती तो खड़े खड़े नमाज़ अदा फ़रमाते, बदन में त़ाक़त न होती तो अ़सा के सहारे क़ियाम और रुकूअ़ व सुजूद फ़रमाते, जब ज़ो'फ़ (कमज़ोरी) ह़द से बढ़ी और मरज़ ने शिद्दत इख़्तियार की तो नफ़्स पर हर त़रह़ की तक्लीफ़ व मशक़्क़त बरदाश्त करते हुवे भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आंखों की ठन्डक नमाज़ को अदा फ़रमाया । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अह़कामात पर अ़मल करना और उम्मते मुस्लिमा को इन पर अ़मल का दर्स देना, येह ऐसे काम हैं जो सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की सीरत व किरदार का हिस्सा थे ।

आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ज़िक्रे रज़ा करते हुवे फ़रमाते हैं :

उस की हस्ती में था अ़मले जौहर सुन्नते मुस्त़फ़ा का वोह पैकर
आ़लिमे दीन, साह़िबे त़क़्वा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

(वसाइले बख़्शिश, स. 575)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करना हमारी ज़िन्दगी का मक़्सद और एक अ़ज़ीम काम है । यक़ीनन जिस त़रह़ नमाज़ व रोज़ा, ह़ज व ज़कात येह सब काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत हैं, इसी त़रह़ हर वोह काम कि जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुशनूदी मक़्सूद हो वोह भी इबादत के मफ़्हूम में शामिल होगा । लिहाज़ा अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ ग़रीबों की मदद करना, नादारों के काम बनाना, अहलो इयाल के लिये

रिज़्क़े ह़लाल कमाना, लोगों के दिलों में ख़ुशी दाख़िल करना, नेकी की दा'वत देना और बुराई से रोकना, इल्मे दीन सिखाना, लोगों के दिलों में इश्क़े मुस्त़फ़ा के चराग़ रोशन करना, ह़िमायते दीन में क़लम चलाना, ख़ौफ़े ख़ुदा और इश्क़े मुस्त़फ़ा में आंसू बहाना वग़ैरा भी इबादत के मफ़्हूम में शामिल हैं और इन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से अज्रो सवाब भी मिलेगा।

इस त़रह़ देखा जाए तो आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के शबो रोज़ इबादत में ही बसर होते नज़र आते हैं। क्यूंकि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का हर हर लम्ह़ा इल्मे दीन फैलाने, लोगों में अदबे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दिये जलाने, दूसरों की ख़ैर ख़्वाही चाहने और हर ह़वाले से मुतअ़ल्लिक़ीन व मुह़िब्बीन की तर्बिय्यत फ़रमाने में गुज़रा करता था।

तेरी हर बात है आईनए ह़क़्क़ो बात़िल तेरे हर काम में है रंग निराला तेरा

(बयाज़े पाक, स. 34, 35)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अक्सर फ़िराक़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ग़मगीन रहते और सर्द आहें भरा करते। गुस्ताख़ाने रसूल की गुस्ताख़ाना इबारात को देखते तो आंखों से आंसूओं की झड़ी लग जाती और प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़िमायत में उन का रद्द करते।

ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़ में फ़रमाते हैं :

करूं तेरे नाम पे जां फ़िदा, न बस एक जां, दो जहां फ़िदा
दो जहां से भी नहीं जी भरा, करूं क्या करोड़ों जहां नहीं

(वसाइले बख़्शिश, स. 109)

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ग़ुरबा को कभी ख़ाली हाथ नहीं लौटाते थे, हमेशा ग़रीबों की इमदाद करते रहते। बल्कि आख़िरी वक़्त भी अ़ज़ीज़ो अक़ारिब को

वसिय्यत की, कि ग़ुरबा का ख़ास ख़याल रखना। उन को ख़ातिरदारी से अच्छे अच्छे और लज़ीज़ खाने अपने घर से खिलाया करना और किसी ग़रीब को मुत़लक़ (बिल्कुल भी) न झिड़कना।

अक्सर अवक़ात आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه तस्नीफ़ व तालीफ़ में मश्ग़ूल रहते। पांचों नमाज़ों के वक़्त मस्जिद में ह़ाज़िर होते और हमेशा नमाज़े बा जमाअ़त अदा फ़रमाया करते। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मह़फ़िले मीलाद शरीफ़ में ज़िक्रे विलादत शरीफ़ के वक़्त सलातो सलाम पढ़ने के लिये खड़े होते बाक़ी शुरूअ़ से आख़िर तक अदबन दो ज़ानू बैठे रहते। यूं ही वा'ज़ फ़रमाते, चार पांच घन्टे कामिल दो ज़ानू ही मिम्बर शरीफ़ पर रहते।

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत जि. 1 स. 98)

काश ! हम ग़ुलामाने आ'ला ह़ज़रत को भी तिलावते क़ुरआने पाक करते या सुनते वक़्त नीज़ इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त, सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त, मदनी मुज़ाकरों, दर्स व मदनी ह़ल्क़ों वग़ैरा में अदबन दो ज़ानू बैठने की सआ़दत मिल जाए। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जहां सीरत व किरदार में बा कमाल थे, वहीं सूरत में भी बे मिसाल थे। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़द (मुबारक) औसत़ (दरमियाना), पेशानी (मुबारक) चोड़ी, आंखें बड़ी, (बीनी शरीफ़ या'नी) नाक लम्बी (और) खड़ी, चेहरा लम्बा, रंग (मुबारक) गन्दुमी (और) मलीह़, शगुफ़्ता (इस त़रह़ कि) जलाल व जमाल की खुली हुई तफ़्सीर, हाथों की उंगलियां लम्बी, भंवें घनी, गर्दन ऊंची, (सरे अन्वर के) बाल लम्बे जो कान की लौ तक रहते थे। (फ़ैज़ाने आ'ला ह़ज़रत, स. 80)

नाम आ'ला है तेरा ह़ज़रते आ'ला तेरा काम औला है तेरा ऐ शहे वाला तेरा
इस ज़माने में कोई तुझ सा न देखा न सुना ग़ौसे आ'ज़म की करामत थी सरापा तेरा
तू ने उ़न्वान येह ईमान का दुन्या को दिया इ़श्क़े सरकारे दो आ़लम था वज़ीफ़ा तेरा

(बयाज़े पाक, स. 34, 35)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़िफ़्ज़े क़ुरआन क्यूं और कैसे ?

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत मौलाना सय्यिद अय्यूब अ़ली रज़वी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बयान है कि एक रोज़ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया कि बा'ज़ ना वाक़िफ़ ह़ज़रात मेरे नाम के आगे ह़ाफ़िज़ लिख दिया करते हैं, ह़ालांकि मैं इस लक़ब का अहल नहीं हूं । सय्यिद अय्यूब अ़ली साह़िब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उसी रोज़ से (क़ुरआने पाक का) दौर शुरूअ़ कर दिया, जिस का वक़्त ग़ालिबन इ़शा का वुज़ू फ़रमाने के बा'द से जमाअ़त क़ाइम होने तक मख़्सूस था । रोज़ाना एक पारह याद फ़रमा लिया करते थे, यहां तक कि तीसवें रोज़ तीसवां पारह याद फ़रमा लिया । एक मौक़अ़ पर फ़रमाया कि मैं ने कलामे पाक बित्तरतीब ब कोशिश याद कर लिया और येह इस लिये कि उन बन्दगाने ख़ुदा का (जो मेरे नाम के आगे ह़ाफ़िज़ लिख दिया करते हैं) कहना ग़लत़ साबित न हो ।

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत जि. 1/208, अज़ तज़किरए इमाम अह़मद रज़ा, स. 6)

इ़ल्मो इ़रफ़ां का जो कि सागर था ख़ैर से ह़ाफ़िज़ा भी क़वी तर था
ह़क़ पे मब्नी था जिस का हर फ़तवा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

(वसाइले बख़्शिश, स. 575)

अपनी ता'रीफ़ से बचिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए़ से जहां आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ह़ाफ़िज़े का कमाल मा'लूम हुवा वहीं येह भी मा'लूम हुवा कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को दूसरों की ज़बान से अपने लिये ऐसे अवसाफ़ सुनना जो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ात में न पाए जाते हों किस क़दर ना पसन्द था । इसी त़रह़ का वाक़िआ़ करोड़ों ह़नफ़ियों के इमाम, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْاَكْرَم के साथ भी पेश आया,

इमामे आ'ज़म का तक़्वा

वोह कुछ इस त़रह़ है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पहले आधी रात इ़बादत किया करते थे। एक दिन रास्ते से गुज़र रहे थे कि किसी को येह कहते सुना कि येह सारी रात इ़बादत में गुज़ारते हैं। फिर इस के बा'द पूरी रात इ़बादत करने लगे और फ़रमाते : "मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या आती है कि मेरे बारे में उस की इ़बादत के मुतअ़ल्लिक़ ऐसी बात कही जाए जो मुझ में न हो।" (تاریخ بغداد، النعمان بن ثابت: ۷۲۹۷، ج ۱۳، ص ۳۵۳، ۳۵۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और उन के मज़हरे अतम्म अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का अपनी झूटी ता'रीफ़ से बचने का जज़्बा सद करोड़ मरह़बा ! ऐ काश हम ग़ुलामाने अबू ह़नीफ़ा व रज़ा भी अपनी झूटी सच्ची ता'रीफ़ पर फूले न समाने के बजाए अपने किरदार में मज़ीद निखार पैदा करने की कोशिश किया करें। याद रखिये ! अपनी झूटी ता'रीफ़ पर ख़ुश होना शरअ़न जाइज़ नहीं। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इरशाद फ़रमाते हैं अगर (कोई) अपनी झूटी ता'रीफ़ को दोस्त रखे कि लोग उन फ़ज़ाइल से उस की सना (या'नी ता'रीफ़) करें जो उस में नहीं जब तो सरीह़ ह़रामे क़त़ई़ है। (फ़तावा रज़विय्या, 21/597) इस लिये किसी को अपनी झूटी ता'रीफ़ करने ही नहीं देना चाहिये। बल्कि अगर कोई हमारी ऐसे अवसाफ़ से ता'रीफ़ करे जो हम में पाए जाते हों, तब भी ऐसे शख़्स की हाथों हाथ इस्लाह़ करने की तरकीब कर ली जाए और उसे ता'रीफ़ करने से बाज़ रहने की तल्क़ीन की जाए। क़ुरआनो ह़दीस की मुक़द्दस ता'लीम से पता चलता है कि अपनी ता'रीफ़ पर ख़ुश हो कर फूल जाने वाला आदमी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बेह़द ना पसन्द है और इस क़िस्म के मर्दों और औ़रतों के इर्द गिर्द अक्सर चापलूसी करने वालों का मजमअ़ इकठ्ठा हो जाता है और येह ख़ुदग़र्ज़ लोग ता'रीफ़ों के पुल बांध कर आदमी को बे वुक़ूफ़ बनाते हैं और फिर लोगों से अपने मत़लब

पूरे करते और बे वुक़ूफ़ बनाने की दास्तान बयान कर के दूसरों को हंसने हंसाने का मौक़अ़ फ़राहम करते रहते हैं । लिहाज़ा हर किसी को चापलूसी करने वालों और मुंह पर ता'रीफ़ करने वालों से होशयार रहना चाहिये और हरगिज़ हरगिज़ अपनी ता'रीफ़ सुन कर ख़ुश न होना चाहिये ।

अपनी ता'रीफ़ सुन कर क्या करें ?

ह़दीसे पाक में है : ''मद्दाहों के मुंह में ख़ाक झोंक दो''

(صحیح مسلم"، کتاب الزهد والرقائق، باب النهي عن المدح... إلخ، الحدیث: ۳۰۰۲، ص ۱۶۰۰)

इस ह़दीसे पाक से येह मदनी फूल मिला कि अपनी ता'रीफ़ पर फूले नहीं समाना चाहिये बल्कि इस से बचने की कोशिश करनी चाहिये । जब कोई हमारी (सच्ची) ता'रीफ़ करे तो उसे नर्मी से मन्अ़ कर दें, अगर फिर भी बाज़ न आए तो फूलने के बजाए दिल में दाख़िल होने वाली ख़ुशी के बारे में अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेनी चाहियें कि रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ने महज़ अपने करम से मेरे गुनाहों पर पर्दा डाल कर मेरी इबादतों को लोगों पर ज़ाहिर फ़रमा दिया है । और इस से बड़ा एह़सान और क्या होगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ुद अपने बन्दे के गुनाहों को छुपा कर उस की इबादत को ज़ाहिर कर दे ।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वास्ते हो
कर इख़्लास ऐसा अ़ता या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 105)

ता'लीमे इल्मे दीन की फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इमामे अहले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जहां नमाज़ व तिलावत से महब्बत फ़रमाते थे वहीं नफ़्ली इबादात से अफ़्ज़ल अ़मल या'नी दिन रात इशाअ़ते इल्मे दीन में भी मश्ग़ूल रहा करते । क्यूंकि घड़ी भर इल्मे दीन के मसाइल में मुज़ाकरा और गुफ़्तगू करना सारी रात इबादत करने से अफ़्ज़ल है । आइये ! इल्मे दीन के फ़ज़ाइल पर चन्द फ़रामीने मुस्त़फ़ा सुन कर इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के इल्मी मशाग़िल भी सुनते हैं ।

1. मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को यमन भेजा तो इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे ज़रीए़ किसी एक को हिदायत दे दे तो येह तेरे लिये दुन्या व माफ़ीहा (दुन्या और जो कुछ इस में है उस) से बेहतर है।

(الزهد لابن المبارک، باب فضل ذکرالله، الجزء العاشر، استعنت بالله، الحدیث: ۳۷۵، ص ۴۸۴)

2. जिस ने इ़ल्म का एक बाब सीखा कि लोगों को सिखाए तो उसे 70 सिद्दीक़ीन का सवाब दिया जाएगा।

(الترغیب والترهیب، کتاب العلم، الترغیب فی العلم.....الخ، الحدیث: ۱۱۹، ج ۱، ص ۶۸)

3. मुसलमान भाई को इस से ज़ियादा अफ़्ज़ल फ़ाइदा नहीं दे सकता कि उसे कोई अच्छी बात पहुंच तो वोह अपने भाई को पहुंचा दे।

(جامع بیان العلم و فضله، باب دعاء رسول الله لمستمع العلم و حافظه و مبلغه، الحدیث: ۸۵، ص ۶۲)

4. **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन की समझ बूझ अ़ता फ़रमाता है। (بخاری، کتاب العلم، باب العلم قبل القول و العمل: ۱/ ۳۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि इ़ल्मे दीन सिखाने के किस क़दर ज़ौक़ अफ़्ज़ा फ़ज़ाइल हैं। इन फ़ज़ाइल को पेशे नज़र रखते हुवे अगर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सीरते त़य्यिबा पर नज़र डाली जाए तो अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ह़िस्से में सवाबे अ़ज़ीम का कितना ज़ख़ीरा होगा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सारी ज़िन्दगी इ़ल्मे दीन के बारे में लिखने लिखाने, इ़ल्मे दीन फैलाने और लोगों की इस्लाह़ की कोशिश का सामान पहुंचाने में बसर हुई। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इ़ल्मे दीन के कसीर कामों में मसरूफ़िय्यत के साथ साथ इस्तिफ़्ता (फ़तावा) के जवाबात देने का काम भी करते और येह काम दस[10] माहिर मुफ़्तियों के काम से भी ज़ियादा होता। क्यूंकि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास दुन्या के मुख़्तलिफ़ शहरों और मुल्कों जैसे हिन्द, बंगला देश, मौजूदा पाकिस्तान, चीन, अफ़्ग़ानिस्तान,

अमरीका, अफ़्रीक़ा ह़त्ता कि ह़रमैने शरीफ़ैन मुह़तरमैन से भी इस्तिफ़्ता आते और बसा अवक़ात तो एक एक वक़्त में पाचं पांच सो 500 इस्तिफ़्ता जम्अ़ हो जाते । (फ़तावा रज़विय्या : 9/449 मुलख़्ख़सन)

तेरा इल्मो फ़ज़्ल व शानो शौकत व जाहो ह़शम
शश जिहत पर है इयां अह़मद रज़ा ख़ां क़ादिरी
है अ़रब के आ़लिमों का मद्ह़ ख़्वां सारा जहां
और वोह तेरे मद्ह़ ख़्वां अह़मद रज़ा क़ादिरी

(क़िबालए बख़्शिश, स. 191)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़तावा नवेसी में किस क़दर मश्ग़ूल रहते और इस मसरूफ़िय्यत की वज्ह आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का फ़न्ने इफ़्ता में कामिल महारत रखना था । येही वज्ह है कि अ़वाम तो अ़वाम बड़े बड़े उ़लमाए किराम और मुफ़्तियाने उ़ज़्ज़ाम भी तह़क़ीक़ी जवाबात और पेचीदा मसाइल के ह़ल के लिये आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की त़रफ़ रुजूअ़ करते । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुख़्तलिफ़ उ़न्वानात पर कमो बेश एक हज़ार किताबें लिखी हैं । यूं तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सिने, 1286 हिजरी से सिने 1340 हिजरी तक लाखों फ़तवे दिये होंगे, लेकिन अफ़्सोस ! कि सब नक़्ल न किये जा सके, जो नक़्ल कर लिये गए थे उन का मजमूआ़ "**फ़तावा रज़विय्या**" के नाम से मश्हूर है । फ़तावा रज़विय्या की 30 जिल्दें हैं, जिन के कुल सफ़ह़ात : 21656, कुल सुवालात व जवाबात : 6847 और कुल रसाइल : 206 हैं । (फ़तावा रज़विय्या : 30/10) क़ुरआन, ह़दीस, फ़िक़ह, मन्ति़क़ और कलाम वग़ैरा में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की वुस्अ़त नज़री का अन्दाज़ा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़तावा के मुत़ालए से ही हो सकता है । क्यूंकि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हर फ़तवे में

दलाइल का समन्दर मौजज़न है और वाक़ेई आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का फ़तावा कुरआन, ह़दीस, इजमाअ़ और फ़ुक़हाए किराम के जुज़ईय्यात (جُزئیات) से आरास्ता हर क़िस्म के मसाइल का ऐसा ह़सीन गुलदस्ता है जो रहती दुन्या तक लोगों के क़ल्बो फ़िक्र को अपनी महकी महकी ख़ुश्बू से महकाता रहेगा और आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दरजाते रफ़ीआ़ (बुलन्द दरजों) में मज़ीद बुलन्दी का सबब बनता रहेगा।

मस्लके ह़क़ की ज़मानत है तेरा नाम रज़ा
शाने तह़क़ीक़ अदा कर गया ख़ामा तेरा
फ़ाज़िल ऐसा कि दिया रब ने तुझे फ़ज़्ले कबीर
आ़लिम ऐसा कि हर आ़लम हुवा शैदा तेरा
हर वरक़ तेरा शरीअ़त की दलीले रोशन
एक क़ानूने मुकम्मल है फ़तावा तेरा
तेरी तह़रीर पे अंगुश्त ब दन्दां था अ़रब
तेरी तक़रीर थी कि क़ादिरी तेग़ा (تیغا) तेरा

(बयाज़े पाक, स. 34, 35)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कभी भी रोज़ा न छोड़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه हमा वक़्त दीनी कामों में मश्ग़ूल रहने के बा वुजूद इन्तिहाई कम ग़िज़ा इस्ति'माल फ़रमाया करते। आप की आ़म ग़िज़ा चक्की के पिसे हुवे आटे की रोटी और बकरी का क़ौरमा था। आख़िरे उ़म्र में येह ग़िज़ा मज़ीद कम हो कर फ़क़त् एक प्याली बकरी के गोश्त का शोरबा बिग़ैर मिर्च का और एक डेढ़ बिस्कुट सोजी का तनावुल फ़रमाते थे। खाने पीने के मुआ़मले में आप निहायत सादा थे। (फ़ैज़ाने आ'ला ह़ज़रत, स. 113) और माहे रमज़ानुल मुबारक में तो येह ग़िज़ा और भी कम हो जाती थी। ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद हुसैन

मैरठी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बयान है कि मैं ने रमज़ानुल मुबारक की 20 तारीख़ से ए'तिकाफ़ किया । आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया : "जी तो चाहता है कि मैं भी ए'तिकाफ़ करूं, मगर (दीनी मशाग़िल के बाइस) फ़ुरसत नहीं मिलती ।" आख़िर 26 रमज़ानुल मुबारक को फ़रमाया : "आज से मैं भी मो'तकिफ़ ही हो जाऊं ।" हज़रते मौलाना हुसैन मैरठी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "शाम को (खजूर वग़ैरा से रोज़ा तो इफ़्तार फ़रमा लेते मगर) आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को खाना खाते मैं ने किसी दिन नहीं देखा । सहर को (सहरी के वक़्त) सिर्फ़ एक छोटे से पियाले में फ़ीरीनी और एक पियाली में चटनी आया करती थी, वोह नोश फ़रमाया करते । एक दिन मैं ने दरयाफ़्त किया : "हुज़ूर ! फ़ीरीनी और चटनी का क्या जोड़ ?" फ़रमाया : "नमक से खाना शुरूअ़ करना और नमक ही पर ख़त्म करना सुन्नत है, इस लिये चटनी आती है ।"(माख़ूज़ अज़ : फ़ैज़ाने आ'ला हज़रत, स. 113)

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ पैकरे सुन्नत, आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मीठी फ़ीरीनी से क़ब्ल और बा'द इस लिये नमकीन चटनी इस्ति'माल फ़रमाते थे कि खाने के अव्वल आख़िर नमक इस्ति'माल करने की सुन्नत अदा हो जाए । खाने के अव्वल आख़िर नमक (या नमकीन) खाने से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सत्तर[70] बीमारियां दूर होती हैं । (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 658)

या इलाही ! मुझ को भी कर भूक की ने'मत अ़ता
अज़ तुफ़ैले सय्यिदी व मुर्शिदी अहमद रज़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इतनी कम ग़िज़ा खाने के बा वुजूद भी आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कभी भी रोज़ा न छोड़ा । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के भतीजे और ख़लीफ़ा मौलाना हसनैन रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : रोज़े की क़ज़ा के बारे में न उन के किसी बड़े की ज़बानी सुना न किसी बराबर वाले ने बताया न हम छोटों ने कभी माहे मुबारक का कोई रोज़ा क़ज़ा करते

देखा । बा'ज़ मरतबा माहे (रमज़ान) मुबारक में भी अ़लालत हुई मगर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने रोज़ा न छोड़ा, अगर किसी ने ब इसरार अ़र्ज़ भी किया कि ऐसी ह़ालत में रोज़े से कमज़ोरी बढ़ेगी तो इरशाद फ़रमाया कि : मरीज़ हूं तो इ़लाज न करूं ? लोग तअ़ज्जुब से कहते थे कि रोज़ा भी कोई इ़लाज है ? इरशाद फ़रमाया : इकसीर इ़लाज है, मेरे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बताया हुवा है । इरशाद फ़रमाते हैं : صُوْمُوْا تَصِحُّوا या'नी रोज़ा रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे । (المعجم الاوسط، الحدیث ۸۳۱۲، ج ۶، ص ۱۳۶ و ۱۳۷)

आ'ला ह़ज़रत (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) उन औलियाए कामिलीन में से थे जिन के क़ुलूब पर फ़राइज़े इलाहिय्या की अ़ज़मत छाई रहती है, चुनान्चे, जब 1339 हिजरी का माहे रमज़ान मई, जून 1921 में पड़ा और मुसलसल अ़लालत व ज़ो'फ़े फ़रावां (शदीद कमज़ोरी) के बाइ़स आ'ला ह़ज़रत (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ने अपने अन्दर मौसिमे गर्मा में रोज़ा रखने की त़ाक़त न पाई तो अपने ह़क़ में येह फ़तवा दिया कि "पहाड़ पर सर्दी होती है वहां रोज़ा रखना मुमकिन है लिहाज़ा रोज़ा रखने के लिये वहां जाना इस्तित़ाअ़त की वज्ह से फ़र्ज़ हो गया ।" फिर आप रोज़ा रखने के इरादे से कोहे भवाली ज़िल्अ़ नैनी ताल तशरीफ़ ले गए । (तजल्लियाते इमाम अह़मद रज़ा, स. 133)

उस की हस्ती में था अ़मले जौहर — सुन्नते मुस्त़फ़ा का वोह पैकर
आ़लिमे दीन, साह़िबे तक़्वा — वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

(वसाइले बख़्शिश, स. 575)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कितनी कम ग़िज़ा इस्ति'माल फ़रमाते ! काश हमारी भी डट कर खाने की आ़दत निकल जाए और क़ुफ़्ले मदीना लगाने की आ़दत बन जाए । इस के इ़लावा सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़र्ज़ इबादात को बजा लाने

में इस क़दर मोहतात़ थे कि 7 साल की उ़म्र मुबारक से ही रोज़ों का एहतिमाम शुरूअ़ फ़रमा दिया और अख़ीरे उ़म्र तक न तो कोई रोज़ा छोड़ा और न ही क़ज़ा करने की ह़ाजत पेश आई। मगर अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना हमारे मुआ़शरे में लोग रमज़ान के रोज़े छोड़ने के लिये बे शुमार जतन करते हैं, बहाने बनाते और किसी उ़ज़्रे मो'तबर के बिग़ैर रोज़े छोड़ देते हैं। याद रखिये ! सर दर्द, मतली, हल्क़ा बुख़ार, खांसी और दीगर छोटी छोटी बीमारियों की वज्ह से रोज़ा छोड़ने की इजाज़त नहीं है। अगर्चे बा'ज़ मजबूरियां ऐसी हैं जिन के सबब रमज़ानुल मुबारक में रोज़ा न रखने की इजाज़त है। मगर येह याद रहे कि मजबूरी में रोज़ा मुआ़फ़ नहीं हो जाता बल्कि वोह मजबूरी ख़त्म हो जाने के बा'द उस की क़ज़ा रखना फ़र्ज़ है। अलबत्ता क़ज़ा का गुनाह नहीं होगा। मगर आज कल देखा जाता है कि मा'मूली नज़ला, बुख़ार या दर्दे सर की वज्ह से लोग रोज़ा तर्क कर दिया करते हैं या مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ रख कर तोड़ देते हैं, ऐसा हरगिज़ नहीं होना चाहिये। अगर किसी सह़ीह़ शरई मजबूरी के बिग़ैर कोई रोज़ा छोड़ दे अगर्चे बा'द में सारी उ़म्र भी रोज़े रखे, उस एक रोज़े की फ़ज़ीलत को नहीं पा सकता।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! चन्द रोज़ क़ब्ल ही रमज़ानुल मुबारक का मुक़द्दस महीना अपनी ख़ुश्बूएं लुटाता, अन्वार की बारिश बरसाता, हम आ़सियों के दिलों को जगमगाता और हमारी बख़्शिश का सामान बनाता हुवा गुज़र गया, मुमकिन है किसी इस्लामी भाई ने महज़ सुस्ती और ग़फ़्लत की वज्ह से रमज़ानुल मुबारक के रोज़े छोड़ दिये हों, उन की बारगाह में दस्त ब दस्ता मदनी इल्तिजा है कि अपनी आख़िरत की फ़िक्र करते हुवे और ग़ज़बे इलाही عَزَّوَجَلَّ से डरते हुवे आज तक जितने रोज़े तोड़े या छोड़े उन की तौबा करते हुवे शरई रहनुमाई ले कर कफ़्फ़ारा बनता है तो कफ़्फ़ारा भी अदा कीजिये और उन रोज़ों की क़ज़ा भी कर लीजिये। रोज़ों की क़ज़ा, कफ़्फ़ारे के अह़काम और कफ़्फ़ारा देने का त़रीक़ा जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे

अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ तस्नीफ़ "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" सफ़हा 1081 ता 1088 का मुत़ालआ़ कीजिये । बल्कि कोशिश फ़रमा कर अव्वल ता आख़िर पूरी किताब ही पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । اٰمین بجاہِ النبی الامین صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

या ख़ुदा माहे रमज़ान के सदक़े सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ दे दे
नेक बन जाऊं जी चाहता है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 136)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की इबादत व रियाज़त के मुतअ़ल्लिक़ सुनने की सआ़दत ह़ासिल की । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बचपन ही से नमाज़ की पाबन्दी फ़रमाई और आख़िरे उ़म्र तक चाहे कैसी ही मजबूरी या बीमारी पेश आई कभी नमाज़ क़ज़ा न हुई । हम आ़शिक़ाने आ'ला ह़ज़रत को भी सफ़र व ह़ज़र, ख़ुशी व ग़मी, बीमारी व तन्दुरुस्ती हर ह़ाल में नमाज़ की आ़दत बनानी चाहिये । इसी त़रह़ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रमज़ान के रोज़े शदीद अ़लालत में भी न छोड़े तो अगर हम से भी सुस्ती व ग़फ़्लत या किसी उ़ज़्रे शरई की बिना पर रोज़े क़ज़ा हुवे हैं तो तौबा के साथ साथ उन की क़ज़ा भी करें क्यूंकि अगर किसी उ़ज़्रे शरई की बिना पर रोज़े छूट गए तो उन की भी क़ज़ा फ़र्ज़ है । इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी सारी उ़म्र इ़ल्मे दीन फैलाने, लोगों के दीनी मसाइल सुलझाने और हर मुआ़मले में उन की इस्लाह़ फ़रमाने में बसर फ़रमाई थी । हमें भी चाहिये कि हम भी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सीरत पर अ़मल करते हुवे अपनी ज़िन्दगी गुज़ारें और जहां किसी मुआ़मले में शरीअ़त की

ख़िलाफ़ वर्ज़ी का शक भी हो फ़ौरन उस काम से बचने में ही आ़फ़िय्यत समझें या किसी सुन्नी आ़लिमे दीन या दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत से रुजूअ़ फ़रमा लें। ऐसी मदनी सोच व फ़िक्र पाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता रहिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दीनो दुन्या की बेहतरी नसीब होगी।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मजलिसे इस्लाह़ बराए खिलाड़ियान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुन्नतों की ख़िदमत और मुआ़शरे की इस्लाह़ व तर्बिय्यत के लिये दा'वते इस्लामी 97 शो'बाजात में मसरूफ़े अ़मल है। इन्ही में शामिल एक मजलिसे खे़ल भी है। खेलों की दुन्या बड़ी निराली है, जो इस में खो जाता है बस यहीं का ही हो जाता है, इस त़बक़े की दीन से दूरी सब जानते हैं, इन्हें भी दीने इस्लाम की ता'लीमात से रू शनास करवाना और सुन्नतों के सांचे में ढालना इन्तिहाई ज़रूरी है। मजलिसे खेल का बुन्यादी मक़्सद खेलों से मुन्सलिक लोगों में दा'वते इस्लामी के नेकी की दा'वत की धूमें मचाने के मदनी पैग़ाम को आ़म करना और उन्हें दा'वते इस्लामी से वाबस्ता करते हुवे इस मदनी मक़्सद **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** (اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ)" के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने का मदनी ज़ेह्न देना है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बहुत से खिलाड़ियों और उन के घर वालों का दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से मुतअस्सिर हो कर येह मदनी ज़ेह्न बन चुका है कि हमें शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ाकर्दा मदनी मक़्सद की तक्मील और अपनी इस्लाह़ के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करना है और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो!

12 मदनी कामों में हिस्सा लीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करना ज़ैली हल्क़े के 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम भी है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की बरकत से जहां आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत और नेकी की दा'वत आ़म करने का मौक़अ़ मिलता है वहीं इ़ल्मे दीन सीखने सिखाने की सआ़दत भी नसीब होती है । और राहे ख़ुदा में इ़ल्मे दीन की तलाश में निकलना सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن का मा'मूल था । बल्कि बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का इ़ल्मे दीन सीखने का जज़्बा तो ऐसा था कि घरबार की मसरूफ़िय्यत और त़वील मसाफ़त के सबब बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर इ़ल्म के मोती समेटने के लिये बारियां मुक़र्रर कर रखी थीं । जैसा कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं और मेरा एक अन्सारी पड़ोसी बनू उमय्या बिन ज़ैद (के मह़ल्ले) में रहते थे जो मदीनए पाक की बुलन्दी पर था, हम बारी बारी सरकारे वाला तबार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होते थे एक दिन वोह मदीनए मुनव्वरा जाते और वापस आ कर उस दिन की वह़ी का ह़ाल मुझ को बता देते और एक दिन मैं जाता और आ कर उस दिन की वह़ी की ख़बर का ह़ाल उन को बतलाता ।

(صحیح بخاری ج ۱ ص ۵۰ حدیث ۸۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी हर माह कम अज़् कम तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में ज़रूर सफ़र करना चाहिये । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले की बरकत से जहां इ़ल्म की दौलत नसीब होती है वहीं हमें इ़ल्मे दीन दूसरों को सिखाने का मौक़अ़ मिलेगा वहीं हमें नेकी की दा'वत फैलाने, मुसलमानों को नमाज़ रोज़े की दा'वत देने और फ़िक्रे आख़िरत की त़रफ़ माइल करने का सवाब भी मिलेगा । तो निय्यत कर लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हर माह मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करेंगे । मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की बड़ी बरकतें हैं । तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार सुनते हैं ।

जोड़ों की बीमारी भी गई और बे रोज़गारी भी गई

एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मेरी एक त़रफ़ बे रोज़गारी थी तो दूसरी त़रफ़ जोड़ों के दर्द की पुरानी बीमारी थी, तंगदस्ती और शदीद दर्द के बाइस सख़्त बेज़ारी थी, बहुत इलाज करवाया मगर कुछ फ़ाइदा न हुवा । किसी इस्लामी भाई ने इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए ज़ेहन बना कर दा'वते इस्लामी के आ़शिक़ाने रसूल के सुन्नतों की तर्बिय्यत के मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र की तरकीब बना दी । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र और आ़शिक़ाने रसूल की शफ़्क़त भरी सोह़बत की बरकत से मेरी बरसों पुरानी जोड़ों की बीमारी बिल्कुल सह़ीह़ हो गई । मदनी क़ाफ़िले से वापसी पर दूसरे ही दिन एक इस्लामी भाई आए और उन्हों ने मुझे काम पर लगा कर मेरे रोज़गार की तरकीब भी बना दी । येह बयान देते हुवे اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ एक साल से ज़ियादा अ़र्सा गुज़र चुका है मेरा काम एक दिन भी बन्द नहीं हुवा और दर्द भी पलट कर नहीं आया ।

जोड़ जोड़ आप के, हों अगर दुख रहे कर के हिम्मत चलें, क़ाफ़िले में चलो
तंग दस्ती मिटे, रिज़्क़ सुथरा मिले दर करम के खुलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।

(مشکوٰۃ المصابیح، ج ۱ ص ۵۵ حدیث ۱۷۵ دار الکتب العلمیۃ بیروت)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

नाख़ुन काटने के मदनी फूल

आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **के रिसाले "101 मदनी फूल" से नाख़ुन काटने के चन्द मदनी फूल सुनते हैं :**

﴾1﴿ जुमुआ़ के दिन नाख़ुन काटना **मुस्तह़ब** है । हां अगर ज़ियादा बढ़ गए हों तो जुमुआ़ का इन्तिज़ार न कीजिये (دُرِّمُختار ج۹ص۶۶۸) **सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा** मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है कि जो **जुमुआ़** के रोज़ नाख़ुन तरशवाए (काटे) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को दूसरे जुमुआ़ तक बलाओं से महफ़ूज़ रखेगा और तीन दिन ज़ाइद या'नी दस दिन तक । एक रिवायत में येह भी है कि जो जुमुआ़ के दिन नाख़ुन तरशवाए (काटे) तो **रह़मत आएगी और गुनाह जाएंगे ।**

(دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج۹ص۶۶۸، بہارِشریعت حصّہ۱۶ص۲۲۶، ۲۲۵)

﴾2﴿ हाथों के नाख़ुन काटने के मन्क़ूल त़रीक़े का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : पहले सीधे हाथ की शहादत की उंगली से शुरूअ़ कर के तरतीब वार छुंगलिया (या'नी छोटी उंगली) समेत नाख़ुन काटे जाएं मगर अंगूठा छोड़ दीजिये । अब उलटे हाथ की छुंगलिया (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाख़ुन काट लीजिये । अब आख़िर में सीधे हाथ के अंगूठे का नाख़ुन काटा जाए । (دُرِّمُختار ج۹ص۶۷۰، اِحیاءُ الْعُلُوم ج۱ص۱۹۳) ﴾3﴿ पाउं के नाख़ुन काटने की कोई तरतीब मन्क़ूल नहीं, बेहतर येह है कि सीधे पाउं की छुंगलिया (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाख़ुन काट लीजिये फिर उलटे पाउं के अंगूठे से शुरूअ़ कर के छुंगलियां समेत नाख़ुन काट लीजिये । (ऐज़न) ﴾4﴿ जनाबत की ह़ालत (या'नी ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने की सूरत) में नाख़ुन काटना मकरूह है । (عالمگیری ج ۵ ص۳۵۸) ﴾5﴿ दांत से नाख़ुन काटना मकरूह है और इस से बर्स या'नी **कोढ़** के मरज़ का अन्देशा है । (ऐज़न) ﴾6﴿ नाख़ुन काटने के बा'द इन को दफ़्न कर दीजिये और अगर इन को फेंक दें तो भी ह़रज नहीं । (ऐज़न)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है :

"یَا اَیُّهَا النَّاسُ اَنْجَاكُمْ یَوْمَ الْقِیَامَةِ مِنْ اَهْوَالِهَا وَمَوَاطِنِهَا اَكْثَرُكُمْ عَلَیَّ صَلَاةً فِیْ دَارِ الدُّنْیَا" या'नी ऐ लोगो ! क़ियामत के दिन उस की वह्शतों और दुश्वार गुज़ार घाटियों से नजात पाने वाला तुम में से वोह शख़्स होगा, जो दुन्या में मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता होगा।" (کنز العمال، کتاب الاذکار، باب السادس فی الصلاۃ علیہ وعلی آلہ۔۔۔۔۔۔الخ، ۱/۲۰۵، حدیث: ۲۲۲۵)

शाफ़ेए रोज़े जज़ा तुम पे करोड़ों दुरूद
दाफ़ेए जुम्ला बला तुम पे करोड़ों दुरूद

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

"نِیَّةُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(اَلْمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले ह़स्बे ह़ाल अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

बयान सुनने की निय्यतें :

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰهَ، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें :

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा । ۞ देख कर बयान करूंगा । ۞ पारह 14 सूरतुन्नह़्ल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَ لَوْ اٰيَةً "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा । ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा । ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा । ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा,

बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा । ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की हिफ़ाज़त का ज़ेह्न बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क्या बीमारी ब ज़ाते ख़ुद दवा बन सकती है ?

मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 2 जिल्दों पर मुश्तमिल किताब "**उ़यूनुल ह़िकायात**" जिल्द 1, सफ़ह़ा 367 पर है : सिलसिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या के मश्हूर बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़ासिम जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : "एक रात मुझे बड़ी बेचैनी हुई । मैं इ़बादते इलाही (عَزَّوَجَلَّ) में मश्ग़ूल रहा लेकिन सुकून मुझ से कोसों दूर था । मैं ने ख़ूब कोशिश की, कि इ़बादत में यक्सूई और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ ह़ासिल हो जाए लेकिन मैं इस कोशिश में कामयाब न हो सका । फिर मैं ने क़ुरआने पाक की तिलावत शुरूअ़ कर दी लेकिन मुझे फिर भी यक्सूई और दिली सुकून ह़ासिल न हुवा । मैं बहुत ह़ैरान था कि आख़िर आज ऐसी क्या बात है कि मुझे इ़बादते इलाही में यक्सूई ह़ासिल नहीं हो रही और मेरा सुकून मुझ से दूर हो गया है । आख़िरे कार रात के पिछले पहर मैं ने अपनी चादर कन्धे पर डाली और घर से बाहर निकल आया । कुछ दूर जा कर रास्ते में मुझे एक शख़्स नज़र आया, जो चादर में लिपटा हुवा था ।

जब मैं उस के क़रीब गया तो उस ने अपना सर उठाया और मुझ से पूछा : "तुम इतने परेशान क्यूं हो ? क्या क़ियामत बरपा हो चुकी है ?" मैं ने कहा : "क्या क़ियामत का मुक़र्ररा दिन आ गया है ?" उस शख़्स ने कहा : "नहीं, बल्कि मैं तो येह पूछ रहा हूं कि क्या तुम दिल की हलचल और बे चैनी की वज्ह से परेशान हो कर दिली सुकून ह़ासिल करने जा रहे हो ?" मैं ने कहा : "जी हां ! वाक़ेई मैं दिली सुकून ही की तलाश में बाहर निकला हूं और

येह जानना चाहता हूं कि किस वज्ह से मुझे आज रात सुकून नहीं मिल रहा ? (फिर मैं ने उस से पूछा :) "अच्छा येह बताओ ! क्या तुम्हें मुझ से कोई ह़ाजत है ?" उस शख़्स ने जवाब दिया : "हां, मुझे तुम से ह़ाजत है ।" मैं ने इस्तिफ़्सार किया : "बताओ, क्या ह़ाजत है ?" उस ने जवाब दिया : "ऐ अबू क़ासिम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ! मुझे येह बताइये, क्या कोई ऐसी सूरत भी है कि बीमारी ख़ुद ही दवा बन जाए ?" मैं ने कहा : "जी हां, एक सूरत ऐसी भी है कि बीमारी ख़ुद दवा बन जाती है । ग़ौर से सुन ! जब तू ख़्वाहिशाते नफ़्स की मुख़ालफ़त करेगा तो दिल की तमाम बीमारियां तुझ से दूर हो जाएंगी और येही बीमारियां दवा बन जाएंगी ।"

येह सुन कर उस शख़्स ने एक आहे सर्द दिले पुरदर्द से खींची और कहने लगा : "मुझे आज रात इस सुवाल का जवाब 7 मरतबा इसी त़रह़ दिया जा चुका है, लेकिन मेरी येह ख़्वाहिश थी कि मैं आप की ज़बानी अपने सुवाल का जवाब सुनूं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से मेरी येह ख़्वाहिश पूरी हो गई और मैं आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मुबारक ज़बान से अपने सुवाल का जवाब सुन चुका ।" इतना कहने के बा'द वोह शख़्स वहां से रुख़्सत हो गया और फिर दोबारा कभी नज़र न आया । (उ़यूनुल ह़िकायात, स. 194)

इस नफ़्से सितमगर को क़ाबू में मेरे कर दो
बुलवा के शहनशाहे अबरार मदीने में

(वसाइले बख़्शिश, स. 278)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि सिलसिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़ासिम जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْھَادِی ने उस शख़्स को दिल की बीमारियों का कैसा ज़बरदस्त नुस्ख़ा बताया कि जब तू ख़्वाहिशाते नफ़्स की मुख़ालफ़त करेगा तो दिल की तमाम बीमारियां तुझ से दूर हो जाएंगी और येही बीमारियां दवा भी बन जाएंगी, इस से मा'लूम होता है कि शहवतों की पैरवी और नफ़्सानी ख़्वाहिशात को पूरा

करना किस क़दर मोहलिक अमराज़ में से है कि येह दिल को गुनाहों की आलूदगियों से भर देता है, ज़रा ग़ौर फ़रमाएं कि कहीं येही वज्ह तो नहीं है कि हमारे दिल पर नेकी की बात असर नहीं करती और इबादात में दिल नहीं लगता, लिहाज़ा हमें भी इस हिकायत से दर्स हासिल करना चाहिये कि बे जा ख़्वाहिशात और इत्तिबाए़ शहवात में पड़ कर अपनी ज़िन्दगी के रोशन चराग़ को गुल करने के बजाए सुन्नतों के मुताबिक़ नेकियों वाली ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिये।

इत्तिबाए़ शहवात की ता'रीफ़

याद रखिये ! जाइज़ व ना जाइज़ की परवा किये बिग़ैर नफ़्स की हर ख़्वाहिश पूरी करने में लग जाना, इत्तिबाए़ शहवात कहलाता है।

(बातिनी बीमारियों की मा'लूमात, स. 101)

यक़ीनन शहवात के पीछे पड़ने में सरासर नुक़्सान ही नुक़्सान है, इस की नुहूसतों का अन्दाज़ा इस हदीसे पाक से भी ब ख़ूबी लगाया जा सकता है।

हलाक कर देने वाली तीन चीज़ें

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे पाक है : "3 चीज़ें हलाकत में डाल देती हैं। (1) हिर्स व तम्अ़ में गुम रहना (2) नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करना (3) बन्दे का अपने आप पर फ़ख़्र करना।" (المعجم الاوسط، الحدیث ۵۷۵۴، ج۴، ص۲۱۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम नफ़्सानी ख़्वाहिशात का क़ल्अ़ क़म्अ़ करने में कामयाब हो गए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हिर्स व तम्अ़ की आ़दते बद भी निकल जाएगी और तरह़ तरह़ के गुनाहों से भी छुटकारा नसीब होगा और यूं हमारा बातिन पाको साफ़ हो जाएगा और हमें ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ इबादात में दिल लगने की ने'मत भी हासिल हो जाएगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह अल्लाह के नबी से फ़रयाद है नफ़्स की बदी से
दिन भर खेलों में खाक उड़ाई लाज आई न ज़रों की हंसी से
शब भर सोने ही से ग़रज़ थी तारों ने हज़ार दांत पीसे
ईमान पे मौत बेहतर ओ नफ़्स तेरी नापाक ज़िन्दगी से
अल्लाह कूंएं में ख़ुद गिरा हूं अपनी नालिश करूं तुझी से

(हदाइक़े बख़्शिश, हिस्सा अव्वल, स. 145)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन्सान की ख़्वाहिशात कभी ख़त्म नहीं होतीं, दिन ब दिन ख़्वाहिशात का येह दाइरा वसीअ़ से वसीअ़ तर होता जाता है । फ़ी ज़माना इन ख़्वाहिशात की आग को बुझाने के लिये चाहे क़र्ज़ लेना पड़े या ना जाइज़ व ह़राम ज़राएअ़ इस्ति'माल करने पड़ जाएं इस की भी परवा नहीं की जाती । आइये ! इत्तिबाए शहवात की मज़म्मत में क़ुरआने पाक की चन्द आयाते मुबारका सुनते हैं ताकि हमें भी नफ़्सानी ख़्वाहिशात और इत्तिबाए शहवात की तबाह कारियां मा'लूम हों और इस से बचने की कोशिश करें । चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 16 सूरए मरयम की आयत नम्बर 59 में इरशाद फ़रमाता है :

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿۵۹﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो उन के बा'द उन की की जगह वोह ना ख़लफ़ आए जिन्हों ने नमाज़ें गंवाई (ज़ाएअ़ कीं) और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुवे तो अ़न क़रीब वोह दोज़ख़ में ग़य्य का जंगल पाएंगे ।*

ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस आयत के तह़्त नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, फ़रमाते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि अ़न क़रीब मेरी उम्मत में से अहले किताब और अहले लबन हलाक हो जाएंगे । मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अहले किताब कौन हैं ? इरशाद फ़रमाया : वोह लोग जो किताब इस लिये सीखते हैं ताकि इस के ज़रीए़ ईमान वालों से झगड़ा करें । मैं ने अ़र्ज़ की : अहले लबन कौन हैं ? इरशाद फ़रमाया : वोह लोग जो शहवात की पैरवी करते हैं और नमाज़ों को ज़ाएअ़ करते हैं । (تفسیر درمنثور ج۵، ص۵۲۷) (المستدرک علی الصحیحین، ج۳، ص۱۲۶، ح۳۴۶۹)

ह़ज़रते इब्ने अशअ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई कि बेशक वोह दिल जो दुन्या की ख़्वाहिशात के साथ मुअ़ल्लक़ (जुड़े हुवे) हैं वोह मुझ से दूर हैं । (تفسیر دُرِّ منثور ج۵، ص۵۲۶)

एक मक़ाम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ यूं इरशाद फ़रमाता है :

وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۫ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ﴿۲۷﴾

(پ۵، النساء، آیت۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और* ***अल्लाह*** *तुम पर अपनी रह़मत से रुजूअ़ फ़रमाना चाहता है और जो अपने मज़ों के पीछे पड़े हैं वोह चाहते हैं कि तुम सीधी राह से बहुत अलग हो जाओ ।*

इस आयते मुबारका का शाने नुज़ूल येह है कि यहूदो नसारा और मजूसी, भाई और बहन की बेटियों से निकाह़ ह़लाल समझते थे, जब **अल्लाह** तआ़ला ने इन से निकाह़ करने को ह़राम फ़रमाया तो वोह मुसलमानों से कहने लगे कि जिस त़रह़ आप ख़ाला और फूफी की बेटी से निकाह़ जाइज़ समझते हो जब कि ख़ाला और फूफी तुम पर ह़राम हैं, इसी त़रह़

तुम भाई और बहन की बेटियों से भी निकाह़ करो। इस पर येह आयत नाज़िल हुई कि येह लोग चाहते हैं कि तुम भी इन की त़रह़ बदकारी में पड़ जाओ। (مدارک،نساءتحت الایۃ۲۷ص۲۲۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किस त़रह़ शहवात की पैरवी करने वालों की मज़म्मत फ़रमाई कि ऐसे लोगों को जहन्नम की ग़य्य नामी वादी में डाला जाएगा, इसी त़रह़ दूसरी आयते मुबारका में मुनाफ़िक़ीन की मज़म्मत बयान फ़रमाई कि वोह लोग इत्तिबाए शहवात में पड़ कर ज़लीलो रुस्वा हुवे और अब वोह दिली बुग़्ज़ व इनाद की वज्ह से येह चाहते हैं कि मुसलमानों को भी इस आ़दते बद में मुब्तला कर दिया जाए।

फ़ी ज़माना मुसलमानों की अ़मली ह़ालत को देख कर येही अन्दाज़ा होता है कि ग़ैर मुस्लिम अक़्वाम अपनी इस नापाक साज़िश में कामयाब होती नज़र आ रही हैं। आज मुसलमान नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी में ह़द से बढ़ता जा रहा है। नफ़्स की पैरवी में मग़रिबी तहज़ीब और अग़यार की आ़दतो अत़वार से मुतअस्सिर हो कर उन जैसे काम करने में مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ फ़ख़्र महसूस करता है। मर्दों ने सुन्नतों भरा लिबास छोड़ कर पेन्ट शर्ट और सर पर हैट (टोपी) लगा कर इतरा कर चलना अपना मा'मूल बना लिया, औ़रतों ने पर्दे को ख़ैरबाद कह कर गली बाज़ारों में बे पर्दा घूमना, फ़ेशन के नाम पर तंग व चुस्त लिबास पहन कर बद निगाही का सामान बनने को गोया मा'यूब समझना ही छोड़ दिया, बच्चों की तर्बिय्यत का ह़ाल येह है कि इन्हें दीनी उ़लूम के ज़ेवर से आरास्ता करने के बजाए दुन्यवी उ़लूम व फ़ुनून सिखाए जाते हैं, अगर बच्चा ज़रा ज़हीन हो तो उसे डॉक्टर, इन्जिनियर, प्रोफ़ेसर, कोम्प्यूटर प्रोग्रामर बनाने की ख़्वाहिशें अंगड़ाई लेने लगती हैं और इस की तक्मील के लिये दीनी तर्बिय्यत से मुंह मोड़ कर

मग़रिबी तहज़ीब के नुमाइन्दा इदारों के मख़्लूत़ माहोल में ता'लीम दिलवाने में कोई आ़र महसूस नहीं की जाती बल्कि इसे "**आ'ला ता'लीम**" की ख़ातिर ग़ैर मुस्लिमों के ह़वाले करने से भी दरीग़ नहीं किया जाता और मुआ़मला येह हो गया है कि

क़ल्ब पथ्थर से भी सख़्ती में बढ़ा जाता है ख़ोल पर ख़ोल सियाही का चढ़ा जाता है
नफ़्सो शैत़ान की हर आन इत़ाअ़त पर दिल आह ! माइल मेरे अल्लाह हुवा जाता है
आ़रिज़ी आफ़ते दुन्या से तो दिल डरता है हाए बे ख़ौफ़ अ़ज़ाबों से हुवा जाता है
आह ! दौलत की ह़िफ़ाज़त में तो सब हैं कोशां ह़िफ़्ज़े ईमां का तसव्वुर ही मिटा जाता है
वल्वला सुन्नते महबूब का दे दे मालिक आह ! फ़ेशन पे मुसलमान मरा जाता है

(वसाइले बख़्शिश, स. 432-433)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम मग़रिबी तहज़ीब से जान छुड़ा कर इस्लामी ता'लीमात अपनाना चाहते हैं, फ़ेशन परस्ती को छोड़ कर सुन्नतों भरी ज़िन्दगी बसर करना चाहते हैं, अपनी इस्लाह़ और अपनी अवलाद की मदनी तर्बिय्यत और इन्हें बचपन ही से फ़िक्रे आख़िरत का ज़ेह्न देना चाहते हैं तो दा'वते इस्लामी के "मदनी माह़ोल" से वाबस्ता हो जाइये । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस मदनी माह़ोल की बरकत से बे शुमार फ़ेशन परस्त और मग़रिबी तहज़ीब के दिलदादह अफ़राद ताइब हो कर सुन्नतों की राह पर गामज़न हो गए हैं ।

अगर सुन्नतें सीखने का है जज़्बा तुम आ जाओ देगा सिखा मदनी माह़ोल
तुम्हें लुत़्फ़ आ जाएगा ज़िन्दगी का क़रीब आ के देखो ज़रा मदनी माह़ोल
यहां सुन्नतें सीखने को मिलेंगी दिलाएगा ख़ौफ़े ख़ुदा मदनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 646-647)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रिज़ाए इलाही की ख़ातिर नफ़्सानी ख़्वाहिशात को तर्क करने का ज़ेह्न बनाने के लिये इत्तिबाए़ शहवात की मज़म्मत से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़ादीसे मुबारका पेश करता हूं ताकि इस मोहलिक मरज़ से बचने में मज़ीद कामयाबी ह़ासिल हो सके। चुनान्चे,

जन्नत और दोज़ख़ तुम से क़रीब हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जन्नत तुम से इस से भी ज़ियादा क़रीब है जितना तुम्हारे जूते का तस्मा, जूते से क़रीब है और दोज़ख़ भी इसी त़रह़ है (या'नी बहुत ज़ियादा क़रीब है) हां ! जन्नत को तकालीफ़ से और दोज़ख़ को शहवतों और लज़्ज़तों से ढांप दिया गया है।" (صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب حجبت النار۔۔۔، الحدیث: ۶۴۸۷، ۴/۲۴۳)

अ़क़्लमन्द और नादान कौन ?

इसी त़रह़ सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है :

اَلْکَیِّسُ مَنْ دَانَ نَفْسَہٗ وَعَمِلَ لِمَا بَعْدَ الْمَوْتِ وَالْعاجِزُ مَنِ اتَّبَعَ نَفْسَہٗ ھَوَاھَا ثُمَّ تَمَنّٰی عَلَی اللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ

अ़क़्लमन्द और समझदार वोह है जो अपने नफ़्स का मुह़ासबा करे और मौत के बा'द वाली ज़िन्दगी के लिये अ़मल करे। और आ़जिज़ वोह है जिस ने नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (की रह़मत से जन्नत मिलने की) उम्मीद रखी। (سنن ابن ماجہ، ج۴، ص۴۹۶، ح۴۲۶۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन जन्नत ने'मतों और आसाइशों से भरपूर इन्तिहाई ख़ूब सूरत मक़ाम है मगर वहां तक पहुंचना आसान नहीं बल्कि उस की राह में इबादतों रियाज़तों और नेकियों की सूरत में इन्तिहाई दुश्वार गुज़ार घाटियां मौजूद हैं जिन को उ़बूर करना ज़रूरी है। जब कि दोज़ख़ दहशतों, तक्लीफ़ों और मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाबों की जगह है मगर उस तक रसाई

निहायत आसान है क्यूंकि जहन्नम को नफ़्सानी ख़्वाहिशात से ढांप दिया गया है तो जो शख़्स नफ़्स की नाजाइज़ ख़्वाहिशात पूरी करते हुवे अपनी ज़िन्दगी बसर करेगा तो डर है कि जहन्नम में दाख़िल कर दिया जाए। लिहाज़ा हम में से जो जन्नत में दाख़िले का मुतमन्नी और जहन्नम के अ़ज़ाब से बचने का ख़्वाहिशमन्द है (हर शख़्स को येह तमन्ना रखनी भी चाहिये) तो उसे चाहिये कि नफ़्स की मुख़ालफ़त करते हुवे नाजाइज़ ख़्वाहिशात के साथ साथ अपनी जाइज़ ख़्वाहिशों पर भी क़ाबू पाने की कोशिश करे, क्यूंकि जाइज़ ख़्वाहिशात को न दबाना ना जाइज़ ख़्वाहिशों में जा पड़ने का सबब है। आइये ! इ़ब्रत के लिये एक और ह़दीसे पाक सुनते हैं :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है रह़मते कौनैन, दुखी दिलों के चैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत और दोज़ख़ को पैदा किया तो ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام को जन्नत की त़रफ़ भेजा और इरशाद फ़रमाया : जन्नत और उस की उन ने'मतों को देखो जो मैं ने अहले जन्नत के लिये तय्यार की हैं। हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : तो ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام जन्नत में आए, जन्नत और अहले जन्नत के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तय्यार कर्दा ने'मतें देख कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : तेरे इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जो भी इस जन्नत के बारे में सुनेगा वोह ज़रूर इस में दाख़िल होने की कोशिश करेगा। पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म फ़रमाया और जन्नत को मशक़्क़तों और तकालीफ़ से ढांप दिया गया। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام से फ़रमाया : "दोबारा जाओ जन्नत और उस की ने'मतों को देखो, जो मैं ने जन्नतियों के लिये तय्यार की हैं।" हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام दोबारा जन्नत में गए तो क्या देखा कि उस को मशक़्क़तों और तकालीफ़ से ढांप दिया गया है, ह़ज़रते जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने

अल्लाह तआ़ला की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मुझे डर है कि अब इस में कोई भी दाख़िल नहीं हो सकेगा ।'' फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : ''अब दोज़ख़ की त़रफ़ जाओ और दोज़ख़ और उस के अ़ज़ाबात को देखो, जो मैं ने अहले दोज़ख़ के लिये तय्यार किये हैं ।'' ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने जा कर देखा कि दोज़ख़ (की आग) का एक ह़िस्सा दूसरे पर चढ़ रहा है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! कोई भी ऐसा नहीं जो जहन्नम (की सख़्ती) के बारे में सुने और उस में दाख़िल हो (या'नी बचने की कोशिश करेगा)'' पस **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से जहन्नम को शहवात व लज़्ज़ात के पर्दों से ढांप दिया गया । फिर **अल्लाह** तआ़ला ने जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म दिया : ''दोबारा जहन्नम की त़रफ़ जाओ ।'' जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام गए और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मुझे ख़ौफ़ है कि अब इस से कोई भी न बच पाएगा, बल्कि (शहवात में मुब्तला हो कर) इस में जा पड़ेगा ।''

(جامع الترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، باب ماجاء خفت الجنۃ.....الخ، الحدیث: ۲۵۶۹، ۴/۲۵۲)

ह़दीसे पाक की तशरीह़

ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِي इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : ''शहवात'' से मुराद वोह दुन्यावी उमूर हैं जिन के ज़रीए लज़्ज़त ह़ासिल की जाती है, ख़्वाह शरीअ़त ने इस से बिला वासित़ा मन्अ़ किया हो या इस के करने से अह़कामाते इलाही عَزَّوَجَلَّ में से किसी हुक्म का तर्क लाज़िम आता हो । नीज़ मुश्तबा (जिन में शक हो) और वोह जाइज़ व मुबाह़ काम जिन पर अ़मल के बाइस ह़राम में पड़ने का ख़ौफ़ हो, सब इस (शहवात) में दाख़िल हैं । (فتح الباری، جلد ۱۱، صفحہ ۲۷۳)

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़िया बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का

फ़रमाने ज़ीशान है : ''आदमी उस वक़्त तक मुत्तक़ी व परहेज़गार नहीं हो सकता जब तक ना जाइज़ कामों से बचने के लिये जाइज़ व मुबाह़ कामों को न छोड़ दे ।'' (المستدرک للحاکم، الحدیث:۷۹۶۹، ج۵، ص۴۵۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से मा'लूम हुवा कि तक्लीफ़ों और मशक़्क़तों के इस दरया को उ़बूर करने के बा'द ही बन्दा जन्नत में दाख़िल हो सकता है और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी को छोड़ कर ही दोज़ख़ से छुटकारा पा सकता है । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने कूफ़ा में ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : ''ऐ लोगो ! मुझे तुम पर सब से ज़ियादा लम्बी उम्मीदों और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी का ख़ौफ़ है, क्यूंकि लम्बी उम्मीदें आख़िरत को भुला देती हैं और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी ह़क़ से भटका देती है, ख़बरदार ! बेशक दुन्या पीठ फेरने वाली है और यक़ीनन आख़िरत आने वाली है और इन दोनों ही के चाहने वाले हैं, पस तुम आख़िरत के चाहने वाले बनो और दुन्या के चाहने वाले न बनो, आज अ़मल है ह़िसाब नहीं और कल (क़ियामत में) ह़िसाब होगा, अ़मल का मौक़अ़ नहीं होगा ।'' (الزھد وقصر الامل، ص:۵۸)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से क़ब्र को देख कर बहुत ज़ियादा रोने का सबब पूछा गया तो फ़रमाया : मुझे अपनी तन्हाई याद आ जाती है क्यूंकि क़ब्र में मेरे साथ लोगों में से कोई भी न होगा, (फिर नेकी की दा'वत के मदनी फूल इ़नायत करते हुवे) फ़रमाया : जिस के लिये उस की दुन्या क़ैदख़ाना है, उस के लिये उस की क़ब्र जन्नत और जिस के लिये उस की दुन्या जन्नत है उस की क़ब्र उस के लिये क़ैदख़ाना है, जिस के लिये दुन्या की ज़िन्दगी बत़ौरे क़ैद थी मौत उस की रिहाई का पैग़ाम है, जिस ने दुन्या में नफ़्सानी ख़्वाहिशात को तर्क किया वोह आख़िरत में पूरा पूरा ह़िस्सा पाएगा, बेहतर शख़्स वोह है जो कि इस से पहले कि दुन्या उसे छोड़े वोह ख़ुद दुन्या को तर्क (या'नी छोड़) चुका हो और अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से मिलने से क़ब्ल उस से राज़ी हो गया हो । हर शख़्स की क़ब्र का मुआ़मला उस की

दुन्यवी ज़िन्दगी के मुताबिक़ है या'नी नेकियों में ज़िन्दगी गुज़ारी तो क़ब्र में राहतें और अगर बदियां (गुनाह) करते हुवे मरा तो हलाकतें ही हलाकतें।

(موعظۂ حسنہ،ص۶۱۔۶۲) (नेकी की दा'वत, स. 56))

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे क़ब्र के अन्दरूनी हालात पर कितना ग़ौर फ़रमाया करते थे और दुन्या की बे सबाती और ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैरवी से किस क़दर दूर रहा करते थे, यक़ीनन येह हज़रात जानते थे कि दुन्या से दिल लगाना और इत्तिबाए शहवात में लग जाना आख़िरत के लिये ख़सारे का बाइस है मगर अफ़्सोस ! हम बारहा क़ब्रिस्तान जा कर कितने ही मुर्दों को अपने हाथों से क़ब्र में भी उतार चुके होंगे लेकिन फिर भी इ़ब्रत नहीं पकड़ते कि ख़्वाहिशात की पैरवी करने वाले और दुन्या ही को अपना सब कुछ समझने वाले आज क़ब्रों में अपनी करनी का फल भुगत रहे हैं। याद रखिये ! बाहर से ब ज़ाहिर यक्सां नज़र आने वाली क़ब्रें अन्दर से एक जैसी नहीं होतीं, किसी की क़ब्र गुलो गुलज़ार और बाग़ो बहार होती है जब कि किसी की क़ब्र सुलगती अंगार और सांप बिच्छूओं का ग़ार होती है, ज़रा इतना ही ग़ौर कर लीजिये कि नफ़्सानी ख़्वाहिशात में खो कर सिर्फ़ एक नमाज़ तर्क करने पर या एक बार झूट बोलने पर या एक बार ग़ीबत करने के सबब या एक बार बद निगाही के बाइस या एक बार गाना सुनने या एक फ़िल्म देखने या एक गाली निकालने या एक बार ग़ुस्से से बिला इजाज़ते शरई किसी को झाड़ने या एक बार दाढ़ी मुन्डाने या एक मुठ्ठी से घटाने की सज़ा में अगर पकड़ कर तंग क़ब्र के अन्दर घुप अन्धेरे और ख़ौफ़नाक तन्हाई में रख दिया जाए तो क्या गुज़रेगी ! यक़ीनन ख़ाइफ़ीन (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वालों) के लिये येह तसव्वुर ही लर्ज़ा देने वाला है। येह तो सिर्फ़ दुन्यवी तसव्वुर है वरना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी की सूरत में मरने के बा'द जिन अ़ज़ाबाते क़ब्र का सामना होगा, वोह कौन बरदाश्त कर सकेगा ? "हिल्यतुल

औलिया" में रिवायत है : "जब बन्दा क़ब्र में दाख़िल होता है तो उस को डराने के लिये वोह तमाम चीज़ें आ जाती हैं जिन से वोह दुन्या में डरता था और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से न डरता था।" (حِلْیَۃُ الْاَولیاء ج۱۰ص۱۲رقم۱۴۳۱۸)

हमारी बिगड़ी हुई आ़दतें निकल जाएं मिले गुनाहों के अमराज़ से शिफ़ा या रब !
हमेशा हाथ भलाई के वासित़े उठें बचाना ज़ुल्मो सितम से मुझे सदा या रब !
रहें भलाई की राहों में गामज़न हर दम करें न रुख़ मेरे पाउं गुनाह का या रब !
गुनाहगार त़लबगा़रे अ़फ़्वो रह़मत है अ़ज़ाब सहने का किस में है ह़ौसला या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 76-77)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़्वाहिशाते नफ़्स और इत्तिबाए़ शहवात से बचने ही में आ़फ़िय्यत है। जो लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ात़िर नफ़्सानी ख़्वाहिशात को छोड़ देते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें बत़ौरे इन्आ़म जन्नत की अबदी ने'मतों से सरफ़राज़ फ़रमाता है। चुनान्चे, पारह 30 सूरतुन्नाज़िआ़त आयत नम्बर 40-41 में इरशाद होता है :

وَ اَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَ نَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿۴۰﴾ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِیَ الْمَاْوٰى ﴿۴۱﴾

(پارہ30 سورۃُ النّٰزعٰت آیت نمبر 40۔)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह जो अपने रब के हुज़ूर ख़ड़े होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है।*

इस आयत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इत्तिबाए़ शहवात से बचने वालों की ता'रीफ़ फ़रमाई है और उन्हें जन्नत की बिशारत से भी नवाज़ा है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "नफ़्स की ख़्वाहिशों में से किसी एक ख़्वाहिश को तर्क कर देना, दिल के लिये एक साल के रोज़ों और साल भर की रातों के क़ियाम से भी ज़ियादा फ़ाइदामन्द है।" (قُوتُ القُلوب، ج۲، ص۳۳۶) (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 734)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि नफ़्सानी ख़्वाहिशात से बचने के किस क़दर फ़ज़ाइल हैं कि जो अपने ऊपर ख़्वाहिशात के दरवाज़े बन्द कर लेता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत की ने'मत से नवाज़ देता है। लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि हम इन इन्आ़मात व इकरामात से महरूम न रहें और इन के हुसूल के लिये नफ़्सानी ख़्वाहिशात से बचने की भरपूर कोशिश करते रहें। इत्तिबाए़ शहवात पर उभारने वाले कई अस्बाब हो सकते हैं, आइये ! इन में से पांच[5] अस्बाब और इन का इ़लाज ज़िक्र करता हूं ताकि इन मोहलिकात (हलाक करने वाली चीज़ों) से बचना मज़ीद आसान हो सके।

(1) जल्द असर क़बूल करने की आ़दत

किसी चीज़ की ता'रीफ़ सुन कर या किसी के पास कोई चीज़ देख कर येह ख़्वाहिश दिल में पैदा हो कि येह चीज़ मेरे पास भी होनी चाहिये (जैसे किसी का अच्छा मोबाइल, लेपटॉप (Lap Top) आई पेड (I-Pad), घर दुकान और गाड़ी वग़ैरा) इन चीज़ों को देखें तो अब हमें ख़्वाह इन की ह़ाजत हो या न हो, बस एक धुन सर पर सुवार हो जाती है कि किसी त़रह़ मैं भी येह चीज़ें ह़ासिल कर लूं, अब इन चीज़ों का हुसूल मुश्किल होने की वज्ह से येह शख़्स अपनी ख़्वाहिश को पूरा करने के लिये जाइज़ व ना जाइज़ हुदूद को पार करता चला जाता है और यूं तबाही के अ़मीक़ (या'नी गहरे) गढ़े में जा पड़ता है।

इ़लाज

इस का इ़लाज येह है कि ऐसा शख़्स अपनी ज़रूरियात और ना जाइज़ ख़्वाहिशात में तमीज़ करने की आ़दत डाले, इस ह़वाले से किसी नेक और मुख़्लिस दोस्त से मुशावरत कर ले और ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया की मज़म्मत और इस के नुक़्सानात पर ग़ौर करे और जाइज़ ख़्वाहिश के हुसूल के लिये जाइज़ ज़राएअ़ ही इख़्तियार करे।

(2) फ़ुज़ूल ख़र्ची की आ़दते बद

इसी त़रह़ इत्तिबाए़ शहवात पर उभारने का एक सबब फ़ुज़ूल ख़र्ची की आ़दते बद भी हो सकती है क्यूंकि जिस शख़्स में भी फ़ुज़ूल ख़र्ची की आ़दत

होगी वोह हर पसन्द आ जाने वाली चीज़ को ख़रीदता चला जाएगा और येह नहीं सोचेगा कि मैं जिस चीज़ को ख़रीद रहा हूं, वोह मेरे काम की भी है या नहीं और यूं ऐसा शख़्स ख़्वाहिशात की इत्तिबाअ़ में अपना कसीर माल ज़ाएअ़ करता चला जाता है ।

इलाज

इस का इलाज येह है कि बन्दा माल ख़र्च करते हुवे अपनी ज़रूरत को पेशे नज़र रखे, बिला ज़रूरत कोई चीज़ न ख़रीदे, मुमकिन हो तो फ़ुज़ूल चीज़ पर ख़र्च की जाने वाली रक़म सदक़ा कर दे । याद रखिये ! जिस जगह शरअ़न, आ़दतन या मुरुव्वतन ख़र्च करना मन्अ़ हो वहां ख़र्च करना मसलन फ़िस्क़ो फ़ुजूर व गुनाह वाली जगहों पर ख़र्च करना, अजनबी लोगों पर इस त़रह़ ख़र्च करना कि अपने अहलो इ़याल को बे यारो मददगार छोड़ देना, इसराफ़ (फ़ुज़ूल ख़र्ची) कहलाता है । (बात़िनी बीमारियों की मा'लूमात, स. 301) इसराफ़ और फ़ुज़ूल ख़र्ची ख़िलाफ़े शरअ़ हो तो ह़राम और ख़िलाफ़े मुरुव्वत हो तो मकरूहे तन्ज़ीही है । (الحدیقۃ الندیہ ج۲ص۲۸, बात़िनी बीमारियों की मा'लूमात, स. 307)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी, ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ तस्नीफ़ फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 256 पर है : मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان तफ़्सीरे नईमी जिल्द 8 सफ़ह़ा 390 पर फ़रमाते हैं : इसराफ़ की बहुत तफ़्सीरें हैं (1) ह़लाल चीज़ों को ह़राम जानना (2) ह़राम चीज़ों को इस्ति'माल करना (3) ज़रूरत से ज़ियादा खाना पीना या पहनना (4) जो दिल चाहे वोह खा पी लेना, पहन लेना (5) दिन रात में बार बार खाते पीते रहना, जिस से मे'दा ख़राब हो जाए, बीमार पड़ जाए (6) मुज़िर और नुक़्सान देह चीज़ें खाना पीना (7) हर वक़्त खाने पीने पहनने के ख़याल में रहना कि अब क्या खाऊंगा, आयिन्दा क्या पियूंगा (रूह البیان ج۳ص۱۵۴) (8) ग़फ़्लत के लिये खाना

(9) गुनाह करने के लिये खाना (10) अच्छे खाने पीने, आ'ला पहनने का आ़दी बन जाना कि कभी मा'मूली चीज़ खा पी न सके (11) आ'ला ग़िज़ाओं को अपने कमाल का नतीजा जानना। ग़रज़ येह कि इस एक लफ़्ज़ में बहुत से अह़काम दाख़िल हैं। (तफ़्सीरे नईमी जि. 8, स. 360 मर्कजुल औलिया लाहोर)

(3) दूसरों के अह़वाल में बेजा ग़ौरो फ़िक्र

इसी त़रह़ इत्तिबाए़ शहवात में पड़ने का एक सबब दूसरों के अह़वाल में बेजा ग़ौरो फ़िक्र करना है, दूसरों के आ'ला लिबास, आ़लीशान मह़ल्लात और शाहाना रह्न सह्न वग़ैरा के बारे में बेजा ग़ौरो फ़िक्र न सिर्फ़ ह़सद जैसे मोहलिक मरज़ को जनम देता है बल्कि इस से इत्तिबाए़ शहवात की आग भी दिल में भड़क उठती है, फिर ऐसा शख़्स ख़्वाहिशात की तक्मील में अन्धा हो कर तह़सीले माल के लिये नाजाइज़ ज़राएअ़ तक इख़्तियार करने लग जाता है।

इलाज

इस का इलाज येह है कि ऐसा शख़्स लोगों के अह़वाल में ग़ौरो फ़िक्र करने से परहेज़ करे, जो कुछ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे अ़त़ा फ़रमाया है, उस पर सब्रो शुक्र करे, अपने से अदना ह़ैसिय्यत वाले को देख कर शुक्र अदा करे और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن की सीरत का मुत़ालआ़ कर के इन के मा'मूलाते ज़िन्दगी में ग़ौरो फ़िक्र करे ताकि नेकी और भलाई की जानिब दिल राग़िब हो सके।

(4) अपनी इस्लाह़ से ग़फ़लत

इत्तिबाए़ नफ़्सो शैत़ान का एक सबब अपनी इस्लाह़ की जानिब तवज्जोह न देना है, कि जो शख़्स अपना मुह़ासबा नहीं करता वोह कभी भी अपनी ख़ामियों और गुनाहों पर मुत्त़लअ़ नहीं हो पाता, यूं वोह शैत़ान की पैरवी में मुब्तला हो कर गुनाह पर गुनाह करता ही रहता है।

इलाज

ऐसे शख़्स को चाहिये कि रोज़ाना अपने नफ़्स का मुहासबा करे, जिसे दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में "**फ़िक्रे मदीना**" करना कहते हैं, रात को सोने से क़ब्ल इस बात पर ग़ौर करे कि आज मैं ने कौन कौन से अच्छे आ'माल किये हैं ? और कौन कौन से बुरे अ़मल और गुनाह मुझ से सरज़द हुवे हैं ? गुनाहों पर अपने नफ़्स को मलामत करे और आयिन्दा न करने का अ़हद करे । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ाकर्दा मदनी इन्आ़मात भी नफ़्स का मुहासबा करने में बहुत मुआ़विन हैं और फिर येह कि रोज़ाना फ़िक्रे मदीना कर के हर माह मदनी इन्आ़मात का रिसाला जम्अ़ करवाना ज़ैली ह़ल्क़े के बारह[12] मदनी कामों में से एक मदनी काम भी है । मदनी इन्आ़मात पर अ़मल अपने आ'माल का मुहासबा करने ओर क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी करने का बेहतरीन ज़रीआ़ है । लिहाज़ा आप भी मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये, रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुवे मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कीजिये और हर माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से इत्तिबाए़ शैत़ान जैसे मूज़ी मरज़ और दीगर गुनाहों से भी बचने का मदनी ज़ेह्न मिलेगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

गुनाहों की नहीं जाती है आ़दत या रसूलल्लाह
तुम्हीं अब कुछ करो माहे रिसालत या रसूलल्लाह
गुनाहों से मुझे हो जाए नफ़रत या रसूलल्लाह
निकल जाए बुरी हर एक ख़स्लत या रसूलल्लाह
गुनह लम्ह़ा ब लम्ह़ा हाए ! अब बढ़ते ही जाते हैं
नहीं पर इस पे हाए कुछ नदामत या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 329)

(5) शिक्म सैरी

इसी त़रह़ इत्तिबाए़ शहवात में पड़ने का एक सबब शिकम सैरी या'नी पेट भर कर खाना भी है, क्यूंकि येह बात ज़ाहिर है कि जिस का पेट भरा हुवा हो, उस शख़्स पर शैत़ान ब आसानी ग़ालिब आ जाता है जिस की वज्ह से नेकियों में दिल नहीं लग पाता बल्कि नफ़्सानी ख़्वाहिशात जाग उठती हैं और फिर इस की वज्ह से गुनाहों में दिलचस्पी बढ़ जाती है।

जानदार बदन की आफ़्तें

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो पेट भर कर खाने का आ़दी हो जाता है, उस के बदन पर गोश्त बढ़ जाता है और जिस के बदन पर गोश्त बढ़ जाता है, वोह शहवत परस्त हो जाता है और जो शहवत परस्त हो जाता है, उस के गुनाह बढ़ जाते हैं और जिस के गुनाह बढ़ जाते हैं, उस का दिल सख़्त हो जाता है और जिस का दिल सख़्त हो जाता है वोह दुन्या की आफ़्तों और रंगीनियों में ग़र्क़ हो जाता है।

(المنبہات للعسقلانی باب الخماسی ۵۹)

पेट पर गुनाहों की यलग़ार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तश्वीश सख़्त तश्वीश की बात है कि पेट भर कर खाना, इन्सान को गुनाहों में ग़र्क़ कर देता है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الوَالِی इरशाद फ़रमाते हैं : ज़ियादा खाने से आ'ज़ा में फ़ितना पैदा होता और फ़साद बर्पा करने और बेहूदा काम कर गुज़रने की रग़बत जनम लेती है। क्यूंकि जब इन्सान ख़ूब पेट भर कर खाता है तो आंखों में बद निगाही की ख़्वाहिश पैदा होती है, कान बुरी बातें सुनने के मुश्ताक़ रहते हैं। ज़बान फ़ोह़्श गोई पर आमादा होती है, शर्मगाह शहवत रानी का तक़ाज़ा करती है, पाउं ना जाइज़ मक़ामात की त़रफ़ चल पड़ने

के लिये बे क़रार होते हैं। इस के बर अ़क्स अगर इन्सान भूका हो तो तमाम आ'ज़ाए बदन पुर सुकून रहेंगे। न तो किसी बुराई का लालच करेंगे और न बुराई को देख कर ख़ुश होंगे। ह़ज़रते उस्ताज़ अबू जा'फ़र عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْبَر का इरशादे गिरामी है : पेट अगर भूका हो तो जिस्म के बाक़ी आ'ज़ा सैर या'नी पुर सुकून होते हैं। किसी शै का मुत़ालबा नहीं करते और अगर पेट भरा हुवा हो तो दूसरे आ'ज़ा भूके रह जाने के बाइ़स मुख़्तलिफ़ बुराइयों की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं।'' (مِنْهَاجُ الْعَابِدِيْن، الفصل الخامس البطن وحفظه، ص۸۲) (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 709)

इ़लाज

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शिकम सैरी या'नी पेट भर कर खाने के बा'द गुनाहों से बचने का इ़लाज येह है कि बन्दा भूक से कम खा कर नफ़्स की शरारतों को नाकाम बनाए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल में इस बात की तरग़ीब दिलाई जाती है कि बन्दा लुक़्मए ह़राम खाने से ज़रूर बचता रहे और जाइज़ व मुबाह़ खाना भी इ़बादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करने की निय्यत से कम खाए, ताकि इ़बादत में लज़्ज़त की ने'मत नसीब हो और गुनाहों की त़रफ़ रग़बत भी न हो सके। दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में भूक से कम खाने को ''पेट का क़ुफ़्ले मदीना'' लगाना कहते हैं। इस पर अ़मल का ज़ेह्न बनाने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने 206 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल मायानाज़ तस्नीफ़ ब नाम ''पेट का क़ुफ़्ले मदीना'' तह़रीर फ़रमाई है। इस किताब के मुत़ालए़ की बरकत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप को खाने के आदाब, भूक से कम खाने के फ़वाइद, सिह़्ह़त मन्द रहने के उसूल और इस के इलावा भी बे शुमार मदनी फूल चुनने को मिलेंगे। मक्तबतुल मदीना की

किसी भी शाख़ से इस किताब को हदिय्यतन ह़ासिल किया जा सकता है इस के इ़लावा दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami. net से इस किताब को रीड (या'नी पढ़ा) भी जा सकता है, डाऊन लोड भी किया जा सकता है और प्रिन्ट आऊट भी किया जा सकता है।

ज़बां का, आंख का और पेट का क़ुफ़्ले मदीना तुम
लगा लो वरना महशर में पशेमानी बड़ी होगी

(वसाइले बख़्शिश, स. 393)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज के बयान में हम ने इत्तिबाए शहवात की तबाह कारियां सुनीं कि येह ऐसी मोहलिक (या'नी हलाक कर देने वाली) बीमारी है कि जिस की वज्ह से इन्सान तबाही व बरबादी के अ़मीक़ (गहरे) गढ़े में गिरता चला जाता है। आयाते क़ुरआनिय्या, अह़ादीसे करीमा और अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन से भी इस मूज़ी मरज़ की तबाह कारियां मा'लूम हुईं। नीज़ ख़्वाहिशाते नफ़्सानिय्या की पैरवी करने वाले को दीन की तबाही दुन्या की बरबादी, जानो माल और वक़्त की ज़ियाअ़, दाइमी ज़िल्लत व रुस्वाई, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी जैसे बड़े बड़े नुक़्सानात का सामना हो सकता है। याद रखिये ! इत्तिबाए शहवात का एक अहम सबब नेक लोगों की सोह़बत से दूरी भी है, क्यूंकि बन्दा जब ऐसे लोगों के साथ उठता बैठता है जो इत्तिबाए नफ़्स जैसी मोहलिक बीमारी में मुब्तला हों तो उस का नफ़्स भी आहिस्ता आहिस्ता असर क़बूल करने लग जाता है, और बिल आख़िर उस में भी येह मरज़ सरायत कर जाता है। लिहाज़ा हमें चाहिये कि उ़लमाए किराम व मुफ़्तियाने इ़ज़्ज़ाम और ऐसे नेक

लोगों की सोह़बत इख़्तियार करें जो नफ़्स के मक्रो फ़रेब पर वाक़िफ़ हों, इस की जाइज़ व ना जाइज़ ख़्वाहिशात में तमीज़ कर सकते हों । बद अख़्लाक़ और बुरे लोगों से अपने आप को हमेशा दूर रखें कि बुरी सोह़बत ज़हरीले सांप से भी ज़ियादा नुक़्सान देह है कि सांप तो फ़क़त़ जिस्मानी नुक़्सान पहुंचाता है मगर बुरी सोह़बत बसा अवक़ात जिस्मानी नुक़्सान के साथ साथ रूह़ानी नुक़्सान जैसे गुनाहों में मुब्तला होना, ईमान की बरबादी वग़ैरा भी पहुंचाती है ।

मजलिसे इस्लाह़ बराए क़ैदियान

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी का मुश्कबार मदनी माह़ोल अच्छी सोह़बत फ़राहम करता है, इस मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर लाखों लोग गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर नेकियों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ दीन के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त मुसलमान क़ैदियों की सुन्नतों भरी तर्बिय्यत के लिये दुन्या के कई जेलख़ानों में दा'वते इस्लामी की मजलिस ''इस्लाह़ बराए क़ैदियान'' के ज़रीए़ मदनी काम की तरकीब है । पाकिस्तान की मुतअ़द्दिद जेलों में ता'लीमे कुरआन के लिये मद्रसे क़ाइम हो चुके हैं, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तमाम जेलों में येह मदारिस क़ाइम किये जाएंगे । कई जेलों में रोज़ाना शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के रसाइल से दर्स दिया जाता है, नीज़ कई जेलों में माहाना व हफ़्तावार इजतिमाए ज़िक्रो ना'त का भी सिलसिला है । दुख्यारे क़ैदियों को दा'वते इस्लामी की मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिया के दिये हुवे ता'वीज़ात फ़ी सबीलिल्लाह पहुंचाए जाते हैं । रिहाई पाने वालों की तर्बिय्यत के लिये मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ का एहतिमाम किया जाता है । मसलन 41 दिन का मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स, 63 दिन का तर्बिय्यती कोर्स, 12 रोज़ा मदनी कोर्स, इमामत कोर्स और मुदर्रिस कोर्स वग़ैरा का भी सिलसिला है ।

मदनी महबूब की ज़ुल्फ़ों का असीर

इस मजलिस के इस्लामी भाई मश्हूर दीनी दर्सगाह जामिआ़ राशिदिय्या (पीर जोगूठ बाबुल इस्लाम सिन्ध) तशरीफ़ ले गए । बर सबीले तज़किरा जेलख़ानों में दा'वते इस्लामी के मदनी काम की बात चली तो वहां के शैख़ुल ह़दीस साह़िब कुछ इस त़रह़ फ़रमाने लगे, जेलख़ानों के मदनी काम की ताबनाक मदनी कारकर्दगी मैं ख़ुद आप को सुनाता हूं, पीर जोगूठ के नवाह़ में एक डाकू ने तबाही मचा रखी थी, मैं उस को जानता था, आए दिन पोलीस के साथ उस की आंख मिचोली जारी रहती, कई बार गिरिफ़्तार भी हुवा मगर असरो रुसूख़ इस्ति'माल कर के छूट गया । आख़िर किसी जुर्म की पादाश में बाबुल मदीना कराची की पोलीस के हथ्थे चढ़ गया, सज़ा हुई और जेल में चला गया । सज़ा काट लेने के बा'द रिहाई मिलने पर मुझ से मिलने आया । मैं पहली नज़र में उस को पहचान न सका क्यूंकि मैं ने उस को दाढ़ी मुन्डा और सर बर्हना देखा था मगर अब उस के चेहरे पर मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की निशानी नूरानी दाढ़ी जगमगा रही थी, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज अपनी बहारें लुटा रहा था, पेशानी पर नमाज़ों का नूर नुमायां नज़र आ रहा था । मेरी ह़ैरत का त़िलिस्म तोड़ते हुवे वोह बोला, क़ैद के दौरान जेल के अन्दर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल मयस्सर आ गया और आ़शिक़ाने रसूल की इनफ़िरादी कोशिश की बरकत से मैं ने गुनाहों की बेड़ियां काट कर अपने आप को मदनी महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ुल्फ़ों का असीर बना लिया ।

(आदाबे त़आ़म, स. 368)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत

ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث: ۱۷۵)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा

जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **के रिसाले "163 मदनी फूल" से मिस्वाक के मदनी फूल सुनते हैं :**

۞ **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 288 पर **सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي लिखते हैं : मशाइख़े किराम फ़रमाते हैं : जो शख़्स मिस्वाक का आ़दी हो मरते वक़्त उसे **कलिमा** पढ़ना नसीब होगा और जो **अफ़्यून** खाता हो मरते वक़्त उसे **कलिमा** नसीब न होगा ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि **मिस्वाक** में दस ख़ूबियां हैं : मुंह साफ़ करती, मसूढ़े को मज़बूत़ बनाती है, बीनाई बढ़ाती, बलग़म दूर करती है, मुंह की बदबू ख़त्म करती और सुन्नत के मुवाफ़िक़ है, फ़िरिश्ते ख़ुश होते हैं, रब राज़ी होता है, नेकी बढ़ाती और मे'दा दुरुस्त करती है। (جَمْعُ الْجَوَامِع لِلسُّيُوطِی ج۵ ص۲۴۹ حدیث ۱۴۸۶۷)

۞ मिस्वाक पीलू या ज़ैतून या नीम वग़ैरा कड़वी लकड़ी की हो ۞ मिस्वाक की मोटाई छुंगलिया या'नी छोटी उंगली के बराबर हो ۞ मिस्वाक एक बालिश्त से ज़ियादा लम्बी न हो वरना उस पर शैत़ान बैठता है ۞ इस के रेशे नर्म हों कि सख़्त रेशे दांतों और मसूढ़ों के दरमियान ख़ला (GAP) का बाइ़स बनते हैं ۞ मिस्वाक ताज़ा हो तो ख़ूब (या'नी बेहतर) वरना कुछ देर पानी के

गिलास में भिगो कर नर्म कर लीजिये ۞ मुनासिब है कि इस के रेशे रोज़ाना काटते रहिये कि रेशे उस वक़्त तक कार आमद रहते हैं जब तक उन में तल्ख़ी बाक़ी रहे ۞ दांतों की चौड़ाई में मिस्वाक कीजिये ۞ जब भी मिस्वाक करनी हो कम अज़ कम तीन बार कीजिये ۞ हर बार धो लीजिये ۞ मिस्वाक सीधे हाथ में इस त़रह़ लीजिये कि छुंगलिया या'नी छोटी उंगली इस के नीचे और बीच की तीन उंगलियां ऊपर और अंगूठा सिरे पर हो ۞ पहले सीधी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर उलटी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर सीधी त़रफ़ नीचे फिर उलटी त़रफ़ नीचे मिस्वाक कीजिये ۞ मुट्ठी बान्ध कर मिस्वाक करने से बवासीर हो जाने का अन्देशा है ۞ मिस्वाक वुज़ू की सुन्नते क़ब्लिया है अलबत्ता **सुन्नते मुअक्कदा** उसी वक़्त है जब कि मुंह में बदबू हो।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. **1**, स. **623**)

۞ मिस्वाक जब ना क़ाबिले इस्ति'माल हो जाए तो फेंक मत दीजिये कि येह आलए अदाए सुन्नत है, किसी जगह एह़तियात़ से रख दीजिये या दफ़्न कर दीजिये या पथ्थर वग़ैरा वज़्न बांध कर समन्दर में डुबो दीजिये।

(तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 294 ता 295 का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये)

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब (1) 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 (2) 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

या ख़ुदा ! निकलूं मैं मदनी क़ाफ़िलों के साथ काश !
सुन्नतों की तर्बिय्यत के वासित़े फिर जल्द तर !!

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने क़ुरआने पाक पढ़ा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द की और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ा, नीज़ अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत त़लब की तो उस ने भलाई को अपनी जगह से तलाश कर लिया। (شعب الایمان للبیھقی ۲/۳۷۳، حدیث: ۲۰۸۴)

या नबी ! बेकार बातों की हो आ़दत मुझ से दूर
बस दुरूदे पाक की हो ख़ूब कसरत या रसूल !

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج ۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

बयान सुनने की निय्यतें :

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें :

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा । ۞ देख कर बयान करूंगा । ۞ पारह 14 सूरतुन्नह्ल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा । ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा । ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा । ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा, बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा । ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेहन बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सूरए यासीन की बरक्त

एक मरतबा इमाम नासिरुद्दीन बसती رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बीमार हुवे और इसी बीमारी में आप पर सकता त़ारी हो गया, अइ़ज़्ज़ा व अक़रिबा (या'नी क़रीबी रिश्तेदारों) ने मुर्दा तसव्वुर कर के तजहीज़ो तक्फ़ीन के बा'द तदफ़ीन कर दी, क़ब्र में रात के वक़्त जब आप को होश आया तो ख़ुद को मदफ़ून पा कर सख़्त मुतह़य्यिर (ह़ैरान) हुवे। इसी ह़ैरत व इज़्त़िराब में आप को याद आया कि जो शख़्स ब ह़ालते परेशानी चालीस[40] मरतबा सूरए यासीन शरीफ़ पढ़ता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की मुसीबत को दूर फ़रमा देता है और तंगी फ़राख़ी से बदल जाती है। चुनान्चे आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने सूरए यासीन की तिलावत शुरूअ़ कर दी, अभी आप ने उन्तालीस[39] मरतबा ही पढ़ी थी कि एक कफ़न चोर ने कफ़न चुराने की निय्यत से आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की क़ब्र खोदना शुरूअ़ की, आप ने अपनी मोमिनाना फ़िरासत से जान लिया कि येह कफ़न चोर है, लिहाज़ा चालीसवीं मरतबा बहुत धीमी आवाज़ से पढना शुरूअ़ किया, ताकि वोह न सुन सके, इधर आप ने चालीसवीं मरतबा पूरा किया, उधर कफ़न चोर भी अपना काम पूरा कर चुका था, आप उठ कर क़ब्र से बाहर आए, ख़ौफ़ के मारे कफ़न चोर का दिल फट गया और वोह चल बसा, इमाम नासिरुद्दीन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़याल हुवा कि अगर मैं फ़ौरन शहर चला जाऊं तो लोगों को सख़्त परेशानी व ह़ैरत व हैबत होगी। चुनान्चे आप रात को ही शहर में गए और हर मह़ल्ले के दरवाज़े के आगे पुकारते थे कि मैं नासिरुद्दीन बसती (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) हूं, तुम लोगों ने मुझे सकते की ह़ालत में देख कर ग़लत़ी से मुर्दा तसव्वुर किया और दफ़्न कर दिया था, मैं ज़िन्दा हूं। इस वाक़िए़ के बा'द इमाम नासिरुद्दीन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने क़ुरआने करीम की तफ़्सीर लिखी।"

(فوائد الفواد، مترجم ص ۱۳۹)

फ़िल्मों से डिरामों से दे नफ़रत तू इलाही
बस शौक़ मुझे ना'तो तिलावत का ख़ुदा दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 114)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि तिलावते क़ुरआने करीम की कैसी बरकतें हैं कि जब इमाम नासिरुद्दीन बसती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को होश आया और उन्हों ने ख़ुद को मदफ़ून पाया तो इस परेशानी के आ़लम में आप ने सूरए यासीन शरीफ़ की तिलावत शुरूअ़ कर दी, जिस की बरकत येह ज़ाहिर हुई कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ग़ैब से आप की नजात के अस्बाब पैदा फ़रमा दिये और यूं आप ज़िन्दा सलामत क़ब्र से बाहर तशरीफ़ ले आए और आप की जान बच गई । यक़ीनन क़ुरआने मजीद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बहुत ही प्यारी ने'मत और रह़मतों और बरकतों वाली किताब है, जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दों की रहनुमाई और इन की फ़लाह़ो कामरानी के लिये सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ल्बे मुनीर पर नाज़िल फ़रमाई । इस की अ़ज़मत के लिये इतना ही काफ़ी है कि येह कलामुल्लाह है (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का प्यारा प्यारा कलाम है), येह मुबारक किताब हर ए'तिबार से कामिल है, इसे उतारने वाला **रब्बुल आ़लमीन** है तो लाने वाले **रुहुल अमीन** (ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام) हैं, जिन पर नाज़िल हुई वोह **रह़मतुल्लिल आ़लमीन** हैं तो जिस उम्मत के लिये आई वोह सब उम्मतों में **बेहतरीन** है, जिस ज़बान में उतरी वोह **अ़रबिये मुबीन** है तो जिस महीने में आई वोह तमाम महीनों में **मुअ़ज़्ज़ज़** है, जिस रात में नाज़िल हुई वोह **अफ़्ज़ल तरीन** है तो जिन जगहों में उतरी वोह आ'ला तरीन हैं । क़ुरआने करीम वह़िये इलाही है, येह क़ुर्बे ख़ुदावन्दी का ज़रीआ़ है, रहती दुन्या तक के लिये नुस्ख़ए कीमिया है, तमाम आस्मानी किताबों का लुब्बे लुबाब है, तमाम

उ़लूम का सर चश्मा है, येह हिदायत का मजमूआ़, रह़मतों का ख़ज़ीना और बरकतों का मम्बअ़ है, येह ऐसा दस्तूर है जिस पर अ़मल पैरा हो कर तमाम मसाइल ह़ल किये जा सकते हैं, ऐसा नूर है, जिस से गुमराही के तमाम अन्धेरे दूर किये जा सकते हैं, ऐसा रास्ता है, जो सीधा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और जन्नत तक ले जाता है इस्लाह़ व तर्बिय्यत का ऐसा निज़ाम है, जो इन्सान का तज़किया कर के (या'नी इन्सान को पाक कर के) उसे मिसाली बना देता है, ऐसा दरख़्त है जिस के साए में बैठने वाला क़ल्बी सुकून महसूस करता है, ऐसा बा वफ़ा साथी है, जो क़ब्र में भी साथ निभाता है और ह़श्र में भी वफ़ा का ह़क़ अदा करेगा । इस में बीमार दिलों के लिये शिफ़ा है, जिस ने इसे मज़बूती से थामा, वोह हिदायत याफ़्ता हो गया, जिस ने इस पर अ़मल किया वोह फ़लाहे दारैन (या'नी दुन्या व आख़िरत में कामयाबी) पा गया ।

मुझ को रोज़ाना तिलावत की भी तू तौफ़ीक़ दे
क़ारिये क़ुरआं बना और ख़ादिमे क़ुरआं बना

सब से अच्छी किताब

ख़ुद **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त पारह 23 सूरतुज़्ज़ुमर आयत नम्बर 23 में कुरआने करीम की मद्ह़ (या'नी ता'रीफ़) में फ़रमाता है कि

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِیْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِیَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह ने उतारी सब से अच्छी किताब कि अव्वल से आख़िर तक एक सी है दोहरे बयान वाली ।

तफ़्सीरे ख़ाज़िन में कुरआने पाक के अह़सनुल ह़दीस (या'नी सब से अच्छी किताब) होने की दो सूरतें बयान की गई हैं : (1) लफ़्ज़ के ए'तिबार से और (2) मा'ना के ए'तिबार से ।

(1) लफ़्ज़ के ए'तिबार से इस त़रह़ कि क़ुरआने करीम फ़साह़तो बलाग़त के सब से ऊंचे दरजे पर फ़ाइज़ है, न येह अश्आ़र की जिन्स से है और न ही अ़वामी ख़ुत़बों और रसाइल की त़र्ज़ पर है बल्कि येह कलाम की एक ऐसी क़िस्म है, जो अपने उस्लूब में सब से जुदा है।

(2) मा'ना के ए'तिबार से यूं कि क़ुरआने मजीद में कहीं भी तआ़रुज़ (या'नी टकराव) और इख़्तिलाफ़ नहीं और इस में माज़ी की ख़बरें, अगलों के वाक़िआ़त, ग़ैब की कसीर ख़बरें, वा'दा व वईद और जन्नत व दोज़ख़ का बयान है? (तफ़्सीरे ख़ाज़िन, पारह 23, अज़्ज़ुमर, तह़्तुल आयत : 23, 4/53)

ह़दीस शरीफ़ में है कि **अस-दक़ुल ह़दीसि किताबुल्लाह** या'नी सब से सच्ची ह़दीस किताबुल्लाह है। (شعب الایمان ۴/۲۰۰، حدیث ۴۷۸۶ ملتقطاً)

एक और ह़दीस शरीफ में है **ख़ैरुल ह़दीसि किताबुल्लाह** या'नी बेहतरीन ह़दीस किताबुल्लाह है। (صحیح مسلم، ص ۴۳۰، حدیث ۸۶۷ ملتقطا)

क़ुरआने पाक की ता'लीमात को इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों नीज़ मदनी मुन्नों और मदनी मुन्नियों में आ़म करने वाली आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के बानी व अमीर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बारगाहे ख़ुदावन्दी में दुआ़ करते हैं :

हर रोज़ मैं क़ुरआन पढ़ूं काश ख़ुदाया!
अल्लाह! तिलावत में मेरे दिल को लगा दे

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : ह़दीस के मा'ना मुत़लक़न बात और कलाम है, लिहाज़ा इस मा'ना से क़ुरआन भी ह़दीस है और लोगों के कलाम भी, मगर इस्ति़लाह़ में सिर्फ़ हुज़ूर के फ़रमान और काम को ह़दीस कहा जाता है। यहां लुग़वी मा'ना में है, **अल्लाह** का कलाम तमाम कलामों पर ऐसा ही बुज़ुर्ग है जैसे ख़ुद परवर दगार अपनी मख़्लूक़ पर।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1/146)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी आप ने क़ुरआने करीम के फ़ज़ाइलो कमालात समाअ़त फ़रमाए, वाक़ेई क़ुरआने करीम की अ़ज़मत व रिफ़्अ़त का अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता, इस का पढ़ना इबादत, इस का सुनना इबादत, इस को छूना इबादत ह़त्ताकि इसे देखना भी इबादत है, येह मुक़द्दस कलाम रह़मतों और बरकतों से भरपूर है। आइये ! पहले इस मुक़द्दस किताब से मह़ब्बत करने वालों के फ़ज़ाइल सुनते हैं। चुनान्चे

अल्लाह और उस के रसूल से मह़ब्बत की पहचान का त़रीक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जिसे येह जानना पसन्द हो कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करता है तो वोह देखे कि अगर वोह क़ुरआन से मह़ब्बत करता है (या'नी इस की तिलावत और इस पर अ़मल करता है। शर्हुश्शिफ़ा लिल मुल्ला अ़ली क़ारी) तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से भी मह़ब्बत करता है।

(المعجم الکبیر للطبرانی ۹/۱۳۲ الحدیث: ۸۶۵۷)

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत की अ़लामत क़ुरआन से मह़ब्बत करना है, क़ुरआन से मह़ब्बत की अ़लामत नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करना है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत की अ़लामत सुन्नत (या'नी आप की अह़ादीस और अह़वाल वग़ैरा) से मह़ब्बत करना है, सुन्नत से मह़ब्बत की अ़लामत आख़िरत से मह़ब्बत करना है, आख़िरत से मह़ब्बत की अ़लामत दुन्या से बुग़्ज़ रखना है और दुन्या से बुग़्ज़ की अ़लामत येह है कि इस से ब क़दरे ज़रूरत लिया जाए और इतनी मिक़्दार ली जाए जो आख़िरत तक पहुंचा दे। (الشفاء بتعریف حقوق المصطفی، جزء ثانی ص ۲۸)

''जामिउ़ल उ़लूम वल ह़िकम'' में है : मह़ब्बत करने वालों के नज़्दीक कोई चीज़ मह़बूब के कलाम से ज़ियादा शीरीं और लज़ीज़ नहीं होती, मह़बूब

का कलाम उन के दिलों के लिये कैफ़ो सुरूर का बाइस होता है और येही उन के मक़्सूद व मत़्लूब की इन्तिहा हो जाता है।(جامع العلوم والحکم ٤٠٢)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि कुरआने करीम से महब्बत करना कितनी अहम्मियत का ह़ामिल है कि कुरआन से महब्बत को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत की अ़लामत क़रार दिया जा रहा है और कुरआने पाक से महब्बत की अ़लामत इस की तिलावत के साथ साथ इस पर अ़मल करना भी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तिलावते कुरआन को अपना मा'मूल बनाने और इस की महब्बत दिल में बढ़ाने के लिये 72 मदनी इन्आ़मात में से मदनी इन्आ़म नम्बर 21 में इरशाद फ़रमाते हैं "क्या आज आप ने **कन्ज़ुल ईमान** से कम अज़ कम तीन आयात (मअ़ तर्जमा व तफ़्सीर) तिलावत करने या सुनने की सआ़दत ह़ासिल की ?" लिहाज़ा हमें भी अपनी येह आ़दत बनानी चाहिये कि रोज़ाना **कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ मअ़ तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान या सिरात़ुल जिनान** से मअ़ तर्जमा व तफ़्सीर ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र के साथ कुरआने करीम की तिलावत किया करें, इस त़रह़ मदनी इन्आ़म पर अ़मल के साथ साथ तिलावत की ढ़ेरों भलाइयां और बरकतें भी नसीब होंगी और अ़मल का जज़्बा भी पैदा होगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

कन्ज़ुल ईमां ऐ ख़ुदा मैं काश रोज़ाना पढ़ूं
पढ़ के तफ़्सीर इस की फिर इस पर अ़मल करता रहूं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन वोह लोग बहुत ख़ुश नसीब हैं जो कुरआने करीम से महब्बत करते हैं और इस की तिलावत करने के साथ

साथ इस पर अ़मल भी करते हैं, मगर अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस हमारे मुआ़शरे में एक भारी ता'दाद ऐसे लोगों की भी है जो क़ुरआने पाक से कोसों दूर है और महीनों गुज़र जाने के बा वुजूद भी उन्हें तिलावत की तौफ़ीक़ नसीब नहीं होती, येही वज्ह है कि आज हमें त़रह़ त़रह़ की परेशानियों का सामना है, नाचाक़ियों ना इत्तिफ़ाक़ियों और बे रोज़गारियों ने बुरी त़रह़ हमें अपनी लपेट में ले रखा है, हम में से तक़रीबन तमाम ही के घरों में क़ुरआने करीम मौजूद होगा और येह सआ़दत की बात भी है, लेकिन हम गोया रख कर भूल गए हैं और कभी खोल कर देखते तक नहीं, ह़ालांकि घरों में तिलावते क़ुरआने करीम करने की बहुत फ़ज़ीलत है। चुनान्चे

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जिस घर में क़ुरआन पढ़ा जाता है वोह अपने रहने वालों पर कुशादा होता है, उस की भलाई कसीर होती है, उस में फ़िरिश्ते ह़ाज़िर होते और शयात़ीन उस से निकल जाते हैं और जिस घर में क़ुरआन नहीं पढ़ा जाता, वोह अपने रहने वालों पर तंग हो जाता है, उस की भलाई कम हो जाती है, उस से फ़िरिश्ते निकल जाते और शयात़ीन आ जाते हैं।" (احیاء العلوم (مترجم)، ج۱، ص۸۲۶)

अमीरे अहले सुन्नत अपनी तमन्ना का इज़्हार फ़रमाते हैं :

इलाही ख़ूब दे दे शौक़ क़ुरआं की तिलावत का
शरफ़ दे गुम्बदे ख़ज़रा के साए में शहादत का

नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरदारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है : तुम क़ुरआन से तअ़ल्लुक़ बाक़ी रखो, इस को मुस्तक़िल पढ़ते रहो, सो क़सम है उस की, जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, यक़ीनन क़ुरआन ज़ियादा छूटने पर आमादा है, उन ऊंटों से, जो अपनी रस्सियों से बन्धे हों ? (صحیح البخاری ج۳ ص ۴۱۲ حدیث۵۰۳۳) लिहाज़ा मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो ! क़ुरआने पाक के ह़क़ीक़ी आ़शिक़ बन जाइये, इस से

सच्ची लौ लगा लीजिये, इस की रोज़ाना तिलावत को अपना मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फिर इस की रह़मतें और बरकतें हमें भी नसीब होंगी, घर से परेशानियां दूर होंगी, रिज़्क़ में बरकत होगी और اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तमाम मुआ़मलात आसान और ह़ल होते चले जाएंगे।

अमीरे अहले सुन्नत लिखते हैं :

तिलावत की तौफ़ीक़ दे दे इलाही

गुनाहों की हो दूर दिल से सियाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये अब तिलावते क़ुरआने करीम की अ़ज़मतों और फ़ज़ीलतों के बारे में कुछ सुनते हैं ताकि हमारे दिलों में भी क़ुरआने पाक की अहम्मिय्यत और रोज़ाना पाबन्दी से इस की तिलावत की त़रफ़ रग़बत पैदा हो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 22 सूरतुल फ़ातिर आयत 29 में इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ عَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ﴿۲۹﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जो* **अल्लाह** *की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं पोशीदा और ज़ाहिर, वोह ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं, जिस में हरगिज़ टोटा (नुक़्सान) नहीं।*

तफ़्सीरे बग़वी में इस आयते मुबारका के तह़त मज़कूर है कि "**तिजारतन**" से मुराद वोह सवाब है जिस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वा'दा फ़रमाया है, इस में हरगिज़ टोटा नहीं, या'नी येह अज्र न फ़ासिद होगा न हलाक होगा। (تفسیر بغوی ج۳ ص ۴۹۲) गोया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ारिईने क़ुरआने

करीम (या'नी कुरआने पाक की तिलावत करने वालों) को अज्रे अ़ज़ीम की बिशारत अ़ता फ़रमा रहा है।

एक और मक़ाम पर तिलावत करने वालों की मद्हो सना में यूं इरशाद होता है :

اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖؕ اُولٰٓىٕكَ یُؤْمِنُوْنَ بِهٖؕ وَ مَنْ یَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ۠(۱۲۱)

(پ۱، البقرۃ، آیت ۱۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जिन्हें हम ने किताब दी है, वोह जैसी चाहिये, इस की तिलावत करते हैं, वोही इस पर ईमान रखते हैं और जो इस के मुन्किर हों तो वोही ज़ियांकार (नुक़्सान उठाने वाले) हैं।*

ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि इस आयत में اُولٰٓىٕكَ یُؤْمِنُوْنَ بِهٖؕ या'नी वोही इस पर ईमान रखते हैं से मुराद नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वोह अस्ह़ाब हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की आयात पर ईमान लाए और इन की तस्दीक़ की। (تفسیر درمنثور، ج۱، ص ۲۷۳) मा'लूम हुवा कि कुरआने पाक की तिलावत करना, ईमान वालों का ह़िस्सा और इन्हीं का ख़ास्सा है।

इस आयत के तह़्त मक्तबतुल मदीना से छपने वाली अ़ज़ीम और आ़म फ़ह्म तफ़्सीर "सिरातुल जिनान" जिल्द 1 सफ़ह़ा 200 पर है :

क़ुरआन मजीद के हुक़ूक़

इस से येह भी मा'लूम हुवा कि किताबुल्लाह के बहुत से हुक़ूक़ भी हैं। कुरआन का ह़क़ येह है कि इस की ता'ज़ीम की जाए, इस से मह़ब्बत की जाए, इस की तिलावत की जाए, इसे समझा जाए, इस पर ईमान रखा जाए, इस पर अ़मल किया जाए और इसे दूसरों तक पहुंचाया जाए।

इसी त़रह़ अह़ादीसे मुबारका में भी तिलावते कुरआने करीम के बे शुमार फ़ज़ाइल मौजूद हैं। चुनान्चे इस ज़िम्न में चार[4] फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनिये :

(1) क़ुरआने करीम की तिलावत किया करो कि येह क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों की शफ़ाअ़त करने के लिये आएगा।

(صحیح مسلم، کتاب فضائل القرآن، ص۴۰۳ح۸۰۴)

(2) ह़दीसे क़ुदसी है कि, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "जिसे तिलावते क़ुरआन मुझ से मांगने और सुवाल करने से मश्ग़ूल (रोक) रखे, मैं उसे शुक्र गुज़ारों के सवाब से अफ़्ज़ल अ़त़ा फ़रमाऊंगा।"

(کنز العمال ج۱ص۲۷۳، ح: ۲۴۳۷)

(3) तीन क़िस्म के लोग बरोज़े क़ियामत सियाह कस्तूरी के टीलों पर होंगे, उन्हें किसी क़िस्म की घबराहट न होगी, न उन से ह़िसाब लिया जाएगा यहां तक कि लोग ह़िसाब से फ़ारिग़ हों। (उन में से एक) वोह शख़्स है जिस ने रिज़ाए इलाही के लिये क़ुरआने करीम की तिलावत की और लोगों की इमामत की जब कि वोह उस से ख़ुश हों।" (شعب الایمان ج۲ص۳۴۸ح: ۲۰۰۲)

(4) अहले क़ुरआन (या'नी इस की तिलावत करने वाले और इस के अह़कामात पर अ़मल करने वाले) (اتحاف السادۃ المتقین ج۵ص۱۳) **अल्लाह** वाले और उस के ख़ास लोग हैं। (سنن ابن ماجہ ج۱ص۱۴۰ح: ۲۱۵)

अल्लाह ! मुझे ह़ाफ़िज़े क़ुरआन बना दे
क़ुरआन के अह़काम पे भी मुझ को चला दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 113)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि क़ुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद की तिलावत की कैसी कैसी बरकतें हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ुद ऐसों की मद्ह़ सराई (या'नी ता'रीफ़) फ़रमा रहा है, नीज़ अह़ादीसे करीमा में भी इन के कसीर फ़ज़ाइल वारिद हुवे हैं कि क़ुरआने करीम की तिलावत करने वालों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ास बन्दे फ़रमाया गया, नीज़

जिस शख़्स ने रिज़ाए इलाही के लिये क़ुरआने करीम की तिलावत की होगी, बरोज़े क़ियामत उसे न तो किसी क़िस्म की घबराहट होगी और न ही उन से हिसाब लिया जाएगा । ज़रा ग़ौर तो फ़रमाइये कि इतने इन्आ़मात व इकरामात के बा वुजूद इस कलामे मजीद की तिलावत न करना कैसी महरूमी की बात है ।

जब कि हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام को तिलावते क़ुरआने करीम का ऐसा शग़फ़ था कि वोह एक एक आयते मुबारका में ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र करते और इन्तिहाई ज़ौक़ो शौक़ के साथ तिलावत किया करते । चुनान्चे एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं मैं एक सूरत शुरूअ़ करता हूं और उस में ऐसी बात का मुशाहदा करता हूं कि सुब्ह़ तक खड़ा रहता हूं और वोह सूरत मुकम्मल नहीं होती (احیاء العلوم ص۸۵۲) एक और बुज़ुर्ग के बारे में मन्क़ूल है, फ़रमाते हैं : जिस आयते मुबारका को मैं समझे बिग़ैर बे तवज्जोगी से पढ़ता हूं, उसे बाइ़से सवाब नहीं समझता । (احیاء العلوم ص۸۵۲) ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान दारानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं क़ुरआने करीम की कोई आयत पढ़ता हूं तो चार पांच रातें इसी में ग़ौरो फ़िक्र करते गुज़र जाती हैं अगर मैं ख़ुद इस में ग़ौरो फ़िक्र करना न छोड़ूं तो दूसरी आयत की नौबत ही न आए । (احیاء العلوم ص۸۵۲) अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इस कसरत से तिलावत फ़रमाते थे कि इस के सबब आप के पास दो मुस्ह़फ़ शरीफ़ (क़ुरआने करीम) शहीद हो गए थे, कई सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان देख कर क़ुरआने पाक पढ़ते और कोई दिन क़ुरआने पाक को देखे बिग़ैर गुज़ारना नापसन्द करते थे ।

(احیاءالعلوم، ص۸۴۳)

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़ाने क़ुरआन का सदक़ा, हमें आ़शिक़े क़ुरआन बना दे, काश ! क़ुरआन देखे बिग़ैर और क़ुरआन पढ़े बिग़ैर हमें चैन ही न आए । आमीन

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये तिलावते क़ुरआन सब से बेहतर इबादत है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

''اَفْضَلُ عِبَادَةِ اُمَّتِیْ قِرَاءَةُ الْقُرْاٰنِ'' या'नी मेरी उम्मत की अफ़्ज़ल इबादत तिलावते क़ुरआन है ।''(شعب الایمان للبیہقی ج۲ ص۳۵۴ح۲۰۲۲) लिहाज़ा इस की तिलावत से जी नहीं चुराना चाहिये, यक़ीनन अ़क़्लमन्द वोही है कि जो इस दुन्या में रह कर ज़ियादा से ज़ियादा नेकियां समेटने में मश्ग़ूल हो जाए, लिहाज़ा निय्यत फ़रमा लीजिये कि आयिन्दा पाबन्दी के साथ क़ुरआने करीम की तिलावत किया करेंगे और कभी भी नाग़ा नहीं करेंगे, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

येही है आरज़ू ता'लीमे क़ुरआं आ़म हो जाए
तिलावत करना सुब्हो शाम मेरा काम हो जाए

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ता'लीमे क़ुरआं को आ़म करने की सिर्फ़ ख़्वाहिश ही काफ़ी नहीं बल्कि अ़मली त़ौर पर क़ुरआने करीम की ता'लीमात को आ़म करने की कोशिश भी करनी है, दा'वते इस्लामी क़ुरआने करीम की ता'लीमात आ़म कर रही है, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अमीरे अहले सुन्नत की तर्बिय्यत की बरकत से दा'वते इस्लामी, क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा की ता'लीमात मुल्क ब मुल्क, शहर ब शहर, गाऊं ब गाऊं, हर हर गली मह़ल्ले में पहुंचाने के लिये कोशां है, आप भी इन कोशिशों में दा'वते इस्लामी वालों की मदद करें, किस त़रह़ मदद करेंगे ? सुनिये, अपनी पाक कमाई में से दा'वते इस्लामी को मद्रसे ता'मीर करवा दीजिये, ताकि दा'वते इस्लामी वाले आप के मदनी मुन्नों और मदनी मुन्नियों को क़ुरआन पढ़ाएं, ता'लीमे क़ुरआं आ़म करने के लिये आप अपनी तनख़्वाह व आमदनी में से कुछ ह़िस्सा मुक़र्रर फ़रमा दें, चाहें तो किसी मद्रसतुल मदीना के अख़राजात या किसी मुदर्रिस की तनख़्वाह अपने ज़िम्मे ले लें, किसी दूसरे को भी इस नेकी के काम में शामिल कर सकते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो आप को क़ुरआन की ता'लीम आ़म करने का ख़ूब ख़ूब अज्र नसीब होगा । अगर आप ने क़ुरआने पाक नहीं पढ़ा हुवा तो आप ख़ुद भी दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना बालिग़ान जो कि सिर्फ़ 41 मिनट के लिये लगते हैं, उस में शामिल हो जाइये, इस्लामी बहनों के लिये मद्रसतुल मदीना बालिग़ात हैं, जिन में इस्लामी बहनें इस्लामी बहनों को घरों पर फ़ी सबीलिल्लाह क़ुरआने पाक पढ़ाती हैं ।

येही है आरज़ू ता'लीमे क़ुरआं आ़म हो जाए

तिलावत करना सुब्ह़ो शाम मेरा काम हो जाए

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ुरआन बेहतरीन दवा है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुब्ह़ो शाम क़ुरआने पाक की तिलावत करने वाले को जहां कसीर अज्रो सवाब मिलता है वहीं इस की बरकत से ज़ाहिरी व बात़िनी बीमारियों से शिफ़ा भी नसीब होती है । एक शख़्स ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ल्क़ में दर्द की शिकायत की तो आप ने इरशाद फ़रमाया : क़ुरआन पढ़ना इख़्तियार करो ।

(شعب الایمان، ۲/۵۱۹، حدیث: ۲۵۸۰)

एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मेरे सीने में तक्लीफ़ है । इरशाद फ़रमाया : क़ुरआन पढ़ो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَشِفَآءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और दिलों की सिह़्ह़त) ।

(الدر المنثور، ۴/۳۶۶)(پارہ ۱۱، یونس: ۵۷) बल्कि क़ुरआने करीम तो मुख़्तलिफ़ बीमारियों की बेहतरीन दवा भी है । जैसा कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : خَيْرُ الدَّوَاءِ الْقُرْاٰنُ या'नी बेहतरीन दवा क़ुरआने करीम है ।

(سنن ابن ماجہ، ۴/۱۱۶-۱۱۷، حدیث: ۳۵۰۱)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी बेहतरीन ता'वीज़ वोह है जो किसी क़ुरआनी आयत के ज़रीए से किया जाए, इरशादे बारी तआ़ला है :

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हम क़ुरआन में उतारते हैं वोह चीज़ जो ईमान वालों के लिये शिफ़ा और रह़मत है ।*

(پارہ ۱۵، بنی اسرائیل: ۸۲)

तो क़ुरआने मजीद दिल, बदन और रूह़ सब के लिये दवा है । जब बा'ज़ कलामों की भी ख़ासिय्यतें और फ़वाइद होते हैं, तो फिर रब्बुल आ़लमीन جَلَّ جَلَالُہٗ के कलाम के बारे में आप का क्या ख़याल है, जिस की फ़ज़ीलत दीगर कलामों पर ऐसी है, जैसी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उस की मख़्लूक़ पर । क़ुरआने पाक में कुछ ऐसी आयात हैं जो ख़ास अमराज़ और मसाइब के ख़ातिमे के लिये हैं, उन आयात की मा'रिफ़त ख़ास लोगों को होती है ।

(فیض القدیر، ۳/۶۲۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! पूरा क़ुरआने करीम ही बीमारियों के लिये शिफ़ा और मसाइबो तकालीफ़ में मुश्किल कुशा है और क़ुरआने पाक की हर सूरत की अपनी ही फ़ज़ीलत और शान है जो जानो माल की ह़िफ़ाज़त करने, रन्जो ग़म मिटा कर दिल में फ़रह़त व मसर्रत दाख़िल करने और मरज़ से नजात दिलाने के लिये काफ़ी है । चुनान्चे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 679 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**जन्नती ज़ेवर**" से क़ुरआने पाक की चन्द सूरतों के मुख़्तसर फ़ज़ाइल सुनते हैं : **सूरतुल फ़ातिह़ा** 100 मरतबा पढ़ कर जो दुआ़ मांगी जाए, क़बूल होती है, **सूरतुल बक़रह** की तिलावत से शैत़ान घर से भाग जाता है, **आयतुल कुर्सी** पढ़ने से मोह़ताजी दूर होती है, **सूरतुल कह्फ़** को हमेशा पढ़ने वाला दज्जाल के फ़ितनों से मह़फ़ूज़ रहेगा, वालिदैन की क़ब्र पर हर जुमुआ़ **सूरए यासीन** की तिलावत करने से इस के हुरूफ़ की ता'दाद के बराबर उन के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं । **सूरतुद्दुख़ान** पढ़ने से मुश्किल दूर होती है, जो क़रीबुल मर्ग हो उस पर **सूरतुल जासियह** का दम करने से उस का ख़ातिमा बिल ख़ैर हो, **सूरतुल ह़ुजुरात** का पढ़ना और दम कर के पीना घर में ख़ैरो बरकत के लिये मुफ़ीद है, **सूरए ق** पढ़ने से बाग़ में फलों की कसरत होती है, **सूरतुर्रह़मान** 11 बार पढ़ने से तमाम मक़ासिद पूरे होते हैं, **सूरतुल वाक़िअ़ह** जो शख़्स रोज़ाना पढ़ेगा उस को कभी फ़ाक़ा न होगा । **सूरतुल मुल्क** को हर रात में पढ़ने वाला अ़ज़ाबे क़ब्र से

महफ़ूज़ रहेगा, **सूरतुल मुज़्ज़म्मिल** को 11 बार पढ़ने से हर मुश्किल आसान हो जाती है, **सूरतुल मुद्दस्सिर** को पढ़ कर हिफ़्ज़े क़ुरआन की दुआ मांगने से क़ुरआने करीम का याद करना आसान हो जाएगा, **सूरतुन्नाज़िआ़त** पढ़ने से जां कनीं की तक्लीफ़ नहीं होगी, **सूरतुद्दुहा** पढ़ने से भागा हुवा आदमी वापस आ जाएगा, **सूरए अलम नशरह** को जिस माल पर पढ़ दिया जाए उस में ख़ूब बरकत होगी, **सूरतुत्तीन** 3 मरतबा पढ़ने से अख़्लाक़ व किरदार बेहतरीन होते हैं, **सूरतुल अ़लक़** में जोड़ों के दर्द का इलाज है, **सूरतुल क़द्र** जो सुब्हो शाम पढ़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की इ़ज़्ज़त बढ़ा देगा, **सूरतुल बय्यिनह** बरस और यरक़ान का इलाज है, **सूरतुज़्ज़िलज़ाल** चौथाई क़ुरआन के बराबर है, जिस आदमी या जानवर को नज़र लगी हो उस पर **सूरतुल आ़दियात** का दम मुफ़ीद है, **सूरतुल क़ारिअ़ह** पढ़ने से बलाओं से हिफ़ाज़त रहती है, **सूरतुत्तकासुर** को 300 बार पढ़ने से बहुत जल्द क़र्ज़ अदा हो जाता है, **सूरतुल अ़स्र** पढ़ने से ग़म दूर हो जाता है, **सूरतुल हुमज़ह** और **सूरतुल फ़ील** दुश्मन के शर से हिफ़ाज़त और **सूरए क़ुरैश** जान की हिफ़ाज़त के लिये मुजर्रब है, **सूरतुल माऊ़न** बड़ी मुश्किल के वक़्त पढ़ना बहुत मुफ़ीद है, **सूरतुल कौसर** की तिलावत से बे अवलाद, साहिबे अवलाद हो जाता है, **सूरतुल काफ़िरून** चौथाई क़ुरआन के बराबर है, **सूरतुल इख़्लास** तिहाई क़ुरआन के बराबर है, इस के बहुत फ़ज़ाइल हैं, **सूरतुल फ़लक़** और **सूरतुन्नास** से जिन्न व शयातीन और ह़ासिदों के शर से हिफ़ाज़त रहती है ।

(जन्नती ज़ेवर, स. 588)

काश ! तिलावत करने का जज़्बा नसीब हो जाए, आइये ! अमीरे अहले सुन्नत की दुआ में शामिल हों :

तिलावत का जज़्बा अ़ता कर इलाही मुआ़फ़ फ़रमा मेरी ख़ता हर इलाही
तिलावत करूं हर घड़ी या इलाही बकूं न कभी भी मैं वाही तबाही
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

किताब "मदनी पंज सूरह" का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुरआने करीम की मुख़्तलिफ़ सूरतों के फ़ज़ाइल और मज़ीद मा'लूमात जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बहुत ही प्यारी किताब **"मदनी पंज सूरह"** मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल फ़रमा कर मुत़ालआ़ कर लीजिये । इस किताब का हर घर में होना ज़रूरी है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस किताब में मश्हूर कुरआनी सूरतों, दुरूदों और रूह़ानी इ़लाजों के साथ साथ बे शुमार ख़ुश्बूदार मदनी फूल अपनी ख़ुश्बूएं लुटा रहे हैं । दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net से इस किताब को रीड (या'नी पढ़ा) भी जा सकता है, डाऊन लोड भी किया जा सकता है और प्रिन्ट आऊट भी किया जा सकता है ।

दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ के साथ कुरआने पाक सीखिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! कुरआने करीम की तिलावत करने वाले पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतों की बारिश भी उसी वक़्त होगी जब कि वोह सह़ीह़ मा'नों में कुरआने करीम पढ़ना जानता होगा । हमारे मुआ़शरे में लोग जदीद दुन्यवी ता'लीम ह़ासिल करने, इंग्लिश लेंग्वेज, कम्प्यूटर और मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ के लिये तो इन से मुतअ़ल्लिक़ इदारों में भारी फ़ीसें जम्अ़ करवाने से नहीं कतराते, मगर अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! इल्मे दीन से दूरी के बाइस दुरुस्त अदाएगी के साथ फ़ी सबीलिल्लाह कुरआने पाक पढ़ने की फ़ुरसत तक नहीं । याद रखिये ! जो लोग सह़ीह़ मख़ारिज के साथ कुरआने पाक पढ़ना नहीं जानते, वोह सवाब कमाने के बजाए गुनाह के मुर्तकिब ठहरते हैं ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : बहुत से कुरआन पढ़ने वाले ऐसे हैं कि (ग़लत़ पढ़ने की वज्ह से) कुरआन उन पर ला'नत करता है । (احیاء العلوم، ج ۱، ص ۳۶۴)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "इतनी तजवीद (सीखना) कि हर ह़र्फ़ दूसरे ह़र्फ़ से सह़ीह़ मुमताज़ हो, **फ़र्ज़े ऐ़न** है। बिग़ैर इस के नमाज़ क़त़्अ़न बात़िल है।"

(फ़तावा रज़विय्या जि. 3 स. 253)

मज़ीद फ़रमाते हैं : "बिलाशुबा इतनी तजवीद जिस से तसह़ीह़े (تَص + حِیح) ह़रूफ़ हो (या'नी क़वाइ़दे तजवीद के मुत़ाबिक़ ह़रूफ़ को दुरुस्त मख़ारिज से अदा कर सके) और ग़लत़ ख़्वानी (या'नी ग़लत़ पढ़ने) से बचे, फ़र्ज़े ऐ़न है।" (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जि. 6 स. 343) सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जिस से ह़ुरूफ़ सह़ीह़ अदा नहीं होते, उस पर वाजिब है कि तसह़ीह़े (تَص+حِیح) ह़रूफ़ में रात दिन पूरी कोशिश करे। (बहारे शरीअ़त, 1/570)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम भी दुरुस्त क़वाइ़द व मख़ारिज के साथ क़ुरआने करीम पढ़ने के ख़्वाहिश मन्द हैं और पढ़ना भी चाहिये तो मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में ज़रूर शिर्कत कीजिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुख़्तलिफ़ मक़ामात और मसाजिद वग़ैरा में उ़मूमन बा'द नमाज़े इ़शा हज़ारहा मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) की तरकीब होती है, जिन में बड़ी उ़म्र के इस्लामी भाई सह़ीह़ मख़ारिज से ह़ुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ क़ुरआने करीम सीखते और दुआ़एं याद करते, नमाज़ें वग़ैरा दुरुस्त करते और सुन्नतों की ता'लीम मुफ़्त ह़ासिल करते हैं, । इ़लावा अज़ीं दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में घरों के अन्दर तक़रीबन रोज़ाना हज़ारों मदारिस ब नाम मद्रसतुल मदीना (बराए बालिग़ात) भी लगाए जाते हैं, जिन में इस्लामी बहनें क़ुरआने पाक, नमाज़ और सुन्नतों की मुफ़्त ता'लीम पातीं और दुआ़एं याद करती हैं। ता'लीमे क़ुरआने करीम के फ़ज़ाइल के क्या कहने ! चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "बहारे शरीअ़त" जिल्द 3 सफ़ह़ा 484 से दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों : (1) तुम में बेहतर वोह शख़्स है जो क़ुरआन

सीखे और सिखाए । (بُخاری ج۳ص۴۱۰حدیث۵۰۲۷) (2) जो क़ुरआन पढ़ने में माहिर है वोह किरामन कातिबीन के साथ है और जो शख़्स रुक रुक कर क़ुरआन पढ़ता है और वोह उस पर शाक़ है, या'नी उस की ज़बान आसानी से नहीं चलती तक्लीफ़ के साथ अदा करता है, उस के लिये दो अज्र हैं । (صحیح مُسلِم ص۴۰۰حدیث۷۹۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ के साथ क़ुरआने पाक सीखने के लिये मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में शिरकत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए ।

اٰمین بجاہِ النَّبی الامین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की बार बार तरग़ीब दिलाने वाले अमीरे अहले सुन्नत बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ करते हैं :

अ़ता हो शौक़ मौला मद्रसे में आने जाने का
ख़ुदाया ज़ौक़ दे क़ुरआन पढ़ने का पढ़ाने का

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तिलावते क़ुरआने पाक की बरकतें सह़ीह़ मा'नों में उसी सूरत में ह़ासिल हो सकेंगी जब हम इस के आदाब को भी मल्हूज़े ख़ातिर रखते हुवे तिलावत करेंगे और अगर आदाब का लिह़ाज़ न रखा जाए तो न उस के मक़ासिद ह़ासिल हो सकेंगे और न ही बरकतों से मुस्तफ़ीज़ होंगे बल्कि बा'ज़ सूरतों में गुनाह के मुर्तकिब भी ठहर सकते हैं । आइये ! चन्द आदाब सुनते हैं ताकि सह़ीह़ मा'नों में क़ुरआने करीम पढ़ कर इस की बरकतें पा सकें ।

❀ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोज़ाना सुब्ह़ क़ुरआने मजीद को चूमा करते और फ़रमाते : "येह मेरे रब عَزَّوَجَلَّ का अ़ह्द और उस की किताब है ।" (دُرِّمُختار ج ۹ ص۶۳۴) ❀ तिलावत के आग़ाज़ में अऊ़ज़ु पढ़ना मुस्तह़ब है और इबतिदाए सूरत में बिस्मिल्लाह सुन्नत, वरना मुस्तह़ब (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा 3 स. 550) ❀ बा वुज़ू, क़िब्ला रू अच्छे कपड़े पहन कर तिलावत करना मुस्तह़ब है (ऐज़न, स. 550) ❀ क़ुरआने मजीद देख कर पढ़ना, ज़बानी पढ़ने से अफ़्ज़ल है कि येह पढ़ना भी है और देखना

और हाथ से इस का छूना भी और येह सब काम इबादत हैं। (غُنْیَۃُ الْمُتَمَلّی ص۴۹۵) ❀ क़ुरआने मजीद को निहायत अच्छी आवाज़ से पढ़ना चाहिये, अगर आवाज़ अच्छी न हो तो अच्छी आवाज़ बनाने की कोशिश करे, मगर लह्न के साथ पढ़ना कि ह़रूफ़ में कमी बेशी हो जाए जैसे गाने वाले किया करते हैं, येह नाजाइज़ है, बल्कि पढ़ने में क़वाइदे तजवीद की रिआ़यत कीजिये (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج۹، ص۶۱۹،ملخصا) ❀ क़ुरआने मजीद बुलन्द आवाज़ से पढ़ना अफ़्ज़ल है जब कि किसी नमाज़ी या मरीज़ या सोते को ईज़ा न पहुंचे (غُنْیَۃُ الْمُتَمَلّی ص۴۹۷) ❀ जब बुलन्द आवाज़ से क़ुरआन पढ़ा जाए तो तमाम ह़ाज़िरीन पर सुनना फ़र्ज़ है, जब कि वोह मजमअ़ सुनने के लिये ह़ाज़िर हो, वरना एक का सुनना काफ़ी है, अगर्चे और (लोग) अपने काम में हों। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 23 स. 353 मुलख़्ख़सन) ❀ मजमअ़ में सब लोग बुलन्द आवाज़ से पढ़ें येह ह़राम है, अक्सर तीजों में सब बुलन्द आवाज़ से पढ़ते हैं, येह ह़राम है, अगर चन्द शख़्स पढ़ने वाले हों तो हुक्म है कि आहिस्ता पढ़ें। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 ह़िस्सा 3, स. 553) ❀ बाज़ारों में और जहां लोग काम में मश्ग़ूल हों, बुलन्द आवाज़ से पढ़ना नाजाइज़ है, लोग अगर न सुनेंगे तो गुनाह पढ़ने वाले पर है, अगर काम में मश्ग़ूल होने से पहले इस ने पढ़ना शुरूअ़ कर दिया हो और अगर वोह जगह काम करने के लिये मुक़र्रर न हो तो अगर पहले पढ़ना इस ने शुरूअ़ किया और लोग नहीं सुनते तो लोगों पर गुनाह और अगर काम शुरूअ़ करने के बा'द इस ने पढ़ना शुरूअ़ किया, तो इस (पढ़ने वाले) पर गुनाह है। (غُنْیَۃُ الْمُتَمَلّی ص۴۹۷) ❀ लेट कर क़ुरआन पढ़ने में ह़रज नहीं जब कि पाउं समेटे हों और मुंह खुला हो, यूहीं (यूंही) चलने और काम करने की ह़ालत में भी तिलावत जाइज़ है, जब कि दिल न बटे, वरना मकरूह है। (اَیضاً ص۴۹۶ملتقطا) ❀ ग़ुस्ल ख़ाने और नजासत की जगहों में क़ुरआने मजीद पढ़ना, नाजाइज़ है (اَیضاً) ❀ क़ुरआने मजीद सुनना, तिलावत करने और नफ़्ल पढ़ने से अफ़्ज़ल है। (اَیضاً ص ۴۹۷) ❀ जो शख़्स ग़लत़ पढ़ता हो तो सुनने वाले पर वाजिब है कि बता दे, बशर्ते येह कि बताने की वज्ह से

कीना व ह़सद पैदा न हो । (ایضاً ص۴۹۸) ❀ तिलावते क़ुरआने पाक करते वक़्त तरतील या'नी ठहर ठहर कर पढ़ना चाहिये कि येह मुस्तह़ब है ❀ अगर दौराने तिलावत निशात़ (चुस्ती) में कमी और सुस्ती महसूस हो तो कुछ देर के लिये तिलावत मौक़ूफ़ कर दी जाए ताकि सुस्ती ख़त्म होने के बा'द दोबारा दिलजमई से तिलावत करने में आसानी हो । सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : जब तक तुम्हारा दिल लगे क़ुरआन पढ़ते रहो, फिर जब इधर उधर होने लगो तो इस से उठ जाओ ।

(صحیح البخاری، کتاب فضائل القرآن، باب اقرؤا القرآن...الخ، الحدیث:۵۰۶۰، ج۳، ص۴۱۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तिलावते क़ुरआन के मज़ीद आदाब सीखने के लिये अमीरे अहले सुन्नत का रिसाला **''तिलावत की फ़ज़ीलत''** का मुत़ालआ़ फ़रमाइये ।

मैं अदब क़ुरआन का हर ह़ाल में करता रहूं
हर घड़ी ऐ मेरे मौला तुझ से मैं डरता रहूं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ता'लीमे क़ुरआन को आ़म करने के लिये दा'वते इस्लामी के मुख़्तलिफ़ शो'बाजात

(1) मद्रसतुल मदीना लिल बनीन (2) मद्रसतुल मदीना जुज़्वक़्ती
(3) मद्रसतुल मदीना रिहाइशी (4) मद्रसतुल मदीना लिल बनात
(5) मद्रसतुल मदीना बालिग़ान (6) मद्रसतुल मदीना बालिग़ात
(7) मद्रसतुल मदीना लिल बनीन ऑन लाइन
(8) मद्रसतुल मदीना लिल बनात ऑन लाइन

मद्रसतुल मदीना लिल बनीन में मुल्क व बैरूने मुल्क मदनी मुन्नों को क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम दी जाती है । **मद्रसतुल मदीना जुज़ वक़्ती** में स्कूल पढ़ने वाले बच्चों को स्कूल की ता'लीम के

बा'द एक या दो घन्टे के लिये क़ुरआने पाक की ता'लीम दी जाती है । **मद्रसतुल मदीना रिहाइशी** में त़लबा मदारिस में क़ियाम पज़ीर हो कर क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा की ता'लीम ह़ासिल करते हैं । **मद्रसतुल मदीना लिल बनात** में क़ारिया इस्लामी बहनें मदनी मुन्नियों को फ़ी सबीलिल्लाह क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम देती हैं । **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** का दौरानिया सिर्फ़ 41 मिनट है, इस में इस्लामी भाइयों को दुरुस्त मख़ारिज के साथ क़ुरआन पढ़ाया जाता, नमाज़, सुन्नतें और दुआ़एं भी याद करवाई जाती हैं । **मद्रसतुल मदीना बालिग़ात** में इस्लामी बहनों को इस्लामी बहनें घरों में इजतिमाई त़ौर पर फ़ी सबीलिल्लाह क़ुरआन पढ़ातीं और इस्लामी बहनों को नमाज़, दुआ़एं और इन के मख़्सूस मसाइल वग़ैरा सिखाती हैं । **मद्रसतुल मदीना लिल बनीन ऑन लाइन** में क़ारी साह़िबान मदनी मुन्नों और बड़ों को भी ब ज़रीअ़ए इन्टरनेट क़ुरआने पाक पढ़ाते, सुन्नतें सिखाते और दुआ़एं याद करवाते हैं । **मद्रसतुल मदीना लिल बनात ऑन लाइन** में इस्लामी बहनें, इस्लामी बहनों को ब ज़रीअ़ए इन्टरनेट दुरुस्त अदाएगी के साथ क़ुरआने करीम पढ़ाती और इन की सुन्नत के मुत़ाबिक़ तर्बिय्यत करती हैं

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कमो बेश 72 मुमालिक में त़लबा व त़ालिबात इन्टरनेट के ज़रीए़ क़ुरआने करीम की ता'लीम ह़ासिल कर रहे हैं ।

दा'वते इस्लामी के मदारिसुल मदीना 2200 से ज़ाइद हैं और त़लबा व त़ालिबात की ता'दाद तक़रीबन 1 लाख 10 हज़ार है, दा'वते इस्लामी के हज़ारों ह़ुफ़्फ़ाज़ तरावीह़ में हर साल क़ुरआने पाक सुनते या सुनाते हैं ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना बालिग़ान व बालिग़ात में 12 हज़ार से ज़ाइद त़लबा व त़ालिबात हैं ।

येही है आरज़ू ता'लीमे क़ुरआं आ़म हो जाए
तिलावत करना सुब्ह़ो शाम मेरा काम हो जाए

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज हम ने क़ुरआने मजीद की अ़ज़्मतों और इस की तिलावत की बरकतों के ह़वाले से बयान सुना । क़ुरआने मजीद वह़िये इलाही है, येह क़ुर्बे ख़ुदावन्दी का ज़रीआ़ है, रहती दुन्या तक के लिये नुस्ख़ए कीमिया है, तमाम आस्मानी किताबों का लुब्बे लुबाब है, तमाम ऊ़लूम का सर चश्मा है, येह हिदायत का मजमूआ़, रह़मतों का ख़ज़ीना और बरकतों का मम्बअ़ है, इस की तिलावत की बरकात में से है कि येह क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों की शफ़ाअ़त करेगा, नीज़ क़ियामत के दिन तिलावत करने वालों को कुछ घबराहट न होगी, न ही उन से ह़िसाब लिया जाएगा । क़ुरआने पाक की तिलावत अफ़्ज़ल इ़बादत है । हमें भी क़ुरआने मजीद के आदाब का ख़याल रखते हुवे दुरुस्त मख़ारिज के साथ सुब्ह़ो शाम जिस क़दर मुमकिन हो सके, तिलावत का मा'मूल बनाना चाहिये और क़ुरआनी ता'लीमात पर अ़मल करते हुवे अपनी ज़िन्दगी बसर करनी चाहिये । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । اٰمین بجاہِ النبی الامین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मदनी कामों में ह़िस्सा लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने हमें एक मदनी मक़्सद अ़त़ा फ़रमाया है कि मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ । लिहाज़ा अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहिये और ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में ख़ूब बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लेने वाले बन जाइये । ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम रोज़ाना बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़ा भी है, येह मदनी काम मस्जिद में बा'दे फ़ज्र होता है, अव्वलन तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान / सिरातुल जिनान से 3 आयात तर्जमा व तफ़्सीर के साथ देख कर सुनाई जाती हैं, फिर फ़ैज़ाने सुन्नत से कमो बेश 4 सफ़ह़ात या अमीरे अहले सुन्नत की किसी किताब या रिसाले से दर्स होता है, फिर सब इस्लामी भाई

शजरए क़ादिरिय्या, रज़विय्या, अ़त्तारिय्या के अशआ़र मिल कर पढ़ते हैं, इस के बा'द फ़िक्रे मदीना का इजतिमाई ह़ल्क़ा होता है और ख़ुश नसीब इस्लामी भाई इश्राक़ व चाश्त पढ़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम से ह़ज व उ़मरे का सवाब पाने की भी कोशिश करते हैं।

लिहाज़ा आप भी मदनी ह़ल्क़े में शिरकत की निय्यत फ़रमा लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ख़ूब ख़ूब बरकतें ह़ासिल होंगी।

मद्रसतुल मदीना बालिग़ान पढ़ने पढ़ाने की तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है। चुनान्चे

मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) पढ़ाने वाला मुफ़्ती कैसे बना ?

बाबुल मदीना (कराची) के मुक़ीम इस्लामी भाई मुफ़्ती फ़ुज़ैल रज़ा अ़त्तारी مُدَّظِلُّه العالی के बयान का ख़ुलासा है कि मैं ने 14 साल की उ़म्र में मेट्रीक पास किया और मज़ीद ता'लीम के लिये कॉलेज जा पहुंचा। मेरा अक्सर वक़्त आ़म नौजवानों की त़रह़ दोस्तों के साथ गप शप लड़ाते या क्रिकेट वग़ैरा खेलने में गुज़रता। हमारे अ़लाक़े में सब्ज़ इ़मामे और सफ़ेद लिबास में मल्बूस एक आ़शिक़े रसूल अक्सर बड़ी मह़ब्बत से मिलते और तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकतें बताते और मुझे भी येह माह़ोल अपनाने की तरग़ीब देते। मैं उन के मह़ब्बत भरे मदनी अन्दाज़ से मुतअस्सिर तो बहुत था मगर त़वील अ़र्सा तक कोई पेश क़दमी न कर पाया। बिल आख़िर मैं उन की इनफ़िरादी कोशिश की बरकत से मस्जिद में बा'द नमाज़े इ़शा क़ाइम किये जाने वाले मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में शिर्कत करने लगा। मैं जिस्मानी त़ौर पर कमज़ोर होने की वज्ह से अपनी अस्ल उ़म्र से बहुत छोटा दिखाई देता था, इस लिये मुझे अलग से बिठा कर पढ़ाया जाता। इसी वज्ह से एक बार मुझे मद्रसे में पढ़ाने से मा'ज़िरत भी कर ली गई। क्यूंकि वहां बड़ी उ़म्र के इस्लामी भाइयों की तरकीब थी। मगर मैं ने हिम्मत न हारी और दोबारा दाख़िले की कोशिश करता रहा। मेरे जज़्बे को देखते हुवे मुझे दोबारा दाख़िला दे दिया गया। मैं आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में दुरुस्त क़ुरआन पढ़ना सीख गया।

दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकत से बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने के साथ साथ सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा भी मिला। जल्द ही मैं शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए़ मुरीद हो कर "**अ़त्तारी**" बन गया। मैं कमो बेश 8 साल मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में कुरआने करीम सह़ीह़ मख़ारिज के साथ पढ़ाने की सआ़दत पाता रहा। इस दौरान मैं ने दा'वते इस्लामी के ज़ेरे इनतिज़ाम होने वाले इजतिमाई ए'तिकाफ़ में भी शिर्कत की और नेकियों की मज़ीद रग़बत पाई। मैं ने सिने 1996 ईसवी में दर्से निज़ामी करना शुरूअ़ कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सिने 2003 ईसवी में फ़ारिग़ुत्तह़सील हुवा। इस दौरान फ़तवा नवेसी की भी तर्बिय्यत ले चुका था। पीरो मुर्शिद की शफ़्क़त से मजलिसे तह़क़ीक़ाते शरइ़य्या के रुक्न की ह़ैसिय्यत से अपने फ़राइज़ अन्जाम देने के साथ दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत में ता दमे तह़रीर बत़ौरे **मुफ़्ती** व **मुसद्दिक़** ख़िदमते इफ़्ता की सआ़दत ह़ासिल है।

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी
सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) पढ़ाते पढ़ाते तवज्जोहे मुर्शिद की बरकत से कॉलेज में पढ़ने वाले इस्लामी भाई मुफ़्ती व मुसद्दिक़ बन गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़्त कुरआने पाक की ता'लीमात को आ़म करने के लिये मुख़्तलिफ़ मसाजिद वग़ैरा में उ़मूमन बा'द नमाज़े इ़शा हज़ारहा मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की तरकीब होती है। जिन में बड़ी उ़म्र के इस्लामी भाई सह़ीह़ मख़ारिज से हुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ कुरआने करीम सीखते, दुआ़एं याद करते, नमाज़ें वग़ैरा दुरुस्त करते और सुन्नतों की ता'लीम मुफ़्त ह़ासिल करते हैं। आप भी इन मदारिसुल मदीना (बालिग़ान) में पढ़ने या पढ़ाने की निय्यत कर लीजिये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा। (ابنِ عساکِر ج۹ ص۳۴۳)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा

जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **के रिसाले "163 मदनी फूल" से मिस्वाक के मदनी फूल सुनते हैं :**

۞ **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 288 पर **सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى लिखते हैं : मशाइख़े किराम फ़रमाते हैं : जो शख़्स मिस्वाक का आ़दी हो मरते वक़्त उसे **कलिमा** पढ़ना नसीब होगा और जो **अफ़्यून** खाता हो मरते वक़्त उसे **कलिमा** नसीब न होगा ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि **मिस्वाक** में दस ख़ूबियां हैं : मुंह साफ़ करती, मसूढ़े को मज़बूत़ बनाती है, बीनाई बढ़ाती, बलग़म दूर करती है, मुंह की बदबू ख़त्म करती और सुन्नत के मुवाफ़िक़ है, फ़िरिश्ते ख़ुश होते हैं, रब राज़ी होता है, नेकी बढ़ाती और मे'दा दुरुस्त करती है। (جَمْعُ الْجَوَامِع لِلسُّيُوطِى ج۵ ص۲۴۹ حدیث ۱۴۸۶۷)

۞ मिस्वाक पीलू या ज़ैतून या नीम वग़ैरा कड़वी लकड़ी की हो ۞ मिस्वाक की मोटाई छुंगलिया या'नी छोटी उंगली के बराबर हो ۞ मिस्वाक एक बालिश्त से ज़ियादा लम्बी न हो वरना उस पर शैत़ान बैठता है ۞ इस के रेशे नर्म हों कि सख़्त रेशे दांतों और मसूढ़ों के दरमियान ख़ला (GAP) का बाइस बनते हैं ۞ मिस्वाक ताज़ा हो तो ख़ूब (या'नी बेहतर) वरना कुछ देर पानी के गिलास में भिगो कर नर्म कर लीजिये ۞ मुनासिब है कि इस के रेशे रोज़ाना

काटते रहिये कि रेशे उस वक़्त तक कार आमद रहते हैं जब तक उन में तल्ख़ी बाक़ी रहे ۞ दांतों की चौड़ाई में मिस्वाक कीजिये ۞ जब भी मिस्वाक करनी हो कम अज़ कम तीन बार कीजिये ۞ हर बार धो लीजिये ۞ मिस्वाक सीधे हाथ में इस त़रह़ लीजिये कि छुंगलिया या'नी छोटी उंगली इस के नीचे और बीच की तीन उंगलियां ऊपर और अंगूठा सिरे पर हो ۞ पहले सीधी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर उलटी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर सीधी त़रफ़ नीचे फिर उलटी त़रफ़ नीचे मिस्वाक कीजिये ۞ मुठ्ठी बांध कर मिस्वाक करने से बवासीर हो जाने का अन्देशा है ۞ मिस्वाक वुज़ू की सुन्नते क़ब्लिया है अलबत्ता **सुन्नते मुअक्कदा** उसी वक़्त है जब कि मुंह में बदबू हो।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. **1**, स. **623**)

۞ मिस्वाक जब ना क़ाबिले इस्ति'माल हो जाए तो फेंक मत दीजिये कि येह आलए अदाए सुन्नत है, किसी जगह एह़तियात़ से रख दीजिये या दफ़्न कर दीजिये या पथ्थर वग़ैरा वज़्न बांध कर समन्दर में डुबो दीजिये।

(तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 294 ता 295 का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये)

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब (1) 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 (2) 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

या ख़ुदा ! निकलूं मैं मदनी क़ाफ़िलों के साथ काश !

सुन्नतों की तर्बिय्यत के वासित़े फिर जल्द तर !!

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الاعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस[10] रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर दस[10] मरतबा दुरूदे पाक पढ़े, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो[100] रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर सो[100] मरतबा दुरूदे पाक पढ़े, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शोहदा के साथ रखेगा।

(معجم اوسط: ۵/۲۵۲، حدیث: ۲۷۳، ضیائے درود وسلام، ص: ۳)

पढ़ता रहूं कसरत से दुरूद उन पे सदा मैं
और ज़िक्र का भी शौक़ पए ग़ौसो रज़ा दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 118)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج ۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं।

बयान सुनने की निय्यतें :

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा। ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा। ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा। ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा। ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰهَ، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा। ۞ बयान के बा'द खुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें :

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा। ۞ देख कर बयान करूंगा। ۞ पारह 14 सूरतुन्नह्ल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" में दिये हुवे अह्काम की पैरवी करूंगा। ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा। ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा। ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा, बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा। ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा। ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेहन बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक हाज़िरी छूट गई

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माहे शव्वालुल मुकर्रम अपनी रह़मतों और बरकतों की बरखा बरसाता हुवा इख़्तिताम की जानिब गामज़न है और इस के बा'द माहे ज़ुल का'दतिल ह़राम की आमद आमद है । येह वोह माहे मुबारक है, जिस की दूसरी शब में दुन्याए सुन्नियत के अ़ज़ीम पेश्वा, सुन्नियों के रहबर व रहनुमा, आस्माने रज़विय्यत के नय्यिर ताबां, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, मुसन्निफ़े, बहारे शरीअ़त, सद्रे शरीअ़त, बद्रे त़रीक़त ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْغَنِی ने इस दारे फ़ानी से पर्दा फ़रमाया । या'नी 2 ज़ुल का'दतिल ह़राम को आप का उ़र्स मुबारक है, आइये ! इसी निस्बत से सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मुबारक ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ गोशों का ह़सीन ज़िक्र सुनते हैं । अव्वलन एक निहायत ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत सुनिये, चुनान्चे,

तज़किरए सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

ह़ज़रते सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अजमेर शरीफ़ में एक बार शदीद बुख़ार में मुब्तला हो गए, यहां तक कि ग़शी त़ारी हो गई । दोपहर से पहले ग़शी त़ारी हुई और अ़स्र तक रही । ह़ाफ़िज़े मिल्लत मौलाना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़िदमत के लिये ह़ाज़िर थे, सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को जब होश आया तो सब से पहले येह दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या वक़्त है ? ज़ोहर का वक़्त है या नहीं ? ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अ़र्ज़ की, कि इतने इतने बज गए हैं, अब ज़ोहर का वक़्त नहीं । येह सुन कर इतनी अज़िय्यत पहुंची कि आंख से आंसू जारी हो गए । ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दरयाफ़्त किया : क्या हुज़ूर को कहीं दर्द है, कहीं तक्लीफ़ है ? फ़रमाया : (बहुत बड़ी) तक्लीफ़ है कि ज़ोहर की नमाज़ क़ज़ा हो गई । ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर बेहोश थे । बेहोशी के आ़लम में नमाज़ क़ज़ा होने पर कोई मुआख़ज़ा (या'नी क़ियामत में

पूछगछ) नहीं। फ़रमाया : आप मुआख़ज़ा (या'नी पूछगछ) की बात कर रहे हैं, वक़्ते मुक़र्ररा पर दरबारे इलाही عَزَّوَجَلَّ की **एक हाज़िरी से तो महरूम रहा !!!**

(तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 30)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नमाज़े बा जमाअ़त का जज़्बा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नमाज़ के किस क़दर पाबन्द और नमाज़ से कैसी कमाले महब्बत फ़रमाने वाले थे कि शरीअ़त की त़रफ़ से रुख़्सत के बा वुजूद भी बेहोशी की हालत में नमाज़ छूटने पर इस क़दर रन्जो मलाल हुवा कि मुबारक आंखों से आंसू निकल आए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन के सदक़े हमें भी नमाज़ों से महब्बत और इबादत की लज़्ज़त से बहरामन्द फ़रमाए। ह़ज़रते सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस पर (भी) बहुत सख़्ती से पाबन्द थे कि मस्जिद में ह़ाज़िर हो कर बा जमाअ़त नमाज़ पढें। बल्कि अगर किसी वज्ह से मुअज़्ज़िन साह़िब वक़्ते मुक़र्ररा पर न पहुंचते तो ख़ुद अज़ान देते। क़दीम दौलत ख़ाने से मस्जिद बिल्कुल क़रीब थी वहां तो कोई दिक़्क़त नहीं थी लेकिन जब नए दौलत ख़ाने क़ादिरी मन्ज़िल में रिहाइश पज़ीर हुवे तो आस पास में दो मस्जिदें थीं। एक बाज़ार की मस्जिद दूसरी बड़े भाई के मकान के पास जो "नव्वा की मस्जिद" के नाम से मश्हूर है। येह दोनों मस्जिदें फ़ासिले पर थीं। उस वक़्त बीनाई भी कमज़ोर हो चुकी थी। बाज़ार वाली मस्जिद निस्बतन क़रीब थी मगर रास्ते में बे तुकी नालियां थीं। इस लिये "नव्वा की मस्जिद" नमाज़ पढ़ने आते थे। एक दफ़्आ़ ऐसा हुवा कि सुब्ह़ की नमाज़ के लिये जा रहे थे, रास्ते में एक कूंआं था, अभी कुछ अन्धेरा था और रास्ता भी ना हमवार था, बे ख़याली में कूंएं पर चढ़ गए, क़रीब था कि कूंएं के ग़ार में क़दम रख देते। इतने में एक औ़रत आ गई और ज़ोर से चिल्लाई ! "अरे मौलवी साह़िब कूंआं है रुक जाओ ! वरना गिर

पड़्यो (या'नी कहीं गिर न जाइयेगा)'' येह सुन कर ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने क़दम रोक लिया और फिर कूंएं से उतर कर मस्जिद गए। इस के बा वुजूद मस्जिद की ह़ाज़िरी नहीं छोड़ी। (तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 31)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को नमाज़े बा जमाअ़त अदा करने का कैसा जज़्बा ह़ासिल था कि ज़ईफ़ुल उ़म्री में जब कि बीनाई भी काफ़ी कमज़ोर हो चुकी थी, इस क़दर मशक़्क़त के बा वुजूद नमाज़े बा जमाअ़त अदा फ़रमाने मस्जिद में ह़ाज़िर हुवा करते थे। मगर अफ़्सोस ! कई मुसलमान महज़ सुस्ती और ग़फ़्लत, मा'मूली परेशानी और बीमारी की ह़ालत में नमाज़े बा जमाअ़त तर्क कर देते हैं, लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि पंज वक़्ता नमाज़ जमाअ़त के साथ अदा करने की पाबन्दी करें कि मस्जिद में नमाज़ के लिये जाने वाले के गुनाह मुआ़फ़ होते हैं, अगर जमाअ़त से नमाज़ पढ़े तो उस की मग़्फ़िरत हो जाती है और अगर जमाअ़त निकल गई फिर भी इस फ़ज़ीलत का ह़क़्दार होगा। जैसा कि

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि जब एक अन्सारी सह़ाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की मौत का वक़्त क़रीब आया तो फ़रमाने लगे कि : ''मैं तुम्हें फ़क़त़ हुसूले सवाब की निय्यत से एक ह़दीस सुनाता हूं, मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना कि तुम में से जो कामिल वुज़ू करे और मस्जिद की त़रफ़ चले, तो दायां क़दम उठाने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक नेकी लिखता है और बायां क़दम रखने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का एक गुनाह मिटा देता है, अब तुम्हारी मरज़ी कि तुम मस्जिद से क़रीब रहो या दूर। फिर जब वोह मस्जिद में आता है और बा जमाअ़त नमाज़ अदा करता है तो उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं, फिर अगर वोह मस्जिद में ह़ाज़िर हो और उस की बा'ज़ रक्अ़तें निकल चुकी हों और बा'ज़ बाक़ी रह गई हों, उसे चाहिये कि जो रक्अ़तें वोह पा सके, इमाम के साथ पढ़ ले और बाक़ी रक्अ़तें मुकम्मल कर ले तो भी उस की मग़्फ़िरत कर दी जाती है और अगर वोह मस्जिद में (जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने की

निय्यत से) ह़ाज़िर हुवा, लेकिन जमाअ़त हो चुकी हो तो उसे चाहिये कि अपनी नमाज़ अदा कर ले कि उस के लिये भी येही बिशारत है।''

(ابوداود، کتاب الصلوۃ، باب ماجاء فی الھدی فی المشی الی الصلوۃ، رقم ۵۶۳، ج۱، ص ۲۳۳)

याद रहे ! जान बूझ कर नमाज़े बा जमाअ़त का वक़्त निकाल देने वाले को येह फ़ज़ीलत तो कुजा बल्कि तर्के जमाअ़त का गुनाह मिलेगा।

इब्तिदाई ह़ालात

ह़ज़रते सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सिने 1300 हिजरी, मुत़ाबिक़ सिने 1882 ईसवी मशरिक़ी यूपी (हिन्द) के क़स्बे मदीनतुल उ़लमा घोसी में पैदा हुवे। आप के वालिदे माजिद ह़कीम जमालुद्दीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن और दादा ह़ुज़ूर ख़ुदा बख़्श رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़न्ने त़िब के माहिर थे। इब्तिदाई ता'लीम अपने दादा ह़ज़रते मौलाना ख़ुदा बख़्श رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से घर पर ह़ासिल की, फिर अपने क़स्बे ही में मद्रसा नासिरुल उ़लूम में जा कर गोपाल गंज के मौलवी इलाही बख़्श साह़िब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कुछ ता'लीम ह़ासिल की। फिर जौनपुर पहुंचे और अपने चचाज़ाद भाई और उस्ताज़ मौलाना मुह़म्मद सिद्दीक़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कुछ अस्बाक़ पढ़े फिर जामेअ़ मा'क़ूलात व मन्क़ूलात ह़ज़रते अ़ल्लामा हिदायतुल्लाह ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इ़ल्मे दीन के छलकते हुवे जाम नोश किये और यहीं से दर्से निज़ामी की तक्मील की। फिर दौरए ह़दीस की तक्मील पीलीभीत में उस्ताज़ुल मुह़द्दिसीन ह़ज़रते मौलाना वसी अह़मद मुह़द्दिस सूरती رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से की। ह़ज़रते मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने होनहार शागिर्द की अ़बक़री (या'नी आ'ला) सलाह़िय्यतों का ए'तिराफ़ इन अल्फ़ाज़ में किया : ''मुझ से अगर किसी ने पढ़ा तो अमजद अ़ली ने।''

(तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 5)

ह़ुल्यए मुबारक

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ निहायत ही ख़ूब सूरत गन्दुम गूं (या'नी गन्दुमी रंग), मज़बूत़ और क़वी जिस्म के मालिक थे। चेहरए मुबारक वजीह (या'नी

पुर वक़ार) और बा रौनक़, रंगत गन्दुमी, कुशादा पेशानी के साथ बड़ी बड़ी चमकदार आंखें, आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की भंवें घनी और दाढ़ी मुबारक भी काफ़ी घनी थी । जिस्म मुबारक भरा हुवा, लह़ीम, शह़ीम और सुडोल (Smart) था और आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़द मुबारक मियाना और मो'तदिल था ।

(सवानह़े सदरुश्शरीआ़, स. 10, मुलख़्ख़सन)

मज़बूत़ क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का ह़ाफ़िज़ा बहुत मज़बूत़ था । (दौराने त़ालिबे इ़ल्मी) ह़ाफ़िज़े की क़ुव्वत, शौक़ व मेह़नत और ज़िह़ानत की वज्ह से तमाम त़लबा से बेहतर समझे जाते थे । एक मरतबा किताब देखने या सुनने से बरसों तक ऐसी याद रहती, जैसे अभी अभी देखी या सुनी है । 3 मरतबा किसी इ़बारत को पढ़ लेते तो याद हो जाती । (तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 7)

तदरीस का आग़ाज़

सूबए बिहार (हिन्द पटना) में मद्रसए अहले सुन्नत एक मुमताज़ दर्सगाह थी । वहां के मुतवल्लिये मद्रसा क़ाज़ी अ़ब्दुल वह़ीद मर्ह़ूम की दरख़्वास्त पर ह़ज़रते मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मद्रसए अहले सुन्नत (पटना) के सद्र मुदर्रिस के लिये सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इन्तिख़ाब फ़रमाया । आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उस्ताज़े मोह़तरम की दुआ़ओं के साए में ''पटना'' पहुंचे और पहले ही सबक़ में उ़लूम के ऐसे दरया बहाए कि उ़लमा व त़लबा अश अश कर उठे । (ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, ह़ज़रते मौलाना) क़ाज़ी अ़ब्दुल वह़ीद (अ़ज़ीमाबादी) رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जो ख़ुद भी मुतबह़्ह़िर (مُـتَـبَحِّـر) आ़लिम (या'नी बहुत बड़े आ़लिम) थे, (उन्हों) ने सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की इ़ल्मी वजाहत और इन्तिज़ामी सलाह़िय्यत से मुतअस्सिर हो कर मद्रसे के ता'लीमी उमूर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सिपुर्द कर दिये ।

(तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 7, मुलतक़त़न)

आ'ला ह़ज़रत की ज़ियारत

कुछ अ़र्से बा'द क़ाज़ी अ़ब्दुल वह़ीद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बानिये मद्रसए अहले सुन्नत (पटना) शदीद बीमार हो गए । क़ाज़ी साह़िब एक निहायत दीनदार व दीन परवर रईस थे, आप ने सारी ज़िन्दगी ख़िदमते दीन ही को अपना शिआ़र बनाया । इन की परहेज़गारी और मदनी सोच ही की कशिश थी कि मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن और ह़ज़रते क़िब्ला मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जैसे मसरूफ़ बुज़ुर्गाने दीन क़ाज़ी साह़िब की इ़यादत के लिये कशां कशां रोहेल खन्ड से पटना तशरीफ़ लाए । इसी मौक़अ़ पर ह़ज़रते सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अजमद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पहली बार मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ियारत की । आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की शख़्सिय्यत में ऐसी कशिश थी कि बे इख़्तियार सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का दिल आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की त़रफ़ माइल हो गया और अपने उस्ताज़े मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मश्वरे से सिलसिलए आ़लिया क़ादिरिय्या में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से बैअ़त हो गए । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत और मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا की मौजूदगी में ही क़ाज़ी साह़िब ने वफ़ात पाई । आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने क़ब्र में उतारा ।

(तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 9 मुल्तक़त़न)

इल्मे त़िब में महारत

क़ाज़ी साह़िब मर्ह़ूम के इन्तिक़ाल के बा'द मद्रसा ऐसे लोगों के हाथों में पहुंचा, जिन को इल्मे दीन से बिल्कुल भी तअ़ल्लुक़ न था । क़राइन से ऐसा मा'लूम हुवा कि ख़िदमते दीन जो मक़्सूदे अस्ली है, अब यहां मुमकिन नहीं, लिहाज़ा यकुम रमज़ानुल मुबारक सिने 1326 हिजरी को वत़न वापस आ गए और मद्रसे में इस्ति'फ़ा भेज दिया । चूंकि आप का ख़ानदानी पेशा

त़िबाबत (ह़िक्मत) था, लिहाज़ा वालिद साह़िब के मश्वरे से इस फ़न की तह़सील के लिये ह़कीम अ़ब्दुल वली साह़िब के पास लखनऊ चले गए। दो साल में तह़सील व तक्मील के बा'द वत़न वापस हुवे और मत़ब (या'नी क्लीनिक) शुरूअ़ कर दिया। ख़ानदानी पेशा और ख़ुदादाद क़ाबिलिय्यत की बिना पर मत़ब निहायत कामयाबी के साथ चल पड़ा। (सवानह़े सदरुश्शरीआ़, स. 36) (सिलसिलए मआ़श से मुत़मइन हो कर) सिने 1329 हिजरी में आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने उस्ताज़ ह़ज़रते मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और मुर्शिदे बर ह़क़ आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ियारत के लिये आ़ज़िमे सफ़र हुवे (या'नी सफ़र का अ़ज़्म किया)। ह़ज़रते मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में जब पहुंचे और उन्हें येह मा'लूम हुवा कि इन का लाइक़ फ़ाइक़ और मेह़नती शागिर्दे रशीद तदरीस छोड़ कर मत़ब (या'नी क्लीनिक) में मश्ग़ूल हो गया है तो बेह़द ग़मगीन और अफ़्सुर्दा हुवे। (मुलख़्ख़स अज़ सीरते सदरुश्शरीआ़, स. 37) (मुह़द्दिसे सूरती से मिलने के बा'द) चूंकि सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इरादा बरेली शरीफ़ ह़ाज़िर होने का भी था चुनान्चे, बरेली शरीफ़ जाते वक़्त मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक ख़त़ इस मज़्मून का आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में तह़रीर फ़रमा दिया था कि "जिस त़रह़ मुमकिन हो आप इन (या'नी ह़ज़रते सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) को ख़िदमते दीन व इल्मे दीन की त़रफ़ मुतवज्जेह कीजिये।" (तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 12) सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ुद फ़रमाते हैं : मैं जब आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो दरयाफ़्त फ़रमाया : मौलाना क्या करते हैं ? मैं ने अ़र्ज़ की : मत़ब करता हूं। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "मत़ब भी अच्छा काम है, اَلْعِلْمُ عِلْمَانِ عِلْمُ الْاَدْیَانِ وَعِلْمُ الْاَبْدَان (या'नी इल्म दो हैं : इल्मे दीन और इल्मे त़िब), मगर मत़ब करने में येह ख़राबी है कि सुब्ह़ सुब्ह़ क़ारूरा (या'नी पेशाब) देखना पड़ता है।" इस इरशाद के बा'द मुझे क़ारूरा (पेशाब) देखने से इन्तिहाई नफ़रत हो गई और येह आ'ला ह़ज़रत

رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का कश्फ़ था क्यूंकि मैं अमराज़ की तश्ख़ीस में क़ारूरा (या'नी पेशाब) ही से मदद लेता था और येह (आ'ला ह़ज़रत का) तसर्रुफ़ था कि क़ारूरा बीनी या'नी मरीज़ों का पेशाब देखने से नफ़रत हो गई । (तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 13 मुल्तक़त़न) (इस मुलाक़ात में) आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ निहायत लुत़्फ़ो करम से पेश आए और उन्हों ने सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को अपने पास ही क़ियाम का हुक्म फ़रमाया और दिलबस्तगी (या'नी दिल लगाने) के लिये कुछ तह़रीरी काम वग़ैरा सिपुर्द फ़रमा दिया, सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का तक़रीबन दो माह बरेली शरीफ़ में क़ियाम रहा । रमज़ान की आमद के पेशे नज़र सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने घर जाने की इजाज़त त़लब की तो मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : ''जाइये ! लेकिन जब कभी मैं बुलाऊं तो फ़ौरन चले आइये ।'' (मुलख़्ख़स अज़ : तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 12) घर जाने के चन्द माह बा'द बरेली शरीफ़ से ख़त़ पहुंचा कि आप फ़ौरन चले आइये । चुनान्चे, सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दोबारा बरेली शरीफ़ ह़ाज़िर हो गए और आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बरेली शरीफ़ में आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुस्तक़िल क़ियाम का इन्तिज़ाम फ़रमा दिया । इस त़रह़ सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने 18 साल मेरे आक़ाए ने'मत आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की सोह़बते बा बरकत में गुज़ारे । (तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 14, मुल्तक़त़न) बरेली शरीफ़ में दो मुस्तक़िल काम थे एक मद्रसा (मन्ज़रुल इस्लाम) में तदरीस, दूसरे प्रेस का काम, या'नी कापियों और प्रुफ़ों की तस्ह़ीह़, किताबों की रवानगी, ख़ुत़ूत़ के जवाब, आमदो ख़र्च के ह़िसाब, येह सारे काम तन्हा अन्जाम दिया करते थे । इन कामों के इलावा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बा'ज़ मुसव्वदात का मबीज़ा करना (या'नी नए सिरे से साफ़ लिखना), फ़तवों की नक़्ल और इन की ख़िदमत में रह कर फ़तवा लिखना येह काम भी मुस्तक़िल त़ौर पर अन्जाम देते थे । फिर शहर व बैरूने शहर के अक्सर तब्लीग़े दीन के जल्सों में भी शिर्कत फ़रमाते थे ।

(तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 14, मुल्तक़त़न)

ह़ज़रते सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की इस मेह़नते शाक़्क़ा व अ़ज़्मो इस्तिक़लाल से उस दौर के अकाबिर उ़लमा ह़ैरान थे। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के भाई ह़ज़रते नन्हे मियां मौलाना मुह़म्मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते थे कि मौलाना अमजद अ़ली काम की मशीन हैं और वोह भी ऐसी मशीन जो कभी फेल न हो। (तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 17)

मुसन्निफ़ भी, मुक़र्रिर भी, फ़क़ीहे अ़स्रे ह़ाज़िर भी
वोह अपने आप में था इक इदारा इल्मो ह़िक्मत का

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि जब सदरुश्शरीआ़ को 18 साल तक आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की सोह़बते बा बरकत में रहने की सआ़दत नसीब हुई तो आस्माने इल्मो ह़िक्मत पर ऐसे रोशन सितारे बन कर चमके कि बड़े बड़े उ़लमा आप की इल्मिय्यत के क़ाइल हो गए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बरगुज़ीदा बन्दों की सोह़बत यक़ीनन बाइ़से बरकत होती है, इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या की मइ़य्यत (या'नी हमराही) में रह कर फ़िक्रे आख़िरत, नेकियों की त़रफ़ रग़बत, गुनाहों से नफ़रत और इल्मो ह़िक्मत के बे शुमार मदनी फूल ह़ासिल होते हैं, येह दिन रात उख़रवी कामयाबी के लिये अपनी और दूसरों की इस्लाह़ की कोशिश में मसरूफ़ रहते हैं, इन के दिल ख़ौफ़े ख़ुदा से मा'मूर हो जाते और आंखें आंसू बहाती हैं। यक़ीनन जो शख़्स इन नेक लोगों की सोह़बत में रहेगा तो येही कैफ़िय्यात उस के दिल में भी सरायत कर जाएंगी। اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ

दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस पुर फ़ितन दौर में भी اَلْحَمْدُ لِلّٰهعَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी का पाकीज़ा मदनी माह़ोल, इस मदनी सोह़बत को पाने के कई मवाक़ेअ़ फ़राहम करता है, आप से मदनी इल्तिजा है कि शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बरकतें पाने, सुन्नतें अपनाने, नमाज़े बा जमाअ़त का ज़ेह़न बनाने, झूट, ग़ीबत, चुग़ली वग़ैरा गुनाहों से बचने और

दूसरों को बचाने और नेकियों में दिल लगाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से आ'ला अख़्लाक़ी अवसाफ़ ग़ैर महसूस तौर पर किरदार का हिस्सा बनते चले जाएंगे। हर इस्लामी भाई को चाहिये कि वोह अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ, अव्वल ता आख़िर शिर्कत की सआ़दत हासिल करे और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करे। इन मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की बरकत से अपने साबिक़ा तर्ज़े ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मिलेगा और दिल आख़िरत अच्छी करने के लिये बेचैन हो जाएगा, जिस के नतीजे में गुनाह करने पर नदामत महसूस होगी और तौबा की तौफ़ीक़ मिलेगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इल्मी शानो शौक़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यूं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को बहुत से उ़लूम व फ़ुनून में महारत अ़ता फ़रमाई थी, लेकिन इन्हें तफ़्सीर, हदीस और फ़िक़्ह में ख़ुसूसी लगाव था। फ़िक़्ही जुज़इयात हमेशा नोके ज़बान रहते थे। इसी बिना पर इस वक़्त के मुजद्दिदे आ'ज़म, आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को "सदरुश्शरीआ़" का लक़बे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाया था (तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 192) सदरुल क़ौम अ़रबी ज़बान में क़ौम के सब से अफ़्ज़ल और सब से मोहतरम शख़्स को कहा जाता है, इस लिये सदरुश्शरीआ़ का मत़लब येह बनेगा कि शरीअ़त जानने वालों (या'नी उ़लमा) में सब से बुज़ुर्ग व बरतर शख़्स (حاشیہ عمدۃ الرعایہ بر شرح وقایہ،ص۵۰) आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के आप को दिये गए लक़ब से ज़ाहिर होता है कि वाक़िफ़े अस्रारे शरीअ़त, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को भी सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی की जलालते इल्मी (या'नी इल्मी शानो

शौकत) का ए'तिराफ़ था, जभी आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने साहिबे बहारे शरीअ़त मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْغَنِی को ऐसे अ़ज़ीमुश्शान लक़ब से मुशर्रफ़ फ़रमा कर इन की जलालते इ़ल्मी का इज़हार किया।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आ़दाते मुबारका

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बिला शुबा सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पूरी ज़िन्दगी हमारे लिये मश्अ़ले राह है। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के शागिर्दों में से जिस ने आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की सीरत को अपनाया, उस ने कामयाबी ह़ासिल की। बानी अल जामिअ़तुल अशरफ़िय्या मुबारक पुर हिन्द ह़ाफ़िज़े मिल्लत ह़ज़रते मौलाना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिसे मुरादाबादी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाया करते : गर्म खाना खाने से मसूड़े कमज़ोर होते हैं, मगर मैं गर्म चाए इस लिये पीता हूं कि मेरे उस्ताज़ ह़ज़रते सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ गर्म चाए पीते थे। (सवानहे़ सदरुश्शरीआ़, स. 107) मज़ीद फ़रमाते हैं : कामयाब अश्ख़ास की तक़्लीद करने से आदमी कामयाब होता है। मैं ने ह़ज़रते सदरुश्शरीआ़ की पैरवी की तो कामयाब हुवा। (सवानहे़ सदरुश्शरीआ़, स. 107) इस लिये हमें भी चाहिये कि अपने हर हर फ़े'ल में अपने अस्लाफ़ की पैरवी को तरजीह़ दें ताकि हमारे अन्दर भी अच्छी सिफ़ात पैदा हों और बुरी आ़दतें ख़त्म हो जाएं। आइये ! सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की चन्द आ़दात के मुतअ़ल्लिक़ सुनते हैं। चुनान्चे, आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मिज़ाज में ह़द दरजा लत़ाफ़त थी, साफ़ सुथरा उ़म्दा लिबास ज़ैबे तन फ़रमाते, सर पर खदर की गोल टोपी और इसी का इ़मामा बांधते। आ़म त़ौर पर मुतवस्सित़ खाना तनावुल फ़रमाते, लेकिन कभी कभार निहायत आ'ला खाने घर में पकवा कर ख़ुद भी खाते और सब बच्चों को खिलाते। पानी हमेशा बहुत ठन्डा पीते, ह़त्ता कि जाड़ों में रात को घड़ों में पानी भरवा देते और वोही दिन भर पीते। भुना हुवा गोश्त, रोटी और तले हुवे करेले आप की पसन्दीदा ख़ूराक थी। उ़म्दा और गर्म चाए पीते। मीठी चीज़ों

में हल्का मीठा पसन्द करते, अ़स्र के बा'द उ़मूमन टहलते। आवाज़ बहुत बा रो'ब, गरजदार और बुलन्द थी। फ़ित्री त़ौर पर बहुत रह़ूम दिल, शफ़ीक़, मेहरबान, बुर्दबार और सन्जीदा थे। रिश्तेदारों का बहुत ख़याल करते। अगर ख़ानदान में शकर रन्जी (नाराज़ी) होती तो मिला देते।

(सीरते सदरुश्शरीआ़, स. 106 मुल्तक़त़न)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कैसी दिलकश आ़दात व अवसाफ़ के ह़ामिल थे, चूंकि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इ़ल्मी वजाहत, फ़िक़्ही महारत और तह़क़ीक़ी बसीरत के सबब ख़ानदान भर में मुम्ताज़ व बा वक़ार मक़ाम रखते थे इस लिये अपनी इसी हैसिय्यत को इस्ति'माल करते हुवे ख़ानदान भर की शकर रन्जियां (मा'मूली सी रन्जिश) मिटाते और रूठों को मिला दिया करते थे। हमें भी चाहिये कि जब कभी ख़ानदान के अफ़राद में अन बन हो जाए या बाहर कोई दंगा फ़साद हो जाए, पड़ोसियों में कहीं लड़ाई झगड़े की आग सुलग जाए तो उस भड़कती आग में मज़ीद फूंकें मारने की बजाए मुमकिना सूरत में उस को बुझाने की कोशिश करें। इस से जहां फ़ितने का क़ल्अ़ क़म्अ़ होगा वहीं अपने मुसलमान भाइयों में सुल्ह़ करवाने का सवाब भी हमारे हिस्से में आएगा। आइये ! इस ह़वाले से 2 ह़दीसे मुबारका सुनते हैं :

1. सब से अफ़्ज़ल सदक़ा रूठे हुवे लोगों में सुल्ह़ करा देना है।

(الترغیب والترہیب، کتاب الادب، باب اصلاح بین الناس، رقم ٦، ج٣، ص٣٢١)

2. जो शख़्स लोगों के दरमियान सुल्ह़ कराएगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का मुआ़मला दुरुस्त फ़रमा देगा और उसे हर कलिमा बोलने पर एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा और वोह जब लौटेगा तो अपने पिछले गुनाहों से मग़्फ़िरत याफ़्ता हो कर लौटेगा।

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب اصلاح بین الناس، رقم ٩، ج٣، ص٣٢١)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सदरुश्शरीआ़ के कारहाए नुमायां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शरीअ़त के इमाम, त़रीक़त के चांद ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी सारी ज़िन्दगी शरीअ़तो त़रीक़त की ख़िदमत में गुज़ारी । आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी इस ह़याते त़य्यिबा में ऐसे कारहाए नुमायां अन्जाम दिये कि जिन पर आज भी अ़क़्ले आ़लम ह़ैरान है । आइये आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के चन्द इ़ल्मी कारनामों के बारे में सुनते हैं :

बहारे शरीअ़त, फ़िक़्हे ह़नफ़ी का इन्साएक्लोपीडिया

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْغَنِی के इ़ल्मी कारनामों में सरे फ़ेहरिस्त **"बहारे शरीअ़त"** की तस्नीफ़ है । येह किताब उर्दू ज़बान में अ़क़ाइद से ले कर मुआ़मलात तक के तमाम ज़रूरी मसाइल का इह़ात़ा किये हुवे ख़ास सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के क़लमे फ़ैज़ रक़म से सतरह[17] ह़िस्सों पर मुह़ीत़ है । मन्क़ूल है फ़िक़्हे ह़नफ़ी की मश्हूर किताब फ़तावा आ़लमगीरी सेंकड़ों उ़लमाए दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ निज़ामुद्दीन رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की निगरानी में अ़रबी ज़बान में मुरत्तब फ़रमाई मगर क़ुरबान जाइये कि सदरुश्शरीआ़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْوَرٰی ने वोही काम उर्दू ज़बान में तने तन्हा कर दिखाया और इ़ल्मी ज़ख़ाइर से न सिर्फ़ मुफ़्ता बेह अक़्वाल चुन चुन कर बहारे शरीअ़त में शामिल किये बल्कि सेंकड़ों आयात और हज़ारों अह़ादीस भी मौज़ूअ़ की मुनासबत से दर्ज कीं । आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ुद तह़दीसे ने'मत के त़ौर पर इरशाद फ़रमाते हैं : "अगर औरंगज़ेब आ़लमगीर इस किताब (या'नी बहारे शरीअ़त) को देखते तो मुझे सोने से तोलते ।" (तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 45) और यक़ीनन येह आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का पाको हिन्द के मुसलमानों पर बहुत बड़ा एह़सान है कि उन्हों ने ज़ख़ीम (बहुत बड़ी) अ़रबी कुतुब में फैले हुवे फ़िक़्ही मसाइल को सिलके तह़रीर में पिरो कर एक मक़ाम पर जम्अ़ कर दिया । इन में बेशुमार मसाइल ऐसे भी हैं जिन का सीखना हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन पर फ़र्ज़े ऐन

है । इस की तस्नीफ़ के अस्बाब का ज़िक्र करते हुवे सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه लिखते हैं : "उर्दू ज़बान में अब तक कोई ऐसी किताब तस्नीफ़ नहीं हुई, जो सह़ीह़ मसाइल पर मुश्तमिल हो और ज़रूरियात के लिये काफ़ी व वाफ़ी हो ।" (तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 45 मुल्तक़त़न) इसी ग़रज़ से आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने येह अ़ज़ीमुश्शान किताब तह़रीर फ़रमाई । चुनान्चे, ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं : "इस किताब में ह़त्तल वस्अ़ येह कोशिश होगी कि इबारत बहुत आसान हो कि समझने में दिक़्क़त न हो और कम इल्म और औ़रतें और बच्चे भी इस से फ़ाइदा ह़ासिल कर सकें ।" (तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 46) इस तस्नीफ़ की एक ख़ूबी येह भी है कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बहारे शरीअ़त के दूसरे, तीसरे और चौथे ह़िस्से का मुत़ालआ़ फ़रमा कर इन पर तक़रीज़ भी रक़म फ़रमाई (लिखी) है । इस किताब में जा बजा फ़र्ज़ उ़लूम के साथ साथ, क़ुरआनी आयात के अन्वार, अह़ादीसे त़य्यिबा के गुलज़ार और हर ह़िस्से में फैले हुवे बेशुमार ख़ुश्बूदार शरई मसाइल अपनी महक लुटा रहे हैं । यक़ीनन इस किताब को पढ़ने से न सिर्फ़ दिलो दिमाग़ रोशन होते हैं बल्कि कई मुआ़मलात में शरई रहनुमाई भी नसीब होती है । बहारे शरीअ़त के इस अ़ज़ीम इल्मी ज़ख़ीरे को मुफ़ीद से मुफ़ीद तर बनाने के लिये दा'वते इस्लामी की मजलिस अल मदीनतुल इल्मिय्या के मदनी उ़लमा ने तख़रीज व तस्हील और कहीं कहीं ह़वाशी लिखने की भी सई फ़रमाई है और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुकम्मल किताब मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ हो कर मन्ज़रे आ़म पर भी आ चुकी है । सादा एडीशन तीन[3] जिल्दों में और रंगीन जहेज़ एडीशन छे[6] जिल्दों में मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल किया जा सकता है । इस के इलावा दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net से इस किताब को रीड़ (Read) किया (या'नी पढ़ा) भी जा सकता है, डाऊनलोड (Download) भी किया जा सकता है और प्रिन्ट आऊट (Print Out) भी किया जा सकता है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान के मुह़र्रिक

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْغَنِی ने बरेली शरीफ़ में क़ियाम के दौरान सह़ीह़ और अग़लात़ से मुनज़्ज़ा (مُـنَـزَّـہ) अह़ादीसे नबविय्या व अक़्वाले अइम्मा के मुत़ाबिक़ एक तर्जमे की ज़रूरत मह़सूस करते हुवे तर्जमए कुरआने पाक के लिये आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت की बारगाहे अ़ज़मत में दरख़्वास्त पेश की तो इरशाद फ़रमाया : "येह तो बहुत ज़रूरी है मगर छपने की क्या सूरत होगी ? इस की त़बाअ़त का कौन एहतिमाम करेगा ? बा वुज़ू कापियों को लिखना, बा वुज़ू कापियों और हुरूफ़ों की तस्ह़ीह़ करना और तस्ह़ीह़ भी ऐसी हो कि ए'राब नुक़्त़े या अ़लामतों की भी ग़लत़ी न रह जाए, फिर येह सब चीज़ें हो जाने के बा'द सब से बड़ी मुश्किल तो येह है कि प्रेस में हमा वक़्त बा वुज़ू रहे, बिग़ैर वुज़ू न पथ्थर को छूए और न काटे, पथ्थर काटने में भी एह़तियात़ की जाए और छपने में जो जोड़ियां निकलती हैं इन को भी बहुत एह़तियात़ से रखा जाए ।"

आप ने अ़र्ज़ की : "اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो बातें ज़रूरी हैं, इन को पूरी करने की कोशिश की जाएगी, बिल फ़र्ज़ मान लिया जाए कि हम से ऐसा न हो सका तो जब एक चीज़ मौजूद है तो हो सकता है आयिन्दा कोई शख़्स इस के त़बअ़ करने का इन्तिज़ाम करे और मख़्लूक़े ख़ुदा को फ़ाइदा पहुंचाने में कोशिश करे और अगर इस वक़्त येह काम न हो सका तो आयिन्दा इस के न होने का हम को बड़ा अफ़्सोस होगा ।" आप के इस मा'रूज़ के बा'द तर्जमे का काम शुरूअ़ कर दिया गया, بِحَمْدِاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मसाइ़ये जमीला (या'नी नेक कोशिशों) से ख़ात़िर ख़्वाह कामयाबी हुई और आज मुसलमानों की कसीर ता'दाद मुजद्दिदे आ'ज़म, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के लिखे हुवे कुरआने पाक के सह़ीह़ तर्जमे "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान**" से मुस्तफ़ीद हो कर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (या'नी सदरुश्शरीआ़) की ममनून है और اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह सिलसिला क़ियामत तक जारी रहेगा । (तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 17)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़दीसे पाक में है : مَنْ دَلَّ عَلٰى خَيْرٍ فَلَهٗ مِثْلُ اَجْرِ فَاعِلِهٖ या'नी जो शख़्स किसी नेकी पर रहनुमाई करे, तो उसे भी उतना ही सवाब मिलेगा, जितना कि उस नेकी पर अ़मल करने वाले को । (صحيح مسلم، كتاب الإمارة، باب فضل اعانة الغازي... الخ، الحديث ۱۸۹۳، ص ۱۰۵۰) मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इरशाद फ़रमाते हैं : नेकी करने वाला, कराने वाला, बताने वाला, मश्वरा देने वाला सब सवाब के मुस्तह़िक़ हैं । (मिरआतुल मनाजीह़, स. 194) इस ह़दीसे पाक की रोशनी में देखा जाए तो सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी मिसाल आप नज़र आएंगे । क्यूंकि इन्हें न सिर्फ़ बहारे शरीअ़त जैसी मक़्बूले आ़म किताब लिखने का सवाब भी मिलेगा बल्कि साथ ही साथ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान लिखने लिखाने पर सवाबे अ़ज़ीम भी हाथ आएगा । बल्कि जब तक इस तर्जमए कुरआन से फ़ाइदा उठाया जाता रहेगा, इस का सवाब भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के नामए आ'माल में दर्ज किया जाता रहेगा । इस से हमें भी येह मदनी फूल मिलता है कि अगर हो सके तो हम भी इस ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी में ऐसा कोई काम कर जाएं कि जो मरने के बा'द हमारे काम आए । याद रखिये ! येह दुन्या दारुल अ़मल (या'नी अ़मल करने की जगह) और आख़िरत दारुल जज़ा (या'नी बदला मिलने की जगह) है, इस लिये समझदारी का तक़ाज़ा येही है कि दुन्या में रहते हुवे आख़िरत की तय्यारी की जाए ताकि क़ब्रो ह़श्र के इम्तिह़ान में कामयाब हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ब त़ौरे इन्आ़म मिलने वाली जन्नत की ला ज़वाल ने'मतों से लुत़्फ़ अन्दोज़ हो सकें ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब आदमी मर जाता है तो उस के अ़मल का सिलसिला मुन्क़त़िअ़ हो जाता है लेकिन 3 अ़मल मुन्क़त़िअ़ नहीं होते, सदक़ए जारिया, इ़ल्मे नाफ़ेअ़ और नेक अवलाद जो इस के लिये दुआ़ करती है । (صحيح مسلم، كتاب الوصية، باب ما يلحق الانسان... الخ، الحديث ۱۶۳۱، ص ۸۸۶) ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : येह 3 चीज़ें (ऐसी हैं) जिन का सवाब मरने के बा'द ख़्वाह मख़्वाह

पहुंचता रहता है, कोई ईसाले सवाब करे या न करे । सदक़ए जारिया से मुराद अवक़ाफ़ हैं, जैसे मस्जिदें, मद्रसे, वक़्फ़ किये हुवे बाग़ जिन से लोग नफ़्अ़ उठाते रहते हैं, ऐसे ही इ़ल्म से मुराद दीनी तसानीफ़, नेक शागिर्द जिन से दीनी फ़ैज़ान पहुंचते रहें । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1 स. 188)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी जीते जी, अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ रिज़ाए इलाही और आख़िरत का सवाब पाने, मस्जिद मद्रसा बनाने के साथ साथ, ख़ुद भी नेकी के कामों में मश्ग़ूल रहते हुवे अपनी अवलाद को भी सुन्नतों की तरग़ीब दिला कर नेक बनाना चाहिये ताकि हमारे मरने के बा'द दुआ़ए मग़फ़िरत और ईसाले सवाब के ज़रीए़ हमारी अवलाद हमारे काम आए ।

दुआ़ए मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बाप पर रह़्म फ़रमाए जो नेकी करने पर अपने बेटे की मदद करे । (مصنف ابن ابی شیبہ، ۶/۱۰۱) अवलाद की ज़ाहिरी ज़ैबो ज़ीनत, अच्छी ग़िज़ा, अच्छा लिबास और दीगर ज़रूरियात के साथ साथ इन की अख़्लाक़ी व रूह़ानी तर्बिय्यत के लिये भी कमर बस्ता हो जाइये नीज़ अपनी अवलाद को नेक बना कर सवाबे जारिया का ज़रीआ़ बनाने के साथ साथ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ और मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ कुतुबो रसाइल तक़्सीम करना भी हमेशा हमेशा का सवाब कमाने और आख़िरत में काम आने वाली नेकी है, वोह इस त़रह़ कि अगर इन कुतुबो रसाइल को पढ़ कर कोई पाबन्दी से नमाज़ पढ़ने वाला, सुन्नतों पर अ़मल करने वाला, नेक इजतिमाआ़त में शिर्कत करने वाला, नेकी की दा'वत आ़म करने वाला, बुराई से मन्अ़ करने वाला बन गया तो जब तक वोह येह नेक आ'माल करता रहेगा तो हमें भी इस का सवाब मिलता रहेगा और इस के ज़रीए़ जितने भी नेक बनते जाएंगे उन सब के आ'माल के मुत़ाबिक़ हमें सवाब मिलता रहेगा ।

सुन्नतों की करूं ख़ूब ख़िदमत हर किसी को दूं नेकी की दा'वत
नेक मैं भी बनू इल्तिजा है या ख़ुदा ! तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 139)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

घर का काम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेक आ'माल करने के साथ साथ हमें अपने रविय्ये में भी तब्दीली लानी चाहिये । दूसरों को घूरने, झिड़कने, बात बात पे लड़ने झगड़ने की आ़दत निकाल कर अपने अन्दर नर्मी, आ़जिज़ी व इन्किसारी पैदा करने की कोशिश करनी चाहिये । हमारे अस्लाफ़ आ़जिज़ी व इन्किसारी में अपनी मिसाल आप होते थे । ह़ज़रते सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बारे में आता है कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बहुत बड़े आ़लिमे दीन और फ़क़ीह होने के बा वुजूद भी आ़जिज़ी व इन्किसारी के पैकर थे, इन की आ़जिज़ी और सुन्नतों से मह़ब्बत ही थी कि उस्ताज़ुल असातिज़ा (उस्तादों के उस्ताद या'नी बहुत बड़े उस्ताद) होने के बा वुजूद इन्हें घर का काम काज करने में कोई आ़र (या'नी शर्म) न थी । घर में तरकारियां छीलते, काटते और दूसरे काम भी कर दिया करते थे । प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर अ़मल करते हुवे घर के काम काज से किसी भी क़िस्म का आ़र महसूस न फ़रमाते बल्कि सुन्नत पर अ़मल करने की निय्यत से ब ख़ुशी सब काम अन्जाम देते । (सीरते सदरुश्शरीआ़, स. 101) हमें भी चाहिये कि जब भी बन पड़े और कोई उ़ज़्र न हो तो घर का काम काज ब ख़ुशी करने की कोशिश किया करें । घर का काम अपने हाथों से करना येह मोह़सिने इन्सानिय्यत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नते मुबारका भी है । चुनान्चे,

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से सुवाल हुवा कि क्या नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर में काम करते थे ? फ़रमाया : हां आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने ना'लैने मुबारक ख़ुद गांठते, कपड़ों में पैवन्द लगाते और वोह सारे काम किया करते थे जो मर्द अपने घरों में करते हैं । (مسند امام احمد ، ۹ : ۵۱۹، حدیث/۲۵۳۹۶) ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) अपने घर के किसी काम में तकल्लुफ़ नहीं करते थे, बकरी (का दूध) दोह लेते, अपने कपड़े धो लेते थे, ना'लैन शरीफ़ में पैवन्द लगा लेते थे । मा'लूम हुवा कि घर में काम कर लेना सालिह़ीन का त़रीक़ा है किसी जाइज़ काम में तकल्लुफ़ नहीं (करना) चाहिये । (मिरआतुल मनाजीह़ : 8/74)

अपने कपड़े ख़ुद धो लेना ख़ाक के बिस्तर पर सो लेना

सादा सादा नेक त़बीअ़त صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم

ऐ काश ! हम प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अदाओं से कुछ सीखने और इन पर अ़मल करने में कामयाब हो जाएं और घर में चाहत व ख़ुलूस भरा माह़ोल क़ाइम करने की ग़रज़ से ह़त्तल इमकान अपने काम अपने हाथों से करने के इ़लावा अहले ख़ाना का हाथ बटाने की भी कोशिश किया करें । इस से न सिर्फ़ घर वालों के दिल में मह़ब्बत बढ़ेगी बल्कि घर में अपनाइय्यत का माह़ोल बनेगा । याद रखिये ! छोटे छोटे काम भी अपने बच्चों की अम्मी से करवाने और हर वक़्त दूसरों पर हुक्म चलाते रहने से न सिर्फ़ घर का माह़ोल ख़राब होगा और मसाइल पैदा होंगे बल्कि घर के काम न करने और इस से कतराने को उ़लमा ने तकब्बुर की अ़लामात में शुमार किया है । चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ रिसाले "तकब्बुर" के सफ़ह़ा नम्बर 34 पर है कि अपने घर के कामकाज करने, बाज़ार से सौदा सलफ़ उठा कर लाने को कसरे शान (बे इ़ज़्ज़ती) समझना भी तकब्बुर की अ़लामात में से है । (الحديقة الندية، ج۱، ص۵۸۶) इस लिये अगर किसी में ऐसी आ़दत है तो बराहे करम इस के इ़लाज की कोशिश कीजिये । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें तकब्बुर और हर क़िस्म की बात़िनी व ज़ाहिरी बीमारियों से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

गुनाहों के अमराज़ से नीम जां हूं पए मुर्शिदी दे शिफ़ा या इलाही
बना दे मुझे नेक नेकों का सदक़ा गुनाहों से हर दम बचा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 105)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ईमान अफ़रोज़ वफ़ात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ह़यात मुबारका के मुतअ़ल्लिक़ हम ने सुना कि आप शरीअ़त पर अ़मल करने वाले, घर के काम काज में ह़िस्सा लेने वाले, बहुत बड़े आ़लिमे दीन थे । आइये !

अब आप की वफ़ात का वाक़िआ़ सुनते हैं। चुनान्चे, ख़लीफ़ए सदरे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़ाफ़िज़ क़ारी मुह़म्मद मुस्लेहुद्दीन सिद्दीक़ी क़ादिरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते थे : मुसन्निफ़े बहारे शरीअ़त ह़ज़रते सदरुश्शरीआ़ मौलाना मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हमराह मुझे मदीनतुल औलिया अह़मदाबाद शरीफ़ (हिन्द) में ह़ज़रते सय्यिदुना शाहे आ़लम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के दरबार में ह़ाज़िरी की सआ़दत ह़ासिल हुई, उन दोनों तख़्तों के नीचे ह़ाज़िर हुवे (कि जहां मश्हूर है कि दुआ़एं क़बूल होती हैं) और अपने अपने दिल की दुआ़एं कर के जब फ़ारिग़ हुवे तो मैं ने अपने पीरो मुर्शिद ह़ज़रते सदरुश्शरीआ़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْوَرٰی से अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप ने क्या दुआ़ मांगी ? फ़रमाया : "हर साल ह़ज नसीब होने की।" मैं समझा ह़ज़रत की दुआ़ का मन्शा येही होगा कि जब तक ज़िन्दा रहूं ह़ज की सआ़दत मिले, लेकिन येह दुआ़ भी ख़ूब क़बूल हुई कि उसी साल ह़ज का क़स्द फ़रमाया। सफ़ीनए मदीना में सुवार होने के लिये अपने वत़न मदीनतुल उ़लमा घोसी (ज़िल्अ़ आ'ज़म गढ़ हिन्द) से बम्बई तशरीफ़ लाए। यहां आप को नुमोनिया हो गया और सफ़ीने में सुवार होने से क़ब्ल ही सिने 1367 हिजरी के ज़िल क़ा'दतुल ह़राम की दूसरी शब 12 बज कर 26 मिनट पर ब मुत़ाबिक़ 6 सितम्बर 1948 को आप वफ़ात पा गए।

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मांगी गई दुआ़ "हर साल ह़ज नसीब हो" इस त़रह़ मक़्बूल हुई कि सफ़रे ह़ज के दौरान ही आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का विसाल हो गया। ह़दीसे पाक में है जो शख़्स अपने घर से ह़ज या उ़मरह करने के लिये निकले और फ़ौत हो जाए, तो उसे क़ियामत तक ह़ज व उ़मरह करने वाले का अज्र दिया जाता रहेगा।

(شعب الایمان للبیھقی، باب فی المناسک، فضل الحج والعمرۃ، الحدیث ۴۱۰۰، ج۳، ص ۴۷۴)

मदीने का मुसाफ़िर हिन्द से पहुंचा मदीने में
क़दम रखने की भी नौबत न आई थी सफ़ीने में

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ह़यातो त़य्यिबा के मुतअ़ल्लिक़ बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल की । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की पूरी ज़िन्दगी इख़्लास व लिल्लाहिय्यत की तस्वीर नज़र आती है । तमाम उ़म्र आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه शजरे इस्लाम की आबयारी के लिये कोशां रहे । दीने इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये न सिर्फ़ आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से तर्जमए कुरआन लिखने की ख़्वाहिश की बल्कि इस ख़्वाहिश को अ़मली जामा पहना कर "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान**" की सूरत में बा'द में आने वालों को एक ख़ज़ाना अ़त़ा फ़रमा दिया, इसी त़रह़ "**बहारे शरीअ़त**" जैसी अ़ज़ीमुश्शान किताब की तस्नीफ़ फ़रमा कर मुसलमानों को अपनी ज़िन्दगी शरीअ़त के मुत़ाबिक़ गुज़ारने का सामान फ़राहम फ़रमाया । इस के साथ साथ दुन्या भर में दीने इस्लाम की ह़िमायत व नुस्रत और इस की तब्लीग़ के लिये आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने लाइक़ फ़ाइक़ तलामिज़ा (शागिर्दों) की भी एक कसीर ता'दाद तय्यार की है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सदक़े हमें भी दीन की सर बुलन्दी और शरीअ़त के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मजलिस का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मौजूदा दौर में इ़लाज के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े होने की वज्ह से त़बीबों की पहचान के लिये नाम भी अलग अलग रखे गए हैं । चुनान्चे, जब डॉक्टर्ज़ का नाम लिया जाता है तो इस से आ़म त़ौर पर एलोपेथिक डॉक्टर्ज़ मुराद होते हैं । यूनानी त़िब वालों को ह़कीम कहते हैं, जानवरों के डॉक्टर्ज़ को वेटनरी डॉक्टर और डॉक्टर्ज़ की एक क़िस्म होम्योपॅथिक डॉक्टर्ज़ कहलाती है । अल ग़रज़ मौजूदा दौर के त़बीबों को देखा जाए तो इन की अक्सरिय्यत फ़र्ज़ उ़लूम या'नी बुन्यादी ज़रूरी दीनी उ़लूम से

ना वाक़िफ़ नज़र आती है। चुनान्चे, तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में त़बीबों के हर त़बक़े के लिये एक अलग मजलिस क़ाइम की गई। इन तमाम मजालिस का बुन्यादी मक़्सद इस पेशे से वाबस्ता लोगों के दिलों में फ़र्ज़ उ़लूम की अहम्मिय्यत उजागर करने के साथ साथ उन तक दा'वते इस्लामी के मदनी पैग़ाम को पहुंचाना और उन्हें दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता करते हुवे इस मदनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ" के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने का मदनी ज़ेह्न देना है।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में

ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

12 मदनी कामों में ह़िस्सा लीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी नेकी के कामों में ह़िस्सा लेने, नेकियां करने, गुनाहों से बचने, दूसरों को बचाने और नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लेना चाहिये। ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम हफ़्तावार "**मदनी मुज़ाकरा**" भी है। लोगों में इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल लुटाना, इन की तर्बिय्यत करना और इ़ल्मे दीन सिखाना बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن का मा'मूल रहा है। बुज़ुर्गाने दीन की एक ता'दाद है जो इ़ल्मे दीन की शम्एं जलाने और लोगों को हिदायत का सामान फ़राहम करने के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से इ़ल्मे दीन सिखाने की तरकीब करते हैं, उ़लमाए दीन और औलियाए कामिलीन की सोह़बत का फ़ैज़, इन के बयान की चाशनी और इन के किरदार की दिलकशी हज़ारों आदमियों के लिये राहे हिदायत का ज़रीआ़ बनती है। इसी वज्ह से ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम लुक़्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने साह़िबज़ादे को वसिय्यत करते हुवे इरशाद फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! जब तुम किसी ऐसे गुरौह को देखो कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते हैं तो उन्ही की सोह़बत इख़्तियार करो, इस लिये कि अगर तुम आ़लिम भी हुवे तो तुम्हें तुम्हारा इ़ल्म मज़ीद फ़ाइदा देगा और अगर तुम जाहिल हुवे तो वोह तुम्हें

इल्मे दीन सिखा देंगे और जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतों की बरसात उन पर बरसेगी तो तुम्हें भी उन की सोह़बत में होने की वज्ह से इस से ह़िस्सा मिलेगा और ऐसी मजलिस में न बैठना जहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र न हो, इस लिये कि अगर तुम आ़लिम भी हुवे तो तुम्हें तुम्हारा इल्म फ़ाइदा नहीं देगा और अगर तुम जाहिल हुवे तो उन की सोह़बत तुम्हारी जहालत और गुमराही को मज़ीद बढ़ा देगी। अगर उन पर ग़ज़बे इलाही हुवा तो उन की मइ़य्यत (या'नी उन के साथ रहने) की वज्ह से तू भी फंस जाएगा। (روح البیان:۱/۲۵۷) एक और मक़ाम पर अपने बेटे को वसिय्यत करते हुवे इरशाद फ़रमाया : उ़लमा की मजलिस को लाज़िम पकड़ो और हुकमा का कलाम ग़ौर से सुना करो ! क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुर्दा दिल को ह़िक्मत के नूर से ऐसे ही ज़िन्दा फ़रमा देता है जैसे कि ज़मीन को बारिश के क़त़रों से ज़िन्दा फ़रमाता है। (السراج المنیر:۳/۱۸۵)

तआ़रुफ़े मदनी मुज़ाकरा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! रईसुल हुकमा ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम लुक़्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कैसे इल्मो ह़िक्मत भरे मदनी फूल अ़त़ा फ़रमाए कि उ़लमा की सोह़बत इख़्तियार करनी चाहिये, इसी में फ़ाइदा है। आ़लिम हो तब भी उ़लमा की मजलिस से जुड़ा रहे और जाहिल हो तब तो उस पर लाज़िम है कि वोह उ़लमा की मइ़य्यत (या'नी हमराही) इख़्तियार करे। इल्मो ह़िक्मत भरी बातों से जहां फ़िक्रो नज़र के दरीचे रोशन होते हैं, वहीं इल्मे दीन सीखने का सवाब भी हाथ आता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ भी अस्लाफ़ के त़रीक़े पर अ़मल करते हुवे आ़म फ़हम अन्दाज़ में क़ुरआनो ह़दीस की रोशनी में न सिर्फ़ शरई सुवालात के जवाबात इरशाद फ़रमाते हैं, बल्कि बा'ज़ अवक़ात क़ीमती त़िब्बी मा'लूमात से रू शनास फ़रमाते, मुतअ़द्दिद गुथ्थियों को सुलझाते (या'नी मुश्किलात को ह़ल फ़रमाते), मुख़्तलिफ़ इल्मी मदनी फूलों के ज़रीए़ इसे और मुनफ़रिद बनाते और देखने, सुनने वालों के दिलों में ख़ौफ़े ख़ुदा व इश्क़े मुस्त़फ़ा की शम्अ़ भी फ़रोज़ां (रोशन) फ़रमाते

हैं । शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की हर काविश (कोशिश) का मक़्सद राहे रास्त से भटके हुवे लोगों को राह पर लाना और उन्हें सुन्नतों का पाबन्द बनाना है । اَلْحَمْدُلِلّٰه عَلٰى اِحْسَانِه बेशुमार इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन मदनी मुज़ाकरों के ज़रीए गुनाहों से ताइब हो कर इस्लामी ता'लीमात को अपनाने वाले बन चुके हैं । आइये ! आप की ज़ौक़ अफ़ज़ाई के लिये एक मदनी बहार सुनाता हूं :

फ़ेशन परस्त कैसे सुधरा !

लय्या शहर (सूबा पंजाब, पाकिस्तान) के मुक़ीम एक नौजवान का बयान है कि मैं सुन्नतों से दूर फ़ेशन के नशे में मख़्मूर था, नित नए तराश ख़राश वाले कपड़े पहनना, फ़ुज़ूलिय्यात व लग़विय्यात में अपने क़ीमती लम्हात ज़ाएअ़ करना मेरा मा'मूल था । ज़िक्रे इलाही से यक्सर ग़ाफ़िल हो चुका था, नेकियों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने का ज़ेहन कुछ यूं बना कि एक बार "**मदनी मुज़ाकरा**" सुनने की सआ़दत हिस्से में क्या आई, मेरी ज़िन्दगी का रुख़ ही बदल गया । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के आ़म फ़हम अन्दाज़ में बयान की जाने वाली ढ़ेरों ढेर मा'लूमात का "अनमोल ख़ज़ाना" लूटने का सुन्हरी मौक़अ़ मिला, ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्के़ मुस्त़फ़ा की किरनों से मेरा तारीक दिल रोशन हो गया, साबिक़ा ज़िन्दगी पर नदामत होने लगी, लिहाज़ा मैं ने बक़िय्या ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुवे फ़ेशन की नुहूसत से जान छुड़ाई और सुन्नतों पर अ़मल करने और नमाज़ों की पाबन्दी का अ़ज़्मे मुसम्मम (पक्का इरादा) कर लिया, जल्द ही सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ सजा लिया, दाढ़ी शरीफ़ से चेहरा पुरनूर कर लिया और नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माहोल से मुन्सलिक हो गया । नेकी की दा'वत की धूमें मचाने के जज़्बे के तह़्त हर माह 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र मेरा मा'मूल बन गया । اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी की ह़ैसिय्यत से सुन्नतों का परचार कर रहा हूं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مِشْكَاةُ الْمَصابِيح، ج۱ص۵۵حدیث ۱۷۵ دارالکتب العلمیۃ بیروت)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा

जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

बैठने की चन्द सुन्नतें और आदाब

आइये बैठने की चन्द सुन्नतें और आदाब मुलाह़ज़ा कीजिये :

❀ सुरीन ज़मीन पर रखें और दोनों घुटनों को खड़ा कर के दोनों हाथों से घेर लें और एक हाथ से दूसरे को पकड़ लें, इस त़रह़ बैठना सुन्नत है (लेकिन इस दौरान घुटनों पर कोई चादर वग़ैरा ओढ़ लेना बेहतर है।) (मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द . 6, स. 387 मुलख़्ख़सन) ❀ चार ज़ानू (या'नी पालती मार कर) बैठना भी नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है। ❀ जहां कुछ धूप और कुछ छाउं हो वहां न बैठें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तुम में से कोई साए में हो और उस पर से साया रुख़्सत हो जाए और वोह कुछ धूप कुछ छाउं में रह जाए तो उसे चाहिये कि वहां से उठ जाए।" (سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الجلوس بین الظل و الشمس، الحدیث ۴۸۲۱، ج۴، ص۳۳۸)

❀ क़िब्ला रुख़ हो कर बैठें। (रसाइले अ़त्त़ारिय्या, ह़िस्सा : 2, स. 229) ❀ आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : पीर व उस्ताज़ की निशस्त पर उन की ग़ैबत (या'नी ग़ैर मौजूदगी) में भी न बैठे। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 369 / 424) ❀ जब कभी

इजतिमाअ़ या मजलिस में आएं तो लोगों को फ़लांग कर आगे न जाएं जहां जगह मिले वहीं बैठ जाएं । ❀ जब बैठें तो जूते उतार लें आप के क़दम आराम पाएंगे । ❀ मजलिस से फ़ारिग़ हो कर येह दुआ़ तीन बार पढ़ लें तो गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे । और जो इस्लामी भाई मजलिसे ख़ैर व मजलिसे ज़िक्र में पढ़े तो उस के लिये उस ख़ैर पर मोहर लगा दी जाएगी । वोह दुआ़ येह है :

''سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ''

तर्जमा : तेरी ज़ात पाक है और ऐ **अल्लाह** ! तेरे ही लिये तमाम ख़ूबियां हैं, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी त़रफ़ तौबा करता हूं । (سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی کفارۃ المجلس، الحدیث ۴۸۵۷، ج۴، ص۳۴۷)

❀ जब कोई आ़लिमे बा अ़मल या मुत्तक़ी शख़्स या सय्यिद साहि़ब या वालिदैन आएं तो ता'ज़ीमन खड़े हो जाना सवाब है ।

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी लिखते हैं : बुज़ुर्गों की आमद पर येह दोनों काम या'नी ता'ज़ीमी क़ियाम और इस्तिक़्बाल जाइज़ बल्कि सुन्नते सह़ाबा है । (मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द . 6, स. 370)

तीन दिन हर माह जो अपनाए मदनी क़ाफ़िला
बे ह़िसाब उस का ख़ुदाया ख़ुल्द में हो दाख़िला

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जब जुमा'रात का दिन आता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं, वोह लिखते हैं, कौन यौमे जुमा'रात और शबे जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है। (اَلْفِردَوس بمأثور الخِطاب ج۱ص۱۸٤ حدیث٦٨٨)

या नबी ! तुझ पे लाखों दुरूदो सलाम इस पे है नाज़ मुझ को हूं तेरा ग़ुलाम
अपनी रह़मत से तू शाहे ख़ैरुल अनाम मुझ से आ़सी का भी नाज़ बरदार है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج٦ص١٨٥ حدیث ٥٩٤٢)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की नियतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुरआने करीम उस रब्बे अ़ज़ीम عَزَّوَجَلَّ का बे मिसाल कलाम है जो अकेला मा'बूद, तन्हा ख़ालिक़ और सारी काइनात का ह़क़ीक़ी मालिक है, दुन्या व आख़िरत की हर भलाई ह़क़ीक़ी तौ़र पर उसी के दस्ते कुदरत में है, उस ने अपने येह कलाम रसूलों के सरदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल फ़रमाया ताकि इस के ज़रीए आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों को **अल्लाह** तआ़ला पर ईमान लाने और दीने ह़क़ की पैरवी करने की त़रफ़ बुलाएं और येह वोह मुक़द्दस व बा बरकत कलाम है कि जिस को देखना, पढ़ना, सुनना और छूना सब इ़बादत के काम हैं । हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم اَجْمَعِيْن निहायत अ़क़ीदतो मह़ब्बत के साथ कसरत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस पाक कलाम की तिलावत फ़रमा कर इस की रह़मतों और बरकतों से अपने दामन भर लिया करते थे । आइये ! इसी ह़वाले से एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुनते हैं । चुनान्चे,

कुरआने करीम का शैदाई !

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बारे में आता है कि कसीर मस्रूफ़ियात के बा वुजूद आप की इ़बादत का ज़ौक़ो शौक़ क़ाबिले तक़्लीद था । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को तिलावते कुरआन के साथ

इ़श्क़ की ह़द तक लगाव था । रमज़ानुल मुबारक की रातों में दौराने तरावीह़, दस पारे नवाफ़िल में पढ़ते और तीसरी शब में कुरआने पाक ख़त्म फ़रमाते नीज़ रमज़ानुल मुबारक की अव्वल शब में लोग आप के पास जम्अ़ हो जाते, तो आप उन्हें तरावीह़ में कुरआने करीम सुनाते । (ارشاد الساری ج۱، ص۵۳، تاریخ بغداد، ج۲ص۱۲)

कुरआने करीम से आप की मह़ब्बत का अन्दाज़ा इस वाक़िए़ से भी लगाया जा सकता है कि आप के कातिब मुह़म्मद बिन अबी ह़ातिम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि एक मरतबा आप को आप के बा'ज़ तलामिज़ा (या'नी शागिर्दों) ने दा'वत दी तो आप तशरीफ़ ले गए, जब नमाज़े ज़ोहर का वक़्त हुवा तो आप ने लोगों के साथ नमाज़ पढ़ी, फिर नवाफ़िल शुरूअ़ फ़रमा दिये, बहुत त़वील क़ियाम किया, जब फ़ारिग़ हुवे तो क़मीस का एक किनारा बुलन्द करते हुवे अपने बा'ज़ साथियों को फ़रमाया : देखो मेरी क़मीस के अन्दर क्या चीज़ है ? उन्हें ने देखा तो एक (मूज़ी जानवर) था जिस ने सोलह, सतरह मक़ामात पर डंक मारा था, जिस से आप का जिस्म सूज चुका था और डंक के आसार बिल्कुल नुमायां थे । लोगों ने कहा : हुज़ूर ! जब इस मूज़ी जानवर ने पहला डंक मारा था, तो आप उसी वक़्त नमाज़ से बाहर क्यूं न हुवे ? फ़रमाया : मैं ने एक सूरत शुरूअ़ कर रखी थी, दिल ने चाहा कि वोह पूरी हो जाए (तो फिर सलाम फेरूंगा) । (تاریخ بغداد ج۲، ص۱۳)

इलाही ख़ूब दे दे शौक़ कुरआं की तिलावत का
शरफ़ दे गुम्बदे ख़ज़रा के साए में शहादत का

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم तिलावते कुरआने करीम से किस क़दर मह़ब्बत किया करते थे कि अगर दौराने तिलावत उन्हें कोई तक्लीफ़ भी पहुंचती तो तिलावते कुरआन को मौक़ूफ़ करना गवारा न फ़रमाते बल्कि इस बात को पसन्द करते थे कि इन का ज़ियादा से ज़ियादा वक़्त तिलावते कुरआन में सर्फ़ होता रहे, यक़ीनन तिलावते कुरआन की बे शुमार रह़मतें और बरकतें हैं । जैसा कि :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "कुरआन पढ़ो क्यूंकि वोह क़ियामत के दिन अपने अस्ह़ाब के लिये शफ़ीअ़ हो कर आएगा ।"

(مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب فضل قراءۃ القرآن وسورۃ البقرۃ، ص۴۰۳، الحدیث: ۲۵۲(۸۰۴))

लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि हम भी ज़ियादा से ज़ियादा कुरआने करीम की तिलावत किया करें, येह आ़दत उसी सूरत में बन सकेगी, जब हमारे दिलों में कुरआने करीम की मह़ब्बत और उस की तिलावत की अहम्मिय्यत पैदा होगी । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने करीम को वोह शानो अ़ज़मत अ़त़ा फ़रमाई है, जो किसी और कलाम को ह़ासिल नहीं । कुरआने करीम, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वाज़ेह़ दलील और उस का नाज़िल किया हुवा नूर है । तमाम जिन्नो इन्स मिल कर भी कुरआने करीम जैसा कलाम नहीं ला सकते, कुरआने करीम सिराते मुस्तक़ीम है और इस में किसी क़िस्म की कोई कजी या'नी टेढ़ापन नहीं है बल्कि निहायत मो'तदिल और बन्दों के लिये कसीर फ़वाइद पर मुश्तमिल वोह मह़फ़ूज़ किताब है, जिस की ह़िफ़ाज़त का ज़िम्मा ख़ुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने लिया है । कुरआने करीम में अव्वलीन व आख़िरीन सब का इ़ल्म मौजूद है, कुरआने करीम मुसलमानों के लिये हिदायत, रह़मत, बिशारत, नसीह़त और शिफ़ा का ज़रीआ़ है । कुरआने करीम इन्तिहाई असर अंगेज़ किताब है, जिसे सुन कर ख़ौफ़ो ख़शिय्यत के पैकर लोगों के दिल दहल जाते हैं और वोह अ़ज़ाबे इलाही पर मुश्तमिल आयाते मुबारका को सुन कर ख़ूब गिरया व ज़ारी फ़रमाते हैं । जैसा कि :

ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : मेरे वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जब कुरआने पाक की तिलावत फ़रमाते, तो आप को अपने आंसूओं पर इख़्तियार न रहता या'नी ज़ारो क़ित़ार रोया करते । (شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالی، ج۱، ص۴۹۳، ح۸۰۶)

हर रोज़ मैं कुरआन पढ़ूं काश ! ख़ुदाया
***अल्लाह** ! तिलावत में मेरे दिल को लगा दे*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तिलावते क़ुरआन और फ़ारूक़े आ'ज़म की गिरया व ज़ारी

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन आयात की तिलावत की : ﴿اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۙ﴿۷﴾ مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ۙ﴿۸﴾﴾ (پ۲۷، الطور: ۷تا۸) (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "बेशक तेरे रब का अ़ज़ाब ज़रूर होना है, इसे कोई टालने वाला नहीं।") आप पर ख़ौफ़े ख़ुदा के ग़लबे के सबब ऐसी रिक़्क़त त़ारी हुई कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सांस ही उखड़ गई और येह कैफ़िय्यत कमो बेश बीस रोज़ तक त़ारी रही। (फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म, जि. 1, स. 151)

तेरे डर से सदा थरथराऊं ख़ौफ़ से तेरे आंसू बहाऊं
कैफ़ ऐसा दे, ऐसी अदा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 128)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रूह़ परवाज़ कर गई

ह़ज़रते ज़ुरारह बिन अबी औफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ निहायत ही आ़बिदो ज़ाहिद और ख़ौफ़े इलाही में डूबे हुवे आ़लिमे बा अ़मल थे। तिलावते क़ुरआन के वक़्त वईद व अ़ज़ाब की आयात पढ़ कर लरज़ा बर अन्दाम बल्कि कभी कभी ख़ौफ़े ख़ुदा से बेहोश हो जाते थे। एक दिन फ़ज्र की नमाज़ में जैसे ही आप ने येह आयात तिलावत कीं :

﴿فَذٰلِكَ یَوْمَئِذٍ یَّوْمٌ عَسِیْرٌ ۙ﴿۹﴾ فَاِذَا نُقِرَ فِی النَّاقُوْرِ ۙ﴿۸﴾﴾ (پ۲۹، المدثر: 9،8)

(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर जब सूर फूंका जाएगा, तो वोह दिन कर्रा (या'नी सख़्त) दिन है।) तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर नमाज़ की ह़ालत में ही ख़ौफ़े इलाही का इस क़दर ग़लबा हुवा कि लरज़ते, कांपते हुवे ज़मीन पर गिर पड़े और आप की रूह़ परवाज़ कर गई। (اولیائے رجال الحدیث ص۱۲۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन किस क़दर ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ तिलावते क़ुरआने पाक करते और इस के मा'ना में ग़ौरो फ़िक्र करते हुवे कैसी गिरया व ज़ारी फ़रमाते थे । लिहाज़ा हमें भी तिलावत करते वक़्त उस के मआ़नी में ग़ौरो तफ़क्कुर करते हुवे रोने की कोशिश करनी चाहिये । हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़ुरआन ग़म के साथ नाज़िल हुवा, लिहाज़ा जब तुम इस की क़िराअत करो, तो ग़म ज़ाहिर करो ।"

(معجم الاوسط، باب الالف، من اسمہ ابراہیم، ۲/۱۶۶، الحدیث: ۲۹۰۲۔)

ग़म की कैफ़िय्यत पैदा करने का त़रीक़ा येह है कि क़ुरआने पाक में बयान कर्दा तम्बीहात (या'नी नसीह़तों भरे वाक़िआ़त) और वईदात (या'नी जिन कामों पर सज़ा देने का वा'दा है) को याद कीजिये और फिर जिन कामों को करने का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया और जिन के करने से मन्अ़ फ़रमा दिया है, उन के बारे में अपनी कोताहियों पर भी नज़र कीजिये कि मैं उन अह़कामात पर किस क़दर अ़मल करता हूं और साथ ही अ़ज़ाबे इलाही और मह़शर की रुस्वाई का भी तसव्वुर बांधिये कि आज तो मैं लोगों से छुप कर दिन रात गुनाहों में मश्ग़ूल रहता हूं, कल क़ियामत में इसी सबब से लोगों के सामने मेरी ह़क़ीक़त से पर्दा उठ गया तो कैसी नदामत होगी, अगर हम इस त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र के साथ तिलावत करेंगे, तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ग़म की कैफ़िय्यत पैदा होगी और हो सकता है आंखों से आंसू भी छलक जाएं और दिल फ़िक्रे आख़िरत के लिये बे क़रार हो जाए ।

अ़त़ा कर मुझे ऐसी रिक़्क़त ख़ुदाया
करूं रोते रोते तिलावत ख़ुदाया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी अस्लाफ़ के त़रीक़े पर अ़मल करते हुवे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इस प्यारी किताब क़ुरआने करीम की ज़ियादा से ज़ियादा तिलावत करनी चाहिये और इस में बयान कर्दा अह़कामात पर अ़मल की कोशिश भी करनी चाहिये । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने करीम की तिलावत

करने वालों, इस के हुक्म की ता'मील में नमाज़ पढ़ने वालों, ज़कात की बर वक़्त अदाएगी करने वालों, सदक़ा देने वालों की फ़ज़ीलत बयान करते हुवे पारह 22 सूरतुल फ़ातिर, आयत नम्बर 29 में इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ عَلَانِیَةً یَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ﴿۲۹﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जो* **अल्लाह** *की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं पोशीदा और ज़ाहिर वोह ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं जिस में हरगिज़ टोटा (या'नी नुक़्सान) नहीं।*

तफ़्सीरे ब-ग़वी में इस आयते मुबारका के तह़्त मज़्कूर है कि "**तिजारतन**" से मुराद वोह सवाब है जिस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वा'दा फ़रमाया है, इस में हरगिज़ टोटा (या'नी नुक़्सान) नहीं या'नी येह अज्र न फ़ासिद होगा, न हलाक होगा । (तफ़्सीरे ब-ग़वी, जि. 3, स. 492) गोया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नमाज़ पढ़ने वालों, सदक़ा व ख़ैरात करने वालों और कुरआने करीम की तिलावत करने वालों को अज्रे अ़ज़ीम की बिशारत अ़त़ा फ़रमा रहा है।

याद रहे ! कुरआने करीम पढ़ने का सवाब हमें उसी सूरत मिल सकता है कि जब दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ के साथ पढ़ा जाए नीज़ कुरआने करीम को सुस्ती और ग़फ़्लत के साथ पढ़ने के बजाए ख़ुश इल्हानी, दिल जमई और ग़ौरो फ़िक्र करते हुवे इस की तिलावत करनी चाहिये । ह़ज़रते उ़बैदा मुलैकी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ कुरआन वालो ! कुरआन को तक्या न बनाओ (या'नी सुस्ती और ग़फ़्लत न बरतो) और रात और दिन में इस की तिलावत करो, जैसा तिलावत करने का ह़क़ है और इस को फैलाओ और तग़न्नी करो (या'नी अच्छी आवाज़ से पढ़ो, इस का मुआ़वज़ा न लो) और जो कुछ इस में है, उस पर ग़ौर करो ताकि तुम्हें फ़लाह़ मिले । (एक रिवायत में है) इस के सवाब में जल्दी न करो क्यूंकि इस का सवाब बहुत है ।" (شعب الایمان، التاسع عشر الخ، فصل فی ادمان تلاوتہ، ۲/۳۵۰-۳۵۱، الحدیث: ۲۰۰۷و۲۰۰۹)

एक और ह़दीसे पाक में है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मेरी उम्मत की अफ़्ज़ल इबादत, तिलावते कुरआन है।

(شعب الایمان للبیھقی، ج۲، ص۳۵۴، ح۲۰۲۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने हमें रोज़ाना तिलावते कुरआन को अपना मा'मूल बनाने और इस की मह़ब्बत दिल में बढ़ाने के लिये एक मदनी इन्आ़म भी अ़त़ा फ़रमाया है कि "क्या आज आप ने कन्ज़ुल ईमान से कम अज़् कम 3 आयात (मअ़ तर्जमा व तफ़्सीर) तिलावत करने या सुनने की सआ़दत ह़ासिल की ?" लिहाज़ा हमें भी अपनी येह आ़दत बनानी चाहिये कि रोज़ाना कन्ज़ुल ईमान / तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान / नूरुल इरफ़ान / सिरात़ुल जिनान से मअ़ तर्जमा व तफ़्सीर ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र के साथ कुरआने पाक की तिलावत किया करें, इस त़रह़ मदनी इन्आ़म पर अ़मल के साथ साथ तिलावत की ढेरों भलाइयां और बरकतें भी नसीब होंगी और अ़मल का जज़्बा भी पैदा होगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

कन्ज़ुल ईमान ऐ ख़ुदा मैं काश रोज़ाना पढ़ूं
पढ़ के तफ़्सीर इस की फिर इस पर अ़मल करता रहूं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तिलावत का शौक़ रखने वाले लोग

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم कैसे ज़ौक़ो शौक़ से कुरआने करीम की तिलावत किया करते थे। आइये ! इस ज़िम्न में इन नेक हस्तियों के ईमान अफ़रोज़ मज़ीद वाक़िआ़त सुनते हैं। चुनान्चे, ह़ज़रते शैख़ बहाउद्दीन ज़-करिय्या मुल्तानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को तिलावते कुरआने करीम से ग़ैर मा'मूली शग़्फ़ था। चुनान्चे, हर शब को एक कुरआने पाक की तिलावत फ़रमाया करते थे।

(तज़किरा ह़ज़रते बहाउद्दीन ज़-करिय्या मुल्तानी, स. 76, मुलख़्ख़सन)

एक रात ह़ज़रते शैख़ बहाउद्दीन ज़-करिय्या मुल्तानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने दोस्तों से इरशाद फ़रमाया : तुम में कोई ऐसा शख़्स है जो आज की रात दो रक्अ़त पढ़े और एक रक्अ़त में कामिल कुरआन शरीफ़ पढ़े । ह़ाज़िरीन में से किसी को हिम्मत न हुई । शैख़ बहाउद्दीन ज़-करिय्या رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ुद खड़े हुवे और दो रक्अ़त नमाज़ शुरूअ़ कर दी । पहली रक्अ़त में पूरा कुरआने करीम और चार पारे मज़ीद तिलावत फ़रमाए और दूसरी रक्अ़त में सूरए इख़्लास पढ़ी और नमाज़ मुकम्मल कर ली । (फ़वाइदुल फ़वाद, मुतर्जिम, स. 62)

ह़ज़रते शैख़ बहाउद्दीन ज़-करिय्या رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का मा'मूल था कि तहज्जुद की नमाज़ के बा'द कुरआने पाक का आग़ाज़ फ़रमाते और नमाज़े फ़ज्र से पहले मुकम्मल फ़रमा लेते ।

(शाने औलिया अल मा'रूफ़ हफ़्तादे औलिया, स. 252, मुलख़्ख़सन)

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन कराबीसी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं ने कई बार ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की मइय्यत (या'नी साथ) में रात गुज़ारी । मैं ने देखा कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक तिहाई रात नमाज़ पढ़ते और कभी पचास आयात से ज़ियादा तिलावत न करते, अगर कभी ज़ियादा पढ़ते, तो भी सौ आयात तक पहुंचते । जब किसी आयते रह़मत की तिलावत करते, तो बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अपने लिये और तमाम मोमिनीन के लिये इत़ाअ़त पर क़ाइम रहने की दुआ़ करते और जब आयते अ़ज़ाब पढ़ते, तो उस से पनाह त़लब करते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपने लिये और तमाम अहले ईमान के लिये नजात की दुआ़ करते ।"

(تاریخ بغداد، الرقم ۴۵۴، محمد بن ادریس الشافعی، ج ۲، ص ۶۱)

ह़ज़रते यह़या बिन सईद क़त़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه भी आ़शिक़े कुरआन थे, आप का मा'मूल था कि आप मग़रिब और इशा के दरमियान एक कुरआने करीम ख़त्म करते थे । यह़या बिन मईन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते यह़या क़त़ान ने बीस साल क़ियाम फ़रमाया, हर रात में एक कुरआन ख़त्म फ़रमाते थे । चालीस साल तक ज़वाल के वक़्त मस्जिद में ह़ाज़िर होना तर्क

नहीं किया और कभी भी आप को जमाअ़त से ग़ैर ह़ाज़िर नहीं पाया गया । अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह कहते हैं कि हम ह़ज़रते यह़या बिन सईद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास ह़ाज़िर थे, आप ने एक शख़्स से फ़रमाया कि कुरआन सुनाओ, उस ने सूरतुद्दुख़ान पढ़ना शुरूअ़ की, जब इस आयत पर पहुंचा :

اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۙ ﴿۴۰﴾ (پ، ۲۵، دخان، آیت ۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक फ़ैसला का दिन उन सब की मीआ़द है ।

तो गिर गए और ग़शी त़ारी हो गई, उन का सीना ज़मीन से बुलन्द हुवा और लोट पोट होने लगे और दरवाज़े के साथ आ टकराए, जिस से उन की कमर ज़ख़्मी हो गई और ख़ून जारी हो गया, घर की औ़रतें चीख़ने लगीं तो हम लोग दौड़ कर आए और दरवाज़े पर आ कर रुक गए, यहां तक कि वोह आहिस्ता आहिस्ता होश में आए, फिर हम अन्दर दाख़िल हुवे, तो आप वोही आयत दोहरा रहे थे । अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह कहते हैं कि आप को जो ज़ख़्म पहुंचा था वोह बराबर क़ाइम रहा, ह़त्ता कि आप का इन्तिक़ाल हो गया ।

(صفة الصفوة ج۲، الجزء الثالث، ص۲۴۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।

तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा
में थरथर रहूं कांपता या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 105)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत में बयान हुवा कि ह़ज़रते यह़या बिन सईद क़त़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मग़रिब और इशा के दरमियान एक कुरआने करीम ख़त्म फ़रमा लिया करते थे । हो सकता है किसी के ज़ेह्न में शैत़ान येह वस्वसा डाले कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि "जिस ने तीन रात से कम में कुरआन पढ़ा, उस ने समझा नहीं ।"

("سنن أبي داود"، کتاب شہر رمضان، باب تحزیب القرآن، الحدیث: ۱۳۹۴، ج۲، ص۷۹)

फिर येह ह़ज़रात इस क़दर मुख़्तसर अ़र्से में कैसे तिलावत कर लिया करते थे ? चुनान्चे, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस ह़दीस का मत़लब बयान करते हुवे फ़रमाते हैं कि जो शख़्स हमेशा तीन दिन से कम में ख़त्मे कुरआन किया करे, वोह जल्दी तिलावत की वज्ह से न तो अल्फ़ाज़े कुरआन सह़ीह़ तौ़र पर समझ सकेगा और न उस के ज़ाहिरी मा'ना में ग़ौ़र कर सकेगा। (फिर फ़रमाते हैं) ख़याल रहे कि येह हुक्म आ़म मुसलमानों के लिये है कि वोह अगर बहुत जल्दी तिलावत करें, तो ज़बान लपट जाती है, ह़र्फ़ सह़ीह़ अदा नहीं होते, ख़वास (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों) का हुक्म और है, ख़ुद हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तहज्जुद की एक एक रक्अ़त में पांच पांच, छ छ पारे पढ़ लेते थे।

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) ने एक रात में ख़त्मे कुरआन किया है, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام चन्द मिनट में ज़बूर शरीफ़ ख़त्म कर लेते थे, ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم घोड़ा कस्ने से पहले ख़त्मे कुरआन कर लेते थे। (साह़िबे) मिरक़ात ने फ़रमाया कि शैख़ मूसा सदवानी, शैख़ अबू मद्यन के अस्ह़ाब में से थे। एक दिन और रात में सत्तर हज़ार ख़त्म कर लेते थे, एक दफ़्आ़ उन्हों ने का'बए मुअ़ज़्ज़मा मे संगे अस्वद चूम कर दरवाज़ए का'बा पर पहुंच कर ख़त्मे कुरआन फ़रमा लिया और लोगों ने एक एक ह़र्फ़ सुना, लिहाज़ा इस ह़दीस की बिना पर न तो मुरव्वजा शबीनों को ह़राम कहा जा सकता है और न इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा और उन सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ اَجْمَعِیْن पर ए'तिराज़ किया जा सकता है, जो एक दिन और रात में पूरा ख़त्म कर लेते थे कि येह हुक्म अ़वाम मुसलमानों के लिये है, जो इस क़दर जल्द कुरआन शरीफ़ पढ़ने में दुरुस्त न पढ़ सकें। ख़त्मे कुरआन में आ़म बुज़ुर्गों के त़रीक़े मुख़्तलिफ़ रहे हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 270)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान)"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कसरत से तिलावते क़ुरआने करीम का मक़्सद येह नहीं कि हम जल्दी जल्दी तलफ़्फ़ुज़ की ग़लत़ अदाएगी के साथ तिलावत करें और सवाब कमाने के बजाए गुनाह के मुर्तकिब ठहरें बल्कि क़ुरआने करीम की तिलावत के फ़ज़ाइल का हुसूल और रह़मतों का नुज़ूल उसी सूरत में हो सकेगा जब कि हम दुरुस्त मख़ारिज के साथ तिलावत का एहतिमाम करेंगे। हमारे मुआ़शरे में लोग जदीद दुन्यवी ता'लीम ह़ासिल करने, इंगलिश लेंग्वेज, कम्प्यूटर और मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ के लिये तो इन से मुतअ़ल्लिक़ इदारों में भारी फ़ीसें जम्अ़ करवाते हैं मगर दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ के साथ फ़ी सबीलिल्लाह क़ुरआने पाक की ता'लीम ह़ासिल करने के लिये वक़्त नहीं निकालते।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के तह़्त ता'लीमे क़ुरआन को आ़म करने के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) भी है। मद्रसतुल मदीना बालिग़ान क्या होता है ? इस में दाख़िला कैसे लिया जाता है ? फ़ीस कितनी होती है ? पढ़ना कितनी देर होता है ? आइये ! इस के बारे में भी सुनते हैं।

मुख़्तलिफ़ मक़ामात और मसाजिद वग़ैरा में उ़मूमन बा'दे नमाज़े इ़शा कमो बेश 63 मिनट के लिये हज़ारहा मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) की तरकीब होती है, जिन में बड़ी उ़म्र के (या'नी बालिग़) इस्लामी भाई सह़ीह़ मख़ारिज से हुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ क़ुरआने करीम सीखते और दुआ़एं याद करते, नमाज़ें वग़ैरा दुरुस्त करते और सुन्नतों की ता'लीम मुफ़्त ह़ासिल करते हैं। मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में कोई दाख़िला फ़ॉर्म जम्अ़ नहीं करवाना होता, न ही इस की कोई फ़ीस होती है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! क़ुरआने पाक की ता'लीम फ़ी सबीलिल्लाह दी जाती है। मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पढ़ने वाले ख़ुश नसीब आ़शिक़ाने रसूल

ता'लीमे क़ुरआन ह़ासिल करने के साथ साथ मुख़्तलिफ़ मदनी कामों में भी शामिल होने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं, मसलन हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ व मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत, मदनी क़ाफ़िले में सफ़र वग़ैरा। दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में अक्सर घरों के अन्दर तक़रीबन रोज़ाना हज़ारों मदारिस बनाम मद्रसतुल मदीना (बालिग़ात) भी लगाए जाते हैं, जिन में इस्लामी बहनें क़ुरआने करीम, नमाज़ और सुन्नतों की मुफ़्त ता'लीम पातीं और दुआ़एं याद करती हैं।

अ़त़ा हो शौक़ मौला मद्रसे में आने जाने का
ख़ुदाया ज़ौक़ दे क़ुरआन पढ़ने और पढ़ाने का

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मेरी ज़िन्दगी में मदनी बहार आ गई

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की बरकत से जहां इस्लामी भाई दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ से क़ुरआने करीम पढ़ना सीखते हैं, वहीं बहुत से लोगों को गुनाहों भरी ज़िन्दगी से तौबा की भी तौफ़ीक़ नसीब होती है। आइये ! तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार सुनते हैं।

ज़मज़म नगर ह़ैदराबाद (बाबुल इस्लाम, सिन्ध) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं एक फ़ैशन परस्त नौजवान था, दुन्या की मौज मस्ती में गुम और अपनी आख़िरत के अन्जाम से ग़ाफ़िल था कि मेरी सोई हुई क़िस्मत जाग उठी और मुझे मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) की रूह़ानी फ़ज़ाएं मुयस्सर आ गईं। मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) की बरकात ने मेरे तारीक दिल को ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा के चराग़ से मुनव्वर कर दिया, क़ुरआने करीम की ता'लीम के साथ साथ सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा भी मिला और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत भी नसीब हुई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मेरी ज़िन्दगी में मदनी बहार आ गई, फ़ैशन परस्ती व मौज मस्ती से नजात ह़ासिल हुई और मैं दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम कसरत से कुरआने करीम की तिलावत करने वालों के वाक़िआ़त और कुरआने करीम पढ़ने के फ़ज़ाइल सुन रहे हैं । याद रहे ! जहां भी कसरत से तिलावत करने की तरग़ीब दिलाई गई, वहां इस से हरगिज़ येह मुराद नहीं है कि हम फ़राइज़ व वाजिबात और तमाम काम काज छोड़ कर रात दिन कुरआने करीम की तिलावत में मश्ग़ूल हो जाएं और हम पर जो हुक़ूक़ुल इबाद लाज़िम हैं, उन से यक्सर ग़ाफ़िल रहें । बन्दे पर उस के मां बाप, बहन भाई, औलाद बीवी यहां तक कि उस की अपनी ज़ात और उस के नफ़्स का भी उस पर ह़क़ है । लिहाज़ा हमें भी फ़राइज़ व वाजिबात की अदाएगी के बा'द तिलावते कुरआने करीम के लिये एक वक़्त मख़्सूस कर लेना चाहिये, इस का येह फ़ाइदा होगा कि हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक़ूक़ भी बा आसानी अदा कर सकेंगे और बन्दों के हुक़ूक़ में भी कोताही नहीं होगी बल्कि अगर हुक़ूक़ुल इबाद तलफ़ न होते हों तो नवाफ़िल की कसरत, कुरआने करीम की तिलावत और नफ़्ल रोज़ों की आ़दत भी बनानी चाहिये कि इस की बड़ी बरकतें हैं ।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तरग़ीब के लिये रोज़ों के दुन्यवी व उख़्-रवी फ़वाइद बताते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : फ़र्ज़ रोज़ों के इलावा, नफ़्ल रोज़ों की भी आ़दत बनानी चाहिये कि इस में बे शुमार दीनी व दुन्यवी फ़वाइद हैं और सवाब तो इतना है कि जी चाहता है, बस रोज़े रखते ही चले जाएं । मज़ीद दीनी फ़वाइद में ईमान की ह़िफ़ाज़त, जहन्नम से नजात और जन्नत का हुसूल शामिल हैं और जहां तक दुन्यवी फ़वाइद का तअ़ल्लुक़ है, तो रोज़ा में दिन के अन्दर खाने, पीने में सर्फ़ होने वाले वक़्त और अख़राजात की बचत, पेट की इस्लाह़ और बहुत सारे अमराज़ से ह़िफ़ाज़त का सामान है और तमाम फ़वाइद की अस्ल येह है कि इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ राज़ी होता है ।

(फ़ैज़ाने सुन्नत का बाब : फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 1333)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! शव्वालुल मुकर्रम में छ नफ़्ल रोज़े रखे जाते हैं, जिन्हें शश ईद के रोज़े भी कहा जाता है । अह़ादीसे मुबारका में इन रोज़ों के बड़े फ़ज़ाइल बयान हुवे हैं । आइये ! तरग़ीब के लिये शश रोज़ों की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनते हैं ।

1. ''जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे, फिर छ दिन शव्वाल में रखे, तो गुनाहों से ऐसे निकल गया, जैसे आज ही मां के पेट से पैदा हुवा है ।''

(مجمع الزوائد ج۳ص۴۲۵حدیث۵۱۰۲)

2. ''जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे, फिर उन के बा'द छ शव्वाल में रखे, तो ऐसा है जैसे दहर का (या'नी उ़म्र भर के लिये) रोज़ा रखा ।''

(صحیح مسلم ص۵۹۲حدیث۱۱۶۴)

3. ''जिस ने ईदुल फ़ित्ऱ के बा'द (शव्वाल में) छ रोज़े रख लिये, तो उस ने पूरे साल के रोज़े रखे कि जो एक नेकी लाएगा, उसे दस मिलेंगी ।''

(سنن ابن ماجہ ج۲، ص۳۳۳، حدیث۱۷۱۵)

ख़लीले मिल्लत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद ख़लील ख़ान क़ादिरी बरकाती رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : येह रोज़े ईद के बा'द लगातार रखे जाएं तब भी मुज़ाइक़ा नहीं और बेहतर येह है कि मुतफ़र्रिक़ (या'नी नाग़ा कर के) रखे जाएं या'नी हर हफ़्ता में दो रोज़े और ईदुल फ़ित्ऱ के दूसरे रोज़ एक रोज़ा रख ले और पूरे माह में रखे तो और भी मुनासिब मा'लूम होता है । (सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, स. 347) अल ग़रज़ ईदुल फ़ित्ऱ का दिन छोड़ कर सारे महीने में जब चाहें शश ईद के रोज़े रख सकते हैं ।

नफ़्ल रोज़ों की मदनी तह़रीक

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! निय्यत कर लीजिये कि हम भी शव्वालुल मुकर्रम के इस महीने में अपनी सहूलत के मुत़ाबिक़ येह छ रोज़े रखने की कोशिश करेंगे । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो इस्लामी भाई नफ़्ल रोज़े रखते हैं, तन्ज़ीमी त़ौर पर उन आ़शिक़ाने रोज़ा की दरजा बन्दी है :

﴾1﴿ **मुमताज़ :** वोह इस्लामी भाई जो सौमे दावूदी या'नी एक दिन छोड़ कर, एक दिन रोज़ा रखे या महीने में कम अज़ कम 15 रोज़े अपनी सहूलत के मुत़ाबिक़ रखे या पांच मम्नूआ़ अय्याम के इलावा सारा साल रोज़े रखे। (ईदुल फ़ित्र और 10, 11, 12, 13 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम को रोज़ा रखना मकरूहे तह़रीमी है।) (دُرِّمختار و ردالمحتار ج۳، ص۳۹۱)

﴾2﴿ **बेहतर :** जो हर पीर शरीफ़ और जुमा'रात का रोज़ा रखे (पीर और जुमा'रात का रोज़ा सुन्नत है, अलबत्ता जो अपनी सहूलत के मुत़ाबिक़ मदनी माह में सात रोज़े रख ले वोह भी तन्ज़ीमन "**बेहतर**" में शुमार होगा।)

﴾3﴿ **मुनासिब :** जो हर पीर शरीफ़ को या मजबूरी हो तो हफ़्तावार छुट्टी वाले दिन रोज़ा रखे (यूं महीने में चार, पांच रोज़े होंगे।)

मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल बाब फ़ैज़ाने रमज़ान सफ़ह़ा 1419 का मुत़ालआ़ कीजिये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तिलावत में दिल क्यूं नहीं लगता ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! होना तो येह चाहिये था कि हम भी फ़राइज़ की अदाएगी के साथ साथ कसरत से नफ़्ल इबादात और तिलावते क़ुरआने करीम करते हुवे ज़िन्दगी बसर करते मगर अफ़्सोस ! आज कल मुसलमानों की अक्सरिय्यत तिलावते क़ुरआने करीम से दूर नज़र आती है, एक वोह वक़्त था कि हर घर से सुब्ह़ सवेरे नमाज़े फ़ज्र के बा'द तिलावते क़ुरआने करीम की आवाज़ आया करती थी, बिल ख़ुसूस घर के बड़े बूढ़े अफ़राद तो लाज़िमी कुछ न कुछ तिलावते क़ुरआन किया करते थे, जिस से बच्चों को भी रग़बत मिला करती थी मगर अब बद क़िस्मती से न नमाज़ों का शौक़ बाक़ी रहा और न ही तिलावते क़ुरआन का ज़ौक़, बल्कि अब तो ह़ालत येह है कि घर के बड़े अफ़राद सुब्ह़ वक़्ते फ़ज्र गुज़र जाने के बा'द और बा'ज़ तो दिन चढ़े उठते हैं और कोई अच्छा काम करने के बजाए सब से पहले अख़बार पढ़ते हैं या फिर न्यूज़ चेनल लगाते हैं, अगर नहीं देखते तो क़ुरआने करीम

खोल कर नहीं देखते, बड़ों की देखा देखी हमारी नई नस्ल भी इन नेक कामों से दूर होती चली जा रही है, येही वज्ह है कि आज कल नौजवानों की अक्सरिय्यत, मोबाइल फ़ोन और सोशल मीडिया (Social Media) के ज़रीए न सिर्फ़ रात गए तक मेसेजिज़ (Messages) और दीगर फ़ुज़ूलयात में वक़्त बरबाद करती रहती है बल्कि सुब्ह़ देर से आंख खुलने पर भी नमाज़े फ़ज्र क़ज़ा हो जाने और तिलावते कुरआने करीम से महरूम रह जाने का अफ़्सोस करने के बजाए सब से पहले मोबाइल ही को देखती है कि कोई मेसेज (Message) तो नहीं आया हुवा, ह़ालांकि कुरआने करीम तो रह़मतों और बरकतों से भरपूर वोह प्यारा कलाम है जो न सिर्फ़ हमारी रहनुमाई और हिदायत के लिये तशरीफ़ लाया है बल्कि इस का देखना, इस को बा वुज़ू छूना और इस की तिलावत करना बाइ़से अज्रो सवाब भी है। अफ़्सोस ! हमारा ह़ाल तो येह है कि जिस मेह़फ़िल में कुरआन पर मबनी गुफ़्तगू हो रही हो तो हम उक्ताने लगते हैं और जमाही पर जमाही आने लगती है या'नी सुस्ती छाने लगती है, क्या हम ने कभी इस की वज्ह पर ग़ौर किया ? इस की वज्ह येह है कि हमारे दिल फ़िस्क़ो फ़ुजूर और मा'सियत (या'नी गुनाहों) की गन्दगी से आलूदा हो चुके हैं, अगर हमारे दिल पाक व साफ़ होते तो हमें तिलावते कुरआन और समाअ़ते कुरआन दोनों में लुत्फ़ आता। ऐ काश ! फिर वोह दौर आ जाए कि मुसलमान कुरआने करीम से मह़ब्बत, इस की तिलावत की कसरत और इस के अह़कामात पर अ़मल के आ़दी हो जाएं।

कुरआने करीम के अह़काम पर अ़मल के मुआ़मले में हमारी ह़ालत

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पहले के मुसलमानों की अ़मली ह़ालत बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : "मैं ने 70 बदरी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को देखा, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़लाल कर्दा चीज़ों से (तक़्वा व वरअ़ की वज्ह से) इस क़दर इजतिनाब करते थे, जिस क़दर तुम ह़राम चीज़ों से परहेज़

नहीं करते । जिस क़दर तुम फ़राख़ी की ह़ालत पर ख़ुश होते हो, इस से ज़ियादा वोह आज़माइशों पर ख़ुश होते थे । अगर तुम उन्हें देख लेते तो कहते कि येह मजनून हैं और अगर वोह तुम्हारे बेहतरीन लोगों को देखते तो कहते कि इन लोगों का (आख़िरत में) कोई ह़िस्सा नहीं और अगर वोह तुम्हारे बुरे लोगों को देखते तो कहते : इन लोगों का ह़िसाब के दिन पर ईमान नहीं । उन में से किसी के सामने ह़लाल माल पेश किया जाता तो वोह येह कह कर लेने से इन्कार कर देते कि मुझे अपना दिल ख़राब हो जाने का डर है (जब कि तुम ह़राम माल लेने में भी ज़रा परवाह नहीं करते) ।" (सिरातुल जिनान, जि. 3, स. 467)

मुझ को रोज़ाना तिलावत की भी तू तौफ़ीक़ दे
क़ारिये क़ुरआं बना और ख़ादिमे क़ुरआं बना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी अपने अस्लाफ़ के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे क़ुरआने पाक के अह़कामात की बजा आवरी में अपनी ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिये । ज़ह़े नसीब ! अगर हम क़ुरआने पाक के ज़ाहिरी व बात़िनी आदाब का लिह़ाज़ करते हुवे तिलावत करेंगे, तो اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में इस की ढेरों भलाइयां नसीब होंगी । आइये ! पहले तिलावत के ज़ाहिरी आदाब सुनते हैं ।

तिलावते क़ुरआन के ज़ाहिरी आदाब

- ❖ तिलावत करने वाले को चाहिये कि बा वुज़ू हो कर क़िब्ला रू सर झुकाए अदब व सुकून के साथ खड़े हो कर या बैठ कर तिलावते क़ुरआन करे । चौकड़ी मारने (या'नी चार ज़ानू बैठने), (बिला ज़रूरत) टेक लगाने से इजतिनाब करे बल्कि यूं बैठे जैसे उस्ताद के सामने शागिर्द बैठता है ।
- ❖ तिलावत करने की सब से अफ़्ज़ल ह़ालत येह है कि मस्जिद में दौराने नमाज़ खड़े हो कर तिलावत की जाए । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं :

''जो नमाज़ में खड़े हो कर कुरआन की तिलावत करे, उस के लिये हर हर्फ़ के बदले 100 नेकियां हैं और जो बैठ कर तिलावत करे, उस के लिये हर हर्फ़ के बदले 50 नेकियां हैं और जो नमाज़ के इलावा बा वुज़ू तिलावत करे, उस के लिये 25 नेकियां हैं।''

(इह़याउल उ़लूम, जि. 1, स. 366)

❖ तिलावत का एक अदब येह है कि ख़ूब ठहर ठहर कर तिलावत की जाए। (इह़याउल उ़लूम, जि. 1, स. 368)

❖ नीज़ ख़ूब सूरत आवाज़ बना कर ख़ुश इल्हानी के साथ तिलावत करने की कोशिश करनी चाहिये। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जितना ख़ुश इल्हानी से तिलावते कुरआन का हुक्म दिया, उतना किसी और चीज़ का न दिया।''

(صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین۔۔الخ، ص۳۹۷، ح۷۹۲)

❖ येह भी याद रहे कि हुरूफ़ को इतना ज़ियादा न खींचा जाए कि (हुरूफ़ की) आवाज़ बदल जाए या नज़्मे कुरआन तब्दील हो जाए।

(इह़याउल उ़लूम, जि. 1, स. 371)

❖ फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''कुरआन पढ़ो और रोओ, अगर तुम्हें रोना न आए, तो रोने जैसी सूरत बना लो।''

(سنن ابن ماجہ، باب فی حسن الصوت بالقرآن، ج۲، ص۱۲۹، ح۱۳۳۷ بتغیر)

❖ इतनी आवाज़ से क़िराअत की जाए कि तिलावत करने वाला ख़ुद सुन सके क्यूंकि क़िराअत नाम ही इस का है कि हुरूफ़ को आवाज़ के साथ वाज़ेह़ तौ़र पर अदा किया जाए। (इह़याउल उ़लूम, जि. 1, स. 370, माख़ूज़न)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इन ज़ाहिरी आदाब का ख़याल रखते हुवे रोज़ाना तिलावत की सआ़दत नसीब फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तिलावते क़ुरआन के बातिनी आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तिलावते क़ुरआन के कुछ बातिनी आदाब भी हैं। आइये ! इन में से भी चन्द आदाब सुनते हैं :

- हुज़ूरे क़ल्ब (या'नी दिल की तवज्जोह) के साथ तिलावत की जाए या'नी दिल में पैदा होने वाले तमाम ख़यालात को तर्क कर के तिलावते क़ुरआन की जाए। (इह़याउल उ़लूम, 1 / 374)
- जिस त़रह़ ज़ाहिरी जिल्दे क़ुरआन और इस के अवराक़ का येह अदब है कि बिग़ैर त़हारत के इन्हें न छुवा जाए, इसी त़रह़ क़ुरआने करीम के बातिनी अन्वार व तजल्लियात का तक़ाज़ा है कि दिल भी हर त़रह़ की नापाकी से पाक व साफ़ हो ताकि तजल्लियात उस दिल में समा सकें।

(इह़याउल उ़लूम, 1 / 373, माख़ूज़न)

मजलिसे तह़फ़्फ़ुज़े अवराक़े मुक़द्दसा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यहां येह बात क़ाबिले तवज्जोह है कि जब क़ुरआने पाक की जिल्द और इस के अवराक़ वग़ैरा बोसीदा या शहीद हो जाएं, तो उन का तह़फ़्फ़ुज़ भी हमारी ज़िम्मेदारी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के 103 शो'बाजात में से एक शो'बा "**मजलिसे तह़फ़्फ़ुज़े अवराक़े मुक़द्दसा**" भी है। अवराक़े मुक़द्दसा का तह़फ़्फ़ुज़ करने, इन का तक़द्दुस पामाल न होने और इन्हें बे अदबियों से बचाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त येह शो'बा क़ाइम किया गया है। मुख़्तलिफ़ शो'बहाए ज़िन्दगी से तअ़ल्लुक़ रखने वाले लोगों (उ़लमा, अइम्मा, मस्जिद कमेटियां, ताजिर, दुकानदार वग़ैरा) के तआ़वुन से मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर अवराक़े मुक़द्दसा के तह़फ़्फ़ुज़ के लिये बक्स (Box) वग़ैरा की तरकीब की जाती है और मजलिस के दिये हुवे शरई व तन्ज़ीमी उसूलों के मुत़ाबिक़ अवराक़े मुक़द्दसा को दफ़्न, ठन्डा या मह़फ़ूज़ किया जाता है।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुरआने करीम के बात़िनी आदाब में से येह भी है कि ❖ कुरआने पाक की किसी आयत में अम्र व नही (या'नी किसी काम के करने या किसी से रुकने का हुक्म) सुने तो येह ख़याल करे कि येह मुझ ही से ख़ित़ाब है । इसी त़रह़ गुज़श्ता उम्मतों और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वाक़िआ़त से भी इ़ब्रत व नसीह़त ह़ासिल करे । (इह़याउल उ़लूम, जि. 1, स. 378, माख़ूज़न) ❖ नीज़ तिलावत करने वाले को चाहिये कि आयाते करीमा के सियाक़ व सबाक़ का असर भी क़बूल करे, वोह यूं कि झुटलाने वालों मसलन आ़द व समूद वग़ैरा के ह़ालात और उन पर नाज़िल होने वाले अ़ज़ाब के मुतअ़ल्लिक़ पढ़े तो दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब और ग़लबा व क़ुदरत का ख़ौफ़ पैदा करे और जब जन्नत और उस की ने'मतों के मुतअ़ल्लिक़ पढ़े तो उन के हुसूल की दुआ़ करे । (इह़याउल उ़लूम, 1 / 855) ❖ तिलावते कुरआन के बात़िनी आदाब में से येह भी है कि पढ़ते हुवे ग़ौरो फ़िक्र किया जाए, ख़ुसूसन इस के मआ़नी व मफ़्हूम पर ग़ौर किया जाए । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : "उस इ़बादत में कोई भलाई नहीं, जिस में समझ न हो और उस क़िराअत में कोई बेहतरी नहीं, जिस में ग़ौरो फ़िक्र न हो ।"

(इह़याउल उ़लूम, जि. 1, स. 374)

तफ़्सीर सिरातुल जिनान का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुरआने पाक को बेहतर त़रीक़े से समझने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ तफ़्सीर "**सिरात़ुल जिनान**" से रोज़ाना नमाज़े फ़ज्र के बा'द मदनी ह़ल्क़े में तीन आयात का तर्जमा व तफ़्सीर सुनने या सुनाने या फिर इनफ़िरादी त़ौर पर पढ़ने की आ़दत बनाइये और सवाब का ढेरों ख़ज़ाना समेटिये । आइये ! तफ़्सीर सिरातुल जिनान की चन्द नुमायां ख़ुसूसिय्यात भी सुनते हैं : ﴾1﴿...तफ़्सीर सिरातुल जिनान में हर आयत के 2 तर्जमे दिये गए हैं, एक सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के **कन्ज़ुल ईमान** से, दूसरा तर्जमा

आसान उर्दू में **कन्ज़ुल इरफ़ान** के नाम से दिया गया है, जिस में ज़ियादा तर कन्ज़ुल ईमान से ही इस्तिफ़ादा किया गया है।

﴾2﴿...तफ़्सीर सिरातुल जिनान में क़ाबिले ए'तिमाद उ़लमाए किराम की क़दीम व जदीद कुरआनी तफ़ासीर और दीगर इस्लामी उ़लूम पर लिखी गई किताबें बिल ख़ुसूस सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की लिखी हुई, कसीर किताबों से कलाम अख़्ज़ कर के आसान अन्दाज़ में पेश किया गया है।

﴾3﴿...तफ़्सीर सिरातुल जिनान में, तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान और तफ़्सीर नूरुल इरफ़ान का फ़ैज़ान है, तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद, ह़ाफ़िज़, ह़कीम, मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की और तफ़्सीर नूरुल इरफ़ान इन के ख़लीफ़ा, मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की है।

﴾4﴿...तफ़्सीर सिरातुल जिनान न ज़ियादा त़वील है, न ही बहुत मुख़्तसर बल्कि मुतवस्सित़ और जामेअ़ है।

﴾5﴿...तफ़्सीर सिरातुल जिनान में ह़त्तल इमकान आसान अन्दाज़ इख़्तियार किया गया है ताकि आ़म इस्लामी भाई भी इस से फ़ाइदा ह़ासिल कर सकें।

﴾6﴿...तफ़्सीर सिरातुल जिनान में आ'माल की इस्लाह़ के लिये मुआ़शरती बुराइयों का तज़किरा और मुआ़शरती बुराइयों के अ़ज़ाबात बयान किये गए हैं।

﴾7﴿...तफ़्सीर सिरातुल जिनान में जन्नत के इन्आ़मात के ह़ुसूल की तरग़ीब और जहन्नम के अ़ज़ाबात की तरहीब मौजूद है।

﴾8﴿...तफ़्सीर सिरातुल जिनान में बात़िनी अमराज़ के मुतअ़ल्लिक़ भी क़दरे तफ़्सील से कलाम किया गया है।

﴾9﴿...तफ़्सीर सिरातुल जिनान में वालिदैन, रिश्तेदारों, यतीमों, पड़ोसियों वग़ैरा के साथ अच्छा सुलूक करने और सिलए रेह़मी करने के मुतअ़ल्लिक़ भी इस्लाह़ी मवाद मौजूद है।

﴾10﴿...तफ़्सीर सिरातुल जिनान में अ़क़ाइदे अहले सुन्नत और मा'मूलाते अहले सुन्नत की दलाइल के साथ वज़ाह़त की गई है।

﴾11﴿...तफ़्सीर सिरातुल जिनान में मौक़अ़ की मुनासिबत से हुज़ूरे पुर नूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए इ़ज़्ज़ाम की सीरत और वाक़िआ़त भी ज़िक्र किये गए हैं।

﴾12﴿...तफ़्सीर सिरातुल जिनान में आयात से ह़ासिल होने वाले रंग बिरंगे, नित नई ख़ुश्बूओं वाले मदनी फूल भी मौजूद हैं। आप भी निय्यत कीजिये कि रोज़ाना कम अज़ कम तीन आयात तर्जमा व तफ़्सीर के साथ सिरातुल जिनान का मुत़ालआ़ करेंगे और कुरआने पाक की ता'लीमात पर न सिर्फ़ ख़ुद अ़मल करेंगे बल्कि दूसरे इस्लामी भाइयों को भी तरग़ीब दिलाएंगे।

येही है आरज़ू ता'लीमे कुरआन आ़म हो जाए
हर इक परचम से ऊंचा परचमे इस्लाम हो जाए

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज के बयान में हम ने कसरत से तिलावत करने वाले अस्लाफ़े किराम के ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त सुनने की सआ़दत ह़ासिल की नीज़ शश ईद या'नी शव्वाल के महीने में छ रोज़े रखने के फ़ज़ाइल और नफ़्ल रोज़ों के मदनी फूल भी सुने। इस के इ़लावा तिलावते कुरआन के ज़ाहिरी व बात़िनी आदाब से मुतअ़ल्लिक़ अहम मदनी फूल ह़ासिल हुवे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी कुरआने पाक के ज़ाहिरी व बात़िनी आदाब का ख़याल रखते हुवे ख़ूब ख़ूब तिलावते कुरआने करीम करने और इस की रह़मतों और बरकतों को समेटने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मैं अदब कुरआन का हर ह़ाल में करता रहूं
हर घड़ी ऐ मेरे मौला तुझ से मैं डरता रहूं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مِشْكَاةُ الْمَصابِيح، ج۱ ص۵۵ حديث ۱۷۵ دار الكتب العلمية بيروت)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

लिबास के चन्द मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये ! लिबास के चन्द मदनी फूल सुनते हैं : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : ❖ जिन्न की आंखों और लोगों के सित्र के दरमियान पर्दा येह है कि जब कोई कपड़े उतारे, तो बिस्मिल्लाह कह ले। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۲ص۵۹حديث ۲۵۰۴)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जैसे दीवार और पर्दे लोगों की निगाह के लिये आड़ बनते हैं, ऐसे ही येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र जिन्नात की निगाहों से आड़ बनेगा कि जिन्नात उस (या'नी शर्मगाह) को देख न सकेंगे। (मिरआत, जि. 1, स. 268) ❖ जो बा वुजूदे क़ुदरत ज़ेबो ज़ीनत का लिबास पहनना तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी) के त़ौर पर छोड़ दे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को करामत का हुल्ला पहनाएगा। (ابوداؤد ج۴ص۳۲۶حديث ۴۷۷۸) ❖ लिबास ह़लाल कमाई से हो और जो लिबास ह़राम कमाई से ह़ासिल हुवा हो, उस में फ़र्ज़ व नफ़्ल कोई नमाज़ क़बूल नहीं होती। (كَشْفُ الالْتِباس فِي اسْتِحْبابِ اللِّباس لِلشَّيْخ عبدالْحَقّ الدّهلَوى ص۳۶) ❖ (लिबास) पहनते वक़्त सीधी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये (कि सुन्नत है)

मसलन जब कुर्ता पहनें तो पहले सीधी आस्तीन में सीधा हाथ दाख़िल कीजिये, फिर उल्टा हाथ उल्टी आस्तीन में । (ऐज़न, स. 43) ❖ इसी त़रह़ पाजामा पहनने में पहले सीधे पाइंचे में सीधा पाउं दाख़िल कीजिये और जब (कुर्ता या पाजामा) उतारने लगें तो इस के बर अ़क्स (या'नी उलट) कीजिये या'नी उल्टी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये । ❖ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 3 सफ़ह़ा 409 पर है : सुन्नत येह है कि दामन की लम्बाई आधी पिन्डली तक हो और आस्तीन की लम्बाई ज़ियादा से ज़ियादा उंगलियों के पोरों तक और चौड़ाई एक बालिश्त हो । (ردالمحتار ج۹ ص۵۷۹) ❖ सुन्नत येह है कि मर्द का तेह्बन्द या पाजामा टख़्ने से ऊपर रहे । (मिरआत, जि. 6, स. 94) ❖ मर्द, मर्दाना और औ़रत ज़नाना ही लिबास पहने । छोटे बच्चों और बच्चियों में भी इस बात का लिह़ाज़ रखिये । ❖ तकब्बुर के त़ौर पर जो लिबास हो वोह मम्नूअ़ है। तकब्बुर है या नहीं इस की शनाख़्त यूं करे कि इन कपड़ों के पहनने से पहले अपनी जो ह़ालत पाता था अगर पहनने के बा'द भी वोही ह़ालत है, तो मा'लूम हुवा कि इन कपड़ों से तकब्बुर पैदा नहीं हुवा । अगर वोह ह़ालत अब बाक़ी नहीं रही, तो तकब्बुर आ गया । लिहाज़ा ऐसे कपड़े से बचे कि तकब्बुर बहुत बुरी सिफ़त है।

(ردالمحتار ج۹، ص۵۷۹ ,बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 409)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब **बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

आ़शिक़ाने रसूल, आएं सुन्नत के फूल
देने लेने चलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : जब जुमा'रात का दिन आता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं, वोह जुमा'रात और शबे जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने वालों के नाम लिखते हैं। (کنز العمال، کتاب الاذکار، الباب السادس فی الصلاۃ ... الخ، الجزء ۱، ۱/ ۲۵۰، رقم: ۲۱۷۴)

क्यूं कहूं बेकस हूं मैं, क्यूं कहूं बेबस हूं मैं
तुम हो मैं तुम पर फ़िदा तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 270)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج ۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शव्वालुल मुकर्रम का महीना अपनी बरकतें लुटा रहा है । येह वोह बा बरकत महीना है कि जिस में आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की विलादते बा सआ़दत हुई । इसी मुनासिबत से आज हम आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का ज़िक्रे ख़ैर करते हुवे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मुख़्तसर तआ़रुफ़ और आप के शौक़े इल्मे दीन के वाक़िआ़त सुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगे ।

आ'ला ह़ज़रत का तआ़रुफ़

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की विलादते बा सआ़दत बरेली शरीफ़ के मह़ल्ले जसूली में 10 शव्वालुल मुकर्रम सिने 1272 हि., बरोज़ हफ़्ता, ब वक़्ते ज़ोहर, ब मुत़ाबिक़ 14 जून सिने 1856 ई. को हुई ।

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, 1 / 58, मुलख़्ख़सन)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ानदानी लिह़ाज़ से पठान, मस्लक के लिह़ाज़ से ह़नफ़ी, त़रीक़त के लिह़ाज़ से क़ादिरी और जाए विलादत के लिह़ाज़ से बरेलवी थे । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के वालिदे माजिद का नाम मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) और दादा का नाम मौलाना रज़ा अ़ली ख़ान (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) है ।

(फ़ाज़िले बरेलवी, उ़लमाए ह़िजाज़ की नज़र में, स. 67, बित्तग़य्युर क़लील)

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का पैदाइशी नाम "**मुह़म्मद**" है, वालिदए माजिदा "**अम्मन मियां**" पुकारती थीं, वालिदे माजिद व दीगर रिश्तेदारों ने "**अह़मद मियां**" और दादा ने "**अह़मद रज़ा**" नाम रखा । आप का तारीख़ी नाम "**अल मुख़्तार**" है, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ुद अपने नाम से पहले "**अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा**" लिखा करते थे ।

(तजल्लियाते इमाम अह़मद रज़ा, स. 21, बित्तग़य्युर क़लील)

मुस्त़फ़ा का वोह लाडला प्यारा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की
ग़ौसे आ'ज़म की आंख का तारा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 575)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अब क़िताब ले जाने की ह़ाजत नहीं !

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, मलिकुल उ़लमा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती ज़फ़रुद्दीन बिहारी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान फ़रमाते हैं : आ'ला ह़ज़रत (हिन्द के एक अ़लाक़े) पीली भीत में ह़ज़रते वसी अह़मद (मुह़द्दिसे) सूरती رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के घर मेहमान थे, एक दिन दौराने गुफ़्तगू फ़िक़्ह की एक किताब का ज़िक्र हुवा, येह किताब मुह़द्दिसे सूरती की लाइब्रेरी में मौजूद थी, किताब का नाम सुनते ही आ'ला ह़ज़रत ने फ़रमाया : "मैं ने (येह किताब) नहीं देखी, (बरेली वापस) जाते हुवे, येह किताब मेरे साथ कर दीजियेगा ।" ह़ज़रते मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इसे ब ख़ुशी क़बूल किया और किताब ला कर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को पेश कर दी मगर साथ में येह भी फ़रमाया : "जब मुलाह़ज़ा फ़रमा लें तो भेज दीजियेगा, इस लिये कि आप के यहां तो बहुत किताबें हैं, मेरे पास येही गिन्ती की चन्द किताबें हैं, जिन से मैं फ़तावा दिया करता हूं ।" आ'ला ह़ज़रत ने इसे क़बूल फ़रमा लिया, आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की उसी दिन बरेली रवानगी थी मगर एक जां निसार मुरीद की दा'वत की वज्ह से एक दिन मज़ीद क़ियाम करना पड़ा । रात में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस किताब का मुत़ालआ़ फ़रमाया, जब दूसरे दिन बरेली

वापस जाने का वक़्त आया तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को येह किताब वापस फ़रमा दी और इरशाद फ़रमाया : "क़स्द (इरादा तो) बरेली ले जाने का था और अगर कल ही जाता तो इस किताब को साथ लेता जाता लेकिन जब कल जाना न हुवा तो शब में और सुब्ह़ के वक़्त पूरी किताब देख ली, अब ले जाने की ज़रूरत न रही।" ह़ज़रते मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इन्तिहाई ह़ैरत से फ़रमाया "बस एक मरतबा देख लेना काफ़ी हो गया ?" आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम से उम्मीद है कि दो तीन महीना तक तो जहां की इबारत की ज़रूरत होगी, फ़तावा में लिख दूंगा और मज़मून तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उ़म्र भर के लिये मह़फ़ूज़ हो गया।" (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, 1 / 213, माख़ूज़न)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं :

इल्मो इरफ़ां का जो कि सागर था ख़ैर से ह़ाफ़िज़ा क़वी तर था
ह़क़ पे मबनी था जिस का हर फ़तवा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 875)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने कि आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के दिल में इल्मे दीन के ह़ुसूल का शौक़ और जज़्बा किस क़दर कूट कूट कर भरा हुवा था कि वोह किताब जिसे उ़मूमन समझ कर मुत़ालआ़ करने के लिये एक त़वील अ़र्सा दरकार होता है मगर क़ुरबान जाइये, आ'ला ह़ज़रत के शौक़े इल्मे दीन पर कि एक रात में पूरी किताब अव्वल ता आख़िर न सिर्फ़ पढ़ ली बल्कि ऐसी ज़ेह्न नशीन भी फ़रमा ली कि ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से उम्मीद है कि दो तीन महीने तक तो (इस किताब से) जहां की इबारत की ज़रूरत होगी (अपने) फ़तावा में लिख दूंगा और मज़मून तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उ़म्र भर के लिये मह़फ़ूज़ हो गया है।" आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इस क़ौल से येह ह़क़ीक़त रोज़े रौशन की त़रह़ वाज़ेह़ हो गई कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वक़्त की अहम्मिय्यत और इल्मे दीन की क़द्रो मन्ज़िलत से ख़ूब वाक़िफ़ थे।

तह्सीले इल्मे दीन का हैरत अंगेज़ जज़्बा

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी पूरी ज़िन्दगी हुसूले इल्म और इशाअ़ते इल्म के लिये वक़्फ़ कर रखी थी, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का कोई लम्हा भी बेकार न गुज़रता, हुसूले इल्म का येह मुबारक सफ़र आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बचपन ही से शुरूअ़ हो चुका था, वज्ह इस की येह थी कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का तअ़ल्लुक़ ख़ालिस मज़हबी और इल्मी घराने से था। आप के वालिदे गिरामी और दादा जान भी आ़लिमे बा अ़मल थे। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बचपन में शौक़े इल्मे दीन का येह आ़लम था कि बिग़ैर कहे ख़ुद ही पढ़ने चले जाते। जुमुआ़ के दिन भी जाना चाहा मगर वालिदे मोह़तरम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मन्अ़ फ़रमाने से रुक गए और ख़ुद ही येह समझ लिया कि हफ़्ते में जुमुआ़ के दिन की बहुत अहम्मिय्यत है, लिहाज़ा इसी वज्ह से नहीं पढ़ना चाहिये, बाक़ी छ दिन पढ़ने के हैं। (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, 1 / 69, बित्तग़य्युर क़लील)

लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि अपने अन्दर इल्मे दीन सीखने का शौक़ पैदा करें और ख़ूब मेह़नत व लगन के साथ इल्मे दीन ह़ासिल करें और बिला वज्ह सुस्ती कर के इल्म की बरकतों से हरगिज़ मह़रूम न रहें। आइये ! हुसूले इल्मे दीन का शौक़ पैदा करने के लिये तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनते हैं।

1. مَنْ خَرَجَ فِیْ طَلَبِ الْعِلْمِ فَهُوَ فِیْ سَبِیْلِ اللهِ حَتّٰی یَرْجِعَ जो शख़्स त़लबे इल्म के लिये घर से निकला तो जब तक वापस न हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में है।

(ترمذی، کتاب العلم، باب فضل طلب العلم، حدیث: ۴/۲۹۴، حدیث: ۲۶۵۶)

2. जो सुब्ह़ मस्जिद में नेकी सीखने या सिखाने के लिये गया, उस के लिये मुकम्मल ह़ज करने वाले की त़रह़ अज्र (लिखा जाता) है।

(الترغیب والترھیب، کتاب العلم، الترغیب فی الرحلة فی طلب العلم، ۱/ ۷۵، حدیث: ۱۴۶)

3. जिस को इस ह़ाल में मौत आ गई कि वोह इल्म को इस लिये त़लब कर रहा था कि इस्लाम को ज़िन्दा करे, तो उस के और अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दरमियान जन्नत में एक दरजे का फ़र्क़ होगा।

(دارمی، باب فی فضل العلم و العالم، حدیث: ۳۵۴، ۱/ ۱۱۲)

इल्मो इ़रफ़ां का जो कि सागर था ख़ैर से ह़ाफ़िज़ा क़वी तर था
ह़क़ पे मबनी था जिस का हर फ़तवा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 575)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने कि हुसूले इल्मे दीन के लिये घर से निकलने वालों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कैसी करम नवाज़ियां होती हैं कि येह ख़ुश नसीब जब तक वापस न लौटें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में शुमार किये जाते हैं, उन के नामए आ'माल में ह़ज करने वालों की त़रह़ सवाब लिखा जाता है और अगर त़ालिबे इल्म का इसी ह़ालत में इन्तिक़ाल हो जाए तो उसे जन्नत में बुलन्दो बाला दरजात से भी नवाज़ा जाता है। लिहाज़ा हमें भी हुसूले इल्म के इन फ़ज़ाइल को पाने के लिये इल्मे दीन ह़ासिल करना चाहिये। इल्म ह़ासिल करने के लिये फ़क़त़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه, निगराने शूरा और दीगर मुबल्लिग़ीन के बयानात, उस्ताद साह़िब से सुनी हुई बात या किसी किताब के चीदा चीदा मक़ामात से मुन्तख़ब मदनी फूल निकालने पर ही इक्तिफ़ा न किया जाए बल्कि अपनी मेह़नत और शौक़े मुत़ालआ़ के ज़रीए़ मक्तबतुल मदीना के कुतुबो रसाइल अव्वल ता आख़िर बार बार मुत़ालआ़ कीजिये, اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से मा'लूमात का ढेरों ख़ज़ाना हाथ आएगा और इल्म का शौक़ भी बढ़ेगा।

सबक़ याद करने और सुनाने का दिल नशीन अन्दाज़

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस्ताद साह़िब से कभी चौथाई किताब से ज़ियादा नहीं पढ़ी मगर आप के शौक़े मुत़ालआ़ और ज़ह़ानत का येह आ़लम था कि चौथाई किताब उस्ताद से पढ़ने के बा'द बक़िय्या तमाम किताब का ख़ुद मुत़ालआ़ करते और याद कर के सुना दिया करते थे। (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, 1 / 70)

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ुद अपने शौक़े इल्मे दीन और कुव्वते ह़ाफ़िज़ा को बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : मेरे उस्ताद जिन से मैं इब्तिदाई किताब पढ़ता था, जब मुझे सबक़ पढ़ा दिया करते, एक दो मरतबा मैं देख कर किताब बन्द कर देता, जब सबक़ सुनते तो ह़र्फ़ ब ह़र्फ़, लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ सुना देता। रोज़ाना येह ह़ालत देख कर सख़्त तअ़ज्जुब करते। एक दिन मुझ से फ़रमाने लगे कि अह़मद मियां ! येह तो कहो, तुम आदमी हो या जिन्न ? कि मुझ को पढ़ाते देर लगती है मगर तुम को याद करते देर नहीं लगती ! आप ने फ़रमाया कि **अल्लाह** का शुक्र है मैं इन्सान ही हूं, हां, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्लो करम शामिले ह़ाल है। (तज़किरए इमाम अह़मद रज़ा, स. 5, ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 68)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को इल्मे दीन ह़ासिल करने का कैसा शौक़ था कि आप के उस्ताद साह़िब सबक़ पढ़ा कर फ़ारिग़ होते और आप एक दो बार देख कर ही सबक़ याद कर लिया करते। उस्तादे मोह़तरम आप के इल्मी जज़्बे और कुव्वते ह़ाफ़िज़ा को देख कर ह़ैरत ज़दा रह जाते कि इतने क़लील वक़्त में येह बच्चा किस त़रह़ अपना सबक़ ज़बानी याद कर लेता है। मगर फ़ी ज़माना हमारे ह़ाफ़िज़े का येह ह़ाल है कि हमें तो इन्तिहाई आसान और छोटी छोटी बातें भी बार बार पढ़ने और सुनने के बा वुजूद याद नहीं रहतीं, बिल फ़र्ज़ कोई चीज़ याद करने में कामयाब हो भी जाएं, तो वोह जल्द ही भूल जाते हैं। अगर हम अपने ह़ाफ़िज़े को मज़बूत़ बनाना चाहतें हैं, तो सब से पहले ह़ाफ़िज़ा कमज़ोर करने वाले अस्बाब को दूर करना होगा मसलन बिला इजाज़ते शरई अपना या किसी और का सित्र देखना, चिकनाई वाली, खट्टी और बल्ग़म पैदा करने वाली चीज़ें खाना और बिल ख़ुसूस दिन रात गुनाहों के इर्तिकाब से बचना होगा क्यूंकि ह़ाफ़िज़े की कमज़ोरी का एक बड़ा सबब हमारी गुनाहों भरी ज़िन्दगी भी है। लिहाज़ा अपने ह़ाफ़िज़े को मज़बूत़ बनाने, अ़ज़ाबे इलाही से नजात पा कर जन्नत की अबदी ने'मतों से लुत़्फ़ उठाने के लिये ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुवे गुनाहों से किनारा कशी इख़्तियार कीजिये और तौबा व इस्तिग़फ़ार का मा'मूल बनाइये, اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ ज़रूर करम होगा।

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर तुम जल्द तौबा करोगे तो उम्मीद है कि अ़न क़रीब गुनाहों पर इसरार करने के **मरज़** का तुम्हारे दिल से क़ल्अ़ क़मअ़ (या'नी ख़ातिमा) हो जाए और गुनाहों की नुहूसत का बोझ तुम्हारी गरदन से उतर जाए और गुनाहों की वज्ह से जो क़सावते क़ल्बी (या'नी दिल की सख़्ती) पैदा होती है उस से हरगिज़ बे ख़ौफ़ न हो बल्कि हर वक़्त अपने दिल पर निगाह रखो क्यूंकि बा'ज़ सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن ने फ़रमाया है : "बेशक गुनाह करने से **दिल सियाह** हो जाता है और दिल की सियाही की अ़लामत येह होती है कि गुनाहों से घबराहट नहीं होती, त़ाअ़त (या'नी इबादत) के लिये मौक़अ़ नहीं मिलता, नसीह़त से कोई फ़ाइदा नहीं होता (या'नी नसीह़त व बयान सुन कर दिल पर असर नहीं होता)" । ऐ अ़ज़ीज़ ! किसी गुनाह को मा'मूली ख़याल न कर और कबीरा गुनाहों पर इसरार करने के बा वुजूद अपने आप को ताइब (या'नी तौबा करने वाला) गुमान न कर ।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 69, ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 429)

मैं कर के तौबा पलट कर गुनाह करता हूं
ह़क़ीक़ी तौबा का कर दे शरफ़ अ़त़ा या रब !

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 78)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये ! ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ करने के चन्द नुस्ख़े भी सुनते हैं :

❖ तर्के गुनाह (या'नी गुनाह छोड़ देना) क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा का बेहतरीन मुआ़विन है ❖ ह़राम रोज़ी से बचना भी क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा की मज़बूत़ी का सबब है ❖ हम जो भी इ़ल्मे दीन सीखें, उस पर अ़मल करें ❖ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने ह़ाफ़िज़े की मज़बूत़ी के लिये दुआ़ करें "ऐ मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! तेरा आ़जिज़ बन्दा तेरी बारगाह में ह़ाज़िर है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरे दीन का इ़ल्म ह़ासिल करना चाहता हूं लेकिन मेरी याद दाश्त मेरा साथ नहीं देती, ऐ हर शै पर क़ादिर रब عَزَّوَجَلَّ ! तू अपनी

कुदरते कामिला से मेरे कमज़ोर ह़ाफ़िज़े को क़वी फ़रमा दे और मुझे भूल जाने की बीमारी से नजात अ़त़ा फ़रमा ।'' اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ❖ हर वक़्त बा वुज़ू रहने की कोशिश कीजिये, बा वुज़ू रहने का एक फ़ाइदा तो येह है कि हमें सुन्नत पर अ़मल के साथ साथ ख़ुद ए'तिमादी की दौलत और एह़सासे कमतरी से छुटकारा नसीब होगा ❖ ह़ाफ़िज़े की कुव्वत बेदार करने में नींद का भी अ़मल दख़्ल है, इस लिये सोने और जागने के अवक़ात मुक़र्रर कीजिये और नींद के वक़्त में सोने के इ़लावा हर काम से गुरेज़ कीजिये नींद ख़त्म करने वाली अदवियात का इस्ति'माल हरगिज़ मत कीजिये । इस बात का ख़ास ख़याल रखिये कि सोने वाली जगह में किसी क़िस्म का शोरो गुल न हो और न वहां किसी क़िस्म की तेज़ रौशनी हो ताकि नींद से जो मत़लूब है वोह ह़ासिल हो ❖ कुव्वते ह़ाफ़िज़ा जैसी अनमोल ने'मत का शुक्र अदा करेंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस में बरकत अ़त़ा फ़रमाएगा, यूं कम कुव्वते ह़ाफ़िज़ा वाले की कुव्वते याद दाश्त में इज़ाफ़ा होगा और पहले से क़वी ह़ाफ़िज़ा रखने वाले की याद दाश्त में मज़ीद कुव्वत पैदा होगी ।

नीज़ ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ करने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब ''**ह़ाफ़िज़ा कैसे मज़बूत़ हो ?**'' का मुत़ालआ़ कीजिये । इस किताब में बुज़ुर्गाने दीन के ह़ैरत अंगेज़ वाक़िआ़त और कुव्वते ह़ाफ़िज़ा बढ़ाने के लिये देसी, त़िब्बी और रूह़ानी इलाज भी दिये गए हैं । आप इस किताब को मक्तबतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन त़लब कर सकते हैं नीज़ दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net से इस किताब को पढ़ने, डाउन लोड करने और प्रिन्ट आउट करने की भी सहूलत मौजूद है ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आ'ला ह़ज़रत की रियाज़ी दानी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की अ़क़्लो फ़ह्म और इल्मे दीन से मह़ब्बत का आ़लम येह था कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कमो बेश पचास उ़लूम में क़लम उठाया और क़ाबिले

क़द्र कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाई । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को हर फ़न में काफ़ी दस्तरस ह़ासिल थी । इल्मे तौक़ीत में इस क़दर कमाल ह़ासिल था कि दिन को सूरज और रात को सितारे देख कर घड़ी मिला लेते । वक़्त बिल्कुल सह़ीह़ होता और कभी एक मिनट का भी फ़र्क़ न हुवा । (इसी त़रह़) इल्मे रियाज़ी में भी आप यगानए रोज़गार थे । (तज़किरए इमाम अह़मद रज़ा, स. 6)

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : (इल्मे रियाज़ी में) मेरा कोई उस्ताद नहीं है, मैं ने अपने वालिदे माजिद से सिर्फ़ चार क़ाइदे जम्अ़, तफ़रीक़, ज़र्ब, तक़्सीम, मह़ज़ इस लिये सीखे थे कि तर्का (या'नी विरासत) के मसाइल में उन की ज़रूरत पड़ती है, शर्ह़े चग़मीनी शुरूअ़ की थी कि वालिदे माजिद ने फ़रमाया : क्यूं अपना वक़्त इस में सर्फ़ करते हो, प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सरकार से येह उ़लूम तुम को ख़ुद ही सिखा दिये जाएंगे । (फ़ैज़ाने आ'ला ह़ज़रत, स. 550)

इल्मे रियाज़ी में महारत का एक दिलचस्प वाक़िआ़ कुछ यूं मिलता है कि अ़लीगढ़ यूनिवर्सिटी के वाइस चांस्लर डॉक्टर ज़ियाउद्दीन जो कि रियाज़ी में ग़ैर मुल्की डिग्रियां और तमग़ाजात ह़ासिल किये हुवे थे, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में रियाज़ी का एक मस्अला पूछने आए । इरशाद हुवा : फ़रमाइये ! उन्हों ने कहा : वोह ऐसा मस्अला नहीं जिसे इतनी आसानी से अ़र्ज़ करूं । आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : कुछ तो फ़रमाइये ! वाइस चांस्लर साह़िब ने सुवाल पेश किया, तो आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उसी वक़्त उस का तशफ़्फ़ी बख़्श जवाब दे दिया । उन्हों ने इन्तिहाई ह़ैरत से कहा कि मैं इस मस्अले के लिये जर्मन जाना चाहता था, इत्तिफ़ाक़न हमारे दीनियात के प्रोफ़ेसर मौलाना सय्यिद सुलैमान अशरफ़ साह़िब ने मेरी रहनुमाई फ़रमाई और मैं यहां ह़ाज़िर हो गया । यूं मा'लूम होता है कि आप इसी मस्अले को किताब में देख रहे थे । डॉक्टर साह़िब बसद फ़र्ह़त व मसर्रत वापस तशरीफ़ ले गए और आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की शख़्सिय्यत से इस क़दर मुतअस्सिर हुवे कि दाढ़ी रख ली और सौमो सलात के पाबन्द हो गए । (फ़ैज़ाने आ'ला ह़ज़रत, स. 550)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

जिस ने देखा उन्हें अ़क़ीदत से क़ल्ब की आंख से मह़ब्बत से
मरह़बा मरह़बा पुकार उठा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 575)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने ! आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने वालिदे गिरामी से इ़ल्मे रियाज़ी के सिर्फ़ चार क़ाइ़दे ही सीखे थे, मगर उन चार क़ाइ़दों की मदद और अपने शौक़े इ़ल्म से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इ़ल्मे रियाज़ी में ऐसी कामिल महारत ह़ासिल की, कि बड़ी बड़ी डिग्रियों वाला नामवर रियाज़ी दान भी आप से ऐसा मुतअस्सिर हुवा कि आप ही के गुन गाने लगा और चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजा कर नमाज़ रोज़े का आ़दी बन गया।

याद रहे ! क़ाबिलिय्यत और सलाह़िय्यत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हर एक को अ़त़ा फ़रमाई हैं मगर कोई तो अपनी उन सलाह़िय्यतों को फ़ुज़ूल कामों, उल्टे तजरिबों और खेल तमाशों में ज़ाएअ़ कर देता है, कोई वन वीलिंग (One Wheeling) कर के नाम कमाना चाहता है, तो कोई मुख़्तलिफ़ शो'ब्दे दिखा कर लोगों को मुतअस्सिर करता है, कोई इन्तिहाई बुलन्दी से छलांग लगाने का रीकॉर्ड बनाता है। अल ग़रज़ ! हर एक शोहरत की बुलन्दियों को छूने के लिये इन बे फ़ाइदा कामों में दुन्या व आख़िरत बरबाद करता नज़र आ रहा है, ऐसे में बा'ज़ अफ़राद अपनी जान से भी हाथ धो बैठते हैं।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : आदमी के इस्लाम की ख़ूबियों में से एक येह है कि वोह काम छोड़ दे, जो उसे नफ़्अ़ न दे।

(سُنَنُ التِّرْمِذِی ج4ص142حدیث2324)

जब कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन हमेशा ऐसे फ़ुज़ूल कामों से किनारा कशी इख़्तियार फ़रमाया करते । उन्हों ने तब्लीग़ व इशाअ़ते इल्म के लिये अपनी सलाहिय्यतों का सहीह़ इस्ति'माल किया, तो कोई मुफ़स्सिर बना तो कोई मुह़द्दिस, कोई फ़क़ीह बना तो कोई त़बीबे ह़ाज़िक़ (माहिर त़बीब / Specialist) अल ग़रज़ ! हर एक अपनी अपनी सलाहिय्यतों और इल्मी काविशों के सबब आज भी लाखों दिलों पर राज कर रहे हैं । हमें भी चाहिये की अपनी सलाहिय्यत व क़ाबिलिय्यत को फ़ुज़ूल कामों में बरबाद करने के बजाए अस्लाफ़ के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे ज़िन्दगी बसर करें ।

उ़लमाए अ़रब की फ़रमाइश !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की शख़्सिय्यत हमारे लिये मश्अ़ले राह है कि आप ने इल्मे दीन से मह़ब्बत और इस की इशाअ़त के जज़्बे के तह़्त इन्तिहाई मशक़्क़त के बा वुजूद भी उम्मते मुस्लिमा को इल्मे दीन से सैराब फ़रमाया । चुनान्चे, मन्क़ूल है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जब दूसरी बार ह़ज के इरादे से अ़रब शरीफ़ गए, जब जहाज़ के ज़रीए़ जिद्दा पहुंचे तो आप को बुख़ार हो गया, तीन रोज़ जिद्दा में बुख़ार की ह़ालत में गुज़रे, ह़ज के दिनों में कुछ इफ़ाक़ा हुवा मगर ह़ज से फ़राग़त के बा'द फिर बुख़ार हो गया (मल्फ़ूज़ात, स. 183, बित्तग़य्युर) ऐसे ह़ालात में मक्कए मुकर्रमा के सब से बड़े आ़लिमे दीन, साबिक़ क़ाज़िये मक्का ह़ज़रते मौलाना सालेह़ कमाल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को कुछ सुवालात पेश किये और कहा कि इस का जवाब मत़्लूब है । बा वुजूद येह कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अ़लील (या'नी बीमार) थे, मुसाफ़िर थे, सफ़रे ह़ज और मराह़िले ह़ज त़ै करने के सबब थकन के इलावा दीगर कई मस्रूफ़ियात भी थीं, मगर इरशाद फ़रमाया : क़लम दवात लाइये ! मौलाना सालेह़ कमाल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और मक्का के दीगर बड़े बड़े उ़लमाए किराम

رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने कहा : हम ऐसा फ़ौरी जवाब नहीं चाहते बल्कि जवाब निहायत जामेअ़ हो कि मुन्किरीने इल्मे ग़ैब के दांत खट्टे हों । जिस पर येह तै़ हुवा कि कल मंगल है, परसों बुध है, इन दो रोज़ में किताब मुकम्मल हो कर जुमा'रात को उ़लमाए मक्का को मिल जाए । आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इनायत और अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इआ़नत (या'नी मदद) पर भरोसा कर के वा'दा कर लिया, शाने इलाही (عَزَّوَجَلَّ) देखिये कि दूसरे ही दिन से बुख़ार फिर पलट आया, इसी ह़ालते बुख़ार में रिसाला तस्नीफ़ करता और ह़ामिद रज़ा ख़ान साफ़ और ख़ुश ख़त़ कर के लिखते जाते । (मल्फ़ूज़ात, स. 190, बित्तग़य्युर क़लील)

इस दौरान दीगर मस्रूफ़ियात के साथ साथ कई बड़े बड़े उ़लमा मुलाक़ात के लिये आए, उन से इल्मी मुज़ाकरात हुवे, नमाज़ों का वक़्फ़ा, त़बई तक़ाज़ों पर मुश्तमिल दीगर मस्रूफ़ियात । अल ग़रज़ ! दीगर मशाग़िल जारी रहने के बा वुजूद भी दो दिन में किताब की तक्मील हो गई और जुमा'रात की सुब्ह़ को किताब मौलाना शैख़ सालेह़ कमाल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तक पहुंचा दी गई, इस के बा'द पूरे शहरे मक्का में इस किताब का शोहरा हो गया ।

(मल्फ़ूज़ात, स. 192, मुलख़्ख़सन)

अल्लाह अल्लाह तबह़्ह़ुरे इल्मी अब भी बाक़ी है ख़िदमते क़-लमी
अहले सुन्नत का है जो सरमाया वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 575)

शे'र की वज़ाह़त : या'नी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की निहायत वुस्अ़ते इल्मी तो देखिये कि दीने इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये आ'ला ह़ज़रत के क़लम की ख़िदमात अब भी बाक़ी हैं, आप की येह क़-लमी ख़िदमत (या'नी कुतुब) अहले सुन्नत का बहुत बड़ा सरमाया हैं, जिस की एक छोटी सी झलक फ़तावा रज़विय्या को देख लीजिये कि जिस का फ़ैज़ान अब भी दुन्या भर में जारी व सारी है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इल्मे दीन से इश्क़ !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी कसीर मस्रूफ़ियात, बीमारी की ह़ालत और किताबों की अ़दम दस्तयाबी के बा वुजूद निहायत फ़सीह़ अ़रबी ज़बान में सिर्फ़ दो दिन के अन्दर ही एक नादिर किताब तस्नीफ़ फ़रमा दी । इस अ़ज़ीम कारनामे से जहां आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की वुस्अ़ते इल्मी साबित होती है, वहीं उन का शौक़े इल्मे दीन भी ज़ाहिर होता है । यक़ीनन इस क़दर अ़ज़ीम इल्मी काम वोह भी इतनी कम मुद्दत में उसी वक़्त हो सकता है जब कि इल्मे दीन से मह़ब्बत और इस का शौक़ इश्क़ की ह़द तक पहुंच चुका हो । याद रखिये ! इल्मे दीन सीखने का शौक़ उसी सूरत मे पैदा हो सकेगा कि जब हम उ़लमा की अहम्मिय्यत को समझेंगे, उन की सोह़बत में बैठेंगे, इल्मे दीन सीखने सिखाने वालों को अच्छा जानेंगे । मगर अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! हमारी अक्सरिय्यत इल्मे दीन से दूरी के सबब फ़ुज़ूल कामों में अपना वक़्त ज़ाएअ़ कर रही है, इल्मे दीन सीख कर दूसरों को सिखाना तो दूर की बात, हमें तो वोह ज़रूरी मसाइल भी सीखने की तौफ़ीक़ नहीं जिन का सीखना हम पर फ़र्ज़ है ।

फ़र्ज़ उ़लूम क्या हैं ?

ह़दीसे पाक में है : طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ इल्म का त़लब करना हर मुसलमान मर्द (इसी त़रह़ औ़रत) पर (भी) फ़र्ज़ है ।

(ابن ماجه، کتاب السنة، باب فضل العلماء والحث الخ، ۱/۱۴۶، حدیث ۲۲۴)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : इस ह़दीसे पाक के तह़्त मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जो कुछ फ़रमाया, उस का आसान लफ़्ज़ों में मुख़्तसरन ख़ुलासा अ़र्ज़ करने की कोशिश करता हूं । सब में अव्वलीन व अहम तरीन फ़र्ज़ येह है कि बुन्यादी अ़क़ाइद का इल्म ह़ासिल करे, जिस से आदमी सह़ीहुल अ़क़ीदा सुन्नी बनता

है और जिन के इन्कार व मुख़ालिफ़त से काफ़िर या गुमराह हो जाता है। इस के बा'द मसाइले नमाज़ या'नी इस के फ़राइज़ व शराइत़ व मुफ़्सिदात (नमाज़ तोड़ने वाली चीज़ें) सीखे ताकि नमाज़ सह़ीह़ त़ौर पर अदा कर सके। फिर जब रमज़ानुल मुबारक की तशरीफ़ आवरी हो तो रोज़ों के मसाइल, मालिके निसाबे नामी (या'नी ह़क़ीक़तन या हुक्मन बढ़ने वाले माल के निसाब का मालिक) हो जाए तो ज़कात के मसाइल, साह़िबे इस्तित़ाअ़त हो तो मसाइले ह़ज, निकाह़ करना चाहे तो इस के ज़रूरी मसाइल, ताजिर हो तो ख़रीदो फ़रोख़्त के मसाइल, मुज़ारेअ़ या'नी काश्तकार (और ज़मीनदार) पर खेती बाड़ी के मसाइल, मुलाज़िम बनने और मुलाज़िम रखने वाले पर इजारा के मसाइल। وَعَلٰی هٰذَاالْقِیاس (या'नी और इसी पर क़ियास करते हुवे) हर मुसलमान आ़क़िल व बालिग़ मर्द व औ़रत पर उस की मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है। इसी त़रह़ हर एक के लिये मसाइले ह़लाल व ह़राम भी सीखना फ़र्ज़ है नीज़ मसाइले क़ल्ब (बात़िनी मसाइल) या'नी फ़राइज़े क़ल्बिया (बात़िनी फ़राइज़) मसलन आ़जिज़ी व इख़्लास और तवक्कुल वग़ैरहा और इन को ह़ासिल करने का त़रीक़ा और बात़िनी गुनाह मसलन तकब्बुर, रियाकारी, ह़सद वग़ैरहा और इन का इ़लाज सीखना हर मुसलमान पर अहम फ़राइज़ से है। (कुफ़्रिया कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 342)

फ़र्ज़ उ़लूम ह़ासिल कीजिये !

अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! आज मुसलमानों की अक्सरिय्यत फ़र्ज़ उ़लूम सीखने से भी ग़ाफ़िल है। याद रखिये ! अभी वक़्त है, फ़र्ज़ उ़लूम सीख लीजिये, वरना सांसें रुक्ते ही इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने का येह अनमोल मौक़अ़ भी हाथ से चला जाएगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! फ़ी ज़माना दा'वते इस्लामी ने हमारे लिये इ़ल्मे दीन ह़ासिल करना बहुत ही आसान कर दिया है। मदनी मुन्नों की बेहतर ता'लीम व तरबिय्यत के लिये मदारिसुल मदीना, दारुल मदीना और दर्से निज़ामी (या'नी आ़लिम कोर्स) करने के ख़्वाहिश मन्द इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के लिये जामिआ़तुल मदीना क़ाइम हैं।

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! 100 फ़ीसदी इस्लामी चेनल या'नी "**मदनी चेनल**" एक इलेक्ट्रॉनिक मुबल्लिग़ की हैसिय्यत से घर घर नेकी की दा'वत की धूमें मचा रहा है, **फ़ैज़ाने इल्मे दीन** के क़ीमती मोती लुटा रहा है, उम्मते मुस्लिमा को दुरुस्त दीनी मा'लूमात और शरई रहनुमाई फ़राहम करने के लिये कभी अमीरे अहले सुन्नत के **मदनी मुज़ाकरे** तो कभी **दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत** की त़रफ़ से अहम तरीन मौज़ूआ़त पर मुश्तमिल सिलसिले इल्मे दीन ह़ासिल करने के बेहतरीन मवाक़ेअ़ हैं, इस के इलावा मुख़्तलिफ़ शो'बाजात से तअ़ल्लुक़ रखने वाले इस्लामी भाइयों की मदनी तरबिय्यत और उन में मज़ीद क़ाबिलिय्यत पैदा करने के लिये मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ भी कराए जाते हैं। इन में 12 रोज़ा **मदनी कोर्स**, 41 रोज़ा **मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स** और 63 रोज़ा **मदनी तरबिय्यती कोर्स** तो बहुत ही अहम्मिय्यत के ह़ामिल हैं। फ़र्ज़ उ़लूम सिखाने के लिये बसा अवक़ात 63 रोज़ा "**फ़ैज़ाने फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स**" का भी एहतिमाम किया जाता है, जिस में दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के मुफ़्तियाने किराम व दीगर उ़लमाए किराम (मदनी इस्लामी भाई) जदवल के मुत़ाबिक़ इस्लामी भाइयों को इन्तिहाई आसान अन्दाज़ में फ़र्ज़ उ़लूम पर मुश्तमिल मदनी फूलों से नवाज़ते हैं। चूंकि अब हर मोबाइल फ़ोन में मेमोरी कार्ड (Memory Card) लगाने की सहूलत मौजूद होती है, लिहाज़ा दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना ने हुसूले इल्म के त़लबगारों की आसानी के लिये इन फ़र्ज़ उ़लूम कोर्सिज़ की वीडियोज़ को मेमोरी कार्डज़ (Memory Cards) में जारी कर दिया है ताकि ज़ियादा से ज़ियादा मुसलमान फ़ाइदा उठा सकें। दा'वते इस्लामी के तह़्त इन कोर्सिज़ में जहां इल्मे दीन ह़ासिल करने का जज़्बा बेदार किया जाता है वहीं काफ़ी ह़द तक फ़र्ज़ उ़लूम से आगाही भी हो जाती है। इल्मे दीन ह़ासिल करने और अ़मल का जज़्बा पाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ हर माह आ़शिक़ाने रसूल के साथ 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करना भी है। राहे ख़ुदा में आ़शिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना बड़ी सआ़दत की बात है,

क्यूंकि मदनी क़ाफ़िलों की बरकत से न सिर्फ़ पंज वक़्ता नमाज़े बा जमाअ़त की सआ़दत नसीब होती है बल्कि प्यारे आक़ा, ह़बीबे किब्रिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें सीखने और इल्मे दीन ह़ासिल करने का मौक़अ़ भी मिलता है । लिहाज़ा हमें चाहिये की हम भी ह़ुसूले इ़ल्म के इन ज़राएअ़ से फ़ाइदा उठाएं और अपनी आख़िरत को बेहतर बनाएं और ढेरों बरकतें पाएं । आइये ! तरग़ीब के लिये मदनी क़ाफ़िले की एक मदनी बहार सुनते हैं। चुनान्चे,

शराबी की तौबा

महाराश्ट्र (हिन्द) के इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं मरज़े इ़स्यां (या'नी गुनाहों की बीमारी) में इन्तिहा दर्जे तक मुब्तला हो चुका था। दिन भर मज़दूरी करने के बा'द जो रक़म ह़ासिल होती रात को उसी से مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ शराब ख़रीद कर ख़ूब अ़य्याशी करता, शोर शराबा करता, गालियां बक्ता और वालिदैन व अहले मह़ल्ला को ख़ूब तंग करता, इस के इलावा मैं परले दर्जे का जुवारी व बदतरीन बे नमाज़ी भी था। इसी ग़फ़्लत में मेरी ज़िन्दगी के क़ीमती अय्याम ज़ाएअ़ होते रहे, आख़िरे कार मेरे मुक़द्दर का सितारा चमका। हुवा यूं कि ख़ुश क़िस्मती से मेरी मुलाक़ात दा'वते इस्लामी के एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई से हुई । उन्हों ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे मुझे मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र की तरग़ीब दी, उन के मीठे बोल ने कुछ ऐसा रंग जमाया कि मुझ से इन्कार न हो सका और मैं हाथों हाथ 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत मिली और दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ रसाइल भी पढ़ने को मिले । जिस की येह बरकत ह़ासिल हुई कि मुझ जैसा पक्का बे नमाज़ी, शराबी व जुवारी ताइब हो कर न सिर्फ़ नमाज़ पढ़ने वाला बन गया बल्कि सदाए मदीना लगाने (या'नी फ़ज्र की नमाज़ के लिये मुसलमानों को जगाने) और दूसरों को मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनाने वाला बन गया।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सिर्फ़ एक माह में हिफ़्ज़े क़ुरआन

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी हर माह आ़शिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र का मा'मूल बनाना चाहिये । मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की बरकत से जहां नेक अ़मल की त़रफ़ रग़बत मिलती है वहीं इल्मे दीन सीखने का मौक़अ़ भी हाथ आता है, अगर हमें इल्म सीखने का शौक़ और सच्ची लगन होगी तो तमाम तर मस्रूफ़ियात और मुश्किलात के बा वुजूद भी हम वक़्त निकालने में कामयाब हो जाएंगे । जनाबे सय्यिद अय्यूब अ़ली साहिब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आ'ला ह़ज़रत के शौक़े ह़िफ़्ज़े क़ुरआन का वाक़िआ़ बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : एक रोज़ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया कि बा'ज़ ना वाक़िफ़ ह़ज़रात मेरे नाम के आगे **ह़ाफ़िज़** लिख दिया करते हैं, ह़ालांकि मैं इस लक़ब का अहल नहीं हूं । सय्यिद अय्यूब अ़ली साहिब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इसी रोज़ से दौर शुरूअ़ कर दिया । जिस का वक़्त ग़ालिबन इ़शा का वुज़ू फ़रमाने के बा'द से जमाअ़त क़ाइम होने तक मख़्सूस था । रोज़ाना एक पारह याद फ़रमा लिया करते थे, यहां तक कि तीसवें रोज़ तीसवां पारह याद फ़रमा लिया । एक मौक़अ़ पर फ़रमाया कि मैं ने कलामे पाक बित्तरतीब ब कोशिश याद कर लिया और येह इस लिये कि उन बन्दगाने ख़ुदा का (जो मेरे नाम के आगे ह़ाफ़िज़ लिख दिया करते हैं) कहना ग़लत़ साबित न हो ।

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 208, बित्तग़य्युर क़लील)

इल्मो इ़रफ़ां का जो कि सागर था ख़ैर से ह़ाफ़िज़ा क़वी तर था
ह़क़ पर मबनी था जिस का हर फ़तवा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 575)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए़ से जहां येह मा'लूम हुवा कि इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को तक़्वा व ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब येह बात हरगिज़ गवारा न थी कि लोग मुझे उस वस्फ़ से पुकारें जो मेरी ज़ात में मौजूद नहीं, वहीं येह भी मा'लूम हुवा कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इल्मे दीन के

सरचश्मा और क़ुरआने पाक से बेहद महब्बत फ़रमाते थे जभी तो सिर्फ़ एक माह की क़लील मुद्दत में पूरा क़ुरआने पाक हिफ़्ज़ कर लिया । जब कि हमारी हालत येह है कि तिलावते क़ुरआने पाक नहीं करते और बा'ज़ को येह सआ़दत सिर्फ़ रमज़ानुल मुबारक में ही नसीब होती है । अभी रमज़ानुल मुबारक का महीना गुज़रा जिस में हम ने पांचों नमाज़ें मस्जिद में अदा की होंगी, दीगर नेक आ'माल के साथ साथ तिलावते क़ुरआन का भी मा'मूल रहा होगा, अगर हम पूरा साल ही तिलावते क़ुरआन की आ़दत बना लें, तिलावत के साथ तर्जमा व तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान / नूरुल इरफ़ान / सिरातुल जिनान पढ़ कर ग़ौरो फ़िक्र करें और अ़मल के लिये कोशिश भी करते रहें, तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सारा साल ही इस की बरकतों से फ़ैज़याब होते रहेंगे । दिलो दिमाग़ को सुकून मिलेगा, घर, दुकान और कारोबार में बरकतों का नुज़ूल होगा, रह़मतों के दरवाज़े खुलेंगे, बीमारियों से नजात मिलेगी, मसाइब व मुश्किलात से छुटकारा मिलने के साथ साथ क़ब्रो आख़िरत के मुआ़मलात आसान होंगे और सब से बढ़ कर येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा ह़ासिल होगी ।

इल्मे ह़दीस में महारत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को जिस त़रह़ क़ुरआने पाक से बे इन्तिहा महब्बत थी, इसी त़रह़ ह़दीसे रसूल से भी आप को बेह़द लगाव था । चुनान्चे, एक बार आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से सुवाल किया गया कि आप ने ह़दीस शरीफ़ की कौन कौन सी किताबें पढ़ी हैं ? तो इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, नसाई, मिश्कात, जामेए़ सग़ीर, जामेए़ कबीर, मुस्नदे इमामे आ'ज़म, मुस्नदे इमामे शाफ़ेई, मुस्नदे इमामे अह़मद, सुनने दारिमी समेत ह़दीस शरीफ़ की तक़रीबन तीस किताबों के नाम इरशाद फ़रमाए और आख़िर में इरशाद फ़रमाया कि पचास से ज़ाइद कुतुबे ह़दीस मेरे दर्सो तदरीस और मुत़ालआ़ में रही हैं । (इज़्हारे ह़क़्कुल जली, स. 40, बित्तग़य्युर)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारा ह़ाल तो येह है कि हमें कुतुबे ह़दीस तो दूर की बात मुत़लक़न तीस दीनी किताबों के नाम याद न होंगे जब कि हमारे इमाम, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के शौक़े इल्मे दीन का आ़लम येह है कि सिर्फ़ फ़न्ने ह़दीस में ही पचास से ज़ाइद किताबें उन के दर्से तदरीस और मुत़ालआ़ में शामिल रहीं और ऐसा नहीं था कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़क़त़ मुत़ालआ़ ही में मश्ग़ूल रहते थे बल्कि दीगर कई मस्रूफ़ियात मसलन पूरी दुन्या से आए हुवे इस्तिफ़्ता के जवाबात देना, ख़ुतूत़ के जवाबात भेजना, महमानों और मुसाफ़िरों से मुलाक़ात करना, राहे ह़क़ से भटके हुवे लोगों की इस्लाह़ करना, तस्नीफ़ व तालिफ़ करना आप की ज़िन्दगी का ह़िस्सा थीं। यक़ीनन येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ास फ़ज़्लो करम ही है कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को कमो बेश पचास से ज़ाइद उ़लूमो फ़ुनून में कामिल महारत ह़ासिल थी, छ हज़ार आठ सौ सैंतालीस (6847) सुवालात व जवाबात और दो सौ छ (206) रसाइल से मुज़य्यन तीस जिल्दों पर मुश्तमिल इक्कीस हज़ार छ सौ छप्पन (21,656) सफ़ह़ात पर मुश्तमिल फ़तावा रज़विय्या आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ज़ौक़े इल्मी और ख़िदमते दीन पर सब से बड़ी दलील है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की तमाम ख़िदमाते दीनिया को क़बूल फ़रमाए और आप के मज़ारे पुर अन्वार पर रह़मतो रिज़वान की करोड़ों बारिशें बरसाए और हमें आप के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

अल्लाह अल्लाह तबह़्ह़ुरे इल्मी अब भी बाक़ी है ख़िदमते क़-लमी
अहले सुन्नत का है जो सरमाया वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 575)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज के बयान में हम ने आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के शौक़े इल्मे दीन से मुतअ़ल्लिक़ सुनने की सआ़दत ह़ासिल की।

- ❖ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बचपन ही से हुसूले इल्मे दीन और मुत़ालआ़ के शौक़ीन थे, दीनी किताबों से ह़द दरजा मह़ब्बत और दुन्यवी व दीनी उ़लूमो फ़ुनून में कामिल महारत रखने वाले थे।
- ❖ अपने असातिज़ा के मन्ज़ूरे नज़र और ज़बरदस्त क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा के मालिक थे।
- ❖ आप के शौक़े मुत़ालआ़ और ज़ह़ानत का येह आ़लम था कि चौथाई किताब उस्ताद से पढ़ने के बा'द बक़िय्या तमाम किताब का ख़ुद मुत़ालआ़ करते और याद कर के सुना दिया करते थे।
- ❖ अ़लालत (या'नी बीमारी) के बा वुजूद उ़लमाए अ़रब की फ़रमाइश पर सिर्फ़ दो दिन में इल्मे ग़ैब के मौज़ूअ़ पर अ़रबी ज़बान में अ़ज़ीमुश्शान किताब तस्नीफ़ फ़रमा दी।
- ❖ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने कलामे पाक (या'नी क़ुरआने करीम) बित्तरतीब ब कोशिश याद कर लिया और येह इस लिये कि (जो मेरे नाम के आगे ह़ाफ़िज़ लिख दिया करते हैं) उन बन्दागाने ख़ुदा का कहना ग़लत़ साबित न हो।
- ❖ आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को कमो बेश पचास से ज़ाइद उ़लूमो फ़ुनून में कामिल महारत ह़ासिल थी, छ ह़ज़ार आठ सौ सैंतालीस (6847) सुवालात व जवाबात और दो सौ छ (206) रसाइल से मुज़य्यन तीस (30) जिल्दों पर मुश्तमिल इक्कीस ह़ज़ार छ सौ छप्पन (21,656) सफ़ह़ात पर मुश्तमिल फ़तावा रज़विय्या आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ज़ौक़े इल्मी और ख़िदमते दीन की सब से बड़ी दलील है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सदक़े हमें भी इल्मे दीन का शौक़ और दीनी किताबों का ज़ौक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

इमामा शरीफ़ की सुन्नतें और आदाब

आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले 163 मदनी फूल से इमामा बांधने की चन्द सुन्नतें व आदाब सुनते हैं।

पहले दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों :

❖ इमामे के साथ नमाज़, दस हज़ार नेकियों के बराबर है ।

(فردوس الاخبار، باب الصاد، ذکر الفصول... الخ، ۲/ ۳۱، حدیث: ۳۶۲۱)

❖ इमामे के साथ एक जुमुआ़, बिग़ैर इमामे के 70 जुमुओं के बराबर है ।

(ابنِ عساکِر، ذکر من اسمہ عبدان، عبدان بن زرّین... الخ، ۳۷/ ۳۵۵)

❖ इमामा क़िब्ला रू खड़े खड़े बांधिये । (کَشْفُ الالْتِباس فِی اسْتِحْبابِ اللِّباس ص۳۸) ❖ इमामे में सुन्नत येह है कि ढाई गज़ से कम न हो, न छ गज़ से ज़ियादा और इस की बन्दिश गुम्बद नुमा हो । (फ़तावा रज़विय्या, 22 / 186) ❖ रूमाल अगर बड़ा हो कि इतने पेच आ सकें जो सर को छुपा लें, तो वोह इमामा ही हो गया और छोटा रूमाल जिस से सिर्फ़ दो एक पेच आ सकें लपेटना मक्रूह है । (फ़तावा रज़विय्या, 7 / 299) ❖ इमामे को जब अज़ सरे नौ बांधना हो तो, जिस त़रह़ लपेटा है उसी त़रह़ खोले और यक बारगी ज़मीन पर न फैंक दे । (फ़तावा हिन्दिया, 5 / 330) ❖ इमामे का ति़ब्बी फ़ाइदा येह है कि नंगे सर रहने वालों के बालों पर सर्दी, गर्मी और धूप वग़ैरा बराहे रास्त असर अन्दाज़ होती है, इस से न सिर्फ़ बाल बल्कि दिमाग़ और चेहरा भी मुतअस्सिर होता है और सिह़्ह़त को नुक़्सान पहुंच सकता है, लिहाज़ा इत्तिबाए़ सुन्नत की निय्यत से इमामा शरीफ़ बांधने में दोनों जहां में आ़फ़ियत है ।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब **बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

इल्म ह़ासिल करो जह्ल ज़ाइल करो पाओगे राह़तें, क़ाफ़िले में चलो
सुन्नतें सीखने, तीन दिन के लिये हर महीने चलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : क़ियामत के दिन लोगों में सब से ज़ियादा मेरे क़रीब वोह शख़्श होगा, जो सब से ज़ियादा मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता होगा।

(ترمذی، ابواب الوتر، باب ماجاء فی فضل الصلاۃ علی النبی، ۲/۲۷، حدیث: ۴۸۴)

पढ़ता रहूं कसरत से दुरूद उन पे सदा मैं
और ज़िक्र का भी शौक़ पए ग़ौसो रज़ा दे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की नियतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रियाकरी का वबाल

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 165 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**रियाकारी**" के सफ़हा 16 पर है : एक शख़्स ने दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रोबर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : कल बरोज़े क़ियामत कौन सी चीज़ नजात दिलाएगी ? इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ बद दियानती न करना । अ़र्ज़ की : बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ बद दियानती कैसे कर सकता है ? इरशाद फ़रमाया : इस त़रह़ कि तुम कोई ऐसा काम करो, जिस का हुक्म तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने दिया हो लेकिन तुम्हारा मक़्सूद ग़ैरुल्लाह की रिज़ा का हुसूल हो, लिहाज़ा रियाकारी से बचते रहो क्यूंकि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क है और क़ियामत के दिन रियाकार को लोगों के सामने चार नामों से पुकारा जाएगा या'नी ऐ बदकार ! ऐ धोकेबाज़ ! ऐ काफ़िर ! ऐ ख़सारा पाने वाले ! तेरा अ़मल ख़राब हुवा और तेरा अज्र बरबाद हुवा । लिहाज़ा आज तेरे लिये कोई ह़िस्सा नहीं, ऐ धोका देने की कोशिश करने वाले ! अब तू अपना सवाब उस के पास जा कर तलाश कर, जिस के लिये तू अ़मल किया करता था ।

(الزواجر عن اقتراف الكبائر، الباب الاول فى الكبائر الباطنيه . . . الخ، الكبيرة الثانية، الشرك الاصغر . . . الخ، ۱/۸۵)

तू बस रहना सदा राज़ी, नहीं है ताबे नाराज़ी
तू ना ख़ुश जिस से हो, बरबाद है तेरी क़सम मौला

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 98)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा रिवायत से हमें भी इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये कि लोगों को दिखाने के लिये अ़मल करने वाले को क़ियामत के दिन किस क़दर नदामत व शर्मिन्दगी का सामना करना पड़ेगा । बद क़िस्मती से अव्वल तो नफ़्सो शैत़ान हमें नेकियां करने नहीं देते और अगर हम ख़ूब कोशिश कर के नेक अ़मल करने में कामयाब हो भी जाएं, तो नफ़्सो शैत़ान हमारी इ़बादत को मक़्बूल होने से रोकने के लिये अपना पूरा ज़ोर लगा देते हैं और हमारी इ़बादत में कोई ऐसी ग़लत़ी करवाने की कोशिश करते हैं जो इसे ज़ाएअ़ कर दे या फिर इ़बादत के बा'द हमारे दिल में नामो नुमूद (या'नी शोहरत) की ख़्वाहिश घर कर लेती है, कोई हमारी नेकियों का चर्चा करे, न करे, हम ख़ुद बिला ज़रूरते शरई अपनी नेकियों का इज़्हार कर के "**अपने मुंह मिया मिट्ठू**" बनने से बाज़ नहीं आते और यूं नफ़्सो शैत़ान के फैलाए हुवे रियाकारी के जाल में जा फंसते हैं । मसलन कोई कहता है : मैं हर साल रजब, शा'बान और रमज़ान के रोज़े रखता हूं (ह़ालांकि माहे रमज़ानुल मुबारक के रोज़े तो फ़र्ज़ हैं, फिर भी वोह रियाकार जो कि दो माह के नफ़्ल रोज़े रखता है, अपनी रियाकारी (अगर उस की रियाकारी की निय्यत हो) का वज़्न बढ़ाने के लिये कहता है : मैं हर साल तीन माह या'नी रजब, शा'बान और रमज़ान के रोज़े रखता हूं । (وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ) कोई कहता है : मैं इतने साल से हर माह अय्यामे बीज़ (या'नी चांद की 13, 14, 15 तारीख़) के रोज़े रख रहा हूं, कोई अपने ह़ज की ता'दाद का, तो कोई उ़मरे की गिन्ती का ए'लान करता है । कोई कहता है : मैं रोज़ाना इतने दुरूद शरीफ़ पढ़ता हूं, इतने अ़र्से से दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ का विर्द कर रहा हूं, इतनी तिलावत करता हूं, हर माह फ़ुलां मद्रसे को इतना चन्दा पेश करता हूं । अल ग़रज़ ! ख़्वाह म-ख़्वाह अपने

नवाफ़िल, तहज्जुद, नफ़्ल रोज़ों और इबादतों का नादान लोग ख़ूब चर्चा करते हैं। आह ! **ऐ इख़्लास तू कहां है** ? येह तमाम उस सूरत में जब कि उस की रियाकारी की निय्यत हो। (इफ़ादात : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के शहज़ादे मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه आ़जिज़ी करते और हमें समझाते हुवे फ़रमाते हैं :

नफ़्से बदकार ने दिल पे येह क़ियामत तोड़ी
अ़मले नेक किया भी तो छुपाने न दिया

(सामाने बख़्शिश, स. 61)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रियाकार ख़ाली हाथ रह जाता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन नेक आ'माल रब्बे जुल जलाल عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करने और आख़िरत को बेहतर बनाने के लिये ही करने चाहियें, मगर याद रखिये कि जो बद नसीब लोग रियाकारी के साथ नेक आ'माल करते हैं, उन के वोह नेक आ'माल रब्बे जुल जलाल عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करने और उन की आख़िरत को बेहतर बनाने में कोई किरदार अदा नहीं करते बल्कि ऐसे लोगों को उन के किये का बदला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या ही में अ़त़ा फ़रमा देता है। जैसा कि पारह 12, सूरए हूद की आयत नम्बर 15 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَ زِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَ هُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ﴿۱۵﴾ (پ۱۲، ہود: ۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जो दुन्या की ज़िन्दगी और आराइश चाहता हो, हम उस में उन का पूरा फल दे देंगे और उस में कमी न देंगे।*

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि रियाकारों को दुन्या में ही उन की नेकियों का बदला दे दिया जाता है और उन पर ज़र्रा भर जुल्म नहीं किया जाता। (تفسیر طبری ج۷ ص۱۳)

एक और आयत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰىۙ كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۫ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ (پ۳، البقرة: ۲۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! अपने सदक़े बातिल न कर दो एह़सान रख कर और ईज़ा दे कर उस की त़रह़ जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिये ख़र्च करे और **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान न लाए तो उस की कहावत (मिसाल) ऐसी है जैसे एक चट्टान, कि उस पर मिट्टी है, अब उस पर ज़ोर का पानी पड़ा जिस ने उसे निरा पथ्थर कर छोड़ा अपनी कमाई से किसी चीज़ पर क़ाबू न पाएंगे ।*

सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : जिस त़रह़ मुनाफ़िक़ को रिज़ाए इलाही मक़्सूद नहीं होती, वोह अपना माल रियाकारी के लिये ख़र्च कर के ज़ाएअ़ कर देता है, इस त़रह़ तुम एह़सान जता कर और ईज़ा दे कर अपने सदक़ात का अज्र ज़ाएअ़ न करो । येह (मिसाल जो आयते मुबारका में बयान की गई है) मुनाफ़िक़ रियाकार के अ़मल की मिसाल है कि जिस त़रह़ पथ्थर पर मिट्टी नज़र आती है लेकिन बारिश से वोह सब दूर हो जाती है, ख़ाली पथ्थर रह जाता है, येही ह़ाल मुनाफ़िक़ के अ़मल का है कि देखने वालों को मा'लूम होता है कि अ़मल है और रोज़े क़ियामत वोह तमाम अ़मल बातिल होंगे क्यूंकि रिज़ाए इलाही के लिये न थे । (ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पा. 3, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 264)

आइये ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इख़्लास की भीक मांगते हैं :

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 105)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुन्यावी एह़तियात़, उख़्-रवी पछतावे से बेहतर है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अब ज़रा ग़ौर कीजिये कि क़ियामत के दिन जब हर किसी को अपने आ'माल की फ़िक्र होगी, ऐसे में अगर किसी का नामए आ'माल पेश किया जाए और उसे पता चले कि उस के बहुत से नेक आ'माल फ़क़त़ **रियाकारी** की वज्ह से ज़ाएअ़ हो चुके हैं, तो सोचिये कि उस मुश्किल घड़ी में उस शख़्स की कैफ़िय्यत क्या होगी ? और उसे कितना अफ़्सोस होगा कि ज़िन्दगी भर जिन आ'माल को वोह अपने लिये तोशए आख़िरत और नजात का ज़रीआ़ समझता रहा, क़ियामत के दिन जब सख़्त ज़रूरत पड़ी तो उन आ'माल में से कुछ भी बाक़ी न रहा, ज़िन्दगी भर की कमाई हाथ से जाती रही । तमाम उ़म्र येही सोचता रहा कि मेरे पास नेकियों का ख़ज़ाना है और बरोज़े क़ियामत ह़सरत व अफ़्सोस की तस्वीर बना खड़ा होगा । लिहाज़ा ज़रूरी है कि हम इस दुन्या ही में अपने ह़ाल पर ग़ौर कर के रियाकारी जैसी ख़ौफ़नाक और हौलनाक आफ़त से पीछा छुड़ा लें । हर अ़मल का अच्छी त़रह़ जाइज़ा लेना चाहिये कि उस से मक़्सूद रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा है या मालो ज़र का ह़ुसूल या कोई और दुन्यावी फ़ाइदा ? बद क़िस्मती से आज कल हमारी इ़बादात से इख़्लास रुख़्सत होता जा रहा है, हर इस्लामी भाई अपने दिल से येह सुवाल करे कि लोगों के सामने जब मैं नेक आ'माल बड़ी ख़ुश उस्लूबी और अच्छे अन्दाज़ से करता हूं, तो तन्हाई में मुझे क्या हो जाता है ? अकेले में जल्द बाज़ी से क्यूं काम लेता हूं ? तन्हाई में इ़बादत का ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ क्यूं बर क़रार नहीं रहता ? कहीं इस की वज्ह रियाकारी तो नहीं ? लिहाज़ा आज ही अपने आ'माल का मुह़ासबा करते हुवे अपनी इस्लाह़ की कोशिश कीजिये ! वरना कल बरोज़े क़ियामत सिवाए अफ़्सोस व नदामत के कुछ हाथ न आएगा । अगर अपना मुह़ासबा करने का ज़ेह्न नहीं बनता या इस बात की वज्ह से परेशान हैं कि मैं अपने आ'माल का मुह़ासबा किस त़रह़ करूं ? मुझे तो सह़ीह़ त़ौर पर मुह़ासबा करना ही नहीं आता । तो घबराइये मत ! सिर्फ़ ऐसे अफ़राद की सोह़बत इख़्तियार कर लीजिये जो अपने आ'माल

का मुह़ासबा करना जानते हों, ऐसे माह़ोल को अपना लीजिये जहां मुह़ासबा करने का मदनी ज़ेह्न दिया जाता हो। याद रखिये कि इस्लाह़ व तरबिय्यत के मुआ़मले में सोह़बत व माह़ोल का बड़ा गहरा असर होता है। अच्छी सोह़बत और पाकीज़ा माह़ोल पाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाना भी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी से वाबस्तगी की बरकत से न सिर्फ़ सुन्नतों भरा पाकीज़ा मदनी माह़ोल मुयस्सर आता है बल्कि आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत भी ह़ासिल हो जाती है। दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की तरग़ीब दिला कर रोज़ाना फ़िक्रे मदीना (या'नी अपने नफ़्स व आ'माल का मुह़ासबा) करने का ज़ेह्न भी दिया जाता है। मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल होती है, अच्छी सोह़बत और न जाने क्या क्या बरकतें ह़ासिल होती हैं।

अच्छी सोह़बत मिले, ख़ूब बरकत मिले
चल पड़ो, चल पड़ें, क़ाफ़िले में चलो
कुफ़्र की कालकें, दूर हो ज़ुल्मतें
आओ कोशिश करें, क़ाफ़िले में चलो
बेशक आ'माले बद, और अफ़्आ़ले बद
की छुटें आ़दतें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 671, 672)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रियाकारी एक ऐसी तबाह कुन बीमारी है जो नेक अ़मल की रूह़ को बुरी त़रह़ मुतअस्सिर करती है, यहां तक कि वोह नेक अ़मल रियाकारी की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में शरफ़े क़बूलिय्यत ह़ासिल नहीं कर पाता। आइये ! अह़ादीसे त़य्यिबा की रौशनी में आ'माल को बरबाद करने में रियाकारी की तबाहकारियां सुनते हैं।

रिया की मज़म्मत पर 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

1. ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जब कोई क़ौम आख़िरत (के आ'माल) से आरास्ता हो कर (हुसूले) दुन्या के लिये हुस्नो जमाल का पैकर बने, तो उस का ठिकाना जहन्नम है। (جامع الاحادیث للسیوطی، حدیث: ۱۱۶۹، ۱/۱۸۳)

2. शहनशाहे दो जहान, मक्के मदीने के सुल्त़ान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : اِنَّ اللهَ تَعَالٰى حَرَّمَ الْجَنَّةَ عَلٰى كُلِّ مُرَاءٍ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हर रियाकार पर जन्नत ह़राम कर दी है । (या'नी रियाकार मुसलमान इब्तिदाअन जन्नत में दाख़िल न होगा)

(جَمْعُ الْجَوَامِع لِلسُّيُوطِی ج۲ص ۲۴۲حدیث۵۳۲۹)

3. सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जन्नत की ख़ुश्बू पांच सौ बरस की मुसाफ़त (या'नी दूरी) से सूंघी जा सकती है मगर आख़िरत के अ़मल से दुन्या त़लब करने वाला उसे न पा सकेगा ।

(کنز العمال، کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، حرف الراء الریاء، ۳/۱۹۰، حدیث:۷۴۸۹)

4. रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो शोहरत के लिये अ़मल करेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे रुस्वा करेगा, जो दिखावे के लिये अ़मल करेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अ़ज़ाब देगा । (جامع الاحادیث للسیوطی، قسم الاقوال، ۷/۴۴، حدیث:۲۰۷۴۰)

बना दे मुझ को इलाही ख़ुलूस का पैकर
क़रीब आए न मेरे कभी रिया या रब !
अन्धेरी क़ब्र का दिल से नहीं निकलता डर
करूंगा क्या जो तू नाराज़ हो गया या रब !

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 78)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! रियाकारी कैसी मन्हूस आफ़त है कि इस के सबब नेक आ'माल क़बूल नहीं होते, रियाकारी करने वाला जन्नत से महरूम रहता है, उसे बरोज़े क़ियामत रुस्वा किया जाएगा, रियाकारी के सबब नेक अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ऐसा मरदूद होता है कि उस पर कोई भी अज्रो सवाब नहीं मिलता बल्कि रियाकारी वाला अ़मल, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी का सबब है । चुनान्चे,

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1286 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**इह़याउल उ़लूम**" जिल्द 3, सफ़ह़ा 890 पर हुज्जतुल इस्लाम, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "जब बन्दा रियाकारी करता है, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों से फ़रमाता है : "इसे देखो येह मेरे साथ मज़ाक़ कर रहा है ।" इसे आप मिसाल से यूं समझें कि कोई ख़ादिम पूरा दिन बादशाह के दरबार में उस के सामने रहता है, जैसा कि ख़ादिमों की आ़दत होती है, लेकिन उस ठहरने में उस का मक़्सद बादशाह की किसी कनीज़ या ग़ुलाम को देखना है, तो येह बादशाह के साथ मज़ाक़ है क्यूंकि उस ने बादशाह का क़ुर्ब, उस की ख़िदमत के लिये नहीं बल्कि उस के ग़ुलाम के लिये इख़्तियार किया है । लिहाज़ा इस से बढ़ कर (क़ाबिले) ह़क़ारत (बात) क्या होगी कि बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत एक ऐसे कमज़ोर व ना तुवां बन्दे को दिखाने के लिये करे, जो (ज़ाती त़ौर पर) उस के किसी नफ़्अ़ व नुक़्सान का मालिक न हो । (इह़याउल उ़लूम, 3 / 890)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन रियाकारी का मरज़ इन्तिहाई मोह्लिक है और इस से बचना बेह़द ज़रूरी है । लिहाज़ा किसी भी नेक अ़मल से पहले दिल के इरादे पर ख़ूब ग़ौर कर लेना चाहिये, कहीं ऐसा न हो कि रियाकारी के सबब वोह अ़मल किसी काम न आए । आइये ! "**रियाकारी**" की ता'रीफ़ सुनते हैं ताकि इस की अच्छी त़रह़ पहचान ह़ासिल हो जाए और इस से बचने में आसानी मिले । चुनान्चे,

"रिया" की ता'रीफ़

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी 616 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**नेकी की दा'वत**" के सफ़ह़ा 66 पर तह़रीर फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के इलावा

किसी और इरादे से इ़बादत करना (रियाकारी है) । गोया इ़बादत से येह ग़रज़ हो कि लोग उस की इ़बादत पर आगाह हों ताकि वोह उन लोगों से माल बटोरे या लोग उस की ता'रीफ़ करें या उसे नेक आदमी समझें या उसे इ़ज़्ज़त वग़ैरा दें ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

किताब "रियाकारी" का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई बड़ा नाज़ुक मुआ़मला है कि ज़रा सी निय्यत बहकती है और नेक अ़मल करने वाला रियाकारी के गढ़े में जा गिरता है । लिहाज़ा हमें चाहिये कि अच्छी त़रह़ रियाकारी की तबाहकारियों की मा'लूमात ह़ासिल करें ताकि इस मोह्लिक (या'नी हलाक करने वाले) मरज़ से नजात ह़ासिल करना आसान हो जाए । इस सिलसिले में दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 165 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**रियाकारी**" का मुत़ालआ़ इन्तिहाई मुफ़ीद है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! इस किताब में रियाकारी की ता'रीफ़, अस्बाब, अ़लामात, इस के भयानक नताइज और इस मरज़ के इ़लाज वग़ैरा बयान किये गए हैं, लिहाज़ा आप से मदनी इल्तिजा है कि ख़ुद भी इस का मुत़ालआ़ कीजिये और दूसरों को भी तरग़ीब दिलाइये । दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislami.net से इस किताब को रीड़ (या'नी पढ़ा) भी जा सकता है, डाउन लोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है ।

आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की माया नाज़ किताब "**नेकी की दा'वत**" ह़िस्सा अव्वल, सफ़ह़ा 73 से रियाकारी से मुतअ़ल्लिक़ चन्द मिसालें सुनते हैं ताकि पता चले कि रियाकारी हमारे आ'माल में किस त़रह़ छुपी होती है । बा'ज़ अवक़ात हमारी बातों से रियाकारी का इ़ज़्हार हो रहा होता है लेकिन न तो इस त़रफ़ हमारा धियान होता है और न ही उस से बचने का मदनी ज़ेह्न होता है । लिहाज़ा रियाकारी की इन मिसालों को सुन कर इस से बचने की कोशिश कीजिये, मगर ख़याल रहे कि रियाकारी

एक ऐसा अ़मल है, जिस का सारा दारो मदार निय्यत पर है, लिहाज़ा जो मिसालें पेश की जा रही हैं वोह अगर्चे रियाकारी ही की हैं लेकिन कई मक़ामात पर निय्यत के फ़र्क़ से अह़काम में तब्दीली हो जाती है । आइये ! अपनी इस्लाह़ की निय्यत से तवज्जोह के साथ सुनिये ।

रियाकारी की 19 मिसालें

﴾1﴿ फ़न्ने क़िराअत इस लिये सीखना कि लोग "**क़ारी साह़िब**" कहें । ﴾2﴿ क़ारी साह़िब का इजतिमाआ़त में ह़ाज़िरीन की मिक़्दार के मुत़ाबिक़ तज्वीद के क़वाइ़द की रिआ़यत और आवाज़ के उतार चढ़ाव में कमी बेशी करने से मक़्सूद ह़ाज़िरीन की ख़ुश्नूदी हो । ﴾3﴿ अपने लिये आ़जिज़ी के अल्फ़ाज़ मसलन फ़क़ीर, गुनहगार, नाकारा वग़ैरा इस लिये बोलना या लिखना कि लोग मुन्कसिरुल मिज़ाज समझें और आ़जिज़ी की ता'रीफ़ करें । ﴾4﴿ लोगों से इस लिये पुर तपाक त़रीक़े से मिलना कि मिलन्सार और बा अख़्लाक़ कहलाए । ﴾5﴿ दुआ़ वग़ैरा में सब के सामने रोना आ जाए तो इस लिये आंसू पोंछते रहना कि लोगों पर येह तअस्सुर क़ाइम हो कि येह रियाकारी से बचने के लिये जल्दी जल्दी आंसू पोंछ लेता है । ﴾6﴿ लोगों के दिलों में जगह बनाने के लिये इस त़रह़ के जुम्ले कहना : मुझे गुनाहों से बड़ा डर लगता है, मुझे बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ रहता है, हाए ! अन्धेरी क़ब्र में क्या होगा ! आह ! क़ियामत में ह़िसाब कैसे दूंगा ? वग़ैरा ﴾7﴿ लोगों पर अपनी दुन्या से ला तअ़ल्लुक़ी और पारसाई की छाप डालने के लिये कहना : मैं तो मालदारों और शख़्सय्यात से मिलने से बचता हूं । ﴾8﴿ किसी की मुसीबत का सुन कर हमदर्दाना जुम्ले कहना कि लोग रह़म दिल कहें । ﴾9﴿ हाथ में इस लिये तस्बीह़ रखना और नुमायां करना या लोगों के सामने इस लिये होंट हिला हिला कर या उन्हें आवाज़ पहुंचे इस त़रह़ दुरूदो अज़्कार पढ़ना कि नेक समझा जाए । ﴾10﴿ ख़ल्वत में (या'नी लोगों के सामने) खाते, पीते, उठते, बैठते वग़ैरा वग़ैरा मवाक़ेअ़ पर सुन्नतों का अच्छी त़रह़ ख़याल रखना जब कि अकेले में सुन्नतों का एहतिमाम न करना । ﴾11﴿ दा'वत में या दूसरों की

मौजूदगी में इस लिये कम खाना कि देखने वाले उसे मुत्तबिए़ सुन्नत (या'नी सुन्नत की पैरवी करने वाला) और क़लीलुल ग़िज़ा (या'नी कम खाने वाला) तसव्वुर करें । ﴾12﴿ किसी को अपने नेक काम बता कर येह कहना कि "आप किसी और को मत बताना" ताकि सामने वाला मुतअस्सिर हो कि बहुत मुख़्लिस शख़्स है कि किसी पर अपना नेक अ़मल ज़ाहिर नहीं करना चाहता । ﴾13﴿ रमज़ानुल मुबारक का इस लिये ए'तिकाफ़ करना कि मुफ़्त में सह़री और इफ़्तारी की तरकीब बन जाए । ﴾14﴿ अपने दीनी कारनामे इस लिये बयान करना कि सुनने वाले इसे दीन का बहुत बड़ा ख़ादिम तसव्वुर करें और इस की अ़ज़मतों के मो'तरिफ़ हों । ﴾15﴿ अपनी फ़ी सबीलिल्लाह इमामत या दीनी तद्रीस का इस लिये दूसरों से तज़किरा करना कि लोग इस से मुतअस्सिर हों, क़द्र की निगाह से देखें । ﴾16﴿ ख़रीदारी करते वक़्त या उज्रत पर किसी से कोई काम करवाते वक़्त अपने दीनी मन्सब मसलन दीनी त़ालिबे इल्म या ह़ाफ़िज़े कुरआन या इमामे मस्जिद या मुअज़्ज़िन या मुबल्लिग़ वग़ैरा होने का इस लिये इज़्हार करना कि मेरे साथ रिआ़यत की जाए या फिर पैसे ही न लिये जाएं । ﴾17﴿ किताब या रिसाला लिखते वक़्त इस निय्यत से इ़ब्रत अंगेज़ रिवायात व ख़ूब दिलचस्प ह़िकायात और उ़म्दा उ़म्दा मदनी फूल शामिल करना कि पढ़ने वाले दादो तह़्सीन देने पर मजबूर हो जाएं । ﴾18﴿ अपने ह़ज व उ़मरे की ता'दाद, तिलावते कुरआन की यौमिया मिक़्दार, र-जबुल मुरज्जब व शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के मुकम्मल और दीगर नफ़्ल रोज़ों, नवाफ़िल, दुरूद शरीफ़ की कसरत वग़ैरा का इस लिये इज़्हार करना कि वाह वाह हो और लोगों के दिलों में एह़तिराम पैदा हो । ﴾19﴿ दूसरों की मौजूदगी में इस लिये चुप चाप रहना या इशारे से या लिख कर गुफ़्तगू करना कि लोग सन्जीदा, ख़ामोश त़बीअ़त और ज़बान का कुफ़्ले मदीना लगाने वाला तसव्वुर करें, जब कि घर में और बे तकल्लुफ़ दोस्तों में ख़ूब क़ह्क़हे लगाता और शेरे बब्बर की त़रह़ दहाड़ता या'नी चीख़ता हो ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रियाकारों के लिये जहन्नमी वादी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा मिसालों को ज़ेह्न में रखते हुवे रियाकारी की ता'रीफ़ पर एक बार फिर नज़र डाल लीजिये कि "**अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के इलावा किसी और इरादे से इबादत करना रियाकारी कहलाता है ।**" गोया लोगों पर अपनी इबादत गुज़ारी की धाक बिठाना, अपनी ता'रीफ़, वाह वाह और इ़ज़्ज़त चाहना या उस नेक काम से सूट पीस या रक़म का लिफ़ाफ़ा या खाना या मिठाई या किसी क़िस्म के नज़राने का हुसूल मक़्सूद होना, येह सब रियाकारी की ही सूरतें हैं नीज़ पेश कर्दा मिसालों में "**हुब्बे जाह**" या'नी "**शोहरत व इ़ज़्ज़त की ख़्वाहिश करना**" भी मौजूद है । क्यूंकि रियाकारी का एक बहुत बड़ा सबब "**हुब्बे जाह**" भी है । इस से भी बचना बहुत ज़रूरी है । येह भी याद रखिये कि रियाकारी की येह तमाम मिसालें इस लिये बयान की गई हैं कि हम ख़ुद अपने आ'माल का मुह़ासबा कर लें । इन मिसालों को बयान करने का हरगिज़ येह मक़्सद नहीं कि हम इन मिसालों को बुन्याद बना कर किसी दूसरे को रियाकार कहते फिरें क्यूंकि रियाकारी का तअ़ल्लुक़ दिल से है और किसी के दिल के ह़ालात पर हर कोई मुत्त़लअ़ नहीं हो सकता । लिहाज़ा इन मिसालों पर क़ियास करते हुवे किसी मुसलमान पर बद गुमानी न की जाए क्यूंकि बद गुमानी ब ज़ाते ख़ुद ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है और इसी त़रह़ किसी के बारे में तजस्सुस या'नी गुनाह की तलाश करना, उस की पर्दा दरी या'नी ऐ़ब खोलना और उस में रियाकारी की अ़लामात तलाश करना ताकि उस को बदनाम किया जाए, येह भी ह़राम है । इन मिसालों को अ़र्ज़ करने का मक़्सद येह है कि हम अपनी नेकियों को ख़ुद टटोलें और ग़ौर करें कि कहीं हमारे किसी अ़मल में रिया छुपी हुई तो नहीं ? क्यूंकि रिया चियूंटी के चलने की आहट से भी ज़ियादा पोशीदा त़रीक़े से अ़मले ख़ैर में दाख़िल हो जाती है और उस अ़मल को तहो बाला कर के रख देती है और इस में मुब्तला होने की एक वज्ह येह भी है कि "**रिया**" में जो लज़्ज़त है वोह न उ़म्दा ग़िज़ाओं में है, न ही मालो

दौलत की कसरत में, इस से बचना बहुत बहुत बहुत ज़रूरी है कि येह "**लज़्ज़त**" जहन्नम में पहुंचाने वाली है। लिहाज़ा अगर अपने किसी नेक अ़मल में रिया का शक भी पाएं, तो तौबा करें और अपने आप को डराएं कि **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : बेशक जहन्नम में एक वादी है, जिस से जहन्नम रोज़ाना चार सौ मरतबा पनाह मांगता है, येह वादी उम्मते मुह़म्मदिया के उन रियाकारों के लिये तय्यार की गई है जो कुरआने पाक के ह़ाफ़िज़, ग़ैरुल्लाह के लिये सदक़ा करने वाले, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घर के ह़ाजी और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में निकलने वाले होंगे। (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير، ۱۲/ ۱۳۶، حدیث: ۱۲۸۰۳)

दौलते इख़्लास हम को दीजिये
कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 58)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अ़मल छोड़ने के बजाए इलाज इख़्तियार किया जाए

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रा ग़ौर कीजिये कि रियाकारी कैसा ख़त़रनाक अ़मल है कि दुन्या में होने वाली थोड़ी सी वाह वाह, झूटी इ़ज़्ज़त और दूसरों से चन्द सिक्कों के ह़ुसूल के लिये अपने आ'माल का चर्चा करना कल बरोज़े क़ियामत जहन्नम की उस हौलनाक वादी में दाख़िले का सबब बन सकता है जिस से ख़ुद जहन्नम भी रोज़ाना चार सौ बार पनाह मांगता है। इस लिये बेहतरी इसी में है कि लोगों के बजाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अ़मल किया जाए और अगर कोई शख़्स शैत़ान की बातों और **नफ़्से अम्मारा** की चालों में आ कर रियाकारी में मुब्तला हो जाए और येह समझ बैठे कि रिया से बचना तो बहुत मुश्किल है, मैं किस त़रह़ **नफ़्से अम्मारा** की चाल को नाकाम बनाऊं ? मैं किस त़रह़ शैत़ान के मज़बूत़ जाल को तोड़ कर बाहर आऊं ? और फिर बा'ज़ अवक़ात ऐसे अफ़राद इस ख़याल को अपने ज़ेह्न में बिठा लेते हैं कि जब हम रियाकारी के बिग़ैर नेक आ'माल नहीं कर सकते, तो ऐसे आ'माल करने का क्या फ़ाइदा ? यूं आहिस्ता आहिस्ता नेक आ'माल से

दूर होते जाते हैं और ख़ुश बख़्ती और सआ़दत मन्दी से मुंह मोड़ लेते हैं। ऐसे इस्लामी भाइयों की ख़िदमत में मदनी इल्तिजा है कि अगर अपना मुह़ासबा करते हुवे रियाकारी ज़ाहिर हो, तो उस का इ़लाज करें क्यूंकि किसी भी मरज़ को ला इ़लाज समझ कर उस से बे परवाही करना अ़क़्ल मन्दी नहीं बल्कि जो मरज़ जिस शिद्दत से बढ़े, उस के इ़लाज में भी उतना ही एहतिमाम करना चाहिये। चूंकि रियाकारी भी एक बातिनी बीमारी है, लिहाज़ा इस का इ़लाज करना ही मुनासिब है न कि इस को ला इ़लाज समझ कर छोड़ दिया जाए। याद रखिये ! अगर मख्खी नाक पर बैठ जाए तो मख्खी को उड़ाया जाता है, नाक नहीं काटी जाती। इस लिये रियाकारी के डर से नेक आ'माल को तर्क न किया जाए बल्कि रियाकारी से पीछा छुड़ाने की कोशिश की जाए। चुनान्चे,

रियाकारी का हुक्म

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان रियाकारी का हुक्म बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि रिया से इ़बादत नाजाइज़ नहीं हो जाती (या'नी ऐसा नहीं कि रियाकारी से नमाज़ पढ़ी तो उसे तर्के नमाज़ समझा जाए) बल्कि ना मक़्बूल होने का अन्देशा होता है, अगर रियाकार आख़िर में रिया से (सच्ची) तौबा करे, तो उस पर रिया की इ़बादत की क़ज़ा वाजिब नहीं बल्कि इस तौबा की बरकत से गुज़श्ता ना मक़्बूल रिया की इ़बादात भी क़बूल हो जाएंगी। मुत़लक़न रिया से ख़ाली होना बहुत मुश्किल है, कोई शख़्स रिया के अन्देशे से इ़बादात न छोड़े बल्कि रिया से बचने की दुआ़ करे। (मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 127)

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 105)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मजलिसे "मदनी मुज़ाकरा" का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रियाकारी और इस त़रह़ के दीगर क़ल्बी अमराज़ से नजात का एक बेहतरीन ज़रीआ़ मदनी मुज़ाकरों में शिर्कत करना भी है, जहां वक़्तन फ़-वक़्तन हमारी तवज्जोह उन क़ल्बी व रूह़ानी बीमारियों की त़रफ़ दिलाई जाती है और हमें उन से बचने के त़रीक़े भी बताए जाते हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **"इल्म बे शुमार ख़ज़ानों का मजमूआ़ है, जिन के ह़ुसूल का ज़रीआ़ सुवाल है।"** के क़ौल को अ़मली जामा पहनाते हुवे सुवाल व जवाब का एक सिलसिला शुरूअ़ किया, जिसे दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में **"मदनी मुज़ाकरा"** कहा जाता है। कसीर इस्लामी भाई मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़तो त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब्ब, अख़्लाकियात व इस्लामी मा'लूमात, मुआ़शी व मुआ़शरती व तन्ज़ीमी मुआ़मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ क़िस्म के सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ व इ़श्क़े रसूल में डूबे हुवे जवाबात से नवाज़ते हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के 103 शो'बाजात में से एक शो'बा **"मजलिसे मदनी मुज़ाकरा"** भी है जो कि आप के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इ़ल्मो ह़िक्मत से भरपूर मदनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसलमानों को महकाने के लिये उन मदनी मुज़ाकरों को तह़रीरी रिसाले और ऑडियो (Audio), वीडियो (Video), सीडीज़ (CDs) की सूरत में पेश करने की सआ़दत ह़ासिल करता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! अब तक मजलिसे मदनी मुज़ाकरा कई ऑडियो केसेटें और वीडियो सीडीज़ और तह़रीरी मदनी मुज़ाकरे पेश करने की सआ़दत भी ह़ासिल कर चुकी है और मज़ीद के लिये कोशिशें जारी हैं।

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा"

आप से भी मदनी इल्तिजा है कि न सिर्फ़ ख़ुद बल्कि दूसरे इस्लामी भाइयों को भी शिर्कत की दा'वत देते रहें। मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत करना ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से हफ़्तावार एक मदनी काम भी है। याद रखिये ! वा'ज़ो नसीह़त के लिये इजतिमाआ़त मुन्अ़क़िद कर के उन में लोगों की इस्लाह़ की निय्यत से इ़ल्मो ह़िक्मत भरे मदनी फूल लुटाना, बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن का त़रीक़ा रहा है।

मन्क़ूल है कि हमारे पीराने पीर, पीरे दस्त्गीर, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़्युद्दीन सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने 521 हि. से 561 हि. तक चालीस साल मख़्लूक़ को वा'ज़ो नसीह़त फ़रमाई और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं : मेरे हाथ पर पांच सौ से ज़ाइद ग़ैर मुस्लिमों ने इस्लाम क़बूल किया और एक लाख (1,00,000) से ज़ियादा डाकू, चोर, फ़ुस्साक़ व फ़ुज्जार, फ़सादी और बिदअ़ती लोगों ने तौबा की।

(बेह्जतुल असरार, स. 184)

सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़ैज़ाने करम से शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी मदनी मुज़ाकरों के ज़रीए़ वा'ज़ो नसीह़त के मदनी फूल लुटाते रहते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मदनी मुज़ाकरे न सिर्फ़ अहम मा'लूमात ह़ासिल करने का ज़रीआ़ हैं बल्कि इन की बरकत से बहुत से लोगों की इस्लाह़ भी होती है और कई बद अ़क़ीदा और बे अ़मल लोग अपने बुरे अ़क़ाइदो आ'माल से तौबा कर के सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा, बा अ़मल मुसलमान बन जाते हैं। आइये इस ज़िम्न में एक मदनी बहार सुनते हैं।

बद अ़क़ीदा लोगों से नजात मिल गई

बाबुल इस्लाम (सिन्ध, पाकिस्तान) के शहर शहदादपूर में मुक़ीम इस्लामी भाई के तह़रीरी बयान का ख़ुलासा है कि दा'वते इस्लामी के पाकीज़ा मदनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल अ़क़ाइद के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात न होने

के बाइ़स मेरी ज़िन्दगी का इब्तिदाई ह़िस्सा बद अ़क़ीदा लोगों की सोह़बत में गुज़रा था, जिस के सबब मेरे अ़क़ाइद भी बिगड़े हुवे थे। ख़ुश क़िस्मती से रमज़ानुल मुबारक के महीने में दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले आख़िरी अ़शरे के सुन्नतों भरे इजतिमाई ए'तिकाफ़ में शिर्कत की सआ़दत नसीब हो गई। ए'तिकाफ़ में होने वाले सुन्नतों भरे बयानात और बिल ख़ुसूस शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **"मदनी मुज़ाकरों"** ने मेरे दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा की शम्अ़ रौशन कर दी, मेरे दिल में मौजूद तमाम शुकूको शुब्हात दूर हो गए, मैं ने अपने तमाम बुरे अ़क़ाइद और बुरे दोस्तों की सोह़बत से तौबा की और दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! ता दमे तह़रीर दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (बाबुल मदीना कराची) में फ़ैज़ाने फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स कर रहा हूं और अपने अ़लाक़े में ह़ल्क़ा सत़ह़ पर मदनी इन्आ़मात का ज़िम्मेदार होने की ह़ैसिय्यत से मदनी कामों की तरक़्क़ी व उ़रूज के लिये कोशां हूं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रियाकारी की अ़लामात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ हर मरज़ की कुछ अ़लामतें होती हैं, जिन से उस मरज़ की पहचान होती है, इसी त़रह़ मरज़े रिया की भी कुछ अ़लामतें हैं। आइये ! इस की अ़लामात सुनते हैं ताकि इस मरज़ की अच्छी त़रह़ तश्ख़ीस हो जाए और इ़लाज करने में आसानी रहे। चुनान्चे,

अमीरुल मोमिनीन, मौलाए काइनात, ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इरशाद फ़रमाया : रियाकार की तीन अ़लामतें हैं : ﴾1﴿ तन्हाई में हो तो अ़मल में सुस्ती करे और लोगों के सामने हो तो चुस्ती दिखाए ﴾2﴿ ता'रीफ़ की जाए तो अ़मल में इज़ाफ़ा कर दे और ﴾3﴿ मज़म्मत की जाए तो अ़मल में कमी कर दे। (नेकी की दा'वत, स. 80)

अब हमें दियानत दारी के साथ अपनी ह़ालत पर ग़ौर करना चाहिये कि इबादत के मुआ़मले में कहीं हम तन्हाई में सुस्ती और लोगों के सामने चुस्ती का मुज़ाहरा तो नहीं करते ? कहीं हम नेकी करने के बा'द उस का लोगों के सामने बिला ज़रूरत इज़्हार तो नहीं कर दिया करते ? फिर अगर कोई इस पर हमारी ता'रीफ़ कर दे तो "**फूल कर**" अ़मल में इज़ाफ़ा तो नहीं कर देते ? और ता'रीफ़ न होने की सूरत में कहीं ग़मगीन तो नहीं हो जाते ? और उस अ़मल में कमी तो नहीं आ जाती ? कहीं ऐसा तो नहीं कि हमें लोगों के सामने नेकी करने में बड़ी लज़्ज़त मिलती हो मगर तन्हाई में मज़ा बिल्कुल न आता हो ? कहीं हम अपने बारे में सियाह कार, गुनहगार, मुजरिम, फ़क़ीर, ह़क़ीर और आ़जिज़ व मिस्कीन जैसे अल्फ़ाज़ लोगों के सामने कह कर उन्हें मुतअस्सिर करने की कोशिश तो नहीं करते ? हम कहीं मज़हबी हुल्ये से फ़ाइदा उठाते हुवे अपने से मुतअस्सिर होने वाले दुकान दारों से इस लिये तो सौदा नहीं लेते कि वोह हमें मुफ़्त या सस्ते दामों में दे ? अगर इन सुवालात के जवाबात हां में आएं तो फ़ौरन से पहले तौबा कर लीजिये और हुसूले इख़्लास की कोशिशों में लग जाइये । कहीं ऐसा न हो कि तौबा से पहले मौत आ जाए और रियाकारी के सबब दोज़ख़ में डाल दिया जाए । (नेकी की दा'वत, स. 82)

अ़ता कर दे इख़्लास की मुझ को ने'मत न नज़दीक आए रिया या इलाही
मेरी ज़िन्दगी बस तेरी बन्दगी में ही ऐ काश गुज़रे सदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 106)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मरज़े रिया का इलाज कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम अपने दिल में मरज़े रिया की अ़लामात महसूस करें, तो बा'दे तौबा इलाज में देर नहीं करनी चाहिये । जब हम अपने बातिन को पाकीज़ा करने की कोशिश करेंगे, तो اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ हमारा ज़ाहिर भी सुथरा हो जाएगा ।

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "जो अपने बातिन की इस्लाह़ करेगा, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के ज़ाहिर की (भी) इस्लाह़ फ़रमा देगा।"

(اَلْجَامِعُ الصَّغِيرِ لِلسُّيُوطِی ص۵۰۸، حدیث: ۸۳۳۹, नेकी की दा'वत, स. 83)

आइये ! रियाकारी की तबाहकारियों से पीछा छुड़ाने के लिये इस के चन्द इ़लाज सुनते हैं।

﴾1﴿...**दुआ़ के ज़रीए़ मदद त़लब कीजिये** !

रियाकारी का सब से पहला इ़लाज येह है कि ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में यूं दुआ़ कीजिये : या रब्बे मुस्त़फ़ा ! मुझे रियाकारी की बीमारी से शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा, मेरी ख़ाली झोली इख़्लास की दौलत से भर दे। मेरा सामना उस दुश्मन (या'नी शैत़ान) से है, जो मुझे देखता है मगर ख़ुद दिखाई नहीं देता लेकिन तू उस को मुलाह़ज़ा फ़रमा रहा है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे उस दुश्मन के मक्रो फ़रेब से बचा ले, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं इस बात से तेरी पनाह चाहता हूं कि लोगों की नज़र में तो मेरा ह़ाल बहुत अच्छा हो, वोह मुझे नेक और परहेज़गार समझते रहें मगर तेरे दरबार में सज़ा का ह़क़दार ठहरूं।

(नेकी की दा'वत, स. 84)

ह़ुब्बे दुन्या से तू बचा या रब — आ़शिक़े मुस्त़फ़ा बना या रब
ह़िर्से दुन्या निकाल दे दिल से — बस रहूं त़ालिबे रिज़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 79, 81)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾2﴿...**रियाकारी के नुक़्सानात पेशे नज़र रखिये** !

रियाकारी का दूसरा इ़लाज येह है कि हम इस की आफ़तों को पेशे नज़र रखें क्यूंकि आदमी का दिल किसी चीज़ को उस वक़्त तक ही पसन्द करता है जब तक वोह उसे नफ़्अ़ बख़्श और लज़ीज़ नज़र आती है मगर जब उसे उस शै के नुक़्सान देह होने का पता चलता है, तो वोह उस से बचता है। मसलन एक इस्लामी भाई शहद को उस की लज़्ज़त और मिठास की वज्ह से बहुत पसन्द करता है लेकिन अगर उसे येह बता दिया जाए कि येह शहद जिसे

तुम पीने जा रहे हो, इस में ज़हर मिला हुवा है, तो वोह उस में मौजूद मिठास को नहीं, ज़हर को देखेगा और उसे हरगिज़ हरगिज़ नहीं पीयेगा । इसी त़रह़ लोगों पर अपना नेक अ़मल ज़ाहिर करने और उन की त़रफ़ से वाह वाह होने में यक़ीनन नफ़्स को बड़ी लज़्ज़त मिलती है लेकिन अगर हम इस लज़्ज़त के बजाए रियाकारी के नुक़्सानात ज़ेह्न में रखें तो इस से बचना हमारे लिये क़दरे आसान हो जाएगा और हमारा येह ज़ेह्न बनेगा कि लोगों की ऐसी वाह वाह हमारे किसी काम की नहीं, जिस की वज्ह से हमारी मेह़नत और किये कराए पर पानी फिर जाए । (नेकी की दा'वत, स. 84, मुलख़्ख़सन)

﴾3﴿...**रिया के अस्बाब का ख़ातिमा कीजिये** !

मरज़े रिया का तीसरा इलाज इस मरज़ के अस्बाब का ख़ातिमा है क्यूंकि हर बीमारी का कोई न कोई सबब होता है, अगर सबब मिटा दिया जाए तो बीमारी भी रुख़्सत हो जाती है। इसी त़रह़ रियाकारी के भी बुन्यादी त़ौर पर 3 अस्बाब हैं, अगर इन तीनों से जान छुड़ा ली जाए, तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ रियाकारी से बचना बेह़द आसान हो जाएगा । वोह 3 अस्बाब येह हैं : (1) हुब्बे जाह या'नी शोहरत की ख़्वाहिश (2) मज़म्मत का ख़ौफ़ और (3) मालो दौलत की ह़िर्स । (नेकी की दा'वत, स. 86)

पीछा मेरा दुन्या की मह़ब्बत से छुड़ा दे
या रब मुझे दीवाना मदीने का बना दे

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 112)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿...**अपने आ'माल में इख़्लास पैदा कीजिये** !

रियाकारी का चौथा इलाज इख़्लास है । चुनान्चे, सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये इख़्लास के साथ अ़मल करो क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वोही आ'माल क़बूल फ़रमाता है जो उस के लिये इख़्लास के साथ किये जाते हैं और येह मत कहा करो कि मैं ने येह काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रिश्तेदारी की वज्ह से किया है । (دارقطنی ۱/۷۳، حدیث ۱۳۰ नेकी की दा'वत, स. 89)

मुख़्लिस किसे कहते हैं ?

किसी बुज़ुर्ग से पूछा गया कि **मुख़्लिस कौन है** ? तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : मुख़्लिस वोह है जो अपनी नेकियां इस त़रह़ छुपाए, जिस त़रह़ अपनी बुराइयां छुपाता है । एक और बुज़ुर्ग رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से अ़र्ज़ की गई : इख़्लास की इन्तिहा क्या है ? तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : वोह येह कि तुम लोगों से ता'रीफ़ की ख़्वाहिश न करो । (नेकी की दा'वत, स. 91)

यक्सां हों मद्ह़ो ज़म, मुझ को, कर दो करम
कुछ ख़ुशी हो न ग़म ताजदारे ह़रम

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 249)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿5﴾...**निय्यत की ह़िफ़ाज़त कीजिये** !

रियाकारी का पांचवां इ़लाज येह है कि निय्यत की ह़िफ़ाज़त कीजिये । सरवरे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है और हर शख़्स के लिये वोही है जिस की वोह निय्यत करे** । (بخاری، کتاب بدء الوحی، باب کیف کان بدء الوحی...الخ، ۱/۵، حدیث:۱)

इस लिये अ़मल शुरूअ़ करने से पहले येह सोचना चाहिये कि मैं जो अ़मल करने जा रहा हूं, इस का मक़्सद क्या है ? अगर दिखावे की बू पाएं तो फ़ौरन अपनी निय्यत की इस्लाह़ फ़रमाएं और येह ज़ेह्न बनाएं कि सिर्फ़ वोही अ़मल मक़्बूल होगा, जो रिज़ाए इलाही के लिये किया जाएगा, अगर मैं ने लोगों को दिखाने या सुनाने की ख़ातिर कोई नेकी की, तो क़बूल होना तो दूर की बात, जहन्नम के अ़ज़ाब का ह़क़दार हो जाऊंगा ! शैत़ान अगर्चे लाख रुकावट डाले मगर रिया और दिखावे की निय्यत से बचते हुवे, अच्छी निय्यत करनी ही होगी । (नेकी की दा'वत, स. 92, बित्तग़्य्युर क़लील)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾6﴿...**दौराने इबादत शैत़ानी वस्वसों से बचिये** !

मरज़े रिया का छटा इलाज येह है कि इबादत के दौरान भी शैत़ानी वस्वसों से बचने की कोशिश करें क्यूंकि शैत़ान मुसल्सल हमारे दिल में वस्वसे डालने की कोशिश में लगा रहता है, लिहाज़ा जिस त़रह़ नेक अ़मल से पहले दिल में इख़्लास होना ज़रूरी है, इसी त़रह़ हर नेकी व इबादत के दौरान उसे क़ाइम रखना भी ज़रूरी है। इबादत के दौरान शैत़ानी वस्वसों से छुटकारे के लिये 3 चीज़ें ज़रूरी हैं : (1) उस वस्वसे को पहचानना (2) उसे ना पसन्द करना और (3) उसे क़बूल करने से इन्कार करना। मसलन किसी ने अच्छी अच्छी निय्यतें कर के नमाज़े तहज्जुद शुरूअ़ की, अब दौराने नमाज़ शैत़ान ने दिल में रियाकारी का वस्वसा डाला कि जब लोगों को मेरी तहज्जुद गुज़ारी का पता चलेगा तो वोह मुझ से बहुत मुतअस्सिर होंगे, अब इस वस्वसे को फ़ौरी त़ौर पर पहचानना कि येह शैत़ान की त़रफ़ से है, उस नमाज़ी के लिये बहुत ज़रूरी है। फिर उसे ना पसन्द भी जाने कि ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये किये जाने वाले अ़मल से मख़्लूक़ को मुतअस्सिर करने की कोशिश करना ग़ज़बे इलाही को दा'वत देने के मु-तरादिफ़ है, फिर उस वस्वसे से अपनी तवज्जोह हटा ले। अगर्चे येह काम बहुत मुश्किल सही मगर ना मुमकिन नहीं, आग़ाज़ में येह काम बेह़द मुश्किल मह़सूस होता है लेकिन जब तकल्लुफ़ कर के एक अ़र्से तक इस पर सब्र करे, तो **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम और हुस्ने तौफ़ीक़ से येह काम आसान हो जाता है, हमारा काम कोशिश करना है, काम्याबी देने वाली ज़ात रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ की है। (नेकी की दा'वत, स. 94)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾7﴿...**नेकियां छुपाइये** !

मरज़े रिया का सातवां इलाज "**नेकियां छुपाना**" है। ऐ काश ! हम अपनी नेकियों को भी उसी त़रह़ छुपाएं, जिस त़रह़ अपने गुनाहों को छुपाते हैं और बस इसी को काफ़ी समझें कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी नेकियां जानता है। बिल ख़ुसूस पोशीदा नेकी करने के बा'द नफ़्स की ख़ूब निगरानी करें क्यूंकि

हो सकता है कि नफ़्स में इस इ़बादत को ज़ाहिर करने की हि़र्स जोश मारे और यूं कहे कि अगर तेरे इस अ़ज़ीम अ़मल पर लोगों को इत्तिलाअ़ हो जाए तो वोह भी इ़बादात में मश्ग़ूल हो जाएं। तू अपने अ़मल को छुपाने पर कैसे राज़ी हो गया ? इस त़रह़ तो लोगों को तेरे मक़ामो मर्तबे का इ़ल्म नहीं होगा। चुनान्चे, वोह तेरी क़द्रो मन्ज़िलत का इन्कार करेंगे और तेरी पैरवी से महरूम रह जाएंगे, ऐसे में तू लोगों का मुक़्तदा (या'नी पेश्वा और रहनुमा) कैसे बन सकेगा ? नेकी की दा'वत कैसे आ़म होगी ? वग़ैरा। ऐसी सूरत में **अल्लाह** तआ़ला से साबित क़दमी की दुआ़ करनी चाहिये और अपने अ़मल के मुक़ाबले में आख़िरत की बहुत बड़ी मिल्किय्यत या'नी जन्नत की ने'मतों को याद कीजिये, जो हमेशा रहने वाली हैं। जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत के ज़रीए़ उस के बन्दों से अज्र का त़ालिब होता है, उस पर **अल्लाह** तआ़ला का ग़ज़ब नाज़िल होता है और येह भी हो सकता है कि दूसरों के सामने अ़मल को ज़ाहिर करने की सूरत में वोह लोगों के नज़दीक तो महबूब हो जाए लेकिन **अल्लाह** तआ़ला के नज़दीक उस का मक़ाम गिर जाए। फिर नफ़्स को इस त़रह़ भी समझाए कि मैं किस त़रह़ इस अ़मल को लोगों की ता'रीफ़ के बदले बेच दूं, वोह तो ख़ुद आ़जिज़ हैं, न तो वोह मुझे रिज़्क़ दे सकते हैं और न ही मौत व ह़यात के मालिक हैं। (नेकी की दा'वत, स, 96) जब इस त़रह़ की मदनी सोच अपनाएंगे, तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस मरज़ से छुटाकारा पाने में आसानी होगी।

नेकियां छुप कर करें ऐसी हिदायत दे ख़ुदा
हम को पोशीदा इ़बादत की तू लज़्ज़त दे ख़ुदा

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾8﴿...**मदनी माह़ोल अपनाएं** !

मरज़े रिया का आठवां इ़लाज येह है कि ऐसी अच्छी सोह़बत इख़्तियार की जाए जिस की वज्ह से उ़म्दा अख़्लाक मुयस्सार आएं, अच्छी सोह़बत को पाने के लिये आप को परेशान होने की क़त़्अ़न ज़रूरत नहीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ !

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी से वाबस्ता होने की बरकत से आ'ला अख़्लाक़ी औसाफ़ ग़ैर मह़सूस त़ौर पर किरदार का हि़स्सा बनते चले जाएंगे । हर इस्लामी भाई को चाहिये कि वोह अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत करे और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करे । इन मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की बरकत से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपने साबिक़ा त़र्ज़े ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मिलेगा और दिल हुस्ने आ़क़िबत के लिये बेचैन हो जाएगा, जिस के नतीजे में इर्तिकाबे गुनाह की कसरत पर नदामत मह़सूस होगी और तौबा की तौफ़ीक़ मिलेगी । आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में मुसल्सल सफ़र करने के नतीजे में ज़बान पर फ़ोह़्श कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह दुरूदे पाक जारी हो जाएगा, येह तिलावते कुरआन, ह़म्दे इलाही عَزَّوَجَلَّ और ना'ते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दी बन जाएगी, ग़ुस्से की आ़दत रुख़्सत हो जाएगी और उस की जगह नर्मी ले लेगी, बे सब्री की आ़दत तर्क कर के साबिरो शाकिर रहना नसीब होगा, तकब्बुर से जान छूट जाएगी और एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा मिलेगा, दुन्यावी मालो दौलत की लालच से पीछा छूटेगा और नेकियों की ह़िर्स मिलेगी । अल ग़रज़ ! बार बार राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले की ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस्लामी बहनों को भी चाहिये कि अपने शहर में होने वाले इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत करें ।

दुआ़ है येह तुझ से, दिल ऐसा लगा दे — न छूटे कभी भी ख़ुदा मदनी माह़ोल
हमें आ़लिमों और बुज़ुर्गों के आदाब — सिखाता है हर दम सदा मदनी माह़ोल
यक़ीनन मुक़द्दर का वोह है सिकन्दर — जिसे ख़ैर से मिल गया मदनी माह़ोल
तू आ बे नमाज़ी, है देता नमाज़ी — ख़ुदा के करम से बना मदनी माह़ोल
गर आए शराबी मिटे हर ख़राबी — चढ़ाएगा ऐसा नशा मदनी माह़ोल
ऐ बीमारे इ़स्यां तू आ जा यहां पर — गुनाहों की देगा दवा मदनी माह़ोल

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज के बयान में हम ने रियाकारी के बारे में सुना कि

- जो ख़ुश नसीब लोग अपने अ़मल में रियाकारी करने से बचते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ बद दियानती नहीं करते, वोह तो कल बरोज़े क़ियामत नजात ह़ासिल करने में कामयाब हो जाएं मगर बद क़िस्मती से जो बद नसीब लोग रियाकारी कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ बद दियानती करते हैं, ऐसे रियाकारों के आ'माल बरबाद हो जाएं ।
- उन्हें रियाकारी के त़ौर पर किये गए नेक आ'माल का अज्रो सवाब नहीं दिया जाए ।
- उन्हें बदकार, धोकेबाज़, काफ़िर और ख़सारा पाने वाला कह कर पुकारा जाएगा । ❖ उन से कहा जाएगा कि अपने आ'माल का बदला उन्हीं से मांगो जिन के लिये अ़मल किया करते थे ।
- अह़ादीसे मुबारका की रौशनी में रियाकारों की मज़ीद बद नसीबियां येह भी बयान की गई हैं कि ❖ जन्नत तो जन्नत, पांच सौ बरस की मुसाफ़त से सूंघी जाने वाली जन्नत की ख़ुश्बू भी उन्हें नसीब न होगी ❖ बल्कि उन्हें अ़ज़ाबे इलाही में गिरिफ़्तार कर दिया जाएगा । लिहाज़ा हमें चाहिये कि अपने आ'माल का जाइज़ा लेते हुवे उन्हें रियाकारी की दीमक से बचाएं वरना कहीं ऐसा न हो कि हम उख़रवी नजात के लिये अपने जिन नेक आ'माल से उम्मीद लगाए बैठे हों वोह रियाकारी की वज्ह से बरबाद हो जाएं और हम क़ियामत के दिन बिल्कुल ख़ाली हाथ रह जाएं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें रियाकारी से बचाए और इख़्लास की दौलत से माला माल फ़रमाए । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत

निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مِشْکاۃُ الْمَصابِیح، ج۱ص۵۵حدیث ۱۷۵ دارالکتب العلمیۃ بیروت)

सुन्नतें आ़म करें दीन का हम काम करें
नेक हो जाएं मुसलमान मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जूते पहनने के मदनी फूल

❖ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जूते ब कसरत इस्ति'माल करो कि आदमी जब तक जूते पहने होता है गोया वोह सुवार होता है (या'नी कम थकता है)। (مُسلِم ، کتاب اللباس،باب استحباب لبس النعال...الخ،ص۱۱۶۱ حدیث:۲۰۹۶)

❖ जूते पहनने से पहले झाड़ लीजिये ताकि कीड़ा या कंकर वग़ैरा हो तो निकल जाए। ❖ पहले सीधा जूता पहनिये, फिर उल्टा और उतारते वक़्त पहले उल्टा जूता उतारिये, फिर सीधा। ❖ मर्द, मर्दाना और औ़रत ज़नाना जूता इस्ति'माल करे। ❖ सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : औ़रतों को मर्दाना जूता नहीं पहनना चाहिये बल्कि वोह तमाम बातें जिन में मर्दों और औ़रतों का इम्तियाज़ होता है उन में हर एक को दूसरे की वज़्अ़ इख़्तियार करने (या'नी नक़्क़ाली करने) से मुमानअ़त है, न मर्द औ़रत की वज़्अ़ (या'नी त़र्ज़) इख़्तियार करे, न औ़रत मर्द की। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, 3 / 422) ❖ जब बैठें, तो जूते उतार लीजिये कि इस से क़दम आराम पाते हैं। ❖ (तंगदस्ती का एक सबब येह भी है कि) औंधे जूते को देखना और उस को सीधा न करना, लिहाज़ा इस्ति'माली जूता उल्टा पड़ा हो तो सीधी कर दीजिये।

ख़ूब होगा सवाब और टलेगा अ़ज़ाब *पाओगे बख़्शिशें, क़ाफ़िले में चलो*
दिल पे गर ज़ंग हो, सारा घर तंग हो *दाग़ सारे धुलें, क़ाफ़िले में चलो*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 672)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "जो मुझ पर शबे जुमुआ़ और जुमुआ़ के रोज़ सौ बार दुरूद शरीफ़ पढ़े, **अल्लाह** तआ़ला उस की सौ ह़ाजतें पूरी फ़रमाएगा, सत्तर आख़िरत की और तीस दुन्या की।" (جامع الاحادیث للسیوطی، ۳/ ۷۵، حدیث: ۷۳۷۷)

ज़ाते वाला पे बार बार दुरूद बार बार और बे शुमार दुरूद
रूए अन्वर पे नूर बार सलाम ज़ुल्फ़े अत़हर पे मुश्कबार दुरूद

(ज़ौक़े ना'त, स. 86)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيْر لِلطَّبَرَانِی ج۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मरते दम भी नेकियां कमाने की हिर्स

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 413 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**उ़यूनुल ह़िकायात**" जिल्द 2, सफ़हा 79 पर एक ह़िकायत नक़्ल है :

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुह़म्मद बिन ज़ियाद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मन्क़ूल है, फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अ़त्तार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को येह फ़रमाते हुवे सुना : जब ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इन्तिक़ाल हुवा तो मैं और मेरे कुछ रुफ़क़ा वहां मौजूद थे, हम ने देखा कि इन्तिक़ाल से कुछ देर क़ब्ल कमज़ोरी की वज्ह से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बैठ कर नमाज़ पढ़ रहे थे । आप के दोनों पाउं सूजे हुवे थे । जब रुकूअ़ व सुजूद करते तो एक पाउं मोड़ लेते, जिस की वज्ह से बहुत तक्लीफ़ और परेशानी होती । दोस्तों ने येह ह़ालत देखी तो कहा : ऐ अबू क़ासिम ! येह क्या है ? आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पाउं मुतवर्रम (या'नी सूजे हुवे) क्यूं हैं ? फ़रमाया : "**अल्लाहु अकबर**, येह तो ने'मत है ।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद ह़रीरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कहा : "ऐ अबू क़ासिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ! अगर आप लेट जाएं तो क्या ह़रज है ?" फ़रमाया : "अभी वक़्त है, जिस में कुछ नेकियां कर

ली जाएं, इस के बा'द कहां मौक़अ़ मिलेगा ।" फिर **अल्लाहु अकबर** कहा और आप की रूह़ इस दारे फ़ानी से आ़लमे बाला की त़रफ़ परवाज़ कर गई । येह भी मन्क़ूल है कि जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से कहा गया : हुज़ूर ! अपनी जान पर कुछ नर्मी कीजिये, तो फ़रमाया : अब मेरा नामए आ'माल बन्द किया जा रहा है, इस वक़्त नेक आ'माल का मुझ से ज़ियादा कौन ह़ाजत मन्द होगा । (उ़यूनुल ह़िकायात, जिल्द 2, स. 79)

मेरी ज़िन्दगी बस तेरी बन्दगी में
ही ऐ काश ! गुज़रे सदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 106)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़िकायत से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن नेकियां कमाने में किस क़दर ह़रीस थे कि जां कनी का वक़्त है, कमज़ोरी और नक़ाहत की वज्ह से खड़े हो कर नमाज़ अदा करना मुमकिन नहीं है, कसरते इ़बादत के सबब पाउं सूजे हुवे हैं, तक्लीफ़ की शिद्दत है, इन तमाम आ'ज़ार के बा वुजूद भी ख़्वाहिश येही है कि मज़ीद कुछ नेकियां कर ली जाएं । याद रहे कि ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इब्तिदाअन आईना की तिजारत करते थे, उस दौरान भी आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का मा'मूल था कि जब अपनी दुकान पर तशरीफ़ ले जाते तो पर्दा गिरा कर चार सौ रक्अ़त नमाज़े नफ़्ल अदा फ़रमाते, एक मुद्दत तक आप ने इस अ़मल को जारी रखा । फिर आप दुकान छोड़ कर ह़ज़रते सिर्री सक़त़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और उन के मकान की एक कोठड़ी में ख़ल्वत गुज़ीं हो कर अपने दिल की पास्बानी शुरूअ़ कर दी । इस त़रह़ आप ने 40 साल का त़वील अ़र्सा गुज़ारा । तीस साल तक आप का मा'मूल था कि इ़शा की नमाज़ के बा'द खड़े हो कर सुब्ह़ तक **अल्लाह**, **अल्लाह** कहा करते और उसी वुज़ू से सुब्ह़ की नमाज़ अदा करते । आप ख़ुद ही इरशाद फ़रमाते हैं कि बीस बरस तक मुझ से तक्बीरे ऊला फ़ौत नहीं हुई ।

(शर्ह़े शजरए क़ादिरिय्या, रज़विय्या, अ़त़्तारिय्या, स. 73, मुलख़्ख़सन)

हमारे अस्लाफ़ और हम !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे अस्लाफ़ का त़र्ज़े ज़िन्दगी किस क़दर प्यारा था कि दिन भर रिज़्क़े ह़लाल के लिये तिजारत करते और रातें ज़िक्रो इबादत में गुज़ारा करते और हम अपनी जिन्दगियां न जाने किन किन फ़ुज़ूल कामों में बरबाद कर रहे हैं, हमारे अस्लाफ़ आख़िरी दम तक नेकियां कमाने की धुन में मगन रहते, जब कि हम में से ऐसे भी हैं जो अपनी सारी ज़िन्दगी ग़फ़्लत में गुज़ार कर बुढ़ापे में भी नेकियों की त़रफ़ माइल नहीं होते, हमारे अस्लाफ़ तो नमाज़ों की ऐसी पाबन्दी फ़रमाते कि सालहा साल तक्बीरे ऊला फ़ौत न होती जब कि हम महीनों मसाजिद का मुंह नहीं देखते, बा'ज़ ईद की नमाज़ के लिये साल में एक बार ही निहायत एहतिमाम के साथ मस्जिद का रुख़ कर तो लेते हैं लेकिन बा'ज़ इस सआ़दत से भी महरूम नज़र आते हैं । हमारे अस्लाफ़ प्यारे आक़ा, ह़बीबे किब्रिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के दीवाने थे, जब कि हम फ़ैशन के मतवाले, दुन्या की रंगीनियों के मस्ताने हैं, हमारे अस्लाफ़ न सिर्फ़ ख़ुद नेकियां करते बल्कि दूसरों तक भी नेकी की दा'वत पहुंचाते, जब कि हम न सिर्फ़ ख़ुद गुनाहों में मश्ग़ूल रहते हैं बल्कि दूसरों को भी गुनाहों के मवाक़ेअ़ फ़राहम करते हैं, हमारे अस्लाफ़ इस्लाम की सर बुलन्दी की ख़ातिर अपनी जानो माल, अहलो इ़याल की क़ुरबानी दे कर राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करते, जब कि हम माल की मह़ब्बत में ह़राम व नाजाइज़ ज़राएअ़ इख़्तियार कर के अपनी आख़िरत बरबाद कर रहे हैं । अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! वोह इस्लाम जो हमें सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए किराम की बे शुमार क़ुरबानियों के बा'द नसीब हुवा है, आज हमें उस की तरक़्क़ी व इशाअ़त की बिल्कुल फ़िक्र नहीं रही । याद रखिये ! अ़न क़रीब हमें भी मरना है, अन्धेरी क़ब्र में उतरना है और अपनी करनी का फल भुगतना है । लिहाज़ा आज मुयस्सर आने वाली इन चन्द सांसों को ग़नीमत जानते हुवे ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो जाइये, नेकियां करने, गुनाहों से बचने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, इ़ल्मे दीन सीखने के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये

और दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ व मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत को अपना मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से ढेरों नेकियां करने के कसीर मवाक़ेअ़ मुयस्सर आएंगे।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिर्स की ता'रीफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी चीज़ से जी न भरने और हमेशा ज़ियादती की ख़्वाहिश रखने को हिर्स कहते हैं, जब कि हिर्स रखने वाले को "**हरीस**" कहते हैं। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 7, स. 86, मुलख़्ख़सन) जैसे कसीर माल की ख़्वाहिश करना, येह जज़्बा व ख़्वाहिश हिर्स है, जब कि वोह शख़्स जो इस जज़्बे का शिकार हो, वोह हरीस कहलाएगा।

उ़मूमन येही समझा जाता है कि हिर्स का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ मालो दौलत के साथ होता है, हालांकि ऐसा नहीं है क्यूंकि हिर्स किसी भी शै की मज़ीद ख़्वाहिश करने का नाम है, अब वोह चीज़ कुछ भी हो सकती है ! अगर किसी के दिल में मालो दौलत की मज़ीद ख़्वाहिश हो, तो वोह "**माल का हरीस**" कहलाएगा और अगर किसी को भूक से ज़ियादा खाने की ख़्वाहिश हो, तो उसे "**खाने का हरीस**" कहेंगे, नेकियों में इज़ाफ़े का तमन्नाई "**नेकियों का हरीस**" क़रार पाएगा जब कि गुनाहों का बोझ बढ़ाने वाले को "**गुनाहों का हरीस**" कहेंगे। चुनान्चे,

हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : लालच और हिर्स का जज़्बा ख़ुराक, लिबास, मकान, सामान, दौलत, इ़ज़्ज़त, शोहरत अल ग़रज़ ! हर ने'मत में हुवा करता है। (जन्नती ज़ेवर, स. 111, मुलख़्ख़सन)

हिर्स के मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात के हुसूल के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 232 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब "**हिर्स**" का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद साबित होगा। आज ही इस किताब को हदिय्यतन हासिल फ़रमा कर इस का मुत़ालआ़ फ़रमाइये नीज़ दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislami.net से भी इस किताब को पढ़ने (Read), डाउन लोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) करने की सहूलत मौजूद है।

"हि़र्स" एक फ़ित्री अम्र है !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हि़र्स एक ऐसी सिफ़त है, जो इन्सानी फ़ित्रत में शामिल है, दूध पीता बच्चा हो या कड़यल नौजवान या सौ साल का बूढ़ा इन्सान, मर्द हो या औ़रत, ह़ाकिम हो या मह़कूम, अमीर हो या ग़रीब, आ़लिम हो या जाहिल अल ग़रज़ ! हर एक हि़र्स में मुब्तला होता है, येह अलग बात है कि किसी को सवाबे आख़िरत के लिये नेकियों की हि़र्स होती है, तो किसी को मालो दौलत, जाहो ह़श्मत और इ़ज़्ज़त व शोहरत की । तफ़्सीरे ख़ाज़िन में है : लालच दिल का लाज़िमी हि़स्सा है क्यूंकि येह (या'नी दिल) इसी त़रह़ बनाया गया है । (तफ़्सीरे ख़ाज़िन, जि. 1, स. 437, मुलख़्ख़सन)

याद रहे ! हि़र्स का तअ़ल्लुक़ जिन कामों से होता है, उन में से कुछ काम बाइ़से सवाब होते हैं और कुछ बाइ़से अ़ज़ाब जब कि कुछ मह़ज़ मुबाह़ (या'नी जाइज़) भी होते हैं, या'नी ऐसे कामों के करने पर कोई सवाब मिलता है और न ही छोड़ने पर कोई इ़ताब होता है लेकिन येही मुबाह़ (या'नी जाइज़) काम अगर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ किये जाएं तो इन्सान सवाब का मुस्तह़िक़ और अगर बुरे इरादे से करे तो अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार हो जाता है ।

हि़र्स की अक़्साम

हि़र्स की बुन्यादी त़ौर पर तीन क़िस्में हैं :

﴾1﴿...**हि़र्से मह़मूद** (या'नी अच्छी हि़र्स) : जैसे राहे ख़ुदा में सर्फ़ करने के लिये कसरते माल की तमन्ना करना ।

﴾2﴿...**हि़र्से मज़मूम** (या'नी बुरी हि़र्स) : किसी बुरे काम जैसे शराब पीने के लिये कसरते माल की तमन्ना करना ।

﴾3﴿...**हि़र्से मुबाह़** (या'नी जाइज़ हि़र्स) : जैसे बिग़ैर किसी निय्यत के कसरते माल की तमन्ना करना लेकिन अगर इस हि़र्स में अच्छी निय्यत होगी तो येह हि़र्से मह़मूद बन जाएगी और अगर बुरी निय्यत होगी तो येही मज़मूम हो जाएगी ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें अपनी हि़र्स को उन कामों में सर्फ़ करना चाहिये जिन से हमें दुन्या व आख़िरत का नफ़्अ़ हासिल हो और येह ख़ूबी सिर्फ़ नेकियों की हि़र्स में ही पाई जाती है क्यूंकि येही हि़र्स इन्सान की बख़्शिश व मग़फ़िरत का ज़रीआ़ और जन्नत के आ'ला दरजात में पहुंचाने का वसीला बनती है और क़ुरआने पाक में इस की तरग़ीब भी दिलाई गई है।

وَسَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۳۳﴾ (پ۴، آل عمران، ۱۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और दौड़ो अपने रब की बख़्शिश और ऐसी जन्नत की त़रफ़ जिस की चौड़ान में सब आसमान व ज़मीन आ जाएं परहेज़गारों के लिये तय्यार रखी है।

सिरातुल जिनान, जिल्द 2, सफ़ह़ा 53 पर इस आयते करीमा की तफ़्सीर में है कि गुनाहों से तौबा कर के, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़राइज़ को अदा कर के, नेकियों पर अ़मल पैरा हो कर और तमाम आ'माल में इख़्लास पैदा कर के अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बख़्शिश और जन्नत की त़रफ़ जल्दी करो।

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी नेक अ़मल के फ़ज़ाइल बयान करते हुवे इस की तरग़ीब दिलाई है। चुनान्चे, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : اِحْرِصْ عَلٰى مَا يَنْفَعُكَ وَاسْتَعِنْ بِاللّٰهِ وَلَا تَعْجِزْ उस पर हि़र्स करो जो तुम्हें नफ़्अ़ दे और **अल्लाह** से मदद मांगो, आ़जिज़ न हो।

(صحیح مسلم، کتاب القدر، باب فی الامر بالقوۃ۔۔۔ الخ، الحدیث: ۲۶۶۴، ص ۱۴۳۲)

आज के लोग !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आयते मुबारका और ह़दीसे त़य्यिबा से मा'लूम हुवा कि हमें अपनी बख़्शिश व मग़फ़िरत करवाने और जन्नत के आ'ला दरजात पाने के लिये ऐसे काम करने चाहियें कि जिस में हमारी आख़िरत का फ़ाइदा हो, मगर अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! कि दुन्या की मह़ब्बत और फ़िक्रे आख़िरत से ग़फ़्लत के सबब मुसलमानों की भारी अक्सरिय्यत शौक़े इ़बादत से कोसों दूर और गुनाहों की ह़रीस होती जा रही है। आज का नौजवान क़ित़ार में लग कर महंगे दामों टिकट ख़रीद कर सारी रात गुनाहों भरे म्यूज़िक प्रोग्राम देखने सुनने को तो तय्यार है मगर नमाज़ अदा करने की ग़रज़

से चन्द मिनट के लिये मस्जिद का रुख़ करने से कतराता है, कई कई घंटे रीमोट (Remote) हाथ में पकड़े केबल पर फ़िल्में ड्रामे देखने के लिये वक़्त मिल जाता है मगर इल्मे दीन सीखने के लिये 100 फ़ीसद इस्लामी चेनल "**मदनी चेनल**" देखने में नफ़्सो शैत़ान रुकावट बन जाते हैं, रोज़ाना सेंकड़ों सत़रों पर मुश्तमिल अख़्बार पढ़ने वालों को कई कई महीने क़ुरआने करीम की चन्द आयात की तिलावत के लिये फ़ुर्सत नहीं मिलती, बुरे दोस्तों की सोह़बत में बिला नाग़ा घंटों अपना वक़्त बरबाद करने वाला, हफ़्ते में सिर्फ़ एक दिन वोह भी चन्द मिनट के लिये अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत को तय्यार नहीं । कम्प्यूटर, मोबाइल फ़ोन के ज़रीए़ और नाइट पेकेजिज़ (Night Packages) पर कई कई घंटे ज़ाएअ़ कर देने वाले को हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में आने की दा'वत दी जाए, तो घर का कोई ज़रूरी काम याद आ जाता है। याद रखिये ! ग़फ़्लत और गुनाहों में मुब्तला होने का अन्जाम हलाकत व रुस्वाई के सिवा कुछ नहीं, इस से पहले कि पयामे अजल (या'नी मौत का पैग़ाम) आन पहुंचे और हम अपने अ़ज़ीज़ो अक़्रिबा को रोता छोड़ कर इस दुन्या से कूच कर जाएं, हमें चाहिये कि बक़िय्या ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुवे हाथों हाथ सच्ची तौबा करें और नेकियों की ह़िर्स पैदा करें।

वोह है ऐशो इशरत का कोई महल भी — जहां ताक में हर घड़ी हो अजल भी
बस अब अपने इस जहल से तू निकल भी — येह जीने का अन्दाज़ अपना बदल भी
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है — येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बुज़ुर्गाने दीन को आईडियल बना लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम नेकियों की ह़िर्स के मुतअ़ल्लिक़ सुन रहे हैं । यक़ीनन अच्छी चीज़ों की ह़िर्स करना और उन्हें अपनाने की कोशिश करना शरीअ़त को मत़लूब है। जिस त़रह़ मालो दौलत के ह़रीस लोग मालदारों को अपना आईडियल बनाते हैं, इसी त़रह़ नेकियां करने का जज़्बा बढ़ाने और इस राह में पेश आने वाली मशक़्क़तों को बरदाश्त करने का

हौसला पाने के लिये हम अपने बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی को अपना आईडियल बन लें, तो इस त़रह़ इन पाकीज़ा हस्तियों की ज़िन्दगी हमारे लिये मश्अ़ले राह बन जाएगी और हम भी नेकियों के ह़रीस बन जाएंगे । जितनी फ़िक्र एक दुन्या दार को अपनी दुन्या बनाने की होती है, उस से कहीं ज़ियादा इन नुफ़ूसे क़ुदसिया को अपनी आख़िरत संवारने की धुन होती थी । इन के ह़ालाते ज़िन्दगी से ब ख़ूबी अन्दाज़ा होता है कि येह ह़ज़रात नेकियों के किस क़दर ह़रीस हुवा करते थे । आइये ! इन नेक हस्तियों की इबादतो रियाज़त के अह़वाल सुनते हैं ।

﴾1﴿ सिद्दीक़े अक्बर का शौक़े इबादत !

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : आज तुम में से किस ने रोज़ा रखा ? तो ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : मैं ने । फिर पूछा : आज तुम में से किस ने जनाज़े में शिर्कत की ? तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : मैं ने । दरयाफ़्त फ़रमाया : आज तुम में से किस ने मिस्कीन को खाना खिलाया ? आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : मैं ने । इरशाद फ़रमाया : आज तुम में से किस ने मरीज़ की इयादत की ? आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : "मैं ने ।" तो बह़रोबर के बादशाह, दो आ़लम के शहनशाह, उम्मत के ख़ैर ख़्वाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस किसी में येह ख़स्लतें जम्अ़ हो जाएं, वोह जन्नत में दाख़िल होगा । (صحیح مسلم، ص۵۱۳حدیث۱۰۲۸)

♣...**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक ही दिन में रोज़ा रखा, जनाज़े में शिर्कत की, मिस्कीन को खाना खिलाया और मरीज़ की इयादत की तो ग़ैब की ख़बर देने वाले नबी, दो जहां के उजाले नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें जन्नत की ख़ुश ख़बरी सुनाई । سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूम हुवा कि रोज़ा रखना, जनाज़े में शिर्कत करना, मिस्कीन को खाना खिलाना, मरीज़ की इयादत करना जन्नत में ले जाने वाले आ'माल हैं ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾2﴿ ज़ख़्मी ह़ालत में भी नमाज़ अदा फ़रमाई

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर नमाज़े फ़ज्र से पहले ख़न्जर से क़ातिलाना ह़म्ला किया गया मगर आप शदीद ज़ख़्मी होने के बा वुजूद अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी सांस तक नमाज़ का एहतिमाम करते रहे। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्वर बिन मख़रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नेज़े से ज़ख़्मी किया गया तो मैं और इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे, उन पर कपड़ा डाला हुवा था, हम ने कहा : येह नमाज़ के नाम पर जितनी जल्दी उठेंगे, किसी और चीज़ के नाम से नहीं उठेंगे। चुनान्चे, हमे ने अ़र्ज़ की : या अमीरल मोमिनीन ! नमाज़ ! येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उठे और फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जो नमाज़ तर्क करे, उस का इस्लाम में कोई ह़िस्सा नहीं। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ज़ख़्मी ह़ालत में भी नमाज़ अदा की। (مصنف ابن ابی شیبہ، ج۸، ص۵۷۹، حدیث۱۲ ملخصاً)

बरकते नमाज़

♣...**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आप ने नमाज़ से मह़ब्बत और नेकियों की ह़िर्स देखी, शदीद ज़ख़्मी ह़ालत में भी आप ने नमाज़ अदा फ़रमाई, आज मुसलमानों की ग़ालिब अक्सरिय्यत बद क़िस्मती से नमाज़ों से दूर, जो पढ़ते हैं, उन में भी एक ता'दाद है जो पाबन्द नहीं है। घर में पढ़ते हैं, तो सफ़र में छोड़ देते हैं, ख़ुशी में पढ़ते हैं, तो ग़मी में छोड़ देते हैं, ग़मी में पढ़ते हैं, तो ख़ुशी में ग़ाफ़िल हो जाते हैं। फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान पर क़ुरबान जाइये कि शदीद ज़ख़्मी ह़ालत में भी नमाज़ अदा फ़रमाई, उन के सदक़े **अल्लाह** तआ़ला हमें भी पक्का नमाज़ी बनाए। आइये ! कुछ नमाज़ की बरकतें पेश करता हूं।

नमाज़ जन्नत में ले जाने वाला अ़मल है, नमाज़ मोमिन के लिये बेहतरीन अ़मल है, नमाज़ नूर है, नमाज़ी बिग़ैर तरजमान के रब عَزَّوَجَلَّ से हम कलाम होता है, ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ 2 रक्अ़तें अदा करने वाले के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है, 2 रक्अ़त नमाज़ दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है) से बेहतर है, नमाज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का पसन्दीदा अ़मल है, नमाज़ में हर सज्दे के इ़वज़ एक नेकी लिखी जाती है, एक गुनाह मिटाया जाता और एक दरजा बुलन्द किया जाता है, नमाज़ी बरोज़े क़ियामत सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल किया जाएगा, नमाज़ से गुनाह झड़ते हैं, नमाज़ गुनाहों के मैल कुचैल को धो देती है, एक नमाज़, पिछली नमाज़ के दौरान होने वाले गुनाहों को धो डालती है, नमाज़ी ख़ैर में रात गुज़ारता है, नमाज़ बुराइयों को मिटा देती है, नमाज़ी जन्नत में दाख़िल होगा, नमाज़ी के लिये मा'सूम फ़िरिश्ते रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मग़्फ़िरत की सिफ़ारिश करते हैं, नमाज़ी **अल्लाह** तआ़ला की अमान या'नी हिफ़ाज़त में रहता है, नमाज़, नमाज़ी के लिये दुआए हिफ़ाज़त करती है, नमाज़ी कामिल मोमिन है, नमाज़ी को पूरा पूरा बदला दिया जाएगा, नमाज़, शैत़ान का मुंह काला करती है।

दीदारे ह़क़ दिखाएगी ऐ भाइयो नमाज़
जन्नत तुम्हें दिलाएगी ऐ भाइयो नमाज़
दरबारे मुस्त़फ़ा में तुम्हें ले के जाएगी
ख़ालिक़ से बख़्शवाएगी ऐ भाइयो नमाज़
जन्नत में नर्म नर्म बिछौनों के तख़्त पर
आराम से सुलाएगी ऐ भाइयो नमाज़
फ़ाक़े से, मुफ़्लिसी से, जहन्नम की आग से
सब से तुम्हें बचाएगी ऐ भाइयो नमाज़
बात आ'ज़मी की मानो, न छोड़ो कभी नमाज़
***अल्लाह** से मिलाएगी ऐ भाइयो नमाज़*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾3﴿ शहादते उ़स्मान, दौराने तिलावते कुरआन

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि एक रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "ऐ उ़स्मान ! तुम सूरए बक़रह पढ़ते हुवे शहीद होगे और तुम्हारा ख़ून इस आयत पर पड़ेगा فَسَیَكْفِیْكَهُمُ اللّٰهُ ।"

(مستدرک ج۴ ص ۶۲ حدیث ۴۶۱۱)

अपनी ख़िलाफ़त के आख़िरी अय्याम में जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आज़माइश में मुब्तला हुवे तो भी नफ़्ली रोज़े रखते और तिलावते कुरआन में मश्ग़ूल रहते, ह़त्ता कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत हुई तो उस वक़्त भी तिलावत कर रहे थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्मे मुबारक से निकलने वाले ख़ूने शहादत के क़त़रे सामने खुले हुवे कुरआने पाक की इसी आयत पर पड़े जिस के बारे में ग़ैब दां आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़बर दी थी। चुनान्चे, मुह़द्दिसीन व मुअर्रिख़ीन फ़रमाते हैं कि जब मिसरी लोग क़त्ल के इरादे से ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर में घुसे तो वोह इतने पुर ख़त़र ह़ालात में भी कुरआन शरीफ़ खोले हुवे येही रुकूअ़ पढ़ रहे थे, एक शक़ी (या'नी बदबख़्त) ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ पर तलवार मारी जिस से ख़ून निकल कर उसी लफ़्ज़ पर पड़ा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुरआने पाक को साफ़ करते थे और फ़रमाते थे : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! सब से पहले इसी हाथ से कुरआन लिखा है।" इन मिसरीयों में से सब बुरे ह़ाल पर मरे। कुछ ही अ़र्से के बा'द लोगों ने उस कुरआने पाक की ज़ियारत की और उस पर ख़ून का असर देखा। (दुर्रे मन्सूर, 1 / 340)

♣...**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नेकियों की ह़िर्स आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाई, ब वक़्ते शहादत भी आप तिलावते कुरआन फ़रमा रहे थे। कुरआने करीम की तिलावत मुसलमान के लिये बहुत बड़ी सआ़दत है। कुरआने करीम की कई ऐसी सूरतें हैं जिन की

तिलावत की बरकत से मुख़्तसर से वक़्त में सवाब का अ़ज़ीम ख़ज़ाना जम्अ़ किया जा सकता है। जैसा कि **सूरए यासीन शरीफ़**, जिस की तिलावत में 8, 10 मिनट लगते हैं मगर सवाब कैसा है, सुनिये : सूरए यासीन को एक मरतबा पढ़ने से 10 कुरआन का सवाब ह़ासिल होता है, सूरए यासीन की तिलावत से **20 ह़ज** का सवाब मिलता है और जो ख़ुश नसीब इसे **अल्लाह** की रिज़ा और आख़िरत की बेहतरी के लिये पढ़े उस के लिये मग़्फ़िरत की बिशारत है।

सूरए मुल्क सिर्फ़ 30 आयात पर मुश्तमिल सूरत है, इस को पढ़ने में 4, 5 मिनट लगते हैं मगर सवाब कैसा है। سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! सूरए मुल्क अ़ज़ाबे क़ब्र से बचाती है, सूरए मुल्क अपने पढ़ने वाले के लिये शफ़ाअ़त करती रेहगी यहां तक कि उस की मग़्फ़िरत कर दी जाएगी। मज़ीद सुनिये ! और शौक़े तिलावत पैदा कीजिये। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स सुब्ह़ के वक़्त 3 बार اَعُوْذُ بِاللّٰہِ السَّمِیْعِ الْعَلِیْمِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم कहे और **सूरए ह़श्र की आख़िरी 3 आयात** पढ़े, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते मुक़र्रर कर देता है, जो शाम तक उस के लिये दुआ़ए रह़मत करते हैं और अगर उस दिन मरे तो शहीद होगा और शाम को पढ़े तो सुब्ह़ तक येही फ़ज़ीलत है।

(سُنَنُ التِّرْمِذِیّ ج۴ص۴۲۳حدیث۲۹۳۱)

♣...एक और रिवायत में है कि "**सूरए बक़रह**" में एक आयत है जो कुरआने पाक की तमाम आयतों की सरदार है, वोह आयत जिस घर में पढ़ी जाए, उस घर से शैत़ान निकल जाता है और वोह **आयतुल कुर्सी** है।

(مُسْتَدْرَک لِلْحَاکِمْ ج۲ص۶۴۷حدیث۳۰۸۰)

♣...**सूरए नस्र** चौथाई कुरआन के बराबर है, सूरए काफ़िरून येह भी चौथाई कुरआन के बराबर है, सूरए इख़्लास तिहाई कुरआन के बराबर है, सूरए ज़िलज़ाल निस्फ़ कुरआन के बराबर है।

अल्लाह तआ़ला ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सदक़े में हमें नेकियों का ह़रीस बनाए और कसरते तिलावते कुरआन का शरफ़ अ़त़ा फ़रमाए।

अ़ता हो शौक़ मौला मद्रसे में आने जाने का
ख़ुदाया ज़ौक़ दे क़ुरआन पढ़ने का पढ़ाने का

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿ अफ़्सोस ! मैं ने आधी इबादत कम कर दी !

ह़ज़रते सय्यिदुना कह्मस बिन ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه रोज़ाना एक हज़ार नवाफ़िल पढ़ते थे, जब फ़ारिग़ होते तो चलने की त़ाक़त बाक़ी न रहती थी। इस के बा'द भी क़नाअ़त से काम न लेते थे बल्कि आ़जिज़ी करते हुवे अपने नफ़्स से फ़रमाते : ऐ हर बुराई के मर्कज़ ! अब दूसरी इबादत के लिये उठ। जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه आख़िरी उ़म्र में कमज़ोर हो गए, तो रोज़ाना 500 रक्अ़तें पढ़ा करते थे, इस पर भी येह फ़रमाते : अफ़्सोस ! मैं ने आधी इबादत कम कर दी ! (تنبیہ المغترین، الباب الثانی، ص۱۳۸)

♣...**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! ह़ज़रते सय्यिदुना कह्मस बिन ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का शौक़े इबादत और नेकियों की ह़िर्स देखिये, जिस्मानी कमज़ोरी के बा वुजूद भी आप रोज़ाना एक हज़ार नवाफ़िल और आख़िरी उ़म्र में भी पांच सौ नवाफ़िल अदा फ़रमाते। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मदनी इन्आ़मात के आ़मिलीन ख़ुश नसीब आ़शिक़ाने रसूल रोज़ाना तहज्जुद, इश्राक़ व चाश्त, तह़िय्यतुल वुज़ू, तह़िय्युल मस्जिद, अव्वाबीन, सलातुत्तौबा वग़ैरा के नवाफ़िल पढ़ने की भी सआ़दते उ़ज़्मा ह़ासिल करते हैं। आइये ! तरग़ीब के लिये इन में से चन्द नवाफ़िल के फ़ज़ाइलो बरकात हम भी सुनते हैं :

- ❖ तहज्जुद अदा करने वालों को जन्नत के वोह बुलन्दो बाला मह़ल्लात अ़त़ा किये जाएंगे जिन का अन्दर से बाहर और बाहर का अन्दर से देखा जा सकेगा।
- ❖ नमाज़े तहज्जुद अदा करने वाले बे ह़िसाब बख़्शे जाएंगे।
- ❖ जो नमाज़े फ़ज्र बा जमाअ़त अदा कर के ज़िक्रुल्लाह करता रहे, यहां तक कि आफ़्ताब बुलन्द हो गया, फिर दो रक्अ़तें (इश्राक़ की) पढ़ीं, तो उसे पूरे ह़ज्जो उ़मरह का सवाब मिलेगा। (سُنَنُ التِّرْمِذِی، ج۲، ص۱۰۰ حدیث۵۸۶)

❖ **चाश्त** की पाबन्दी करने वाले के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं, अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मग़रिब के बा'द छ रक्अ़तें इस त़रह़ अदा करे कि उन के दरमियान कोई बुरी बात न कहे, तो येह छ रक्अ़तें बारह साल की इ़बादत के बराबर होंगी। (سُنَنِ ابنِ مَاجَہ، ج۲ص۴۵حدیث۱۱۶۷)

मैं पढ़ता रहूं सुन्नतें वक़्त ही पर
हों सारे नवाफ़िल अदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 102)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इन नेक बन्दों में नेकियों की ह़िर्स किस क़दर कूट कूट कर भरी हुई थी। यक़ीनन ह़िर्स एक ऐसा जज़्बा है कि जब येह पैदा हो जाए तो इन्सान को दीगर चीज़ों से बे परवा कर देता है, अगर किसी में नेकियां कमाने और आख़िरत बनाने की ह़िर्स हो, तो वोह अपने आराम व सुकून का धियान किये बिग़ैर हर वक़्त नेकियां कमाने ही की फ़िक्र में रहता है, जैसा कि अभी हम ने सुना, जब कि किसी में मालो दौलत कमाने, ओ़ह्दे और मन्सब को पाने की ह़िर्स पैदा हो जाए, तो वोह उसी का हो कर रह जाता है।

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "मदनी इन्आ़मात"

मालो दौलत कमाने की ह़िर्स से जान छुड़ाने और नेकियों की ह़िर्स का जज़्बा पाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करना शुरूअ़ कर दीजिये, रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर माह की यकुम तारीख़ को जम्अ़ करवाना ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम भी है नीज़ मदनी इन्आ़मात गुनाहों से बचाने का बहुत बड़ा ज़रीआ़ भी हैं

और नेकियों की ह़िर्स बेदार करने में भी बहुत मुआ़विन हैं । इन की बरकत से न सिर्फ़ फ़राइज़ की अदाएगी की सआ़दत मिलती है बल्कि नवाफ़िल की भी सआ़दत नसीब होती है । कई मदनी इन्आ़मात नफ़्ल इबादात के मुतअ़ल्लिक़ हैं । जैसा कि मदनी इन्आ़म नम्बर 3 आयतुल कुर्सी, सूरतुल इख़्लास, तस्बीहे़ फ़ातिमा और सूरतुल मुल्क के मुतअ़ल्लिक़ जब कि मदनी इन्आ़म नम्बर 6 राह में आते जाते मुसलमानों को सलाम कर के ढेरों नेकियां कमाने और मदनी इन्आ़म नम्बर 19 नमाज़े तहज्जुद, इश्राक़ व चाश्त और अव्वाबीन की अदाएगी के मुतअ़ल्लिक़ है, इन के इलावा भी कई मदनी इन्आ़मात ऐसे हैं जो हमें नफ़्ल इबादात की त़रफ़ माइल करने वाले हैं, इस लिये रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर माह की यकुम तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न भी बनेगा ।

गुनाहों ने कहीं का भी न छोड़ा करम मुझ पर ह़बीबे किब्रिया हो
गुनाहों की छूटे हर एक आ़दत सुधर जाऊं करम या मुस्त़फ़ा हो
करूं बे लौस ख़िदमत सुन्नतों की शहा गर लुत़्फ़ मुझ पर आप का हो
दे जज़्बा "मदनी इन्आ़मात" का तू करम या सय्यिदे हर दो सरा हो

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 316)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़िल्मों का शौक़ीन !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल नेकियां कमाने और गुनाहों से बचाने का बहुत बड़ा ज़रीआ़ है, कई अफ़राद जो पहले गुनाहों के दलदल में ग़र्क़ थे, इस माह़ोल की बरकत से न सिर्फ़ ख़ुद नेकियां करने लगे बल्कि दूसरों को नेक बनाने वाले बन गए । आइये ! तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार सुनते हैं । चुनान्चे,

बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाक़े "**बड़ा बोर्ड**" के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि पहले पहल मैं मुआ़शरे का बिगड़ा हुवा नौजवान था, ख़ूब फ़िल्में ड्रामे देखने के सबब महल्ले में "**फ़िल्मों का ख़्वार**" के नाम से मश्हूर हो गया था । इसी दौरान एक इस्लामी भाई की "**इनफ़िरादी कोशिश**" के नतीजे में "खज्जी ग्राउन्ड" (गुलबहार) में तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से होने वाले शबे बराअत के सुन्नतों भरे इजतिमाए़ पाक में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल हो गई, वहां पर मैं ने "**क़ब्र की पहली रात**" के मौज़ूअ़ पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रुला देने वाला बयान सुना, मैं ने पिछले गुनाहों से तौबा की और दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया । हमारा सारा घराना मॉडर्न था, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मेरी इनफ़िरादी कोशिश से मेरे पांच भाई भी दा'वते इस्लामी वाले बन गए और सब ने सरों पर इमामा शरीफ़ का ताज सजा लिया और घर के अन्दर मुकम्मल मदनी माह़ोल बन गया । ता दमे तह़रीर ह़ल्क़ा मुशावरत के ख़ादिम की ह़ैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत कर रहा हूं और हर माह पाबन्दी से तीन दिन आ़शिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करता हूं । (अज़ : आक़ा का महीना, स. 25, बित्तग़य्युर)

यहां सुन्नतें सीखने को मिलेंगी दिलाएगा ख़ौफ़े ख़ुदा मदनी माह़ोल
ऐ बीमीरे इ़स्यां तू आ जा यहां पर गुनाहों की देगा दवा मदनी माह़ोल

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल मुसलमानों में हर त़रफ़ दुन्यवी ह़िर्स की वबा फैल चुकी है, हर एक दुन्यवी ए'तिबार से एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश में लगा हुवा है, किसी का आ़लीशान बंगला देखा तो उस जैसा बनाने की ख़्वाहिश, किसी को उ़म्दा कपड़े का शानदार लिबास पहने देखा तो ऐसा पहनने की ख़्वाहिश, किसी की नई चमक्ती दमक्ती कार देख

कर दिल ललचाना, किसी का कामयाब कारोबार (Business) देखा तो मुंह में पानी भर आना, अल ग़रज़ ! हम दुन्यवी मालो दौलत की महब्बत के ऐसे हरीस बन चुके हैं कि दिन रात आहें भरते और उस के हुसूल के लिये कोशिशें करते ज़रा नहीं थकते । ऐ काश ! किसी को नेकी करता देख कर हम भी नेक आ'माल करने की हिर्स में मुब्तला हो जाएं, ऐ काश ! दूसरों को मस्जिद की तरफ़ जाता देख कर हमें भी पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त अदा करने की ख़्वाहिश पैदा हो जाए । हमारे बुज़ुर्गाने दीन तो नेकियों के इस क़दर शौक़ीन थे कि नेकी का कोई मौक़अ़ भी हाथ से जाने न देते । आइये ! इस ज़िम्न में सरकारे आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुनते हैं ।

अचानक अज़ान की आवाज़ सुनाई दी !

एक बार आ'ला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जबलपूर गए, तो वहां सैरो सियाहत के लिये एक मक़ाम पर तशरीफ़ ले गए । उसी दौरान जब नमाज़े मग़रिब का वक़्त हुवा, तो वहीं रेत पर मुसल्ला और रूमाल वग़ैरा बिछा लिये गए । आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मेज़बान व ख़लीफ़ा हज़रते मौलाना मुफ़्ती अ़ब्दुल बाक़ी बुरहानुल हक़ जबलपूरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने अभी अज़ान देने के इरादे से कानों में उंगलियां डाली ही थीं कि अचानक मुझे अज़ान की आवाज़ सुनाई देने लगी, देखा तो आ'ला हज़रत (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) अज़ान दे रहे थे, अज़ान के बा'द ख़ुद ही इक़ामत कह कर नमाज़े मग़रिब भी पढ़ाई । नमाज़ से फ़राग़त के बा'द हम ने क़दमों का बोसा लिया, तो आप ने दस्ते मुबारक से मेरा (या'नी मौलाना बुरहानुल हक़ जबलपूरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) का हाथ अपने हाथ में ले कर इरशाद फ़रमाया, हदीस शरीफ़ में है : अज़ान की आवाज़ जहां तक पहुंचती है, वहां का हर ज़र्रा शाहिद और गवाह हो जाता है, इस लिये मैं ने अज़ान दी कि यहां का बहता हुवा दरया, पहाड़, दरख़्त, सब्ज़ा और रेत सब मेरे लिये शाहिद या'नी गवाह हो जाएं । (इकरामे इमाम अहमद रज़ा, स. 95, बित्तग़य्युर)

उस की हस्ती में था अ़मल जौहर सुन्नते मुस्त़फ़ा का वोह पैकर
आ़लिमे दीन, साहि़बे तक़्वा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की
जिस ने देखा उन्हें अ़क़ीदत से क़ल्ब की आंख से मह़ब्बत से
मरह़बा मरह़बा पुकार उठा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 575)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अज़ान के जवाब की फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए़ से जहां येह मा'लूम हुवा कि इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ज़ियादा से ज़ियादा नेकियां कमाने के ह़रीस थे, वहीं हमें भी येह दर्स मिला कि जब जब मौक़अ़ मिले शर्म व झिजक के बिग़ैर अज़ान दे कर कुर्बो जवार की अश्या को अपने ईमान का गवाह बना लेना चाहिये और इस पर मिलने वाली ढेरों नेकियों को हाथ से जाने नहीं देना चाहिये । बिल फ़र्ज़ ! अगर अज़ान व इक़ामत कहने का मौक़अ़ न भी मिले तो अज़ान व इक़ामत का जवाब देने को ही अपना मा'मूल बना लीजिये, अज़ान व इक़ामत का जवाब देने वाले मर्द के लिये हर कलिमे पर दो लाख जब कि औ़रत के लिये हर एक कलिमा पर एक लाख नेकियों का सवाब मिलता है । चुनान्चे,

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : ऐ औ़रतों ! जब तुम बिलाल को अज़ान व इक़ामत कहते सुनों, तो जिस त़रह़ वोह कहता है तुम भी कहो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे लिये हर कलिमे के बदले एक लाख नेकियां लिखेगा और एक हज़ार दरजात बुलन्द फ़रमाएगा और एक हज़ार गुनाह मिटाएगा । ख़्वातीन ने येह सुन कर अ़र्ज़ की : येह तो औ़रतों के लिये है, मर्दों के लिये क्या है ? फ़रमाया : मर्दों के लिये दुगना । (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۵ص۷۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर कुरबान जाइये ! उस ने हमारे लिये नेकियां कमाना, अपने दरजात बढ़वाना और गुनाह बख़्शवाना किस क़दर आसान फ़रमा दिया है मगर अफ़्सोस ! इतनी आसानियों

के बा वुजूद भी हम ग़फ़्लत का शिकार रहते हैं। लिहाज़ा नेकियों की ह़िर्स पैदा कीजिये और अज़ान व इक़ामत का जवाब दीजिये और लाखों नेकियां और दरजात की बुलन्दी पाइये। अज़ान व इक़ामत का जवाब देना तो मदनी इन्आ़म भी है। चुनान्चे, मदनी इन्आ़म नम्बर 4 में है : "क्या आज आप ने बात चीत, चलत फिरत, उठाना रखना, फ़ोन पर गुफ़्तगू, स्कूटर, कार चलाना वग़ैरा तमाम काम काज मौक़ूफ़ कर के अज़ान व इक़ामत का जवाब दिया ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अज़ान व इक़ामत का जवाब दे कर ढेरों नेकियां कमाने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

गो येह बन्दा निकम्मा है बेकार इस से ले फ़ज़्ल से रब्बे ग़फ़्फ़ार
काम वोह जिस में तेरी रिज़ा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 138)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस पुर फ़ितन दौर में गुनाह करना बहुत आसान है, जगह जगह गुनाहों के अस्बाब व आलात मुहय्या हैं और مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ नेकियां करना बेह़द दुश्वार है, शायद इसी वज्ह से मुसलमान गुनाहों के मरीज़ हो कर नेकियों के ह़रीस न रहे। अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! हम गुनाह करने के लिये तो बड़ी से बड़ी मशक़्क़त भी उठा लेते हैं मगर ज़ूंही नेकी का मौक़अ़ मिलता है तो नफ़्सो शैत़ान अपने जाल में बुरी त़रह़ फंसा लेते हैं और मा'मूली सी नेकी भी पहाड़ जैसी मा'लूम होती है। याद रखिये ! नेकी में जितनी मशक़्क़त ज़ियादा होगी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत से सवाब भी उतना ही ज़ियादा अ़त़ा फ़रमाएगा। जैसा कि मन्क़ूल है : اَفْضَلُ الْعِبَادَاتِ اَحْمَزُهَا अफ़्ज़ल इबादत वोह है जिस में ज़ह़मत (या'नी तक्लीफ़) ज़ियादा है।

(کشف الخفاء: ۱/۱۴۱، الحدیث ۴۵۹)

हमारे अस्लाफ़ को नेकियां करते वक़्त कैसी ही मशक़्क़त का सामना करना पड़ता, कभी पीछे न हटते। चुनान्चे,

बारिश में त़वाफ़ की ख़्वाहिश

सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जब दूसरी बार ह़ज के लिये तशरीफ़ ले गए तो मक्का शरीफ़ पहुंचते ही अ़लील (या'नी बीमार) हो गए, बसा अवक़ात बुख़ार की शिद्दत ऐसी होती कि सह़ीह़ त़रीक़े से खड़े भी न हो पाते, ज़िल ह़ज की तेरहवीं तारीख़ से बुख़ार शुरूअ़ हुवा, कभी बढ़ता और कभी घटता जब कि मोह़र्रमुल ह़राम शरीफ़ तक़रीबन सारा ही बुख़ार में गुज़रा।

(मल्फ़ूज़ात, स. 188, 200, 201)

ऐसे ह़ालात में शिद्दत से इस बात का इन्तिज़ार था कि सिह़्ह़त कुछ अच्छी हो जाए तो सूए मदीना रौज़ए सरकारे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़ाज़िरी के लिये रवाना हुवा जाए, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : जब मोह़र्रम के आख़िरी दिनों में بِفَضْلِهٖ تَعَالٰی (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से) सिह़्ह़त (अच्छी) हुई तो वहां एक सुल्त़ानी ह़म्माम है उस में नहा कर बाहर निकला तो अब्र (या'नी बादल) देखा, ह़रम शरीफ़ पहुंचते पहुंचते बरसना शुरूअ़ हुवा। मुझे ह़दीस याद आई कि जो मींह (या'नी बारिश) बरसते में त़वाफ़ करे वोह रह़मते इलाही (عَزَّوَجَلَّ) में तैरता है। फ़ौरन संगे अस्वद शरीफ़ का बोसा ले कर बारिश ही में सात फैरे त़वाफ़ किया, तो फिर से बुख़ार हो गया। (मक्कए मुअ़ज़्ज़मा के एक जय्यद आ़लिमे दीन) मौलाना सय्यिद इस्माईल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : एक ज़ईफ़ ह़दीस के लिये आप ने अपने बदन की येह बे एह़तियात़ी की ! मैं ने कहा : ह़दीस ज़ईफ़ है मगर उम्मीद بِحَمْدِ الله تَعَالٰی क़वी है। येह त़वाफ़ بِحَمْدِ الله تَعَالٰی बहुत मज़े का था (क्यूंकि) बारिश के सबब त़ाइफ़ीन (या'नी त़वाफ़ करने वालों) की वोह कसरत न थी (जो आ़म दिनों में होती है)। (मल्फ़ूज़ात, स. 209, बित्तग़य्युर)

शराबे मह़ब्बत कुछ ऐसी पिला दे
कभी भी नशा हो न कम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 109)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर कीजिये कि एक त़रफ़ हमारे अस्लाफ़ का येह ह़ाल था कि महीना भर बुख़ार में रहने के बा वुजूद भी बारिश में त़वाफ़ करने की फ़ज़ीलत पाने के ह़रीस थे जब कि हमारी ह़ालत तो इस क़दर अब्तर है कि हल्का फुल्का सर दर्द, नज़्ला, ज़ुकाम और मा'मूली बीमारियों के सबब नवाफ़िल की सआ़दत पाना तो दर किनार हम तो مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ फ़राइज़ तक छोड़ देते हैं। अगर हम रोज़ाना फ़राइज़ के साथ साथ कुछ न कुछ नफ़्ल इबादात की भी आ़दत बनाएंगे, तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इबादत का मज़ीद शौक़ पैदा होगा।

हमारे बुज़ुर्गाने दीन के बारे में येह भी मन्क़ूल है कि वोह रोज़ाना नेक आ'माल करने का एक हदफ़ बना लिया करते और फिर उस पर अ़मल की भरपूर कोशिश फ़रमाते और हदफ़ मुकम्मल कर लेने के बा'द भी ख़ुद को इबादतो रियाज़त में ही मश्ग़ूल रखते। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दे क़ैस رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने ज़माने के आ़बिदों में सब से अफ़्ज़ल थे। उन्हों ने अपने ऊपर येह बात लाज़िम कर ली थी कि मैं रोज़ाना एक हज़ार नवाफ़िल पढ़ूंगा। चुनान्चे, वोह इशराक़ से ले कर अ़स्र तक (दिन का अक्सर ह़िस्सा) नवाफ़िल में मश्ग़ूल रहते, फिर जब घर आते तो उन की पिन्डलियां और क़दम सूजे हुवे होते, ऐसा लगता जैसा अभी फट जाएंगे। इतनी इबादत के बा वुजूद आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की आ़जिज़ी का येह आ़लम था कि अपने नफ़्स को मुख़ात़ब कर के कहते : "ऐ बुराइयों पर उभारने वाले नफ़्स ! तू इबादत के लिये पैदा किया गया है, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इतने नेक आ'माल करूंगा कि तुझे एक पल भी सुकून मुयस्सर न होगा और तू बिस्तर से बिल्कुल दूर रहेगा, मैं तुझे हर वक़्त मस्रूफ़े अ़मल रखूंगा।" (उ़यूनुल ह़िकायात, 1 / 97)

मेरी ज़िन्दगी बस तेरी बन्दगी में
ही ऐ काश ! गुज़रे सदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 106)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शायद मैं मर जाऊं!

बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन हर दिन और रात को अपनी ज़िन्दगी का आख़िरी समझ कर उस में ख़ूब इबादत करते । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदतुना मुआ़ज़ा अ़दविय्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا रोज़ाना सुब्ह़ के वक़्त फ़रमातीं : "(शायद) येह वोह दिन है जिस में मुझे मरना है । फिर शाम तक कुछ न खातीं, फिर जब रात होती तो कहतीं : येह वोह रात है जिस में मुझे मरना है । फिर सुब्ह़ तक नमाज़ पढ़ती रहतीं ।" (जन्नत में ले जाने वाले आ'माल, स. 150)

ज़िन्दगी का क्या भरोसा !

फ़ी ज़माना शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी अस्लाफ़ की पैरवी करने वाली अ़ज़ीम शख़्सिय्यत हैं । एक मरतबा आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه रात भर मदनी मश्वरे के बाइ़स सो न सके । बा'दे फ़ज्र एक इस्लामी भाई ने अ़र्ज़ की : "अभी आप आराम फ़रमा लें, दस बजे दोबारा उठना है, लिहाज़ा उठ कर इश्राक़ व चाश्त अदा फ़रमा लीजियेगा ।" तो आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने जवाब दिया : "ज़िन्दगी का क्या भरोसा ? सो कर उठना नसीब हो या नहीं....या....क्या मा'लूम आज ज़िन्दगी के आख़िरी नफ़्ल अदा हो रहे हों ?" येह फ़रमाने के बा'द इश्राक़ व चाश्त के नफ़्ल अदा फ़रमाए, फिर आराम फ़रमाया । (तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 65)

लाज़िमी है हर सूरत छोड़ना गुनाहों का
भाई ! मौत से पहले काश ! तू सुधर जाता

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 157)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه और दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल हमें येही मदनी ज़ेह्न फ़राहम करता है कि ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं, इन सांसों को ग़नीमत जानते हुवे नेकियों के ज़रीए अपनी आख़िरत बेहतर बना लीजिये, सांसों की येह माला न जाने कब अचानक टूट कर बिखर जाए और ख़ुदा न ख़ास्ता हमें

गुनाहों से तौबा का वक़्त भी न मिल सके और हमारी आख़िरत बरबाद हो जाए। लिहाज़ा हमें भी अपनी आख़िरत बेहतर बनाने के लिये अपने बुज़ुर्गाने दीन के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे रोज़ाना कुछ न कुछ नेक आ'माल करने का हदफ़ बना लेना चाहिये ताकि नेक आ'माल की आ़दत बन सके। इस का आसान त़रीक़ा येह है कि अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कीजिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! मदनी इन्आ़मात रोज़ाना नेकियां कमाने का वोह अ़ज़ीम मदनी नुस्ख़ा है कि जिस के ज़रीए़ सुब्हे सादिक़ से ले कर रात सोने तक नेकियां करने के कसीर मवाक़ेअ़ मिलते हैं। मसलन सुब्ह़ नमाज़े फ़ज्र से पहले मुसलमानों को नमाज़ के लिये जगाना या'नी सदाए मदीना लगाना, बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े में 3 आयात मअ़ तर्जमा व तफ़्सीर तिलावत करना या सुनना, इश्राक़ व चाश्त के नवाफ़िल पढ़ना, पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त पहली सफ़ में अदा करना, नमाज़े पंजगाना के बा'द नीज़ सोते वक़्त कम अज़ कम एक एक बार आयतुल कुर्सी, सूरतुल इख़्लास और तस्बीहे फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पढ़ना नीज़ रात में सूरतुल मुल्क पढ़ना या सुनना, मदनी दर्स (दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत वग़ैरा) देने या सुनने की सआ़दत पाना, इ़शा की नमाज़ के बा'द मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में पढ़ना या पढ़ाना। हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ व मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत, अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत के इ़लावा दीगर मदनी इन्आ़मात पर अ़मल के ज़रीए़ सवाब का ढेरों ख़ज़ाना ह़ासिल कर सकते हैं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैत़ान कभी भी येह नहीं चाहेगा कि हम मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कर के दिन भर में इतनी ज़ियादा नेकियां करने में कामयाब हों, वोह इस नेक काम से रोकने के लिये लाखों जतन करेगा, त़रह़ त़रह़ के वस्वसे डाल कर बहकाने की कोशिश करेगा कि मैं तो बहुत मस्रूफ़ हूं, इतना वक़्त कहां जो इन 72 मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कर सकूं। अगर आप इन वस्वसों पर तवज्जोह दिये बिग़ैर मदनी इन्आ़मात पर ग़ौर फ़रमाएं तो शायद ह़ैरान रह जाएंगे कि जिन मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करना मुश्किल

लग रहा था उन पर अ़मल करना तो बहुत ही आसान है क्यूंकि हमें रोज़ाना 72 मदनी इन्आ़मात पर अ़मल नहीं करना बल्कि रोज़ाना जिन मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करना है उस के तीन दरजे हैं । पहला और दूसरा दरजा 17, 17 और तीसरा दरजा सिर्फ़ 16 मदनी इन्आ़मात पर मुश्तमिल है । इस के इ़लावा 8 मदनी इन्आ़मात ऐसे हैं जिन पर हफ़्ते में सिर्फ़ एक बार अ़मल करना है, 6 मदनी इन्आ़मात ऐसे हैं जिन पर महीने में सिर्फ़ एक बार अ़मल करना है और 8 मदनी इन्आ़मात ऐसे हैं जिन पर 12 माह में सिर्फ़ एक बार अ़मल करना है ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप को ब ख़ूबी अन्दाज़ा हो गया होगा कि शैत़ान हमें जिन मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करना दुश्वार महसूस करवा रहा था, उन पर अ़मल करना तो बहुत ही आसान है । फ़ी ज़माना एक मुसलमान के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल किस क़दर ज़रूरी है, इस का अन्दाज़ा आप को उसी वक़्त हो सकेगा जब आप मदनी इन्आ़मात के रिसाले का ब ग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाएंगे । इन मदनी इन्आ़मात में फ़राइज़ व वाजिबात और सुनन व मुस्तह़ब्बात पर अ़मल की तरग़ीब के साथ साथ कहीं अख़्लाक़ियात के ह़ुसूल के मदनी फूल भी ख़ुश्बू फैला रहे हैं, तो कहीं गुनाहों से बचने और आसानी से नेकियां करने के त़रीक़े अपनी बरकतें लुटा रहे हैं । लिहाज़ा अगर हम भी गुनाहों की बीमारियों से छुटकारा पा कर नेकियों के ह़रीस बनना चाहते हैं, तो आज ही से मदनी इन्आ़मात पर अ़मल शुरूअ़ कर दीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ढेरों बरकतें अपनी आंखों से देखेंगे ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज के बयान में हम ने ह़िर्स की ता'रीफ़, इस की अक़्साम, नेकियों के ह़रीस अस्लाफ़े किराम के ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त सुने ।

❖ किसी चीज़ से जी न भरने और हमेशा ज़ियादती की ख़्वाहिश करने को ह़िर्स कहते हैं ।

❖ हमारे बुज़ुर्गाने दीन हमेशा नेकियों की ही हि़र्स में मुब्तला रहते, यहां तक कि वक़्ते नज़्अ़ भी उन्हें नेकियां कमाने का ही ख़याल रहता था।

❖ हमें ऐसी हि़र्स इख़्तियार करनी चाहिये जो आख़िरत में हमारे लिये फ़ाइदे का सबब बने।

❖ हमारे अस्लाफ़ को नेकियां कमाने में कैसी ही मशक़्क़त का सामना करना पड़ता वोह नेकियां कमाने का कोई भी मौक़अ़ हाथ से नहीं जाने देते थे।

❖ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने नेको कार बन्दों के सदक़े हमें भी नेकियों की हि़र्स अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्एे बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مِشْکَاۃُ الْمَصَابِیح، ج۱ص۵۵حدیث ۱۷۵ دار الکتب العلمیۃ بیروت)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

घर में आने जाने के चन्द मदनी फूल

﴾1﴿ जब घर से बाहर निकलें तो येह दुआ पढ़िये :

بِسْمِ اللّٰہِ تَوَکَّلْتُ عَلَی اللّٰہِ لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *के नाम से, मैं ने* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *पर भरोसा किया। अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *के बिग़ैर न त़ाक़त है, न क़ुव्वत।* (ابوداود، ج۴ص۴۲۰حدیث۵۰۹۵)

اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस दुआ को पढ़ने की बरकत से सीधी राह पर रहेंगे, आफ़तों से ह़िफ़ाज़त होगी और اَللّٰہُ الصَّمَد عَزَّوَجَلَّ की मदद शामिले ह़ाल रहेगी।

﴾2﴿ अपने घर में आते जाते महारिम व महरिमात (मसलन मां, बाप, भाई, बहन, बाल बच्चे वग़ैरा) को सलाम कीजिये । ﴾3﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लिये बिग़ैर मसलन **बिस्मिल्लाह** कहे बिग़ैर जो घर में दाख़िल होता है, शैत़ान भी उस के साथ दाख़िल हो जाता है । ﴾4﴿ अगर ऐसे मकान (ख़्वाह अपने ख़ाली घर) में जाना हो कि उस में कोई न हो, तो येह कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْن (या'नी हम पर और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों पर सलाम) फ़िरिश्ते उस सलाम का जवाब देंगे । (رَدُّالْمُحتار،ج۹ ص ۶۸۲) या इस त़रह़ कहे : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ (या'नी या नबी आप पर सलाम) क्यूंकि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़े मुबारक मुसलमानों के घरों में तशरीफ़ फ़रमा होती है । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, स. 96, शर्हुश्शिफ़ाउल क़ारी, जि. 2, स. 118) ﴾5﴿ जब किसी घर में दाख़िल होना चाहें, तो इस त़रह़ कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ क्या मैं अन्दर आ सकता हूं ? ﴾6﴿ अगर दाख़िले की इजाज़त न मिले, तो ब ख़ुशी लौट जाइये, हो सकता है किसी मजबूरी के तह़्त साह़िबे ख़ाना ने इजाज़त न दी हो । ﴾7﴿ जवाब में नाम बताने के बा'द दरवाज़े से हट कर खड़े हों ताकि दरवाज़ा खुलते ही घर के अन्दर नज़र न पड़े । ﴾8﴿ किसी के घर जाएं तो वहां के इन्तिज़ामात पर बे जा तन्क़ीद न कीजिये, इस से उस की दिल आज़ारी हो सकती है । ﴾9﴿ वापसी पर अहले ख़ाना के ह़क़ में दुआ भी कीजिये और शुक्रिया भी अदा कीजिये और सलाम भी और हो सके तो कोई सुन्नतों भरा रिसाला वग़ैरा भी तोह़्फ़तन पेश कीजिये । (101 मदनी फूल, स. 27)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब **बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

आ़शिक़ाने रसूल, आएं सुन्नत के फूल
देने लेने चलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जिस ने मुझ पर 100 मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** तआ़ला उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा।

(مَجْمَعُ الزَّوَائِد، کتاب الادعیۃ، باب فی الصلاۃ علی النبی ... الخ، ۱۰/۲۵۳ حدیث: ۱۷۲۹۸)

अपने ख़त़ावारों को अपने ही दामन में लो
कौन करे येह भला तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 271)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ात़िर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج ۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माहे जुल क़ा'दा की आमद आमद है, इस माहे मुबारक की 2 तारीख़ को आ़लमे इस्लाम की एक अ़ज़ीम हस्ती का उ़र्स मनाया जाता है, वोह अ़ज़ीम हस्ती कौन है ? वोह अ़ज़ीम हस्ती **सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه हैं ।

सद्रुश्शरीआ़ की शानो अ़ज़मत की झलकियां

- ❖ सदरुश्शरीआ़ की शानो अ़ज़मत का अन्दाज़ा इस बात से भी होता है कि सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमामे अहले सुन्नत ने आप को हिन्द का क़ाज़िये इस्लाम मुक़र्रर फ़रमाया ।
- ❖ सदरुश्शरीआ़ की शानो अ़ज़मत का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि आ'ला ह़ज़रत ने आप को अपनी ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई थी ।
- ❖ सदरुश्शरीआ़ आस्तानए मुर्शिद के बा वफ़ा थे ।
- ❖ सदरुश्शरीआ़ छोटे बच्चों पर बहुत शफ़ीक़ व मेहरबान थे ।
- ❖ सदरुश्शरीआ़ सुन्नत पर अ़मल करते हुवे घर का काम काज इन्तिाई मस्रूफ़ियत के बा वुजूद ख़ुद अपने हाथों से किया करते ।
- ❖ नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर सख़्ती से अ़मल पैरा रहते ।

जिन की हर हर अदा सुन्नते मुस्त़फ़ा
ऐसे सदरुश्शरीआ़ पे लाखों सलाम

❖ आप की ख़ुसूसिय्यात में येह भी था कि आप घर या बाहर कभी नमाज़ क़ज़ा न करते, शदीद बीमारी में भी नमाज़ की पाबन्दी फ़रमाते।
❖ नमाज़े बा जमाअ़त का ऐसा जज़्बा था कि मरह़बा ! अगर कभी मोअज़्ज़िन मुक़र्ररा वक़्त से लेट हो जाता, तो ख़ुद ही अज़ान दे देते।
❖ रोज़ों से ऐसी मह़ब्बत थी कि सख़्त बीमारी में भी आप रोज़े न छोड़ते।
❖ कैसी ही मस्रूफ़ियत होती नमाज़े फ़ज्र के बा'द क़ुरआने पाक के एक पारे की तिलावत फ़रमाया करते।
❖ बा'दे नमाज़े जुमुआ़ बिला नाग़ा 100 बार दुरूदे रज़विय्या पढ़ा करते।
❖ अपनी औलाद और त़लबा की अ़मली ता'लीम व तरबिय्यत का ख़ुसूसी ख़याल फ़रमाया करते।
❖ सदरुश्शरीआ़, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, ऐसे आ़शिक़े रसूल थे, जब ना'त शरीफ़ सुनते तो अदब से दोनों हाथ बांध लेते, आंखें बंद कर लेते और आंखों से इ़श्क़े रसूल में आंसू बहने लगते।
❖ आप ने सफ़रे मदीना में वफ़ात पाई।
❖ आप के मुबारक मज़ार से पाकीज़ा ख़ुश्बू कई दिन तक मह़सूस की गई।
❖ आप का बहुत बड़ा इल्मी कारनामा येह है कि आप ने उम्मते मुस्त़फ़ा को आ़लिम बनाने वाली किताब या'नी "**बहारे शरीअ़त**" अ़त़ा की।

जिस के दम से बहारे शरीअ़त मिली
ऐसे सदरे शरीअ़त पे लाखों सलाम

اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज के बयान में हम "**सदरुश्शरीआ़ की दीनी ख़िद्मात**" के मौज़ूअ़ से मुतअ़ल्लिक़ सुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगे मगर आइये ! इस से पहले सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मुख़्तसर तआ़रुफ़ सुनते हैं। चुनान्चे,

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه सिने 1300 हि., मुत़ाबिक़ सिने 1882 ई. में मशरिक़ी यूपी (हिन्द) के क़स्बे मदीनतुल उ़लमा घूसी में पैदा हुवे । आप के वालिदे माजिद ह़कीम जमालुद्दीन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه और दादा हुज़ूर ख़ुदा बख़्श رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़न्ने त़िब्ब के माहिर थे । इब्तिदाई ता'लीम अपने दादा ह़ज़रते मौलाना ख़ुदा बख़्श رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से घर पर ह़ासिल की फिर अपने क़स्बे ही में मद्रसए नासिरुल उ़लूम में जा कर मौलाना इलाही बख़्श साह़िब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से कुछ ता'लीम ह़ासिल की । फिर जौनपूर पहुंचे और अपने चचा ज़ाद भाई और उस्ताद मौलाना मुह़म्मद सिद्दीक़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से कुछ अस्बाक़ पढ़े फिर उस्ताज़ुल उ़लमा ह़ज़रते अ़ल्लामा हिदायतुल्लाह ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से इ़ल्मे दीन के छलक्ते हुवे जाम नोश किये और यहीं से दर्से निज़ामी की तक्मील की । फिर दौरए ह़दीस की तक्मील पीली भीत में उस्ताज़ुल मुह़द्दिसीन ह़ज़रते मौलाना वसी अह़मद मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से की । ह़ज़रते मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने होनहार शागिर्द की आ'ला सलाह़िय्यतों का ए'तिराफ़ इन अल्फ़ाज़ में किया : **''मुझ से अगर किसी ने पढ़ा, तो अमजद अ़ली ने ।''** (तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 5, बित्तग़य्युर)

मुसन्निफ़ भी, मुक़र्रिर भी, फ़क़ीहे अ़स्रे ह़ाज़िर भी
वोह अपने आप में था इक इदारा इ़ल्मो ह़िक्मत का

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सदरुश्शरीआ़ का इ़ल्मी कारनामा

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का पाक व हिन्द के मुसलमानों पर बहुत बड़ा एह़सान है कि उन्हों ने ज़ख़ीम (या'नी बड़ी बड़ी) अ़रबी कुतुब में फैले हुवे फ़िक़्ही मसाइल को तह़रीर की लड़ी में पिरो कर एक मक़ाम पर जम्अ़ कर दिया । इन्सान की पैदाइश से ले कर वफ़ात तक दरपेश होने वाले हज़ारहा

मसाइल का बयान "**बहारे शरीअ़त**" में मौजूद है। इन में बे शुमार मसाइल ऐसे भी हैं, जिन का सीखना हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन पर फ़र्ज़े ऐन है। बहारे शरीअ़त लिखने के अस्बाब का ज़िक्र करते हुवे सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : उर्दू ज़बान में अब तक कोई ऐसी किताब तस्नीफ़ नहीं हुई, जो सह़ीह़ मसाइल पर मुश्तमिल हो और ज़रूरिय्यात के लिये काफ़ी व वाफ़ी हो। फ़िक़्हे ह़नफ़ी की मश्हूर किताब "**फ़तावा आ़लमगीरी**" सेंकड़ों उ़लमाए दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ निज़ामुद्दीन मुल्ला जियून رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की निगरानी में अ़रबी ज़बान में मुरत्तब फ़रमाई मगर क़ुरबान जाइये कि सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने वोही काम उर्दू ज़बान में तने तन्हा कर दिखाया और मुख़्तलिफ़ इस्लामी किताबों से वोह मसाइल चुन चुन कर बहारे शरीअ़त में शामिल किये, जिन पर फ़तवा दिया जाता है नीज़ सेकड़ों आयात और हज़ारों अह़ादीस भी मौज़ूअ़ की मुनासबत से दर्ज कीं। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तह़्दीसे ने'मत के त़ौर पर ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं : **अगर औरंगज़ेब आ़लमगीर बादशाह इस किताब (या'नी बहारे शरीअ़त) को देखते, तो मुझे सोने से तोलते।**

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मक़्सद येह था कि बर्रे सग़ीर के मुसलमान अपने दीन के मसाइल से बा आसानी आगाह हो जाएं। चुनान्चे, एक और मक़ाम पर तह़रीर फ़रमाते हैं : इस किताब में जहां तक मुमकिन हो सका येह कोशिश की गई है कि इ़बारत बहुत आसान हो कि समझने में दिक़्क़त (या'नी मुश्किल) न हो और कम इ़ल्म (ह़ज़रात) और औ़रतें और बच्चे भी इस से फ़ाइदा ह़ासिल कर सकें। फिर भी इ़ल्म बहुत मुश्किल चीज़ है, येह मुमकिन नहीं कि इ़ल्मी दुश्वारियां बिल्कुल जाती रहें, ज़रूर बहुत मवाक़ेअ़ ऐसे भी रहेंगे कि अहले इ़ल्म से समझने की ह़ाजत होगी, कम अज़ कम इतना नफ़्अ़ ज़रूर होगा कि इस का बयान उन्हें मुतनब्बेह (या'नी ख़बरदार) करेगा और न समझना, समझ वालों की त़रफ़ रुजूअ़ की तवज्जोह दिलाएगा।

बहारे शरीअ़त के इस अ़ज़ीम इल्मी ज़ख़ीरे को मुफ़ीद से मुफ़ीद तर बनाने के लिये दा'वते इस्लामी की मजलिस अल मदीनतुल इल्मिय्या के मदनी उ़लमा ने तख़रीज व तस्हील और कहीं कहीं ह़वाशी लिखने की भी कोशिश फ़रमाई है और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! मुकम्मल किताब मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ हो कर मन्ज़रे आ़म पर भी आ चुकी है। सादा ऐडीशन तीन जिल्दों में और रंगीन जहेज़ ऐडीशन छ जिल्दों में मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल किया जा सकता है। इस के इ़लावा दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislami.net से इस किताब को रीड (या'नी पढ़ा) भी जा सकता है, डाउन लोड (Download) भी किया जा सकता है और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है।

येह किताब 27 साल में लिखी गई, याद रहे कि 27 साल का येह मत़लब नहीं कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इन सालों में, हर वक़्त तस्नीफ़ में मश्ग़ूल रहे बल्कि छुट्टियों में दीगर कामों से वक़्त बचा कर येह किताब लिखते, जिस के सबब इस की तक्मील में ख़ासी ताख़ीर हो गई। चुनान्चे, आप (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) बहारे शरीअ़त के ह़िस्सा 17 के इख़्तिताम पर लिखते हैं : इस की तस्नीफ़ में उ़मूमन येही हुवा कि माहे रमज़ानुल मुबारक की ता'त़ीलात (या'नी छुट्टियों) में जो कुछ दूसरे कामों से वक़्त बचता, उस में कुछ लिख लिया जाता। (तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 44 ता 47, बित्तग़य्युर क़लील)

रिसाला **''तज़किरए सदरुश्शरीआ़''** में है, जिस का ख़ुलासा येह है कि सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मसाइले शरइ़य्या को बहारे शरीअ़त के 20 ह़िस्सों में समेटना चाहते थे मगर मुकम्मल न कर सके और येह वसिय्यत फ़रमाई है कि अगर मेरी औलाद या शागिर्दों या उ़लमाए अहले सुन्नत में से कोई साह़िब इस का क़लील ह़िस्सा जो बाक़ी रह गया है, उस की तक्मील फ़रमाएं, तो मेरी ऐ़न ख़ुशी है। चुनान्चे, सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का ख़्वाब शर्मिन्दए ता'बीर (या'नी पूरा) हुवा और उस के बक़िय्या तीन ह़िस्से भी छप कर मन्ज़रे आ़म पर आ चुके। (तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 48)

सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पीरो मुर्शिद या'नी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बहारे शरीअ़त के जब दूसरे, तीसरे और चौथे ह़िस्से का मुत़ालआ़ फ़रमाया तो चन्द ता'रीफ़ी कलिमात लिखने के बा'द तह़रीर फ़रमाया कि आज कल ऐसी किताब की ज़रूरत थी कि अ़वामी भाई आसान उर्दू में सह़ीह़ मस्अले पाएं।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, दुवुम, 1 / 414)

आप की तस्नीफ़ ने मुस्तग़नी हम को कर दिया
ग़ैर के आगे जबीने अहले सुन्नत ख़म नहीं
हर त़रफ़ इल्मो हुनर का आप से दरया बहा
आप का एह़सान ऐ सदरुश्शरीआ़ कम नहीं

(माह नामा अश्रफ़िय्या, सदरुश्शरीआ़ नम्बर, स. 288)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! सुना आप ने कि ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मुबारक दिल में दीने इस्लाम की ख़िदमत, उम्मत के लिये आसानी और मुसलमानों की शरई रहनुमाई का जज़्बा किस क़दर कूट कूट कर भरा हुवा था कि वोह मसाइले शरइ़य्या कि जो बड़ी बड़ी अ़रबी किताबों में पोशीदा और आ़म मुसलमानों बल्कि ख़वास तक की पहुंच से बहुत दूर थे, बड़े बड़े उ़लमा बत़ौरे दलील जिन्हें अपने फ़तावाजात की ज़ीनत बनाते थे, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने लाख मस्रूफ़ियात के बा वुजूद अपनी ज़िन्दगी के क़ीमती अवक़ात ढेरों ढेर ज़रूरी मसाइल को इकठ्ठा कर के किताबी शक्ल देने की जिद्दो जहद में वक़्फ़ फ़रमा दिये। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के इस ह़ैरत अंगेज़ और क़ाबिले रश्क कारनामे ने न सिर्फ़ इस्लाम और सुन्नियत का सर फ़ख़्र से बुलन्द कर दिया बल्कि शरीअ़ते मुत़ह्हरा और बुज़ुर्गाने दीन के फ़ैज़ान को पूरी दुन्या में आ़म कर के प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत पर वोह अ़ज़ीम एह़सान फ़रमाया है कि जिस का

बदला कभी भी नहीं चुकाया जा सकता । इस क़दर थोड़े अ़र्से में इतनी अ़ज़ीमुश्शान दीनी ख़िदमत सर अन्जाम देने पर येही कहा जा सकता है कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का शुमार उन ख़ुश क़िस्मत हस्तियों में होता था कि जिन के सरों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने दीन की समझ का ताज सजा कर मज़हबे इस्लाम की ख़िदमत के लिये चुन लिया था । चुनान्चे, मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ یُّرِدِ اللّٰہُ بِہٖ خَیْرًا یُّفَقِّھْہُ فِی الدِّیْنِ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है, उस को दीन की समझ अ़त़ा फ़रमाता है । (بخاری، کتاب العلم، باب من یرد اللہ بہ خیرا... الخ، حدیث: ۷۱، ۱/۴۳)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : या'नी उसे दीनी इ़ल्म, दीनी समझ और दानाई बख़्शता है । इस ह़दीस से दो मस्अले साबित हुवे, एक येह कि कुरआनो ह़दीस के तर्जमे और अल्फ़ाज़ रट लेना इ़ल्मे दीन नहीं बल्कि उन का समझना इ़ल्मे दीन है । येही मुश्किल है । इसी के लिये फ़ुक़हाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام की तक़्लीद की जाती है । इसी वज्ह से तमाम मुफ़स्सिरीन व मुह़द्दिसीन, अइम्मए मुज्तहिदीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के मुक़ल्लिद हुवे और ह़दीस की समझ बूझ पर नाज़ करने वाले न हुवे । दूसरे येह कि कुरआनो ह़दीस का इ़ल्म कमाल नहीं बल्कि उन का समझना कमाल है । इ़ल्मे दीन वोह है जिस की ज़बान पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान हो और दिल में उन का फ़ैज़ान हो, फ़रमान के साथ साथ फ़ैज़ान भी ज़रूरी है, जैसे बिजली की फ़िटिंग के साथ साथ पावर ज़रूरी है ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 187, मुल्तक़त़न व बित्तग़य्युर क़लील)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की सीरत पर सरसरी नज़र दौड़ाएं तो येह ह़क़ीक़त रोज़े रौशन की त़रह़ हम पर वाज़ेह़ हो जाएगी कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के शबो रोज़, दीन और कुरआनो ह़दीस की ख़िदमत और मस्लके आ'ला ह़ज़रत को फैलाने में बसर हुवे नीज़

इस्लाम की सर बुलन्दी और उम्मत की ख़ैर ख़्वाही आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मक़ासिद में शामिल रही, इसी मदनी जज़्बे ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को इस बात पर उभारा कि मुसलमानों के हाथों में **अल्लाह** तआ़ला के पाकीज़ा कलाम क़ुरआने करीम का कोई ऐसा तर्जमा होना चाहिये कि जिसे पढ़ने और समझने में किसी क़िस्म की दुश्वारी महसूस न हो, इस को पढ़ने और सुनने वाले के दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा और इश्के़ मुस्त़फ़ा का इज़ाफ़ा हो, जो ज़ाते बारी तआ़ला के तक़द्दुस, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शानो अ़ज़्मत और उन की नामूस की ह़िफ़ाज़त का ह़क़ीक़ी तरजमान नीज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام जैसी मुक़द्दस हस्तियों की अ़ज़्मत व रिफ़्अ़त और उन के मक़ामो मर्तबे का सच्चा मुह़ाफ़िज़ व पास्बान हो, लिहाज़ा ख़िदमते दीन और मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही के इस मुबारक जज़्बे के तह़्त सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने पीरो मुर्शिद और वक़्त के मुजद्दिद या'नी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में मुक़द्दस हस्तियों की नामूस का मुह़ाफ़िज़ तर्जमए क़ुरआन तह़रीर फ़रमाने की दरख़ास्त पेश कर दी। चुनान्चे,

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**तज़्किरए सदरुश्शरीआ़**" के सफ़ह़ा नम्बर 17 और 18 पर तर्जमए क़ुरआन के तअ़ल्लुक़ से सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की दीनी ख़िदमात का तज़्किरा करते हुवे तह़रीर फ़रमाते हैं : सह़ीह़ और अग़्लात़ से पाक अह़ादीसे नबविय्या व अक़्वाले अइम्मा के मुत़ाबिक़ एक तर्जमा की ज़रूरत महसूस करते हुवे आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने तर्जमए क़ुरआने पाक के लिये आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाहे अ़ज़्मत में दरख़ास्त पेश की, तो इरशाद फ़रमाया : येह तो बहुत ज़रूरी है मगर छपने की क्या सूरत होगी ?

उस की त़बाअ़त (या'नी उसे छापने) का कौन एहतिमाम करेगा ? बा वुज़ू कॉपियों को लिखना, बा वुज़ू कॉपियों और हुरूफ़ों को दुरुस्त करना और दुरुस्ती भी ऐसी हो कि ए'राब, नुक़्ते़ या अ़लामतों की भी ग़लती न रह जाए, फिर येह सब चीज़ें हो जाने के बा'द सब से बड़ी मुश्किल तो येह है कि प्रेस (Press) में हर वक़्त बा वुज़ू रहे, बिग़ैर वुज़ू न पथ्थर को छुए और न काटे, पथ्थर काटने में भी एह़तियात़ की जाए और छपने में जो जोड़ियां निकली हैं, उन को भी बहुत एह़तियात़ से रखा जाए । आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अ़र्ज़ की : اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो बातें ज़रूरी हैं, उन को पूरी करने की कोशिश की जाएगी, बिल फ़र्ज़ ! मान लिया जाए कि हम से ऐसा न हो सका तो जब एक चीज़ मौजूद है तो हो सकता है आइन्दा कोई शख़्स इस के छपने का इन्तिज़ाम करे और मख़्लूक़े ख़ुदा को फ़ाइदा पहुंचाने में कोशिश करे और अगर इस वक़्त येह काम न हो सका, तो आइन्दा इस के न होने का हम को बड़ा अफ़्सोस होगा । आप की इस गुज़ारिश के बा'द तर्जमा का काम शुरूअ़ कर दिया गया । بِحَمْدِاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की नेक कोशिशों से ख़ातिर ख़्वाह काम्याबी हुई और आज मुसलमानों की कसीर ता'दाद, मुजद्दिदे आ'ज़म, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के लिखे हुवे कुरआने पाक के सह़ीह़ तर्जमा "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान**" से मुस्तफ़ीद हो कर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (या'नी सदरुश्शरीआ़) की एह़सान मन्द है और اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह सिलसिला क़ियामत तक जारी रहेगा ।

गर अहले चमन फ़ख़्र करें इस पे बजा है
अमजद था गुलाबे चमने दानिशो ह़िक्मत

(तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 17 ता 19)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने कि सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुसलमानों को फ़ैज़ाने कुरआन से सैराब करने और दीने मतीन की सलामती बर क़रार रखने के लिये कैसी कैसी कुरबानियां दी हैं, इस आ़लीशान कारनामे की बदौलत आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुतअ़ल्लिक़ येह कहना बिल्कुल दुरुस्त होगा कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ात मुसलमानों के लिय

किसी ने'मते उ़ज़्मा से कम नहीं थी क्यूंकि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मुसल्सल कोशिशों ही का तो नतीजा था कि आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जैसी मस्रूफ़ तरीन शख़्सिय्यत को आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने तर्जमए कुरआन के लिये क़ाइल कर लिया था और कुरबान जाइये आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बहुत सी दीनी मस्रूफ़ियात के बा वुजूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पाकीज़ा कलाम की ख़िदमत, मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही और अपने लाडले ख़लीफ़ा की दिलजूई करते हुवे अपनी क़ीमती मस्रूफ़ियात में से वक़्त निकाल कर इस काम के लिये आमादगी का इज़्हार फ़रमाया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की करम नवाज़ी, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तवज्जोहे ख़ास और सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मेहरबानी से तारीख़ का वोह उ़म्दा तरीन तर्जमए कुरआन बनाम "**कन्ज़ुल ईमान**" हम तक पहुंचा कि जिस पर हमारी आने वाली नस्लों को भी फ़ख़्र रहेगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "मदनी क़ाफ़िला"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के रूह़ानी फ़ुयूज़ो बरकात से माला माल होने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रह कर ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये। ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से माहाना एक मदनी काम "**मदनी क़ाफ़िला**" भी है। मदनी क़ाफ़िलों का एक मक़्सद मसाजिद की आबाद कारी भी है और मसाजिद को आबाद करने वालों से मुतअ़ल्लिक़ ह़दीसे पाक में फ़रमाया गया है कि बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घरों को आबाद करने वाले ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वाले हैं। (معجم اوسط، ۲/۵۸، رقم: ۲۵۰۲)

आइये ! तरग़ीब के लिये मदनी क़ाफ़िले की एक मदनी बहार सुनते हैं। चुनान्चे,

दिल का मरीज़ ठीक हो गया !

बाबुल मदीना (कराची) के एक इस्लामी भाई के दिल की दो नालियां बन्द थीं, डॉक्टर ने ऐन्जियोगिराफ़ी करवाने का मश्वरा दिया । एक दिन एक इस्लामी भाई ने उन्हें सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कर के वहां दुआ़ मांगने की तरग़ीब दिलाई । चुनान्चे, वोह 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बन गए, वापसी पर जब टेस्ट करवाए गए, तो तमाम रिपोर्टें दुरुस्त थीं, डॉक्टर ने हैरत से पूछा : आख़िर येह कैसे हुवा ? जवाब दिया : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कर के दुआ़ करने की बरकत से मुझे दिल के मोह्लिक मरज़ से नजात मिल गई ।

है शिफ़ा ही शिफ़ा, मरहबा ! मरहबा ! आ के ख़ुद देख लें, क़ाफ़िले में चलो
दिल में गर दर्द हो, डर से रुख़ ज़र्द हो पाओगे फ़रहतें क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 674)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बिला शुबा सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़िन्दगी हमारे लिये एक बेहतरीन आईडियल है क्यूंकि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का कोई लम्हा भी दीन और सुन्नतों की ख़िदमत, इ़ल्मे दीन की इशाअ़त और इस्लाम की सर बुलन्दी की कोशिशों से ख़ाली नहीं गुज़रता था, इस के साथ साथ **अल्लाह** तआ़ला ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वक़्त और क़लम मे बहुत बरकत अ़त़ा फ़रमाई थी, लिहाज़ा येही सबब था कि पूरा पूरा दिन नेकी के कामों में मस्रूफ़ रहने के बा वुजूद भी आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ चाक़ो चौबन्द रहते थे । याद रहे ! आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ किसी लालच में आ कर येह काम सर अन्जाम नहीं देते थे बल्कि सिर्फ़ व सिर्फ़ रिज़ाए इलाही ही आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पेशे नज़र हुवा करती थी । चुनान्चे, नमाज़े फ़ज्र के बा'द से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के दीनी मा'मूलात का आग़ाज़ होता तो रात गए तक जारी व सारी रहता, ह़त्ता कि आराम करते करते रात के दो बज जाते ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की इन्हीं क़ाबिले क़द्र ख़िदमात के सिले में **अल्लाह** तआ़ला ने आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को उस मक़ामो मर्तबे से नवाज़ा कि आज आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के नोके क़लम से तह़रीर कर्दा तसानीफ़, ख़ुसूसन **"बहारे शरीअ़त"** के फ़ैज़ान से अ़वाम व ख़वास की एक कसीर ता'दाद फ़ैज़याब हो रही है नीज़ बिरादरे आ'ला ह़ज़रत नन्हे मियां मौलाना मुह़म्मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ख़िदमते दीन के जज़्बे से इस क़दर मुतअस्सिर थे कि ख़ुश हो कर सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की शाने आ़लीशान में येह क़ाबिले तह़्सीन तारीख़ी जुम्ला इरशाद फ़रमाया : **"मौलाना अमजद अ़ली तो काम की मशीन हैं और वोह भी ऐसी मशीन जो कभी फ़ेल न हो ।"**

आइये ! अब सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मस्रूफ़ तरीन मदनी जदवल और मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़ में आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मस्रूफ़ियात की चन्द झल्कियां सुनते हैं ताकि हमारे अन्दर भी दीनी कामों में ह़िस्सा लेने की कुढ़न पैदा हो । चुनान्चे,

रोज़ाना का जदवल

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपने रिसाले **"तज़किरए सदरुश्शरीआ़"** में नक़्ल फ़रमाते हैं : सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का रोज़ाना का जदवल कुछ इस त़रह़ था कि बा'दे नमाज़े फ़ज्र ज़रूरी वज़ाइफ़ व तिलावते कुरआन के बा'द घंटा, डेढ़ घंटा प्रेस का काम अन्जाम देते । फिर फ़ौरन मद्रसा जा कर तद्रीस फ़रमाते । दोपहर के खाने के बा'द प्रेस का काम अन्जाम देते । नमाज़े ज़ोहर के बा'द अ़स्र तक फिर मद्रसा में ता'लीम देते । बा'दे नमाज़े अ़स्र, मग़रिब तक आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में निशस्त फ़रमाते । बा'दे मग़रिब, इशा तक और इशा के बा'द से बारह बजे तक आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में फ़तवा नवेसी (या'नी फ़तवा लिखने) का काम अन्जाम देते ।

इस के बा'द घर वापसी होती और कुछ तह़रीरी काम करने के बा'द तक़रीबन दो बजे शब में आराम फ़रमाते । आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ज़मानए ह़यात के आख़िर तक या'नी कमो बेश दस बरस तक रोज़ मर्रा का येही मा'मूल रहा, सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की इस सख़्त मेह़नत और अ़ज़्मो इस्तिक़्लाल से उस दौर के बड़े बड़े उ़लमा ह़ैरान थे । (तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 16, 17)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बरेली शरीफ़ में सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ज़िम्मे दो मुस्तक़िल काम थे, एक मद्रसा में तद्रीस (या'नी पढ़ाना), दूसरे प्रेस का काम, किताबों की रवानगी, ख़ुतूत़ के जवाब, आमद व ख़र्च के ह़िसाब, येह सारे काम तन्हा अन्जाम दिया करते थे । इन कामों के इलावा फ़तवों की नक़्ल और आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में रह कर, फ़तवा लिखना, येह काम भी मुस्तक़िल त़ौर पर अन्जाम देते थे । फ़िर शहर व बैरूने शहर के अक्सर तब्लीग़े दीन के जल्सों में भी शिर्कत फ़रमाते थे ।

(तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 15)

मुसन्निफ़ भी, मुक़र्रिर भी, फ़क़ीहे अ़स्रे ह़ाज़िर भी
वोह अपने आप में था इक इदारा इ़ल्मो ह़िक्मत का

(माह नामा अश्रफ़िय्या, सदरुश्शरीआ़ नम्बर, स. 286)

शे'र की वज़ाह़त : इस शे'र का मत़लब येह है कि ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक ही वक़्त में मुसन्निफ़ भी थे, या'नी किताबें भी लिखते, बयान भी फ़रमाते और अपने वक़्त के बहुत बड़े आ़लिम भी थे । आप अपनी ज़ाते पाक में इ़ल्म का इदारा थे । سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने कि सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه दिन भर में कितने सारे कामों को अह़सन त़रीक़े से बा आसानी सर अन्जाम दे लिया करते थे । ज़रा सोचिये कि अगर हम में से किसी को इतनी सारी ज़िम्मेदारियां सोंप दी जाएं, तो अपनी दीगर मस्रूफ़ियात का सोच कर शायद हम येह ज़िम्मेदारियां लेने से मा'ज़िरत कर लें क्यूंकि क़लील वक़्त में कसीर उमूर को ब हुस्न व ख़ूबी सर अन्जाम देना हर किसी के बस की बात नहीं और फिर इन तमाम तर मस्रूफ़ियात के बा वुजूद आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ख़ौफ़े ख़ुदा और इत्तिबाए़ शरीअ़त के जज़्बे का येह आ़लम था कि सारा दिन मुख़्तलिफ़ दीनी कामों में मस्रूफ़ रहने के बा वुजूद भी नमाज़ की अदाएगी से ग़ाफ़िल न होते थे । नमाज़ से आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की मह़ब्बत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि शदीद बीमारी की ह़ालत में भी आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه नमाज़ तर्क करना गवारा न फ़रमाते ह़त्ता कि एक बार बेहोशी के सबब नमाज़ का वक़्त जाता रहा, आंख खुलने पर जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को पता चला कि नमाज़ का वक़्त तो निकल चुका या'नी नमाज़ क़ज़ा हो गई, तो इस त़रह़ ग़ैर इख़्तियारी त़ौर पर नमाज़ क़ज़ा हो जाने पर भी आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ह़ालत इस क़दर ग़ैर हो गई कि बे साख़्ता आंखों से आंसूं रवां हो गए । जैसा कि :

नमाज़ की पाबन्दी

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **''तज़किरए सदरुश्शरीआ़''** में नक़्ल फ़रमाते हैं : सफ़र हो या ह़ज़र, सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कभी नमाज़ क़ज़ा न फ़रमाते । शदीद से शदीद बीमारी में भी नमाज़ अदा फ़रमाते । अजमेर शरीफ़ में एक बार शदीद बुख़ार में मुब्तला हो गए यहां तक कि ग़शी त़ारी हो गई । दोपहर से पहले ग़शी त़ारी हुई और अ़स्र तक रही । ह़ाफ़िज़े मिल्लत, मौलाना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़िदमत के लिये ह़ाज़िर थे, सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा

رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को जब होश आया तो सब से पहले येह दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या वक़्त है ? ज़ोहर का वक़्त है या नहीं ? ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अ़र्ज़ की, कि इतने बज गए हैं, अब ज़ोहर का वक़्त नहीं । येह सुन कर इतनी अज़िय्यत पहुंची कि आंख से आंसू जारी हो गए । ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दरयाफ़्त किया : क्या हुज़ूर को कहीं दर्द है, कहीं तक्लीफ़ है ? फ़रमाया : (बहुत बड़ी) तक्लीफ़ है कि ज़ोहर की नमाज़ क़ज़ा हो गई । ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर (आप तो) बेहोश थे । बेहोशी के आ़लम में नमाज़ क़ज़ा होने पर कोई मुआख़ज़ा (या'नी पूछ गछ) नहीं । फ़रमाया : आप मुआख़ज़ा की बात कर रहे हैं, वक़्ते मुक़र्ररा पर दरबारे इलाही की एक ह़ाज़िरी से तो मह़रूम रहा ।

(तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 30)

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त
हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़त़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 102)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो ह़िकायत हम ने अभी सुनी इस में ख़ुसूसन उन लोगों के लिये दर्से इ़ब्रत है कि जो सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की अ़ज़्मतों के गुन गाते और आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की अ़क़ीदतो मह़ब्बत का दम भरते हैं मगर अफ़्सोस कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जैसी मदनी सोच अपनाने से क़ासिर होते हैं क्यूंकि ऐसों के क़ीमती अय्याम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बताए हुवे कामों में ख़र्च होने के बजाए घंटों घंटों ताश, लुडो, पतंग बाज़ी, किर्केट (Cricket), फ़ुट बॉल और वीडियो गेम्ज़ खेलने या देखने, चौराहों या होटलों वग़ैरा पर बैठ कर गप्पे हांकने, फ़िल्में ड्रामे देखने, मूसीक़ी सुनने या फिर मोबाइल, कम्प्यूटर और इन्टरनेट, सोशल मीडिया (Social Media) के फ़ुज़ूल इस्ति'माल की नज़्र हो जाते हैं । आइये चन्द वोह उमूर जिन से वक़्त ज़ाएअ़ होता है उसे सुनते हैं :

वक़्त ज़ाएअ़ करने के चन्द उमूर

❖ टेलीफ़ोन (मोबाइल), इन्टरनेट, सोशल मीडिया (Social Media) का ग़ैर ज़रूरी इस्ति'माल ❖ लोगों से ग़ैर ज़रूरी मेल जोल ❖ फ़ुज़ूल गुफ़्तगू (या'नी जिस का न कोई दीनी फ़ाइदा हो न दुन्यवी) में लगे रहना ❖ रोज़ मर्रा के मा'मूलात का जाइज़ा न लेना ❖ ख़ल्वत नशीनी से इजतिनाब (या'नी अलग थलग रहने से बचना) ❖ ज़ियादा सोना ❖ जान बूझ कर सुस्ती करते हुवे मुआ़मलात में ताख़ीर करना ❖ किसी से कुछ सीख कर या औरों के तजरिबात से फ़ाइदा उठाने के बजाए हर चीज़ का ख़ुद तजरिबा करना (क्यूंकि इस त़रह़ वक़्त काफ़ी सर्फ़ होता है, जब कि किसी के तजरिबात से फ़ाइदा उठाते हुवे वक़्त की बचत की जा सकती है) ❖ त़ै शुदा वक़्त पर काम ख़त्म न करना ❖ वक़्त होने के बा वुजूद भी वक़्त की कमी का रोना रोते रहना ❖ बुरी दोस्ती व बुरी सोह़बत में रह कर वक़्त को बरबाद करना वग़ैरा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस त़रह़ के मुआ़मलात में मश्ग़ूल रहने वाली ग़ालिब अक्सरिय्यत नमाज़ जैसे अहम फ़र्ज़ को भी مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ तर्क करने में किसी क़िस्म की शर्मिन्दगी महसूस नहीं करती। याद रखिये ! बिला वज्हे शरई नमाज़ न पढ़ना, गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। अह़ादीसे मुबारका में नमाज़ तर्क करने की सख़्त तरीन वईदें बयान की गई हैं। आइये ! बत़ौरे इ़ब्रत तर्के नमाज़ से मुतअ़ल्लिक़ एक ह़दीसे पाक और इस की शर्ह़ सुनते हैं। सुनिये और ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़िये। चुनान्चे,

नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जिस शख़्स ने पांच (फ़र्ज़) नमाज़ों की ह़िफ़ाज़त की, उस के लिये नमाज़ क़ियामत के दिन नूर, दलील और नजात होगी और जो इस की ह़िफ़ाज़त न करे, उस के लिये बरोज़े क़ियामत न नूर होगा और न दलील और न ही नजात और वोह शख़्स क़ियामत के दिन फ़िरऔ़न, क़ारून, हामान और उबय बिन ख़लफ़ के साथ होगा। (جمع الجوامع، حرف الخاء، الخاء مع المیم، ۴/۲۵۹، حدیث: ۱۱۶۶۱)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान कर्दा ह़दीसे पाक की शर्ह़ करते हुवे ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "**जो शख़्स नमाज़ की ह़िफ़ाज़त करे**" की वज़ाह़त में इरशाद फ़रमाते हैं : इस त़रह़ कि नमाज़ हमेशा पढ़े, सह़ीह़ पढ़े, दिल लगा कर इख़्लास के साथ अदा किया करे। (मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "**उस के लिये नमाज़ क़ियामत के दिन नूर, दलील और नजात होगी**" की शर्ह़ में फ़रमाते हैं) क़ियामत में क़ब्र भी दाख़िल है क्यूंकि मौत भी क़ियामत ही है। मत़लब येह है कि नमाज़ क़ब्र में और पुल सिरात़ पर रौशनी होगी कि सज्दा गाह तेज़ बेटरी की त़रह़ चमकेगी और नमाज़ उस के मोमिन बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पहचानने वाला होने की दलील होगी नीज़ इस नमाज़ के ज़रीए़ से उसे हर जगह नजात मिलेगी क्यूंकि क़ियामत में पहला सुवाल नमाज़ का होगा, अगर उस में बन्दा कामयाब हो गया, तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आगे भी कामयाब होगा। (ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "**वोह शख़्स क़ियामत के दिन फ़िरऔ़न, क़ारून, हामान और उबय बिन ख़लफ़ के साथ होगा**" की वज़ाह़त करते हुवे मुफ़्ती साह़िब फ़रमाते हैं कि) उबय बिन ख़लफ़ वोह मुश्रिक है, जिसे नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उ़ह़ुद के दिन अपने हाथ से क़त्ल फ़रमाया। इस में इशारतन फ़रमाया गया कि बे नमाज़ी का ह़श्र उन काफ़िरों के साथ होगा और नमाज़ी मोमिन का ह़श्र اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नबियों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, सिद्दीक़ों, शुहदा और सालिह़ीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के साथ होगा। इस से येह लाज़िम नहीं आता कि बे नमाज़ी काफ़िर हो जाए और नमाज़ी नबी, बल्कि बे नमाज़ी को क़ियामत में उन कुफ़्फ़ार के साथ खड़ा किया जाएगा, जैसे किसी शरीफ़ आदमी को ज़लील के साथ बिठा देना, उस की ज़िल्लत है। ख़याल रहे कि क़ियामत में हर शख़्स का ह़श्र उस के साथ होगा, जिस से उसे दुन्या में मह़ब्बत थी और जिस की त़रह़ वोह काम करता था। बे नमाज़ी (नमाज़ न पढ़ कर) चूंकि काफ़िरों के से काम करता है, लिहाज़ा उस का ह़श्र भी उन के साथ होगा, नमाज़ी चूंकि अम्बियाए किराम

عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और सिद्दीक़ीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की नक़्ल करता है, लिहाज़ा उस का ह़श्र उन्ही के साथ होगा, इसी लिये कहते हैं कि अच्छों की नक़्ल भी अच्छी और बुरों की नक़्ल भी बुरी।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 367, 368, मुल्तक़त़न व बित्तग़य्युर क़लील)

बा'ज़ उ़लमाए किराम ने इरशाद फ़रमाया : नमाज़ तर्क करने वाला इन चार (या'नी फ़िरऔ़न, क़ारून, हामान और उबय बिन ख़लफ़) के साथ इस लिये उठाया जाएगा कि वोह अपने माल, हुक्मरानी, वज़ारत और तिजारत के बाइ़स नमाज़ को छोड़ेगा। अगर उस ने अपने माल में मस्रूफ़ होने के सबब नमाज़ छोड़ी, तो उस का ह़श्र क़ारून के साथ होगा, हुक्मरानी के सबब नमाज़ छोड़ी, तो उस का ह़श्र फ़िरऔ़न के साथ होगा, वज़ारत के सबब नमाज़ छोड़ी, तो उस का ह़श्र (फ़िरऔ़न के वज़ीर) हामान के साथ होगा और अगर तिजारत के सबब नमाज़ छोड़ी, तो उस का ह़श्र मक्कए मुकर्रमा के बहुत बड़े काफ़िर ताजिर, उबय बिन ख़लफ़ के साथ होगा।

(الزواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة السابعة السبعون: تعمد تاخير الصلاة ... الخ، ۱/ ۲۸۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की दीनी ख़िदमात और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सीरत व किरदार से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का तह़रीरी रिसाला "**तज़किरए सदरुश्शरीआ़**" का मुत़ालआ़ फ़रमाइये नीज़ **सदरुश्शरीआ़ की दीनी ख़िदमात** का सह़ीह़ अन्दाज़ा तब होगा जब हम बहारे शरीअ़त का मुत़ालआ़ करेंगे। बहारे शरीअ़त में क्या है, सुनिये।

बहारे शरीअ़त का तआ़रुफ़

❖ **बहारे शरीअ़त**, सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा, मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इ़ल्मी कारनामों में सरे फ़ेह्रिस्त है।

❖ **बहारे शरीअ़त**, बहुत सारे उ़लूम का मजमूआ़ (Encyclopedia) है । ❖ **बहारे शरीअ़त**, उर्दू ज़बान में अ़क़ाइद से ले कर मुआ़मलात तक के तमाम ज़रूरी मसाइल का इह़ाता़ किये हुवे है । ❖ बहारे शरीअ़त में सेंक्ड़ों आयात और हज़ारों अह़ादीस भी मौज़ूअ़ की मुनासबत से दर्ज हैं । ❖ **बहारे शरीअ़त** में ह़त्तल इमकान वोह अक़्वाल बयान किये गए हैं जिन पर फ़तवा दिया जाता है । ❖ **बहारे शरीअ़त**, पाक व हिन्द के मुसलमानों पर सदरुश्शरीआ़ का बहुत बड़ा एह़सान है कि कई फ़िक़्ही मसाइल को एक मक़ाम पर जम्अ़ कर दिया गया है । ❖ **बहारे शरीअ़त** में बे शुमार मसाइल ऐसे भी हैं जिन का सीखना हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन पर फ़र्ज़े ऐन है । ❖ **बहारे शरीअ़त** के ह़वाले से सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "उर्दू ज़बान में अब तक कोई ऐसी किताब तस्नीफ़ नहीं हुई, जो सह़ीह़ मसाइल पर मुश्तमिल हो और ज़रूरिय्यात के लिये काफ़ी हो ।" ❖ **बहारे शरीअ़त** में ह़त्तल वस्अ़ येह कोशिश की गई है कि इबारत बहुत आसान हो कि समझने में दिक़्क़त न हो और कम इ़ल्म और औ़रतें और बच्चे भी इस से फ़ाइदा ह़ासिल कर सकें । ❖ **बहारे शरीअ़त** में जा ब जा फ़र्ज़ उ़लूम के साथ साथ, क़ुरआनी आयात के अन्वार, अह़ादीसे त़य्यिबा के गुलज़ार और हर ह़िस्से में फैले हुवे बे शुमार ख़ुश्बू दार शरई मसाइल अपनी महक लुटा रहे हैं । ❖ **बहारे शरीअ़त** को पढ़ने से न सिर्फ़ दिलो दिमाग़ रौशन होते हैं बल्कि कई मुआ़मलात में शरई रहनुमाई भी नसीब होती है । ❖ **बहारे शरीअ़त** सादा ऐडीशन तीन जिल्दों में और रंगीन जहेज़ ऐडीशन छ जिल्दों में मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल किया जा सकता है । ❖ बहारे शरीअ़त को दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislami.net से रीड (या'नी पढ़ा) भी जा सकता है, डाउन लोड (Download) भी किया जा सकता है और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सच्चे पैरो कार व अ़क़ीदत मन्द और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की दीनी ख़िदमात को इन्तिहाई क़द्र की निगाह से देखते हैं, येही वज्ह है कि आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का ख़ुद भी दीनी कामों में मश्ग़ूल रहने का मा'मूल है, जब कि अपने मुरीदीन व मुतअ़ल्लिक़ीन में अपने सुन्नतों भरे बयानात और मदनी मुज़ाकरों के ज़रीए ख़िदमते दीन के लिये उन्हें भी वक़्तन फ़–वक़्तन मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लेने की तरग़ीब दिलाते रहते हैं और इसी मक़्सद की तक्मील के लिये आप ने इस्लामी भाइयों के लिये 72 मदनी इन्आ़मात में इसी त़रह़ का एक सुवाल भी शामिल फ़रमाया है। चुनान्चे, **मदनी इन्आ़म नम्बर 23** में फ़रमाते हैं कि क्या आज आप ने दा'वते इस्लामी के मदनी कामों (मसलन इनफ़िरादी कोशिश, दर्सो बयान, मद्रसतुल मदीना बालिग़ान वग़ैरा) पर कम अज़ कम दो घंटे सर्फ़ किये ?

मदनी कामों के लिये कम अज़ कम दो घंटे देने का त़रीक़ा येह है कि अपने निगरान की मुशावरत से उन 2 घंटों का बा क़ाइ़दा जदवल बना लिया जाए, जिस में ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में अ़मली त़ौर पर शिर्कत हो। मसलन मदनी दर्स, मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पढ़ना या पढ़ाना, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल व मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र के लिये इनफ़िरादी कोशिश करना वग़ैरा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के तुफ़ैल हमें भी मदनी कामों में ह़िस्सा लेने की कुढ़न और दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में इस्तिक़ामत नसीब फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुश नसीब होते हैं वोह लोग जो दीनी ए'तिबार से शोहरत की बुलन्दियों पर होने के बा वुजूद भी अपने पीरो मुर्शिद के दामन को नहीं छोड़ते और आख़िरी दम तक वफ़ा शिआ़र मुरीदों की त़रह़ **''यक दर गीरो मोहूकम गीर** या'नी एक दरवाज़ा पकड़ और मज़बूत़ी से पकड़'' के मुत़ाबिक़ मुर्शिद के हो कर रह जाते हैं, मुर्शिदे करीम ह़याते ज़ाहिरी से मुत्तसिफ़ हों या पर्दा फ़रमा चुके हों, दोनों सूरतों में उन की वफ़ा शिआ़री के मदनी जज़्बे में ज़र्रा बराबर भी कमी वाक़ेअ़ नहीं होती ह़त्ता कि पीरो मुर्शिद से निस्बत व तअ़ल्लुक़ रखने वाली चीज़ें भी उन्हें ह़द से ज़ियादा मह़बूब होती हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! सदरुश्शरीआ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का शुमार भी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के चहीते और बा वफ़ा मुरीदीन में होता था, जिन की क़ाबिलिय्यत पर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जैसी हस्ती को भी हमेशा नाज़ रहा । पीरो मुर्शिद से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मह़ब्बत व वफ़ादारी का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक लम्बे अ़र्से तक बरेली शरीफ़ में रिहाइश पज़ीर रहे ह़ालांकि अपनी मुख़्लिसाना दीनी ख़िदमात के सबब अ़वाम व ख़वास में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुन्फ़रिद ह़ैसिय्यत रखते थे, अगर चाहते तो उन के ज़रीए़ अपने लिये ढेर सारी दौलत व जाईदाद इकट्ठा कर सकते थे मगर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ग़ैरत ने ऐसा करना गवारा न किया, ह़त्ता कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने तो अपना कोई ज़ाती घर न बनाया बल्कि बरेली शरीफ़ में पीरो मुर्शिद के जल्वा फ़रमा होने के सबब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उसे अपना घर तसव्वुर कर लिया था । मुर्शिदे करीम की उल्फ़त में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस क़दर फ़ना हो चुके थे कि अगर कोई आप के इ़ल्मी कारनामों और सलाह़िय्यतों की ता'रीफ़ कर देता, तो ख़ुशी से फूले न समाने और उन कारनामों और सलाह़िय्यतों को अपना कमाल तसव्वुर करने के बजाए अपने पीरो मुर्शिद या'नी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का फ़ज़्लो करम समझते थे । चुनान्चे,

आस्तानए मुर्शिद से वफ़ा

एक मरतबा किसी साहिब ने ताजदारे अहले सुन्नत, मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द, शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, अ़ल्लामा मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सामने सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का तज़किरा फ़रमाया, तो मुफ़्तिये आ'जम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की चश्माने करम से आंसू बहने लगे और फ़रमाया कि सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपना कोई घर नहीं बनाया, बरेली ही को अपना घर समझा। वोह साह़िबे असर भी थे और कसीरुत्ता'दाद त़लबा के उस्ताज़ भी, वोह चाहते तो बा आसानी कोई ज़ाती दारुल उ़लूम ऐसा खोल लेते जिस पर वोह यक्ता व तन्हा (या'नी बिल्कुल अकेले) क़ाबिज़ रहते मगर उन के ख़ुलूस ने ऐसा नहीं करने दिया। चुनान्चे, दारुल उ़लूम मुईनिया उ़स्मानिया (अजमेर शरीफ़) में वहां के सदरुल मुदर्रिसीन हो कर जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पहुंचे और वहां के लोग आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के अन्दाज़े तद्रीस (या'नी पढ़ाने के अन्दाज़) से बहुत मुतअस्सिर हुवे, तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सामने उस का ज़िक्र आया कि आप की ता'लीम बहुत कामयाब होती नज़र आ रही है। येह मर्कज़ी दारुल उ़लूम सर बुलन्द होता जा रहा है। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : **''येह मुझ पर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का फ़ज़्लो करम है।''** (तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 23, 24)

अह़मद रज़ा ने जिस को दुआ़ में कहा मेरा
अमजद यक़ीनन मज्द में पक्का है आज भी
साबित किया है सदरुश्शरीआ़ ने बिल यक़ीन
अह़मद रज़ा की शम्अ़ फ़रोज़ां है आज भी

(आदाबे मुर्शिदे कामिल, स. 232)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत का क़ियाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़ैज़ाने नज़र से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ 15 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सिने 1421 हि. को तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़्त दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत का आग़ाज़ हुवा, ता दमे तह़रीर इस की 10 शाख़ें क़ाइम हैं। दुख़्यारी उम्मत की शरई रहनुमाई का सिलसिला जारी व सारी है, दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत में न सिर्फ़ मुलाक़ात की जा सकती है बल्कि तह़रीरी फ़तवा भी त़लब किया जा सकता है नीज़ दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislami.net पर दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत ऑन लाइन की सहूलत भी मौजूद है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ 100 फ़ीसद इस्लामी चेनल "**मदनी चेनल**" पर भी दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के सिलसिले इ़ल्मे दीन से माला माल क़ीमती मदनी फूल अपनी ख़ुश्बूएं लुटाते रहते हैं।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 315)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! हमारे मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इमामुल अम्बिया के मक़ाम पर फ़ाइज़ होने के बा वुजूद इस क़दर आ़जिज़ी व इन्केसारी वाले थे कि अपने घर के काम काज में भी बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लिया करते थे। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه इरशाद फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने घरेलू काम ख़ुद अपने दस्ते मुबारक से कर लिया करते थे। अपने ख़ादिमों के साथ बैठ कर खाना तनावुल फ़रमाते थे और घर के कामों में अपने ख़ादिमों की मदद फ़रमाया करते थे।

(الشفاء، فصل واما تواضعه، ۱/ ۱۳۲ مفهوماً)

हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام भी सुन्नतों पर अ़मल के शैदाई हुवा करते थे, लिहाज़ा सुन्नत पर अ़मल के जज़्बे के तह़्त येह ह़ज़रात घर के काम काज भी ख़ुशी ख़ुशी अपने हाथों से सर अन्जाम दे लिया करते थे। जैसा कि ह़ुज्जतुल इस्लाम, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया, एक ताबेई बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को देखा कि आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने एक दिरहम का गोश्त ख़रीदा और उसे अपनी चादर में उठा लिया, मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ अमीरल मोमिनीन ! लाइये मुझे दे दीजिये, मैं उठा कर ले चलूं। फ़रमाया : नहीं, अ़याल दार आदमी (या'नी बाल बच्चों वाले) को चाहिये कि वोह (अपना सामान) ख़ुद ही उठाए। (इह़याउल उ़लूम, 3 / 1050)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه भी चूंकि आ़शिक़े ख़ैरुल वरा और यादगारे अस्लाफ़ थे, लिहाज़ा शबो रोज़ मुसल्सल दीनी मशाग़िल में मुन्हमिक रहने के बा वुजूद आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इसी सुन्नत पर अ़मल करते हुवे घर के काम काज से आ़र (या'नी शर्म) मह़सूस न फ़रमाते बल्कि सुन्नत पर अ़मल की निय्यत से उन (कामों) को ब ख़ुशी अन्जाम देते नीज़ घर में तरकारियां (सब्ज़ियां) छिलते, काटते और दूसरे काम भी कर दिया करते थे।

(माह नामा अशरफ़िय्या, सदरुश्शरीआ़ नम्बर, स. 54, मुलख़्ख़सन, ब तक़द्दुम व तअख़्ख़ुर)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बद क़िस्मती से बा'ज़ लोग मस्रूफ़ियात का बहाना बना कर या वैसे ही घर के काम काज में ह़िस्सा लेने में शर्म मह़सूस करते, जब कि कुछ लोग इस काम को अपनी शान के ख़िलाफ़ तसव्वुर करते हैं, बाहर तो आ़जिज़ी व मिलन्सारी के पैकर बन जाते हैं, जब कि घर के अन्दर आते ही अपना रो'ब व दबदबा दिखाते और शेरे बब्बर की त़रह़ दहाड़ते हैं। बिल फ़र्ज़ ! कभी उन्हें घर के किसी काम की ज़िम्मेदारी सोंपने की कोशिश की जाती है। तो ग़ुस्से से लाल पीले हो जाते, मुंह बिगाड़ते और बुड़बुड़ाते हुवे उस काम को करने से साफ़ साफ़ इन्कार कर देते हैं। हम सब को चाहिये

कि हरगिज़ हरगिज़ घरेलू काम काज से जी न चुराएं बल्कि प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दीगर सुन्नतों के साथ साथ घरेलू काम करने वाली प्यारी प्यारी सुन्नत पर भी अ़मल किया करें।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज के बयान में हम ने सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की दीनी ख़िदमात से मुतअ़ल्लिक़ सुनने का शरफ़ ह़ासिल किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! दीने मतीन की ख़िदमत से सरशार इस अ़ज़ीम हस्ती ने 27 साल के अ़र्से में आयात व अह़ादीस से माला माल, कुतुबे फ़िक़्ह से चुन चुन कर फ़िक़्ही मसाइल को यक्जा कर के एक अ़ज़ीमुश्शान तस्नीफ़ बनाम "**बहारे शरीअ़त**" को मुरत्तब फ़रमाया, जब कि अपने पीरो मुर्शिद आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से तर्जमए कुरआन "**कन्ज़ुल ईमान**" लिखवाने का शरफ़ ह़ासिल किया। पीरो मुर्शिद से मह़ब्बत व वफ़ादारी का सुबूत देते हुवे आप ने ता दमे ह़यात शहरे मुर्शिद ही को अपनी रिहाइश गाह बनाए रखा। बहुत ज़ियादा मस्रूफ़ियत के बा वुजूद आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ह़ालते मरज़ में भी कभी नमाज़ को न छोड़ा नीज़ सुन्नत की अदाएगी की निय्यत से घर के काम काज भी ब ख़ुशी सर अन्जाम दिया करते थे। **अल्लाह** तआ़ला हमें भी सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जैसी मदनी सोच व जज़्बा अ़त़ा फ़रमाए ताकि हम भी ख़िदमते दीन के लिये कुढ़ने वाले, अपने पीरो मुर्शिद के सच्चे पक्के वफ़ादार और अपने घर के काम काज करने वाली प्यारी सुन्नत पर अ़मल करने वाले बन जाएं। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث: ۱۷۵)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

जूते पहनने की सुन्नतें और आदाब

आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले **"101 मदनी फूल"** से जूते पहनने की सुन्नतें और आदाब सुनते हैं। पहले दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा मुलाह़ज़ा हों :

❖ जूते ब कसरत इस्ति'माल करो कि आदमी जब तक जूते पहने होता है, गोया वोह सुवार होता है। (या'नी कम थकता है) (مُسلِم، ص۱۱۶۱، حدیث: ۲۰۹۶)

❖ जब तुम में से कोई जूते पहने तो दाईं (या'नी सीधी) जानिब से इब्तिदा करनी चाहिये और जब उतारे तो बाईं (या'नी उल्टी) जानिब से इब्तिदा करनी चाहिये ताकि दायां (या'नी सीधा) पाउं पहनने में अव्वल और उतारने में आख़िरी रहे। (بُخاری، ۴ / ۶۵، حدیث: ۵۸۵۵) नुज़्हतुल क़ारी में है : मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त हुक्म येह है कि पहले सीधा पाउं मस्जिद में रखे और जब मस्जिद से निकले तो पहले उल्टा पाउं निकाले। मस्जिद के दाख़िले के वक़्त इस ह़दीस पर अ़मल दुश्वार है। आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने इस का ह़ल येह इरशाद फ़रमाया है : जब मस्जिद में जाना हो तो पहले उल्टे पाउं को निकाल कर जूते पर रख लीजिये, फिर सीधे पाउं से जूता निकाल कर मस्जिद में दाख़िल हो और जब मस्जिद से बाहर हो तो उल्टा

पाउं निकाल कर जूते पर रख लीजिये, फिर सीधा पाउं निकाल कर सीधा जूता पहन लीजिये, फिर उल्टा पहन लीजिये । (नुज़्हतुल क़ारी, 5 / 530) ❖ जूते पहनने से पहले झाड़ लीजिये ताकि कीड़ा या कंकर वग़ैरा हो तो निकल जाए । ❖ किसी ने ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से कहा कि एक औ़रत (मर्दों की त़रह़) जूते पहनती है । उन्हों ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मर्दानी औ़रतों पर ला'नत फ़रमाई है । (ابو داود، ۴/ ۸۴، حدیث: ۴۰۹۹) सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : या'नी औ़रतों को मर्दाना जूता नहीं पहनना चाहिये बल्कि वोह तमाम बातें जिन में मर्दों और औ़रतों का इम्तियाज़ होता है, उन में हर एक को दूसरे की नक़्क़ाली करने से मुमानअ़त है, न मर्द औ़रत की चाल ढाल इख़्तियार करे, न औ़रत मर्द की ।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, 3 / 65, बित्तग़य्युर क़लील)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब **बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

तेरी सुन्नतों पे चल कर मेरी रूह़ जब निकल कर
चले तू गले लगाना मदनी मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब हासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ेगा, मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (القول البدیع، ص۲۶۱)

शाफ़ेए़ रोज़े जज़ा तुम पे करोड़ों दुरूद
दाफ़ेए़ जुम्ला बला तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 264)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج۶ص۱۸۵حدیث۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की नियतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बरेली सग़ीर की वोह अ़ज़ीम इल्मी व रूहानी शख़्सिय्यत और बे मिसाल मुजद्दिद हैं कि जो किसी तआ़रुफ़ के मोहताज नहीं, आप की तहरीरें ही आप के इल्मी मक़ाम का मुंह बोलता सुबूत हैं । आप के शानदार इल्मी कारनामों, ना'तिया शाइरी और इश्क़े रसूल की बदौलत अ़वाम व ख़वास की एक भारी ता'दाद आप की शैदाई और आप के क़सीदे पढ़ती नज़र आती है ।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का शुमार भी आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सच्चे मुहिब्बीन में होता है कि जिन्हें आ'ला हज़रत की शख़्सिय्यत और आप के इल्मी कारनामों ने गिर्वीदा (Fan) बना लिया । येही वज्ह है कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه, इमामे अहले सुन्नत, आ'ला हज़रत की ता'लीमात के मुत़ाबिक़ दीने मतीन की इन्तिहाई शानदार अन्दाज़ में ख़िदमात सर अन्जाम दे रहे हैं जिस का वाज़ेह सुबूत आप की पुर तासीर तहरीरें, सुन्नतों भरे बयानात और इल्मो हिक्मत से भरपूर मदनी मुज़ाकरे हैं कि जो तर्जमए क़ुरआन, कन्ज़ुल ईमान, फ़तावा रज़विय्या के

जुज़इय्यात और ह़दाइक़े बख़्शिश के रिक़्क़त व सोज़ से भरपूर अश्आ़र से मुज़य्यन होते हैं । आइये ! आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़बानी सुनते हैं कि आप, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इस क़दर क्यूं मुतअस्सिर हैं और इन की अ़क़ीदतो मह़ब्बत में इस क़दर क्यूं गुम रहते हैं । चुनान्चे,

अमीरे अहले सुन्नत की आ'ला ह़ज़रत से मह़ब्बत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**सय्यिदी कुत़्बे मदीना**" में तह़रीर फ़रमाते हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं बचपन ही से इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की शख़्सिय्यत से मुतआ़रिफ़ हो चुका था फिर जूं जूं शुऊ़र आता गया, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मह़ब्बत दिल में घर करती चली गई फिर मुझे आप के सिलसिले में दाख़िल होने का शौक़ पैदा हुवा, तो एक ही वासित़े से आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दामन को थाम लिया (या'नी ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, **कुत़्बे मदीना**, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़ियाउद्दीन अह़मद मदनी क़ादिरी रज़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ज़रीए आ'ला ह़ज़रत का दामन मिला)

(सय्यिदी कुत़्बे मदीना, स. 2, मुलख़्ख़सन)

मज़ीद फ़रमाते हैं : मुझे सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सना ख़्वानी से होश संभालते ही लगाव हो गया था और आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की अ़क़ीदत (Devotion) भी दिल में बैठ चुकी थी, लिहाज़ा आप के लिखे हुवे कलाम पढ़ना और सुनना पसन्द करता था । एक मरतबा बादामी मस्जिद (बम्बई बाज़ार, बाबुल मदीना, कराची) में शौक़ ही शौक़ में माईक पर ना'त पढ़ने के लिये खड़ा हो गया मगर अभी सिर्फ़ येह शे'र ही पढ़ पाया था कि :

चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 158)

यकायक एक बूढ़े शख़्स ने झिड़कते हुवे मुझे माईक से हटा दिया, शायद इस लिये कि मैं कमसिन था और आवाज़ भी ख़ास न थी । मेरा दिल

बहुत दुखा मगर सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उल्फ़त और आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की अ़क़ीदत ने संभाल लिया। (तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त 2, स. 31)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इसी अ़क़ीदतो महब्बत का सदक़ा है कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपनी ज़िन्दगी का पहला रिसाला आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सीरत के मुतअ़ल्लिक़ लिखा जिस का नाम "**तज़किरए इमाम अहमद रज़ा**" रखा और येह 25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सिने 1393 हि. को "**यौमे रज़ा**" के मौक़अ़ पर जारी किया।

आ'ला हज़रत से हमें तो प्यार है

अपना बेड़ा पार है اِنْ شَآءَ الله

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने सुना कि शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इस क़दर महब्बत व अ़क़ीदत क्यूं फ़रमाते हैं कि आप के नज़दीक आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक पहुंचने का बेहतरीन ज़रीआ़ हैं और इस दर से वाबस्ता होने वाला कभी महरूम (Deprived) नहीं रहता बल्कि उसे सह़ीह़ मा'ना में हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पहचान नसीब हो जाती है और जिस ख़ुश नसीब को हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पहचान नसीब हो जाए, तो यक़ीनन वोही मुक़द्दर का सिकन्दर है। अमीरे अहले सुन्नत ने हिम्मत व ह़ौसले का दामन न छोड़ा, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप की मदद फ़रमाई, अ़क़ीदते आ'ला हज़रत रंग लाई और आप ने बचपन से जवानी और जवानी से अब तक **दामने रज़ा** को इस्तिक़ामत और मज़बूती के साथ न सिर्फ़ ख़ुद थामा हुवा है बल्कि पूरी दुन्या में "**फ़ैज़ाने रज़ा**" को आ़म करने के लिये मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से कोशिशों में मसरूफ़ हैं। आप की इन्हीं कोशिशों की बरकत से मुआ़शरे में ऐसा मदनी इन्क़िलाब बरपा हुवा कि आज हमें हर त़रफ़ आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के तर्जमए कुरआन कन्ज़ुल ईमान, फ़तावा रज़विय्या और ह़दाइक़े बख़्शिश की मदनी बहारें दिखाई देती हैं।

यक़ीनन येह सब आप के इश्क़े आ'ला हज़रत का मुंह बोलता सुबूत नहीं तो और क्या है ? लिहाज़ा आ़शिक़े आ'ला हज़रत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पैरवी करते हुवे अपने साथ साथ अपनी औलाद को भी आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दामने करम से वाबस्ता कर लीजिये । आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की इल्मी ख़िदमात, आप के इश्क़े रसूल में डूबे हुवे वाक़िआ़त और ना'तिया शाइ़री ख़ुद भी पढ़िये, सुनिये और अपने बच्चों को भी पढ़ने, सुनने की तरग़ीब दिलाइये, उन्हें बताते रहिये कि आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه वलिय्ये कामिल, आ़लिमे बा अ़मल, मुफ़्तिये इस्लाम, पाए के मुह़द्दिस, अपने वक़्त के मुजद्दिद और सच्चे आ़शिक़े रसूल थे जिन्हें बारगाहे मुस्त़फ़वी में बेह़द मक़्बूलिय्यत ह़ासिल थी फिर उन की दिलचस्पी बढ़ाने के लिये आ'ला ह़ज़रत के इश्क़े रसूल में डूबे हुवे वाक़िआ़त भी सुना दीजिये । जैसे मदीनए मुनव्वरा की ह़ाज़िरी का येह ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ है कि :

आ'ला ह़ज़रत का शौक़े दीदार

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जब दूसरी मरतबा मदीनए त़य्यिबा ह़ाज़िर हुवे, शौक़े दीदार में रौज़ए अन्वर के सामने दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहे, यक़ीन कर लिया कि ज़रूर सरकारे अब्दे क़रार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई फ़रमाएंगे और रू-बरू ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमाएंगे लेकिन पहली शब ऐसा न हुवा, तो कुछ ग़मज़दा हो कर एक कलाम लिखा जिस के मत़लअ़ (या'नी पहले शे'र) में दामने रह़मत से वाबस्तगी की उम्मीद दिखाई है । चुनान्चे, लिखते हैं :

वोह सूए लालाज़ार फिरते हैं
तेरे दिन ऐ बहार फिरते हैं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 99)

शे'र की वज़ाह़त : ऐ बहार ! झूम जा ! कि तुझ पर बहारों की बहार आने वाली है । वोह देख ! मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सूए लालाज़ार या'नी जानिबे गुलज़ार तशरीफ़ ला रहे हैं और फिर मक़्त़अ़ (या'नी आख़िरी

शे'र) में बारगाहे रिसालत में अपनी आ़जिज़ी और बे मायगी (या'नी मिस्कीनी) का नक़्शा कुछ यूं खींचा है कि :

*कोई क्यूं पूछे तेरी बात **रज़ा** !*
तुझ से शैदा हज़ार फिरते हैं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 100)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दूसरे मिस्रअ़ में बत़ौरे आ़जिज़ी अपने लिये "**कुत्ते**" का लफ़्ज़ इस्ति'माल फ़रमाया है मगर अदबन यहां "**शैदा**" पढ़ा गया है (जिस का मत़लब है आ़शिक़) ।

शे'र की वज़ाहत : इस मक़्त़अ़ में आ़शिक़े माहे रिसालत, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कमाल इन्केसारी का इज़्हार करते हुवे अपने आप से फ़रमाते हैं : ऐ अह़मद रज़ा ! तू क्या और तेरी ह़क़ीक़त क्या ! तुझ जैसे तो हज़ारों सगाने मदीना (या'नी मदीने के कुत्ते) गलियों में दिवाना वार फिर रहे हैं।

रौज़ए अन्वर के सामने येह अश्आ़र अ़र्ज़ कर के इन्तिज़ार में बा अदब बैठे हुवे थे कि आख़िरे कार राह़तुल आ़शिक़ीन, मुरादुल मुश्ताक़ीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने आ़शिक़े ह़क़ीक़ी के ह़ाले ज़ार पर ख़ास करम फ़रमाया, इन्तिज़ार की घड़ियां ख़त्म हुईं और क़िस्मत अंगड़ाई ले कर उठ बैठी, निक़ाबे रुख़ उठ गया, ख़ुश नसीब आ़शिक़ ने ह़ालते बेदारी में अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चश्माने सर से दीदार कर लिया ।

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, 1 / 109, मुलख़्ख़सन)

अब कहां जाएगा नक़्शा तेरा मेरे दिल से
तेह में रखा है इसे दिल ने गुमाने न दिया

(सामाने बख़्शिश, स. 60)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को जब दरबारे मुस्त़फ़ा में ह़ाज़िरी का शरफ़ मिला, तो दिल की गहराइयों से इश्क़े मुस्त़फ़ा में डूबे हुवे अश्आ़र बारगाहे रिसालत में पेश किये, रिक़्क़त व सोज़ से भरपूर अश्आ़र को दरजए क़बूलिय्यत ह़ासिल हुवा, रह़मत

को जोश आया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शरबते दीदार से सैराब फ़रमा कर आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर गोया आ़शिक़े सादिक़ होने की मोहर लगा दी ।

*जो है **अल्लाह** का वली बेशक आ़शिक़े सादिक़े नबी बेशक*
ग़ौसे आ'ज़म का जो है मतवाला वाह ! क्या बात आ'ला हज़रत की

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 576)

आ'ला हज़रत का तआ़रुफ़ (Introduction)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه 10 शव्वालुल मुकर्रम सिने 1272 हिजरी, ब मुताबिक़ 14 जून सिने 1856 ईसवी, हफ़्ता के दिन, ज़ोह्र के वक़्त, बरेली शरीफ़ के महल्ले जसूली में पैदा हुवे । (हयाते आ'ला हज़रत, 1 / 56, बित्तग़य्युर) और 25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सिने 1340 हि. को विसाले पुर मलाल फ़रमाया । (मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 36) आप ख़ानदानी लिहाज़ से **पठान**, मस्लक के ए'तिबार से **हनफ़ी** और त़रीक़त में **क़ादिरी** थे । आप के वालिदे माजिद उस्ताज़ुल उ़लमा, मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और दादाजान मौलाना रज़ा अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه हैं ।

(फ़ाज़िले बरेल्वी उ़लमाए हिजाज़ की नज़र में, स. 67, मुलख़्ख़सन)

आ'ला हज़रत का पैदाइशी नाम "**मुह़म्मद**" है, आप की वालिदए माजिदा मह़ब्बत में "**अम्मन मियां**" फ़रमाया करती थीं, वालिदे माजिद और दूसरे रिश्तेदार "**अह़मद मियां**" के नाम से पुकारा करते थे, आप के दादाजान ने आप का नाम "**अह़मद रज़ा**" रखा । आप का तारीख़ी नाम "**अल मुख़्तार**" है और आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ुद अपने नाम से पहले "**अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा**" लिखा करते थे । (फ़ैज़ाने आ'ला हज़रत, स. 77, मुलख़्ख़सन) जिस से आप के इश्क़े रसूल का बख़ूबी अन्दाज़ा (Guess) लगाया जा सकता है । चुनान्चे, अपने ना'तिया दीवान "**ह़दाइक़े बख़्शिश**" में एक जगह फ़रमाते हैं :

ख़ौफ़ न रख रज़ा ज़रा, तू तो है अ़ब्दे मुस्त़फ़ा
तेरे लिये अमान है, तेरे लिये अमान है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 179)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आ'ला हज़रत की इल्मी ख़िदमात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की सारी ज़िन्दगी शरीअ़ते मुत़ह्हरा की पासदारी में बसर हुई । आप की शख़्सिय्यत (Personality) सह़ीह़ मा'नों में शरीअ़त व सुन्नत की आईनादार नज़र आती थी । आप न सिर्फ़ ख़ुद इस्लामी ता'लीमात पर अ़मल करने वाले थे बल्कि अपने मुतअ़ल्लिक़ीन व मुह़िब्बीन को भी इ़ल्म की रौशनी से मह़रूम न रखते, वक़्तन फ़–वक़्तन उन्हें भी वा'ज़ो नसीह़त और अपनी तह़रीरी सलाह़िय्यत के ज़रीए़ चश्मए इ़ल्म से सैराब फ़रमाया और दीने मतीन की तरवीजो इशाअ़त (Propagation And Publication) के लिये मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से इ़ल्मी ख़िदमात सर अन्जाम दे कर उम्मते मुस्लिमा पर एह़सान फ़रमाया ।

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की दीनी ख़िदमात ऐसी थीं कि आप ने "**कन्ज़ुल ईमान**" के नाम से क़ुरआने करीम का ऐसा शानदार तर्जमा फ़रमाया कि रहती दुन्या तक मुसलमान फ़ैज़ाने क़ुरआन से माला माल होते रहेंगे । आ'ला ह़ज़रत की दीनी ख़िदमात ऐसी थीं कि आप ने दर्सो तद्रीस के ज़रीए़ इ़ल्म के प्यासों को सैराब किया, तो आप के फ़ैज़े असर से कई उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम ने मस्नदे तद्रीस व इफ़्ता संभाली और कई ख़ुत़बा मन्सबे ख़ित़ाबत पर फ़ाइज़ हो गए । आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की दीनी ख़िदमात ऐसी थीं कि आप ने कसीर ता'दाद में फ़तावा लिख कर लोगों की दीनी और इ़ल्मी उल्झनें दूर फ़रमा दीं, उम्मते मह़बूब को उर्दू ज़बान में फ़तावा का वोह ज़ख़ीम तरीन मजमूआ़ "**फ़तावा रज़विय्या**" के नाम से अ़त़ा फ़रमाया जो 30 जिल्दों, तक़रीबन 22000 सफ़ह़ात, 6847 सुवालात के जवाबात और 206 रसाइल पर मुश्तमिल है । आ'ला ह़ज़रत की दीनी ख़िदमात ऐसी थीं कि आप ने फ़न्ने शाइ़री में भी अपनी ख़िदमात सर अन्जाम दे कर आ़शिक़ाने रसूल के दिलों को ख़ूब गरमाया है ।

किताब "ह़दाइक़े बख़्शिश" का तआ़रुफ़

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बे मिसाल ना'तिया दीवान "**ह़दाइक़े बख़्शिश**" के नाम से

मश्हूर है । इमामे इश्क़ो महब्बत, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के नोके क़लम से निकला हुवा हर एक शे'र क़ुरआनो ह़दीस का सच्चा तर्जमान और नामूसे रिसालत, सह़ाबा व अहले बैत और औलियाए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की अ़ज़मतों का सच्चा मुह़ाफ़िज़ और उन के फ़ैज़ व बरकात का सरचश्मा है । चूंकि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को उर्दू के इलावा दीगर ज़बानों में भी कामिल उ़बूर ह़ासिल था इस लिये आप ने उर्दू के इलावा अ़रबी और फ़ारसी वग़ैरा ज़बानों में भी ना'तें तह़रीर फ़रमाई हैं । आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने **''ह़दाइक़े बख़्शिश''** में फ़साह़तो बलाग़त के वोह दरया बहाए कि ज़माने के कई नामी गिरामी शाइ़र व अदीब, ह़दाइक़े बख़्शिश का मुत़ालआ़ करते हैं, तो उन की अ़क़्लें दंग रह जाती हैं और वोह दादो तह़्सीन दिये बिग़ैर नहीं रह पाते ।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को ह़दाइक़े बख़्शिश से इस क़दर लगाव है कि आप अपने बयानात व मदनी मुज़ाकरों में वक़्तन फ़-वक़्तन ह़दाइक़े बख़्शिश के अश्आ़र पढ़ते हैं बल्कि अपने मुरीदीन व मुतअ़ल्लिक़ीन को भी ह़दाइक़े बख़्शिश पढ़ने और अपने पास रखने की तरग़ीब इरशाद फ़रमाते हैं बल्कि अमीरे अहले सुन्नत की **''ह़दाइक़े बख़्शिश''** से महब्बत देखिये कि आप ने अपने ना'तिया दीवान का नाम **''वसाइले बख़्शिश''** रखा कि इस में भी आ'ला ह़ज़रत के ना'तिया दीवान के नाम से निस्बत है । ह़दाइक़े बख़्शिश, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का वोह बुलन्द पाया कारनामा है कि जिस की बदौलत आ़शिक़ाने रसूल के सीनों में इश्क़े मुस्त़फ़ा की शम्अ़ फ़रोज़ां रहती है । दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislami.net से इस किताब को रीड (या'नी पढ़ा) भी जा सकता है, डाउन लोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है ।

इल्मो इ़रफ़ां का जो कि सागर था ख़ैर से ह़ाफ़िज़ा क़वी तर था
ह़क़ पे मबनी था जिस का हर फ़तवा वाह ! क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

*मौला बहरे "हदाइक़े बख़्शिश" बख़्श **अत्तार** को बिला पुरसिश*
ख़ुल्द में कहता कहता जाएगा वाह ! क्या बात आ'ला हज़रत की

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 575-576)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मस्लके आ'ला हज़रत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ता'लामात पर अ़मल करते हुवे आपनी ज़िन्दगी बसर करनी चाहिये और आख़िरी सांस तक मस्लके आ'ला हज़रत पर क़ाइम रह कर अपनी इस्तिताअ़त (Ability) के मुताबिक़ दीने मतीन की ख़ूब ख़ूब ख़िदमत करनी चाहिये ।

आ़शिक़े आ'ला हज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने मुरीदीन व मो'तक़िदीन को नसीह़त के मदनी फूल लुटाते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें मस्लके आ'ला हज़रत पर मज़बूती से क़ाइम रहें, आ'ला हज़रत का मस्लक वोही है जो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم और सल्फ़ सालिह़ीने इ़ज़्ज़ाम का मस्लक था, या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को एक मान कर उसी की बन्दगी करना और शहनशाहे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उस का भेजा हुवा सच्चा और आख़िरी रसूल मानना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत व अ़ज़मत की मुकम्मल पासदारी करना, ज़रूरिय्याते दीन में से किसी का भी इन्कार न करना नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم की तौहीन व तन्क़ीस से मुकम्मल दूर और गुस्ताख़ों से दूर रहना वग़ैरा (मस्लके आ'ला हज़रत की पहचान है) । (दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़, स. 48)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से अ़क़ीदत का अन्दाज़ा इस बात से भी बख़ूबी लगाया जा सकता है कि आप अपने मदनी मुज़ाकरों और मुलाक़ात के लिये आने वाले

उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम, जामिअ़तुल मदीना के त़लबए किराम और आ़म लोगों को मस्लके आ'ला ह़ज़रत पर क़ाइम रहने और इमामे अहले सुन्नत की कोई बात समझ न आने की सूरत में इख़्तिलाफ़ न करने की ताकीद फ़रमाते हैं । एक बार इरशाद फ़रमाया : आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के अक़्वाल (या'नी फ़रमान) पर हमारी उ़क़ूल (या'नी अ़क़्लें) कुरबान ! आ'ला ह़ज़रत का (हर) अक़्वाल हमें क़बूल (है) ।

एक मरतबा जामिअ़तुल मदीना के **तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह** (मुफ़्ती कोर्स) के त़लबा से इरशाद फ़रमाया कि आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जो कि वलिय्युल्लाह, सच्चे आ़शिक़े रसूल और हमारे मुसल्लमा बुज़ुर्ग हैं, इन की अ़क़ीदत को दिल की गहराई के अन्दर संभाल कर रखना बेह़द ज़रूरी (Necessary) है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है : اَلْبَرَكَةُ مَعَ اَكَابِرِكُمْ बरकत तुम्हारे बुज़ुर्गों के साथ है । (مستدرک للحاکم ، کتاب الایمان ، ج ۱، ص ۲۳۸، الحدیث ۲۱۸) आप में से अगर किसी का मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से इख़्तिलाफ़ का मा'मूली सा भी ज़ेह्न बनना शुरूअ़ हो जाए, तो समझ लीजिये **مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ** आप की बरबादी के दिन शुरूअ़ हो गए, लिहाज़ा फ़ौरन चौकन्ने हो जाइये और इख़्तिलाफ़ के ख़याल को ह़र्फ़े ग़लत़ की त़रह़ दिमाग़ से मिटा दीजिये । फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बयान कर्दा कोई मस्अला बिलफ़र्ज़ आप का ज़ेह्न क़बूल न करे, तब भी उस के बारे में अ़क़्ल के घोड़े मत दौड़ाइये बल्कि न समझ पाने को अपनी अ़क़्ल ही की कोताही (Lackness) तसव्वुर कीजिये ।

*जो है **अल्लाह** का वली बेशक — आ़शिक़े सादिक़े नबी बेशक*
ग़ौसे आ'ज़म का जो है मतवाला — वाह ! क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 576)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तर्जमए कुरआन, कन्ज़ुल ईमान को तरजीह़ देने की वज्ह

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयान कर्दा इल्मो हिक्मत से मुज़य्यन मदनी फूलों को सुन कर हर अ़क़्लमन्द शख़्स बख़ूबी अन्दाज़ा लगा सकता है कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه, इमामे अहले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से किस क़दर महब्बत फ़रमाते हैं कि आ'ला ह़ज़रत के हर हर इरशाद पर सरे तस्लीम ख़म करते हुवे न सिर्फ़ ख़ुद इख़्तिलाफ़ से बचते हैं बल्कि अपने मुरीदीन व मो'तक़िदीन को भी इस की तल्क़ीन फ़रमाते हैं। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत के इश्क़े आ'ला ह़ज़रत का एक वाज़ेह़ सुबूत (Proof) येह भी है कि आप कई सालों से अपने बयानात, मदनी मुज़ाकरों और किताबों में जहां कुरआने पाक की आयात बयान फ़रमाते हैं, तो उस का तर्जमा "**कन्ज़ुल ईमान शरीफ़**" से ही पेश करते हैं और आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का ज़िक्रे ख़ैर इस अन्दाज़ में करते हैं कि सुनने वाले के दिल की गहराइयों में **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** और साह़िबे कन्ज़ुल ईमान की अहम्मिय्यत व अ़ज़मत रौशन हो जाती है। आप तर्जमए कन्ज़ुल ईमान बयान करने से पहले आ'ला ह़ज़रत के अल्क़ाबात यूं बयान फ़रमाते हैं : "मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, इमामे इश्क़ो महब्बत, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल्ह़ाज, अल ह़ाफ़िज़, अल क़ारी, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने शोहरए आफ़ाक़ तर्जमए कुरआन, कन्ज़ुल ईमान में इस आयते मुबारका का तर्जमा कुछ यूं करते हैं" फिर आयत का तर्जमा बयान फ़रमाते हैं। سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! आ'ला ह़ज़रत से अ़क़ीदतो महब्बत का कैसा दिल नशीन अन्दाज़ है !

अमीरे अहले सुन्नत तर्जमए कन्ज़ुल ईमान की मद्ह़ सराई करते हुवे सद साला जश्ने कन्ज़ुल ईमान (1430 हि.) के मौक़अ़ पर अपने एक मक्तूब

में लिखते हैं : तर्जमए कुरआन, कन्ज़ुल ईमान उर्दू के तमाम तराजिम पर फ़ाइक़ (या'नी बुलन्द) है, येह तर्जमा तह़्तुल लफ़्ज़ (या'नी लफ़्ज़ी तर्जमा) होने के साथ साथ मुख़्तलिफ़ मुस्तनद तफ़ासीर का मजमूआ़ (Collection) भी है । जहां कन्ज़ुल ईमान के हर हर लफ़्ज़ में रब्बुल अरबाब عَزَّوَجَلَّ के एह़तिराम व अदब की झलक नज़र आती है, वहीं शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व इकराम के चश्मे भी उबल रहे हैं । मआ़रिफ़े कुरआनी और उल्फ़ते रब्बानी व शहनशाहे ज़मानी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपने दिलों को नूरानी बनाने के लिये कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ का मुत़ालआ़ बेह़द मुफ़ीद (Beneficial) है ।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की त़रफ़ से इस्लामी भाइयों को 72, इस्लामी बहनों को 63 और त़लबए दीनी को 92 मदनी इन्आ़मात दिये गए हैं, इन मदनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ हर दा'वते इस्लामी वाले और वाली को कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ से रोज़ाना कम अज़ कम तीन आयात का तर्जमा और ख़ज़ाइनुल इरफ़ान / नूरुल इरफ़ान / सिरातुल जिनान से इन की तफ़्सीर पढ़नी होती है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़्वाहिश पर सद साला जश्ने कन्ज़ुल ईमान के मुबारक मौक़अ़ पर घर घर कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ को दाख़िल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की त़रफ़ से कन्ज़ुल ईमान के बे शुमार नुस्ख़े निस्फ़ हदिय्ये पर फ़रोख़्त भी किये गए । इस के इलावा दा'वते इस्लामी की मजलिसे आई-टी कुरआने करीम को तर्जमए कन्ज़ुल ईमान और तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान के साथ सॉफ़्टविऐर सीडी की शक्ल में पेश कर चुकी है, इस सीडी को भी मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल किया जा सकता है । इस सॉफ़्टविऐर की मदद से आप कुरआने करीम और तर्जमए कन्ज़ुल ईमान पढ़ और सुन सकते हैं और तफ़्सीर का भी मुत़ालआ़ कर सकते हैं नीज़ सर्च ऑपशन (Search Option) के ज़रीए कुरआने मजीद, तर्जमए कन्ज़ुल ईमान और तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में कोई लफ़्ज़ तलाश (Search) भी कर सकते हैं । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में कई इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें कन्ज़ुल ईमान शरीफ़

मअ़ तफ़्सीर के मुकम्मल मुत़ालए़ से मुशर्रफ़ हो चुके हैं । अगर हम भी **फ़ैज़ाने कन्ज़ुल ईमान** से माला माल होना चाहते हैं, तो हाथों हाथ निय्यत कीजिये कि मैं भी कम अज़ कम 3 आयात तर्जमा व तफ़्सीर के साथ रोज़ाना मुत़ालआ़ करूंगा । अगर हम इस की आ़दत बना लेंगे, तो ढेरों मा'लूमात के साथ साथ सवाबे आख़िरत का अ़ज़ीम ज़ख़ीरा होगा । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

ख़िदमत कुरआने पाक की वोह ला जवाब की
राज़ी रज़ा से साहिबे कुरआं है आज भी
अह़मद रज़ा का ताज़ा गुलिस्तां है आज भी
ख़ुरशीदे इ़ल्म उन का दरख़्शां है आज भी

(मनाक़िबे रज़ा, स. 66-67)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मजलिसे मक्तबतुल मदीना का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तर्जमए कन्ज़ुल ईमान की बरकतें पाने के लिये आज ही इसे मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये । मक्तबतुल मदीना दा'वते इस्लामी का एक इशाअ़ती इदारा है जो दुन्या भर में इ़ल्मे दीन की रौशनी फैलाने के लिये बे शुमार कुतुबो रसाइल, सुन्नतों भरे बयानात और मदनी मुज़ाकरों के मेमोरी कार्डज़ (Memory Cards) वग़ैरा दुन्या भर में पहुंचा रहा है। तमाम आ़शिक़ाने रसूल हर हफ़्तावार इजतिमाअ़ के बा'द मक्तबतुल मदीना से कुछ न कुछ ख़रीदारी (Purchasing) ज़रूर किया करें, कम अज़ कम एक रिसाला ही ख़रीद लिया जाए, अव्वलन ख़ुद भी उस का मुत़ालआ़ करें फिर किसी और को पढ़ने के लिये दे दें, इस से अपने इ़ल्मे दीन में भी इज़ाफ़ा होगा और दूसरों तक नेकी की दा'वत पहुंचाने का सिलसिला भी जारी रहेगा ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **"माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"** के ज़रीए़ भी दुन्या भर के आ़शिक़ाने रसूल तक नेकी की दा'वत से माला माल मदनी फूल व मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर मुश्तमिल रंग बिरंगे मदनी गुलदस्ते अपनी ख़ुश्बूएं बिखैर रहे हैं ।

''**माहनामा फ़ैज़ाने मदीना**'' का हर मज़मून एक से बढ़ कर एक सबक़ आमोज़ और ज़िन्दगी बदल देने वाला है। ''**माहनामा फ़ैज़ाने मदीना**'' एक ऐसा अ़ज़ीमुश्शान इल्मी कारनामा है कि जैसे कूज़े में समुन्दर बन्द कर दिया गया हो। ''**माहनामा फ़ैज़ाने मदीना**'' लोगों को दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता करने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ है। मदनी रसाइल तक़्सीम करने के साथ साथ ''**माहनामा फ़ैज़ाने मदीना**'' को भी आ़म किया जाए। ऐ काश ! हर घर में हर माह ''**माहनामा फ़ैज़ाने मदीना**'' के पहुंचने का सिलसिला हो जाए, इस की बरकत से घर में मदनी माहोल बनाने में बहुत मदद मिलेगी, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के तमाम शो'बाजात ब शुमूल मक्तबतुल मदीना को दिन ग्यारहवीं, रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हफ़्तावार सुन्नतों भरा इजतिमाअ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत की मह़ब्बत व अ़ज़मत के जाम पीने और आप की ता'लीमात के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में ख़ूब बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये। ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से हफ़्तावार एक मदनी काम ''**हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़**'' में शिर्कत भी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में अच्छी सोह़बत मुयस्सर आती, तर्जमए कुरआन, कन्जुल ईमान की बरकतें पाने और इजतिमाई त़ौर पर ज़िक्रुल्लाह करने की सआ़दत नसीब होती है। ह़दीस पाक में भी अच्छी सोह़बत इख़्तियार करने की तरग़ीब और इकठ्ठे हो कर ज़िक्रुल्लाह करने वालों को बख़्शिश और बुराइयों को नेकियों से बदलने की ख़ुश ख़बरी भी सुनाई गई है। (شعب الایمان، الفصل الثانی فی ذکر آثار... الخ، ۱/۴۵۴، حدیث: ۶۹۵ ماخوذاً، مسند احمد، مسند ابی ہریرۃ، ۳/ ۲۳۳، حدیث: ۸۴۲۵ ماخوذاً)

आइये ! बत़ौरे तरग़ीब हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की एक ईमान अफ़रोज़ मदनी बहार सुनते हैं। चुनान्चे,

इसी माहोल ने अदना को आ'ला कर दिया देखो

चीचा वत़नी (ज़िल्अ़ साहीवाल, पंजाब, मुल्के मुर्शिद) के एक इस्लामी भाई ने ग़फ़्लतों की वादी में गुज़रे हुवे अपने लम्हाते ज़िन्दगी के बारे में कुछ इस त़रह़ बयान किया : मेरी ज़िन्दगी भरपूर ग़फ़्लत में गुज़र रही थी, मेरे उजड़े हुवे गुलज़ार में रुश्दो हिदायत की बादे बहार दा'वते इस्लामी से वाबस्ता एक आ़शिक़े रसूल की बा बरकत सोह़बत की बदौलत चली, उन की इनफ़िरादी कोशिश ने मुझे दा'वते इस्लामी के क़रीब तर कर दिया और मैं मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया। जब मैं पहली बार हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शरीक हुवा, तो मैं ने अव्वल ता आख़िर बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल की, येह सब कुछ मुझे बहुत अच्छा लगा, जब इजतिमाअ़ में शरीक इस्लामी भाई एक आवाज़ में दीवाना वार ज़िक्रुल्लाह में मसरूफ़ हुवे, तो यकायक रूह़ानिय्यत का एक ऐसा झोंका आया कि मैं ख़ुद बख़ुद ज़िक्रुल्लाह में लग गया और ऐसा मस्त हुवा कि अपने गिर्दो पेश की ख़बर ही न रही, दिल पर अ़जीब कैफ़ो सुरूर त़ारी हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस ज़िक्रो दुआ़ की बरकत से मेरी त़बीअ़त में सन्जीदगी पैदा हो गई और साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर के मैं सलातो सुन्नत की राह पर गामज़न हो गया, मैं ने चेहरे पर दाढ़ी मुबारक और सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजा लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ रमज़ानुल मुबारक में इजतिमाई ए'तिकाफ़ की बरकतें ह़ासिल करने की सआ़दत भी मुयस्सर आई, अब मेरे वालिदे मोह़तरम ने भी दाढ़ी शरीफ़ सजा ली है और तमाम घर वाले सिलसिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या रज़विय्या में दाख़िल हो चुके हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तादमे तह़रीर मैं मदनी इन्आ़मात के ख़ादिम की ह़ैसिय्यत से मदनी काम करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा हूं।

इसी माह़ोल ने अदना को आ'ला कर दिया देखो
अन्धेरा ही अन्धेरा था उजाला कर दिया देखो

निस्बते आ'ला ह़ज़रत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इश्क़े आ'ला ह़ज़रत का एक दिलचस्प पहलू येह भी है कि

आप को 25 का अ़दद बहुत महबूब है, येही वज्ह है कि आप अपने मदनी मुज़ाकरों और किताबों में मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से उ़र्से आ'ला ह़ज़रत की तारीख़ 25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र का तज़किरा फ़रमाते रहते हैं। आप को नामे "**रज़ा**" से भी ऐसी महब्बत है कि इस की बरकतें समेटने के लिये नामों के साथ लफ़्ज़े "**रज़ा**" मिला देते हैं। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इस लाइक़े तक़्लीद अ़मल से हमें येह मदनी फूल भी मिला कि निस्बत की बड़ी बरकतें हैं, लिहाज़ा हर जाइज़ काम ह़त्ता कि नाम रखने और तारीख़ मुक़र्रर करने में भी निस्बतों की बरकतें लूटना सआ़दत मन्दी की बात है।

याद रखिये ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों से जिस चीज़ को निस्बत हो जाए, तो वोह आ़म नहीं रहती बल्कि उस की शानो अ़ज़मत को चार चांद लग जाते हैं। जैसे सफ़ा व मरवह दोनों पहाड़ों को जब एक वलिय्या और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी, ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلٰى نَبِيِّنَا وَ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वालिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا के मुबारक क़दमों से निस्बत ह़ासिल हुई, तो येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानी बन गए। इसी त़रह़ मक़ामे इब्राहीम ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के क़दमे अक़्दस की बरकत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानी बन गया। अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَ السَّلام और औलियाए किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की क़ब्रें उन के वुजूदे मस्ऊ़द की निस्बत की बरकत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियां बन गईं। अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم की ग़ार इन बुज़ुर्गों की निस्बत से बा बरकत बन गई, कोहे त़ूर को ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की निस्बत ने अ़ज़मत बख़्शी, तो मक्कए मोअ़ज़्ज़मा हमारे प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत की बरकत से मुअ़ज़्ज़म हो गया। हमें भी निस्बतों का लिह़ाज़ करते हुवे इन की बरकतों से मुस्तफ़ीज़ होना चाहिये।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने निस्बतों से बरकत ह़ासिल करने के लिये ज़ियाउद्दीन मदनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से शरफ़े बैअ़त ह़ासिल किया, इस की वज्ह बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : (मुरीद होने के लिये) एक ही "**हस्ती**" मर्कज़े तवज्जोह बनी, अगर्चे मशाइख़े अहले सुन्नत की कमी थी,

न है मगर "**पसन्द अपनी अपनी, ख़याल अपना अपना**" उस मुक़द्दस हस्ती का दामन थाम कर एक ही वासिते़ से आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से निस्बत हो जाती थी और उस "**हस्ती**" में एक कशिश (Attraction) येह भी थी कि बराहे रास्त गुम्बदे ख़ज़रा का साया उस पर पड़ रहा था। उस "मुक़द्दस हस्ती" से मेरी मुराद ह़ज़रते शैख़ुल फ़ज़ीलत, आफ़्ताबे रज़विय्यत, ज़ियाउल मिल्लत, मुक़्तदाए अहले सुन्नत, मुरीद व ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, पीरे त़रीक़त, रहबरे शरीअ़त, शैख़ुल अ़रब वल अ़जम, मेज़बाने मेहमानाने मदीना, सय्यिदी कुत़्बे मदीना, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़ियाउद्दीन अह़मद मदनी क़ादिरी रज़वी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ाते गिरामी (है)।

ज़िया पीरो मुर्शिद मेरे रहनुमा हैं सुरूरे दिलो जां मेरे दिलरुबा हैं
*मुनव्वर करें क़ल्बे **अ़त्तार** को भी शहा ! आप दीने मुबीं की ज़िया हैं*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 564)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिन ख़ुश नसीबों को **अल्लाह** वालों से निस्बत हो जाती है, तो उन की ज़िन्दगी में तो उन्हें इस निस्बत का फ़ैज़ान मिलता ही है, मरने के बा'द भी येह निस्बतें उन के काम आती हैं। आइये ! इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत सुनिये और झूमिये। चुनान्चे,

हुज़ूर सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ज़मानए मुबारका में एक बहुत ही गुनहगार शख़्स था लेकिन उस के दिल में सरकारे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की मह़ब्बत ज़रूर थी, उस के मरने के बा'द जब उस को दफ़्न किया गया और क़ब्र में जब मुन्कर नकीर ने सुवालात किये, तो मुन्कर नकीर को रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे आ़लिया से येह निदा आई : अगर्चे येह बन्दा फ़ासिक़ों में से है मगर इस को मेरे मह़बूबे सादिक़, सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) की ज़ात से मह़ब्बत है, पस इसी सबब से मैं ने इस की मग़्फ़िरत कर दी और इस मह़ब्बत और हुस्ने ए'तिक़ाद की वज्ह से इस की क़ब्र को वसीअ़ (Spacious) कर दिया।

(ग़ौसे पाक के ह़ालात, स. 42)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह ह़क़ीक़त है कि जिस से इश्क़ होता है, उस की हर चीज़ अच्छी लगती है । महबूब का घर, उस के दरो दीवार, गली कूचे ह़त्ता कि उस के शहर से भी अ़क़ीदत का रिश्ता क़ाइम हो जाता है और महबूब से मन्सूब हर चीज़ का अदबो एह़तिराम (Respect) करना अपने लिये ए'ज़ाज़ समझता है । शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक मरतबा बरेली शरीफ़ में आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत होने का ऐसा अ़मली मुज़ाहरा फ़रमाया कि देखने वालों की आंखें अश्कबार हो गईं । आइये ! इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुनिये और झूमिये । चुनान्चे,

बरेली शरीफ़ की पहली बार ह़ाज़िरी

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पहली बार पीरो मुर्शिद के शहर बरेली शरीफ़ पहुंचे, तो जब तक क़ियाम रहा आप अदबन नंगे पाउं रहे और जब आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़ारे मुबारक पर ह़ाज़िरी का वक़्त आया, तो निहायत अदब से मज़ारे मुबारक पर ह़ाज़िर हुवे (ह़ाज़िरी का निराला अन्दाज़ देख कर वहां मौजूद लोगों की आंखें अश्कबार हो गईं), दौराने ह़ाज़िरी एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मुतअ़ल्लिक़ किसी ने बताया कि उन्हों ने आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को देखा है, तो आप और आप के दोनों शहज़ादों (अबू उसैद ह़ाजी उ़बैद रज़ा अ़त़्त़ारी मदनी और अबू हिलाल ह़ाजी मुह़म्मद बिलाल रज़ा अ़त़्त़ारी मदनी) ने बड़ी अ़क़ीदतो महब्बत के साथ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़ियारत करने वाले बुज़ुर्ग की आंखों को बोसा दिया ।

फिर बरेली शरीफ़ जाऊं मैं बरकतें मुर्शिदी की पाऊं मैं
कर लूं रौज़े का ख़ूब नज़्ज़ारा वाह ! क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 576)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने पीरो मुर्शिद के मज़ार शरीफ़ पर किस क़दर अदबो एह़तिराम के साथ ह़ाज़िरी का शरफ़ ह़ासिल किया । याद रखिये !

औलियाउल्लाह के मज़ारात पर ह़ाज़िरी बड़ी सआ़दत और बाइ़से बरकत है और इन के लिये ईसाले सवाब करना मुस्तह़ब अ़मल है। औलियाए किराम के मज़ारात पर हर वक़्त रह़मते इलाही का नुज़ूल होता है, ह़ाज़िरी की बरकत से दुआ़एं क़बूल होती हैं, मुश्किलात व मसाइब से नजात मिलती है और ख़ास इस नज़रिय्ये से औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के मज़ारात पर जाना हमारे अस्लाफ़ का त़रीक़ा भी रहा है। जैसा कि :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे जब कोई ह़ाजत पेश आती है, दो रक्अ़त नमाज़ अदा कर के इमामे आ'ज़म, अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार पर जा कर दुआ़ मांगता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी ह़ाजत पूरी कर देता है। (الخیرات الحسان ص ۹۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** वालों के मज़ारात पर ह़ाज़िरी देना यक़ीनन सआ़दत और बाइ़से ख़ैरो बरकत है मगर याद रहे ! हमें येह बरकतें उसी वक़्त मिल सकती हैं कि जब हम बा अदब त़रीक़े से इन मज़ारात पर ह़ाज़िरी देंगे। लिहाज़ा मज़ारात पर ह़ाज़िरी से पहले वुज़ू कर लीजिये, अगर मक्रूह वक़्त न हो, तो अपने घर पर ही दो रक्अ़त नफ़्ल इस त़रह़ पढ़िये कि हर रक्अ़त में सूरतुल फ़ातिह़ा के बा'द एक बार आयतुल कुर्सी और 3 बार सूरतुल इख़्लास और इस नमाज़ का सवाब साह़िबे मज़ार को पहुंचाइये, मज़ार पर पहुंच कर 4 हाथ दूर रहते हुवे साह़िबे मज़ार के चेहरे की त़रफ़ रुख़ कर के हाथ बांध कर यूं अ़र्ज़ कीजिये : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدِی (या'नी आप पर सलाम हो ऐ मेरे सरदार !) कि येही अदब है। फ़ातिह़ा के बा'द साह़िबे मज़ार के वसीले से दुआ़ कीजिये कि बुज़ुर्गों के वसीले से दुआ़एं क़बूल होती हैं, ह़त्तल इमकान फ़ुज़ूल बातों और ग़ैर शरई कामों से ज़रूर दूर रहिये और वापसी पर मज़ार शरीफ़ को पीठ न हो इस बात का ख़याल (Care) रखिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें बुज़ुर्गों का अदब करने, उन की सीरत पर अ़मल करने की सआ़दत नसीब फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज के बयान में हम ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की इश्क़े आ'ला हज़रत के हवाले से चन्द झल्कियां मुलाहज़ा करने की सआ़दत हासिल की । हम ने सुना कि ❖ अमीरे अहले सुन्नत को आ'ला हज़रत से बचपन ही से बेहद महब्बत थी ❖ अमीरे अहले सुन्नत ने तहरीरी काम का आग़ाज़ किया, तो सब से पहला रिसाला **''तज़किरए इमाम अहमद रज़ा''** लिखा ❖ अमीरे अहले सुन्नत को आ'ला हज़रत की पच्चीस्वीं शरीफ़ से बेहद महब्बत है, जभी आप अपने बयानात, मदनी मुज़ाकरों और तहरीरों में मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से 25 का अ़दद इस्ति'माल फ़रमाते हैं ❖ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه, आ'ला हज़रत के तर्जमए कन्ज़ुल ईमान से न सिर्फ़ ख़ुद बड़ी महब्बत फ़रमाते हैं बल्कि अपने मुरीदीन व मुहिब्बीन को भी इसे पढ़ने की तरग़ीब दिलाते हैं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अमीरे अहले सुन्नत की पैरवी करते हुवे, आ'ला हज़रत की ता'लीमात पर अ़मल करते हुवे ज़िन्दगी बसर करने की सआ़दत नसीब फ़रमाए । اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत हासिल करता हूं । शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث: ۱۷۵)

उन की सुन्नत का जो आईनादार है
बस वोही तो जहां में समझदार है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सोने जागने की सुन्नतें और आदाब

आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले **"101 मदनी फूल"** से सोने जागने की सुन्नतें और आदाब सुनते हैं।

❖ सोने से पहले बिस्तर को अच्छी त़रह़ झाड़ लीजिये ताकि कोई मूज़ी कीड़ा वग़ैरा हो, तो निकल जाए ❖ सोने से पहले येह दुआ़ पढ़ लीजिये : اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰى (**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरे नाम के साथ ही मरता हूं और जीता हूं (या'नी सोता और जागता हूं))। (بخاری، ۴/۱۹۶، حدیث: ۶۳۲۵)

❖ अ़स्र के बा'द न सोएं, अ़क़्ल ज़ाइल होने का ख़ौफ़ है। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स अ़स्र के बा'द सोए और उस की अ़क़्ल जाती रहे, तो वोह अपने ही को मलामत करे। (مسند ابی یعلیٰ، حدیث: ۴۸۹۷، ۴/ ۲۷۸)

❖ दोपहर को क़ैलूला (या'नी कुछ देर लेटना) मुस्तह़ब है।

(फ़तावा हिन्दिया, 5 / 376)

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ग़ालिबन येह उन लोगों के लिये होगा जो शब बेदारी करते हैं, रात में नमाज़ें पढ़ते, ज़िक्रे इलाही करते हैं या कुतुब बीनी या मुत़ालए़ में मश्ग़ूल रहते हैं कि शब बेदारी में जो तकान (थकान) हुई, क़ैलूले से दफ़्अ़ हो जाएगी। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, 3 / 79)

❖ दिन के इब्तिदाई ह़िस्से में सोना या मग़रिब व इ़शा के दरमियान में सोना मक्रूह है। (फ़तावा हिन्दिया, 5 / 376) ❖ सोने में मुस्तह़ब येह है कि बा त़हारत सोए और ❖ कुछ देर सीधी करवट पर सीधे हाथ को रुख़्सार (या'नी गाल) के नीचे रख कर क़िब्ला रू सोए फिर इस के बा'द बाईं करवट पर। (ऐज़न)

❖ सोते वक़्त क़ब्र में सोने को याद करे कि वहां तन्हा सोना होगा, सिवा अपने आ'माल के कोई साथ न होगा ❖ सोते वक़्त यादे ख़ुदा में मश्ग़ूल हो, तह्लीलो तस्बीह़ व तह़मीद पढ़े (या'नी لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ, سُبْحٰنَ اللهِ और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ का

विर्द करता रहे) यहां तक कि सो जाए कि जिस ह़ालत पर इन्सान सोता है, उसी पर उठता है और जिस ह़ालत पर मरता है, क़ियामत के दिन उसी पर उठेगा। (ऐज़न) ❖ जागने के बा'द येह दुआ़ पढ़िये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْۤ اَحْیَانَا بَعْدَ مَاۤ اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ

(**तर्जमा :** तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हमें मारने के बा'द ज़िन्दा किया और उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है)

(بخاری، ۴/۱۹۶، حدیث: ۶۳۲۵)

❖ उसी वक़्त इस का पक्का इरादा करे कि परहेज़गारी व तक़्वा करेगा, किसी को सताएगा नहीं। (फ़तावा हिन्दिया, 5 / 376) ❖ जब लड़के और लड़की की उ़म्र दस साल की हो जाए, तो उन को अलग अलग सुलाना चाहिये बल्कि इस उ़म्र का लड़का इतने बड़े (या'नी अपनी उ़म्र के) लड़कों या (अपने से बड़े) मर्दों के साथ भी न सोए। (دُرِّمُختار، رَدُّالمُحتار، ۹/ ۶۲۹) ❖ मियां बीवी जब एक चारपाई पर सोएं, तो दस बरस के बच्चे को अपने साथ न सुलाएं, लड़का जब ह़द्दे शह्वत को पहुंच जाए, तो वोह मर्द के हुक्म में है। (دُرِّمُختار، ۹/ ۶۳۰) ❖ नींद से बेदार हो कर मिस्वाक कीजिये ❖ रात में नींद से बेदार हो कर तहज्जुद अदा कीजिये, तो बड़ी सआ़दत है। सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : फ़र्ज़ों के बा'द अफ़्ज़ल नमाज़, रात की नमाज़ है। (مُسلِم، ص۵۹۱ حدیث: ۱۱۶۳)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब **बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" रिसाला "**163 मदनी फूल**" और "**101 मदनी फूल**" ह़दिय्यतन त़लब कीजिये और बग़ौर इन का मुत़ालआ़ फ़रमाइये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे मुश्कबार है : जिस ने मुझ पर 100 मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा।

(مجمع الزوائد، کتاب الادعیة، باب الصلاة علی النبی... الخ، ۱۰/۲۵۳، حدیث: ۱۷۲۹۸)

क्यूं कहूं बेकस हूं मैं, क्यूं कहूं बेबस हूं मैं
तुम हो मैं तुम पर फ़िदा, तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 270)

मुख़्तसर वज़ाह़त : ऐ मेरे आक़ा व मौला صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जब मुझे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सहारा है, तो मैं अपने आप को बे सहारा और आ़जिज़ व कमज़ोर कैसे समझ सकता हूं ? मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर फ़िदा हूं, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर करोड़ों दुरूद हों।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج٦ ص ١٨٥ حدیث ٥٩٤٢)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा। ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा। ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा। ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा। ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा। ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ब्र में आग के शो'ले

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात**" के सफ़ह़ा 20 पर एक ह़िकायत नक़्ल फ़रमाते हैं : एक शख़्स की बहन फ़ौत हो गई, जब वोह उसे दफ़्न कर के लौटा, तो याद आया कि रक़म की थैली क़ब्र में गिर गई है। चुनान्चे, वोह अपनी बहन की क़ब्र पर आया और उस को खोदा ताकि थैली निकाल ले। उस ने देखा कि बहन की क़ब्र में आग के शो'ले भड़क रहे हैं। चुनान्चे, उस ने जूं तूं क़ब्र पर मिट्टी डाली और ग़मगीन, रोता हुवा मां के पास आया और पूछा : प्यारी अम्मीजान ! मेरी बहन के आ'माल कैसे थे ? वोह बोली : बेटा क्यूं पूछते हो ? अ़र्ज़ की : मैं ने अपनी बहन की क़ब्र में आग के शो'ले भड़क्ते देखे हैं। येह सुन कर मां रोने लगी और कहा : अफ़्सोस ! तेरी

बहन नमाज़ में सुस्ती किया करती थी और नमाज़ के अवक़ात गुज़ार कर पढ़ा करती थी (या'नी नमाज़ क़ज़ा कर के पढ़ती थी)। (मुकाशफ़तुल कुलूब, स. 189)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यहां एक मस्अला भी समाअ़त फ़रमा लीजिये कि इस इ़ब्रतनाक हि़कायत से मा'लूम हुवा कि नमाज़ में सुस्ती करना बहुत बड़ा गुनाह है और अ़ज़ाबे क़ब्र का सबब है। हमें भी पांचों नमाज़ें ज़ौक़ो शौक़ के साथ मस्जिद में बा जमाअ़त अदा करनी चाहियें और नमाज़ में हरगिज़ हरगिज़ सुस्ती नहीं करनी चाहिये क्यूंकि येह मुनाफ़िक़ों की अ़लामत (Sign) है कि जब मुनाफ़िक़ीन, मोमिनीन के साथ नमाज़ के लिये खड़े होते, तो मरे दिल से और सुस्ती के साथ खड़े होते क्यूंकि उन के दिलों में ईमान तो था नहीं ! जिस से इ़बादत का ज़ौक़ और बन्दगी का लुत़्फ़ ह़ासिल होता, सिर्फ़ लोगों को दिखाने के लिये नमाज़ पढ़ते थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के बारे में पारह 5, सूरतुन्निसा, आयत नम्बर 142 में इरशाद फ़रमाया :

وَ اِذَا قَامُوْۤا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى (پ5، النساء، 142)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब नमाज़ को खड़े हों, तो हारे जी से।

तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान में इस आयते मुबारका के तह़्त लिखा है कि नमाज़ न पढ़ना या सिर्फ़ लोगों के सामने पढ़ना जब कि तन्हाई में न पढ़ना या लोगों के सामने ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से और तन्हाई में जल्दी जल्दी पढ़ना या नमाज़ में इधर उधर ख़याल ले जाना, दिलजमई के लिये कोशिश न करना वग़ैरा सब सुस्ती की अ़लामतें हैं। (सिरात़ुल जिनान, 2 / 335)

अफ़्सोस सद अफ़्सोस ! आज हमारे मुआ़शरे में सिर्फ़ सुस्ती और काहिली की वज्ह से आए दिन नमाज़ें क़ज़ा कर दी जाती हैं जब कि गुनाहों के इर्तिकाब के लिये सुस्ती फ़ौरन चुस्ती में बदल जाती है। बा'ज़ लोग तो ऐसे भी हैं कि जब उन की एक या चन्द एक नमाज़ें रह जाएं, तो हफ़्तों हफ़्तों बल्कि महीनों महीनों तक जान बुझ कर नमाज़ नहीं पढ़ते और अगर कोई इस्लामी भाई उन पर इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे नमाज़ों की तरग़ीब दिलाए, तो कहते हैं : "अब اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अगले जुमुआ़ से दोबारा नमाज़ें पढ़ना शुरूअ़ करूंगा या रमज़ान से बा क़ाइ़दा नमाज़ों का एहतिमाम करूंगा।" यूं गोया

किसी क़िस्म की शर्म व झिजक के बिग़ैर बड़ी बहादुरी के साथ مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस बात का इक़रार किया जाता है कि नमाज़ें तर्क करने का येह कबीरा गुनाह, मैं जुमुआ़ के दिन तक या रमज़ानुल मुबारक तक मुसल्सल जारी रखूंगा । यक़ीनन येह सब कुछ ख़ौफ़े ख़ुदा और शौक़े इबादत न होने का वबाल है, वरना जिस के दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ और इबादत का ज़ौक़ो शौक़ होता है, वोह हर ह़ाल में नमाज़ों की पाबन्दी करता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी से बचता है ।

याद रखिये ! जान बुझ कर नमाज़ क़ज़ा करना गुनाहे कबीरा, ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 16, सुरए मरयम की आयत नम्बर 59 में इरशाद फ़रमाता है :

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا۝۵۹ (پ16، المریم، 59)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन के बा'द उन की जगह वोह ना ख़ल्फ़ आए जिन्हों ने नमाज़ें गवाईं (ज़ाएअ़ कीं) और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुवे, तो अ़न क़रीब वोह दोज़ख़ में "**ग़य्य**" का जंगल पाएंगे ।*

जहन्नम की ख़ौफ़नाक वादी का हौलनाक कुंवां !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा आयते मुबारका में "**ग़य्य**" का तज़किरा है और इस से मुराद जहन्नम की एक वादी है । सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "**ग़य्य**" जहन्नम में एक वादी है जिस की गर्मी और गहराई सब से ज़ियादा है, इस में एक कुंवां है जिस का नाम "**हबहब**" है, जब जहन्नम की आग बुझने पर आती है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस कुंवें को खोल देता है जिस से वोह (या'नी जहन्नम की आग) ब दस्तूर भड़क्ने लगती है । (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है) : ﴿كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا۝۹۷﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब कभी बुझने पर आएगी हम उसे और भड़का देंगे ।) (پ۱۵، بنی اسرآئیل: ۹۷) येह कुंवां बे नमाज़ियों और ज़ानियों और शराबियों और सूद ख़ोरों और मां-बाप को ईज़ा (या'नी तक्लीफ़) देने वालों के लिये है । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 434)

जहन्नम का अ़ज़ाब और दुन्या की तक्लीफ़ें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने कि "**ग़य्य**" जहन्नम में एक वादी है जिस की गहराई (Depth) और गर्मी सब से ज़ियादा है और जहन्नम की आग जब बुझने लगती है, तो इस वादी को खोल दिया जाता है जिस से नारे जहन्नम फिर से भड़क उठती है। ज़रा सोचिये कि इस ख़त़रनाक वादी में जब बे नमाज़ी को डाला जाएगा, तो उस का क्या बनेगा ? याद रखिये ! जहन्नम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़हरो ग़ज़ब का मज़हर है, जिस त़रह़ उस की रह़मतों और ने'मतों की कोई इन्तिहा नहीं और इन्सानी अ़क़्ल उस का अन्दाज़ा नहीं लगा सकती, इसी त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़हरो ग़ज़ब की भी कोई ह़द नहीं, हर वोह तक्लीफ़ देह चीज़ जिस का तसव्वुर किया जाए मसलन किसी आले से ज़िन्दा इन्सान के नाख़ुन (Nail) खींच लेना, किसी पर छुरियों या लाठियों से ज़र्बें लगाना, किसी के ऊपर वज़्नदार गाड़ी चला कर उस की हड्डियां चक्नाचूर कर देना, आ'ज़ा काट कर नमक मिर्च छिड़कना, ज़िन्दा खाल (Skin) उधेड़ना, बिग़ैर बेहोश किये ऑप्रेशन करना या मुख़्तलिफ़ बीमारियों की तकालीफ़ मसलन सर दर्द, बुख़ार, पेट का दर्द या ख़त़रनाक बीमारियां मसलन दिल का दौरा (Heart Attack), सरत़ान (कैन्सर), गुर्दे की पथरी का दर्द, ख़ारिश, शदीद घबराहट वग़ैरा वग़ैरा जो भी अमराज़ या दुन्यवी मसाइबो आलाम जिन का तसव्वुर मुमकिन है वोह जहन्नम की तक्लीफ़ों के मुक़ाबले में निहायत ही मा'मूली हैं। अल ग़रज़ ! दुन्या की सारी बीमारियां और मुसीबतें किसी एक शख़्स पर जम्अ़ हो जाएं फिर भी जहन्नम के सब से हल्के अ़ज़ाब के बराबर नहीं हो सकतीं।

नारे जहन्नम से तू बचाना, ख़ुल्दे बरीं में मुझ को बसाना
या रब अ़ज़ पए शाहे मदीना, या **अल्लाह** *! मेरी झोली भर दे*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 121)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जहन्नम का सब से हल्का अ़ज़ाब

जहन्नम का सब से हल्का अ़ज़ाब क्या है ? इस बारे में **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनिये : जिस को जहन्नम का सब से हल्का अ़ज़ाब होगा, उसे आग की जूतियां पहना दी जाएंगी जिस से उस का दिमाग़ ऐसे खौलेगा जैसे तांबे की पतीली खौलती है, वोह समझेगा कि सब से ज़ियादा अ़ज़ाब मुझ ही पर हो रहा है, ह़ालांकि उस पर सब से हल्का अ़ज़ाब है ।

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب اھون اھل النار عذابا، ص ۱۱۱، الحدیث ۵۱۷، ملتقطاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जहन्नम के अ़ज़ाब से डर जाइये, अपने कमज़ोर जिस्मों पर तरस खाइये, सुस्ती उड़ाइये और गुनाहों से बचते हुवे नमाज़ों का एहतिमाम शुरूअ़ कर दीजिये । इन्तिहाई अफ़्सोस नाक बात येह है कि फ़ुज़ूल बातों और कामों में मश्ग़ूल रह कर नमाज़ें क़ज़ा कर देते हैं मगर इस का एह़सास तक नहीं होता कि हम मुसल्सल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी कर रहे हैं । वोह रब عَزَّوَجَلَّ तो हमें दिन रात ढेरों ने'मतें बिन मांगे अ़त़ा फ़रमा रहा है मगर हमें पूरे दिन में सिर्फ़ पांच वक़्त उस की बारगाह में सजदा करने की तौफ़ीक़ नसीब नहीं होती । अफ़्सोस ! कि हम दुन्यवी बीमारियों, परेशानियों और तक्लीफ़ों से बचने के लिये लोगों के बताए हुवे अवरादो वज़ाइफ़ तो फ़ौरन शुरूअ़ कर देते हैं मगर जिस रब عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने पाक में सेंक्ड़ों मरतबा नमाज़ का हुक्म दिया, हर एक ग़ौर करे कि इस हुक्म की मैं कितनी ता'मील करता हूं ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरबार में ह़ाज़िरी के लिये बुलाने वाले मोअज़्ज़िन की दा'वत पर मैं कितनी बार "**लब्बैक**" कह कर मस्जिद में ह़ाज़िर होता हूं ? हर एक ग़ौर करे कि काम्याबी की त़रफ़ बुलाने वाली मस्जिद से रोज़ाना 5 बार आने वाली सदा क्या मेरे कानों से टकरा कर वापस हो जाती है या मैं सब काम काज छोड़ कर मस्जिद की राह इख़्तियार करता हूं ? अफ़्सोस ! कि हम क़ब्र के अ़ज़ाबों, जहन्नम की हौलनाकियों और क़ियामत की वह्शतों का सुन कर भी ग़फ़्लत की नींद सोए हुवे हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इस ग़फ़्लत की नींद से ह़क़ीक़ी बेदारी नसीब फ़रमा दे ।

याद रखिये ! हर आ़क़िलो बालिग़ मर्द व औ़रत मुसलमान पर रोज़ाना 5 वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ है । जो नमाज़ को फ़र्ज़ न माने वोह दीने

इस्लाम से ख़ारिज है अगर्चे उस का नाम और उस के दीगर काम मुसलमानों वाले ही क्यूं न हों ! और जो नमाज़ को फ़र्ज़ तो माने मगर एक नमाज़ भी जान बूझ कर तर्क कर दे, तो वोह सख़्त फ़ासिक़ व गुनहगार और मुस्तह़िक़े अ़ज़ाबे नार है ।

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जिस ने क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) एक वक़्त की (नमाज़) छोड़ी, हज़ारों बरस जहन्नम में रहने का मुस्तह़िक़ हुवा, जब तक तौबा न करे और उस की क़ज़ा न कर ले । (फ़तावा रज़विय्या, जि. 9, स. 158) इस से अन्दाज़ा लगाइये कि जब एक नमाज़ को जान बूझ कर छोड़ने पर हज़ारों साल तक जहन्नम में रहना पड़ेगा, तो जो शख़्स दिन भर की तमाम नमाज़ें जान बुझ कर तर्क कर देता हो बल्कि सिरे से नमाज़ ही न पढ़ता हो, तो वोह किस क़दर सख़्त अ़ज़ाब का शिकार होगा ! और याद रखिये ! जान बुझ कर नमाज़ छोड़ने वाले से तो ख़ुद शैत़ान भी पनाह मांगता है । चुनान्चे,

मन्क़ूल है कि एक शख़्स जंगल (Jungle) में जा रहा था, शैत़ान भी उस के साथ हो लिया, उस शख़्स ने दिन भर में एक भी नमाज़ न पढ़ी यहां तक कि रात हो गई, शैत़ान उस से भागने लगा । उस शख़्स ने ह़ैरान हो कर भागने का सबब पूछा । शैत़ान बोला : मैं ने उ़म्र भर में सिर्फ़ एक बार आदम عَلَيْهِ السَّلَام को सजदा करने का इन्कार किया, तो मल्ऊ़न हुवा और तू ने आज पांचों नमाज़ें तर्क कर दीं, मुझे ख़ौफ़ आ रहा है कि कहीं तुझ पर क़ह्र नाज़िल हो और मैं भी उस में न फंस जाऊं । (دُرَّةُ النَّاصِحِين، ص۱۴۴، ملخصاً)

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त
हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़त़ा या इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी नमाज़ की पाबन्दी करते हुवे पांचों नमाज़ें मस्जिद की पहली सफ़ में, तक्बीरे ऊला के साथ, बा जमाअ़त अदा करनी चाहियें । आइये ! अ़ज़ाबे इलाही से ख़ुद को डराने और नमाज़ों की आ़दत बनाने के लिये नमाज़ न पढ़ने की चन्द वईदें सुनते हैं । चुनान्चे,

1. ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : मेरे ख़लील صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे वसिय्यत फ़रमाई कि "किसी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक न ठहराना अगर्चे तुम्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए या जला दिया जाए, फ़र्ज़ नमाज़ जान बूझ कर न छोड़ना क्यूंकि जो जान बूझ कर नमाज़ छोड़ देता है उस से अमान उठा ली जाती है और शराब हरगिज़ न पीना क्यूंकि येह हर बुराई की जड़ है।"

(ابن ماجه ،ابواب الاشربة، باب الخمر مفتاح كل شر، الحديث ۴۰۳۴، ص ۲۷۲۰)

2. इरशाद फ़रमाया : जिस ने नमाज़ छोड़ी, तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि वोह उस पर ग़ज़ब फ़रमाएगा।

(مجمع الزوائد، كتاب الصلاة، باب فی تارک الصلاة، الحدیث: ۱۶۳۲، ج ۲، ص ۲۶)

3. इरशाद फ़रमाया : जिस ने नमाज़ छोड़ी, उस ने अपने अहलो इ़याल और माल को घटा दिया।

(كنز العمال، كتاب الصلاة، الترهيب عن ترک الصلاة، الحديث ۱۹۰۸۵، ج ۷، ص ۱۳۲)

4. इरशाद फ़रमाया : जिस ने जान बूझ कर नमाज़ को तर्क किया, तो बिला शुबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िम्मा उस से बरी है।

(معجم الكبير، ۱۲/ ۱۹۵، حدیث: ۱۳۰۲۳)

मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बे नमाज़ी, **अल्लाह** की अमान में नहीं रहता। नमाज़ की बरकत से इन्सान दुन्या में आफ़तों से, मरते वक़्त ख़राबिये ख़ातिमा से, क़ब्र (के इम्तिह़ान) में फ़ेल होने से, ह़श्र में मुसीबतों से بفضلہٖ تعالٰی अम्न में रहता है। (मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 79)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ों के मुआ़मले में ग़फ़्लत बरतना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी, जहन्नम की ह़क़दारी और अहल व माल में बे बरकती का सबब है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें नमाज़ों की पाबन्दी करने का हुक्म देते हुवे पारह 2, सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 238 में इरशाद फ़रमाता है :

حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۚ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ﴿۲۳۸﴾ (پ2، البقرة، 238)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *निगेहबानी करो सब नमाज़ों और बीच की नमाज़ की और खड़े हो* ***अल्लाह*** *के हुज़ूर अदब से।*

नमाज़ की अहम्मिय्यत का अन्दाज़ा इस बात से भी होता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे नबी, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने और अपनी औलाद के लिये नमाज़ क़ाइम रखने की बा क़ाइदा दुआ भी फ़रमाई, जिस का तज़किरा पारह 13, सूरए इब्राहीम की आयत नम्बर 40 में यूं है :

رَبِّ اجْعَلْنِىْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِىْ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿۴۰﴾ (پ13، الابراہیم، 40)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ मेरे रब ! मुझे नमाज़ का क़ाइम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को ऐ हमारे रब ! और मेरी दुआ सुन ले।*

और बरोज़े क़ियामत भी सब से पहले नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ ही सुवाल किया जाएगा। जैसा कि ह़दीसे पाक में है : اَوَّلُ مَايُحَاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ صَلَاتُهٗ कल क़ियामत के दिन बन्दे से सब से पहले उस की नमाज़ के बारे में सुवाल होगा। अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : बेशक नमाज़ ईमान की अ़लामत और अस्ले इबादत है।

(التیسیر شرح جامع الصغیر، ۱/۳۹۱)

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर तीन बार सब से अफ़्ज़ल अ़मल के बारे में सुवाल किया, तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीनों बार येही जवाब दिया कि नमाज़ सब से अफ़्ज़ल अ़मल है। (مسند امام احمد، مسند عبد اللہ بن عمرو بن العاص، ۲/۵۸۰، حدیث: ۶۶۱۳، ملخصاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि नमाज़ इस क़दर अहम इबादत है कि क़ुरआने पाक में इस की पाबन्दी का हुक्म दिया गया। लिहाज़ा हमें भी नमाज़ की अहम्मिय्यत को समझते हुवे न सिर्फ़ ख़ुद पांचों नमाज़ें पाबन्दी के साथ मस्जिद की पहली सफ़ में, तक्बीरे ऊला के साथ, बा जमाअ़त

अदा करनी चाहियें बल्कि अपने समझदार बच्चों को भी मस्जिद साथ ले कर जाना चाहिये, ना समझ को नहीं। **फ़तावा रज़विय्या** की जिल्द 16 के सफ़्हा नम्बर 434 पर है : मस्जिद में ना समझ बच्चों को ले जाने की मुमानअ़त है। ह़दीस में है : جَنِّبُوْامَسَاجِدَكُمْ صِبْيَانَكُمْ وَمَجَانِيْنَكُمْ अपनी मसाजिद को, अपने ना समझ बच्चों और पागलों से महफ़ूज़ रखो।

(ابن ماجه، كتاب المساجد و الجماعات، باب مايكره في المساجد ۱/۴۱۵، حديث ۷۵۰)

याद रखिये ! अगर हम नमाज़ों की पाबन्दी के साथ साथ अपने समझदार बच्चों को भी मस्जिद ले कर जाएंगे, तो उन के नन्हे ज़ेह्न बचपन ही से नमाज़ों की त़रफ़ माइल होने लगेंगे और फिर बड़े हो कर वोह भी नमाज़ों के आ़दी बन जाएंगे क्यूंकि जो बात बच्चों के ज़ेह्न में बचपन ही से बैठ जाए, फ़ित़री त़ौर पर बड़े हो कर भी वोह बात उन के ज़ेह्नों में रासिख़ (या'नी पुख़्ता) होती है।

नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ 3 फ़रामीने ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ की अहम्मिय्यत जानने के बा'द भी अगर कोई न पढ़े, तो बड़ा नादान और अपने हाथों जहन्नम में जाने का सामान करने वाला है, ह़ालांकि नमाज़ पढ़ना दुन्या व आख़िरत की सआ़दतों का ज़रीआ़ है। कुरआने पाक में जा बजा न सिर्फ़ नमाज़ का हुक्म दिया गया है बल्कि अज्रो सवाब बयान कर के इस की तरग़ीब भी दिलाई गई है। आइये ! इस बारे में तीन फ़रामीने ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ सुनिये। चुनान्चे, पारह 6, सूरतुन्निसा की आयत नम्बर 162 में इरशाद होता है :

وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓىِٕكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۶۲﴾ (پ۶، النساء: ۱۶۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और नमाज़ क़ाइम रखने वाले और ज़कात देने वाले और* ***अल्लाह*** *और क़ियामत पर ईमान लाने वाले ऐसों को अ़न क़रीब हम बड़ा सवाब देंगे।*

पारह 9, सुरतुल अन्फ़ाल की आयत नम्बर 3 और 4 में इरशाद होता है :

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝۳ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝۴

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह जो नमाज़ क़ाइम रखें और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करें येही सच्चे मुसलमान हैं, इन के लिये दरजे हैं इन के रब के पास और बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी ।*

पारह 6, सुरतुल माइदा की आयत नम्बर 12 में इरशाद होता है :

وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مَعَكُمْ ؕ لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ (پ6، المائدہ: 12)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और **अल्लाह** ने फ़रमाया बेशक मैं तुम्हारे साथ हूं ज़रूर, अगर तुम नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और मेरे रसूलों पर ईमान लाओ और उन की ता'ज़ीम करो और **अल्लाह** को क़र्ज़े ह़सन दो, बेशक मैं तुम्हारे गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर तुम्हें बाग़ों में ले जाऊंगा जिन के नीचे नह्रें रवां ।*

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! नमाज़ियों के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में कैसे कैसे अ़ज़ीमुश्शान इन्आ़मात हैं कि कहीं उन्हें जन्नत व मग़्फ़िरत की बिशारतें दी जा रही हैं, तो कहीं अज्रे अ़ज़ीम की नवीदें (या'नी ख़ुश ख़बरियां) सुनाई जा रही हैं । अह़ादीसे मुबारका में भी नमाज़ की बहुत ज़ियादा अहम्मिय्यत और रग़बत दिलाई गई है । अगर हम नमाज़ का वक़्त होते ही अपने तमाम तर दुन्यवी झमेलों को छोड़ कर नमाज़ की तय्यारी में मसरूफ़ हो जाया करें और निहायत ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ बा जमाअ़त नमाज़ अदा करें, तो इस की बरकत से जहां दुन्या की ढेरों भलाइयां नसीब होंगी, वहीं इस का एक उख़रवी फ़ाइदा येह भी ह़ासिल होगा कि कल बरोज़े क़ियामत येही नमाज़ हमारी नजात व मग़्फ़िरत का बाइ़स बन जाएगी । जैसा कि :

ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ पढ़ने वाले की मग़फ़िरत

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने 5 नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं, जो इन के लिये बेहतर त़रीक़े से वुज़ू करे और इन्हें इन के वक़्त में अदा करे और इन के रुकूअ़ व सुजूद, ख़ुशूअ़ के साथ पूरे करे, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि उस की मग़फ़िरत फ़रमा दे और जो इन्हें अदा नहीं करेगा, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मे उस के लिये कुछ नहीं, चाहे तो उसे मुआ़फ़ फ़रमा दे और चाहे तो उसे अ़ज़ाब दे।

(سنن ابوداؤد، کتاب الصلوۃ، باب المحافظۃ علی وقت الصلوات، رقم ۴۲۵، ج۱، ص۱۸۶)

नमाज़ से गुनाह धुलते हैं

जो ख़ुश नसीब पांचों नमाज़ें पढ़ते हैं, तो उन के सारे गुनाह मिटा दिये जाते हैं। जैसा कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर तुम्हारे किसी के सेह्न में नह्र हो, हर रोज़ वोह 5 बार उस में ग़ुस्ल करे, तो क्या उस पर कुछ मैल रह जाएगा ? लोगों ने अ़र्ज़ किया : जी नहीं ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नमाज़ गुनाहों को ऐसे ही धो देती है जैसा कि पानी मैल को धो देता है। (سنن ابن ماجہ، ج۲، ص۱۶۵، حدیث۱۳۹۷)

हर नमाज़ पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारा है

जो ख़ुश नसीब नमाज़ों के आ़दी होते हैं, अगर ब तक़ाज़ए बशरिय्यत उन से एक नमाज़ से दूसरी नमाज़ के दरमियानी वक़्फ़े में गुनाह सरज़द हो जाएं, तो दूसरी नमाज़ उन गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाती है या'नी दोनों नमाज़ों के दरमियान जो गुनाह हुवे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुआ़फ़ फ़रमा देता है। जैसा कि :

ह़ज़रते ह़ारिस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه एक दिन तशरीफ़ फ़रमा थे और हम भी बैठे थे कि मोअज़्ज़िन आ गया। ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने पानी मंगवा कर वुज़ू किया फिर फ़रमाया कि मैं ने मदनी ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इसी त़रह़ वुज़ू करते देखा है और मैं ने सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते हुवे भी सुना कि जो शख़्स मेरे इस वुज़ू की त़रह़ वुज़ू करे फिर वोह ज़ोहर की नमाज़ पढ़ ले, तो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देता है, या'नी वोह गुनाह जो फ़ज्र की नमाज़ और इस ज़ोहर की नमाज़ के दरमियान हुवे हों फिर जब अ़स्र की नमाज़ पढ़ता है, तो ज़ोहर और अ़स्र के माबैन (या'नी बीच) के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देता है फिर जब मग़रिब की नमाज़ पढ़ता है, तो अ़स्र और मग़रिब के दरमियान के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देता है फिर इ़शा की नमाज़ पढ़ता है, तो उस के और मग़रिब के दरमियान के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देता है फिर हो सकता है कि रात भर वोह लेट कर ही गुज़ार दे और फिर जब उठ कर वुज़ू करे और फ़ज्र की नमाज़ पढ़े, तो इ़शा और फ़ज्र के माबैन (या'नी बीच) के गुनाहों की बख़्शिश हो जाती है और येही वोह नेकियां हैं जो बुराइयों को दूर कर देती हैं। (الاحادیث المختارۃ، ج۱، ص۴۵۰، حدیث۳۲۴، ملتقطا)

नमाज़ में शिफ़ा है

जो ख़ुश नसीब पांचों नमाज़ें अदा करते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से उन्हें बीमारियों से शिफ़ा अ़ता फ़रमाता है। आज हमारे यहां ऐसी नई नई बीमारियां ज़ाहिर हो रही हैं जिन का आज से पहले नाम तक न सुना था, उन के इ़लाज मुआ़लजे के लिये लाखों रुपये ख़र्च करने के बा वुजूद भी बीमारियां बढ़ती जाती हैं। अगर हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रामीन पर अ़मल करते हुवे नमाज़ की पाबन्दी शुरूअ़ कर दें, तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बीमारियों से नजात मिल सकती है। जैसा कि :

प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اِنَّ فِی الصَّلٰوۃِ شِفَاءً बेशक नमाज़ में शिफ़ा है। (سنن ابن ماجہ، باب الصلاۃ شفاء، ج۴، ص۹۸، الحدیث: ۳۴۵۸) लिहाज़ा हमें चाहिये कि बीमार हों या तन्दुरुस्त हर ह़ाल में न सिर्फ़ ख़ुद नमाज़ की पाबन्दी करें बल्कि अपने अहलो इ़याल को भी नमाज़ का आ़दी बनाएं।

रोज़ी में बरकत

जो ख़ुश नसीब पांचों नमाज़ें अदा करते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की रोज़ी में बरकत डाल देता है। आज के इस पुर फ़ितन दौर में हर बन्दा माल कमाने की धुन में लगा हुवा है लेकिन सारा सारा दिन माल कमाने के बा'द भी

हर एक येही शिक्वा लिये बैठा है कि इतने पैसे कमाता हूं फिर भी बरकत नहीं होती । याद रखिये ! पांचों नमाज़ों की अदाएगी और इन में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ और ता'दीले अरकान का लिहाज़ करते हुवे वाजिबात, सुनन और आदाब का पूरी त़रह़ लिहाज़ रखना **रिज़्क़ में ख़ैरो बरकत** का ज़रीआ़ हैं ।

(राहे इल्म, स. 105, माख़ूज़न)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ एक बहुत ही अ़ज़ीम इबादत है । नमाज़ मोमिन के लिये जन्नत में ले जाने वाला बेहतरीन अ़मल है, ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ दो रक्अ़तें अदा करने वाले के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है, दो रक्अ़त नमाज़ दुन्या व माफ़ीहा से बेहतर है, नमाज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक पसन्दीदा अ़मल है, नमाज़ में हर सजदे के इ़वज़ एक नेकी लिखी जाती, एक गुनाह मिटाया जाता और एक दरजा बुलन्द किया जाता है, नमाज़ी बरोज़े क़ियामत सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल किया जाएगा, नमाज़ से गुनाह झड़ते हैं, नमाज़ गुनाहों के मैल कुचैल को धो देती है, एक नमाज़ पिछली नमाज़ के दौरान होने वाले गुनाहों को धो डालती है, नमाज़ी ख़ैर में रात गुज़ारता है, नमाज़ बुराइयों को मिटा देती है, नमाज़ी जन्नत में दाख़िल होगा, नमाज़ी के लिये मा'सूम फ़िरिश्ते रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मग़फ़िरत की सिफ़ारिश करते हैं, नमाज़ी **अल्लाह** तआ़ला की अमान या'नी ह़िफ़ाज़त में रहता है, नमाज़, नमाज़ी के लिये दुआ़ए ह़िफ़ाज़त करती है, नमाज़ी कामिल मोमिन है, नमाज़ी को पूरा पूरा बदला दिया जाएगा, नमाज़ शैत़ान का मुंह काला करती है ।

दीदारे ह़क़ दिखाएगी ऐ भाइयो ! नमाज़
जन्नत तुम्हें दिलाएगी ऐ भाइयो ! नमाज़
दरबारे मुस्त़फ़ा में तुम्हें ले के जाएगी
ख़ालिक़ से बख़्शवाएगी ऐ भाइयो ! नमाज़
इ़ज़्ज़त के साथ नूरी लिबास, अच्छे ज़ेवरात
सब कुछ तुम्हें पहनाएगी ऐ भाइयो ! नमाज़

जन्नत में नर्म नर्म बिछौनों के तख़्त पर
आराम से सुलाएगी ऐ भाइयो ! नमाज़
ख़िदमत तुम्हारी करेंगी हूरें अदब के साथ
रुत्बा बहुत बढ़ाएगी ऐ भाइयो ! नमाज़
कौसर के, सल्सबील के शरबत पिलाएगी
मेवे तुम्हें खिलाएगी ऐ भाइयो ! नमाज़
सब इत्र व फूल होंगे निछावर पसीने पर
ख़ुश्बू में जब बसाएगी ऐ भाइयो ! नमाज़
रह़मत के शामियानों में ख़ुश्बू के साथ साथ
ठन्डी हवा चलाएगी ऐ भाइयो ! नमाज़
बाग़े बिहिश्त रौज़ए रिज़्वां बहारे ख़ुल्द
सब कुछ तुम्हें दिखाएगी ऐ भाइयो ! नमाज़
पढ़ते रहो नमाज़ कि दोनों जहान में
सब कुछ तुम्हें दिलाएगी ऐ भाइयो ! नमाज़
फ़ाक़े से, मुफ़्लिसी से, जहन्नम की आग से
सब से तुम्हें बचाएगी ऐ भाइयो ! नमाज़
पढ़ कर नमाज़ साथ लो सामाने आख़िरत
महूशर में काम आएगी ऐ भाइयो ! नमाज़
*बात **आ'ज़मी** की मानो न छोड़ो कभी नमाज़*
***अल्लाह** से मिलाएगी ऐ भाइयो ! नमाज़*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी हमें पांचों नमाज़ें पाबन्दी के साथ, बा जमाअ़त पढ़ने का ज़ेह्न देती है, आप भी दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर ख़ुद भी नमाज़ के आ़दी बन जाइये और 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लेते हुवे दूसरों को भी नमाज़ की दा'वत दीजिये। 12 मदनी कामों में से रोज़ाना का एक मदनी काम "**सदाए मदीना**" भी है।

सदाए मदीना

सदाए मदीना क्या है ? दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में नमाज़े फ़ज्र के लिये मुसलमानों को जगाने को **सदाए मदीना** कहते हैं और येह वोह अ़ज़ीम काम है जो सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने इख़्तियार फ़रमाया। वोह ह़ज़रात अपने घर वालों को नमाज़ के लिये जगाया करते। जैसा कि :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे मोह़तरम अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रात में जिस क़दर रब तआ़ला चाहता नमाज़ पढ़ते रहते यहां तक कि जब रात का आख़िरी वक़्त होता, तो अपने घर वालों को भी नमाज़ के लिये जगा देते और उन से फ़रमाते : اَلصَّلٰوۃ या'नी नमाज़ फिर येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाते :

وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ؕ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ﴿۱۳۲﴾ (پ۱۶، طٰہٰ: ۱۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दे और ख़ुद उस पर साबित रह, कुछ हम तुझ से रोज़ी नहीं मांगते, हम तुझे रोज़ी देंगे और अन्जाम का भला परहेज़गारी के लिये।*

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الصلاۃ، باب التحریض...الخ، الفصل الثالث، ۱/۳۶۰، حدیث: ۱۲۴۰)

आइये ! बत़ौरे तरग़ीब सदाए मदीना लगाने की एक मदनी बहार सुनिये और सदाए मदीना लगाने की निय्यत कीजिये। चुनान्चे,

फ़ैज़ाने मदीना के लिये ज़मीन मिल गई

एक इस्लामी भाई का बयान है : दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले के साथ हम एक शहर में गए, अज़ाने फ़ज्र के बा'द हम सदाए मदीना लगाते जा रहे थे कि अचानक एक घर से एक मॉडर्न नौजवान हमारे साथ शामिल हुवा और उस ने फ़ज्र की नमाज़ मस्जिद में बा जमाअ़त अदा की, बा'द में उस नौजवान के वालिद मदनी क़ाफ़िले वालों से मिलने के लिये आए। येह साह़िबे

सरवत थे, उन्हों ने आ कर बताया कि सदाए मदीना की बरकत से मेरा ना फ़रमान, मॉडर्न, बे नमाज़ी बेटा पन्ज वक़्ता नमाज़ पढ़ने लगा है । इस मॉडर्न नौजवान के वालिद ने اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुतअस्सिर हो कर उस शहर में मदनी मर्कज़ "**फ़ैज़ाने मदीना**" के लिये ज़मीन दे दी ।

सदाए मदीना दूं रोज़ाना सदक़ा
अबू बक्रो फ़ारूक़ का या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 103)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ कितनी प्यारी इबादत है और इस के किस क़दर फ़ज़ाइल हैं कि नमाज़ दीन का सुतून है, नमाज़ बीमारियों से बचाती है, नमाज़ रोज़ी में बरकत का ज़रीआ़ है और अ़ज़ाबे क़ब्र से बचाने के साथ साथ अन्धेरी क़ब्र का चराग़ भी है । क़ुरआनो ह़दीस में जहां भी नमाज़ की अदाएगी का हुक्म आया है उस से मुराद नमाज़ को तमाम तर फ़राइज़ व वाजिबात के साथ अदा करना है और मर्दों के लिये नमाज़ के वाजिबात में से येह भी है कि उसे बा जमाअ़त पढ़ा जाए । अह़ादीसे मुबारका में जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ने के कसीर फ़ज़ाइल बयान हुवे हैं । आइये ! तरग़ीब के लिये 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा सुनते हैं । चुनान्चे,

1. नमाज़े बा जमाअ़त, तन्हा पढ़ने से सत्ताईस दरजा बढ़ कर है ।

(بخاری، کتاب الاذان، باب فضل صلوٰت الجماعة، ۱/۲۳۲، حدیث: ۶۴۵)

2. इरशाद फ़रमाया : जिस ने कामिल वुज़ू किया फिर फ़र्ज नमाज़ के लिये चला और इमाम के साथ नमाज़ पढ़ी, उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे ।

(شعب الایمان، باب العشرون من شعب الایمان وہو باب فی الطہارۃ، ۳/۹، الحدیث: ۲۷۲۷)

3. इरशाद फ़रमाया : जब बन्दा बा जमाअ़त नमाज़ पढ़े फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपनी ह़ाजत का सुवाल करे, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस बात से ह़या फ़रमाता है कि बन्दा ह़ाजत पूरी होने से पहले वापस लौट जाए ।

(حلیۃ الاولیاء، مسعر بن کدام، ۷/۲۹۹، حدیث: ۱۰۵۹۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त मस्जिद में अदा करने की आ़दत बनानी चाहिये । आप ने देखा होगा कि बसा अवक़ात बहुत से मा'ज़ूर और बड़ी उ़म्र के अफ़राद बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने के लिये बड़ी मुश्किल से चल कर मस्जिद की त़रफ़ आते हैं और जैसे उन्हें आसानी होती है नमाज़ पढ़ लेते हैं, अगर वोह इतनी मशक़्क़त उठाने के बा वुजूद जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने को तरजीह़ दे सकते हैं, तो हमें तो ब दरजए औला बा जमाअ़त नमाज़ अदा करनी चाहिये । आज हम दुन्यवी ए'तिबार से तो एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं, मसलन किसी का आ़लीशान बंगला देखा, तो उस जैसा बनाने की ख़्वाहिश, किसी को उ़म्दा कपड़े का शानदार लिबास पहने देखा, तो ऐसा पहनने की ख़्वाहिश, किसी की नई चमकती दमकती कार देख कर दिल ललचाना, किसी का कामयाब कारोबार (Business) देखा, तो मुंह में पानी भर आना, अल ग़रज़ ! हम दुन्यवी मालो दौलत की मह़ब्बत के ऐसे ह़रीस बन चुके हैं कि दिन रात आहें भरते और उस के हुसूल के लिये कोशिशें करते ज़रा नहीं थकते । **ऐ काश** ! किसी को नेकियां करता देख कर हम भी नेक आ'माल करने की ह़िर्स में मुब्तला हो जाएं, **ऐ काश** ! दूसरों को मस्जिद की त़रफ़ जाता देख कर हम में भी पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त अदा करने की ख़्वाहिश पैदा हो जाए, दूसरों को मस्जिद से मह़ब्बत करता देख कर हम भी मस्जिद से मह़ब्बत करने वाले बन जाएं ।

हमारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बड़े बड़े सफ़र किये और सफ़र की मशक़्क़तें और सुऊ़बतें बरदाश्त करते हुवे भी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने हमेशा जमाअ़त के साथ ही नमाज़ अदा फ़रमाई । आइये ! इस ज़िम्न में आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुनते हैं । चुनान्चे,

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की नमाज़ से मह़ब्बत

बावन बरस की उ़म्र में जब दूसरी बार सफ़रे ह़ज के लिये रवाना हुवे, मनासिके ह़ज अदा करने के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ऐसे बीमार हुवे कि दो

माह से ज़ियादा साहिबे फ़िराश रहे, जब कुछ सिह्हतयाब हुवे, तो ज़ियारते रौज़ए अन्वर के लिये कमर बस्ता हुवे और "**जिद्दा शरीफ़**" से होते हुवे किश्ती के ज़रीए तीन दिन के बा'द "**राबिग़**" के मक़ाम पर पहुंचे और वहां से मदीनतुर्रसूल के लिये ऊंट की सुवारी की, इसी रास्ते में जब "**बीरे शैख़**" पहुंचे, तो मन्ज़िल क़रीब थी लेकिन फ़ज्र का वक़्त थोड़ा रह गया था । ऊंट वालों ने मन्ज़िल ही पर ऊंट रोकने की ठानी लेकिन उस वक़्त तक नमाज़े फ़ज्र का वक़्त ख़त्म होने का अन्देशा था । सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه येह सूरते ह़ाल देख कर अपने रुफ़क़ा के साथ वहीं ठहर गए और क़ाफ़िला चला गया । आप के पास किरमिच (या'नी मख़्सूस टाट का बना हुवा) डोल था मगर रस्सी मौजूद नहीं थी और कुंवां भी गहरा था, लिहाज़ा इ़मामे बांध कर पानी निकाला और वुज़ू कर के वक़्त के अन्दर नमाज़ अदा फ़रमाई मगर अब येह फ़िक्र लाहिक़ हुई कि त़वील अ़र्सा बीमार रहने की वज्ह से कमज़ोरी बहुत हो गई है, इतने मील पैदल कैसे चलेंगे ? मुंह फेर कर देखा, तो एक अजनबी जम्माल (या'नी ऊंट वाला) अपना ऊंट लिये इन्तिज़ार में खड़ा है, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ह़म्दे इलाही (عَزَّوَجَلَّ) बजा ला कर उस पर सुवार हो गए ।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 217, मुलख़्ख़सन)

मुस्त़फ़ा का वोह लड़ला प्यारा वाह ! क्या बात आ'ला ह़ज़रत की
ग़ौसे आ'ज़म की आंख का तारा वाह ! क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 575)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! येह है आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का ज़ौक़े नमाज़ और शौक़े इ़बादत कि महीनों की त़वील अ़लालत, शदीद कमज़ोरी व नक़ाहत और सफ़र की मशक़्क़त के बा वुजूद क़ाफ़िले का साथ तो छोड़ दिया मगर सब से अफ़्ज़ल इ़बादत "**नमाज़**" छोड़ना गवारा न किया । हमें चाहिये कि ख़ुशी हो या ग़म हर मौक़अ़ पर नमाज़ की पाबन्दी करें और जिन्हें नमाज़ पढ़ना नहीं आती, तो सीखने में

हरगिज़ शर्म महसूस न करें और जो नमाज़ पढ़ना तो जानते हैं मगर पढ़ते नहीं और इस त़रह़ के शैत़ानी वस्वसों का शिकार रहते हैं कि **"हम तो बड़े गुनहगार बन्दे हैं, हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िरी के क़ाबिल कहां ?"** या **"पहले नेक बन जाएं, दाढ़ी रख लें फिर नमाज़ भी शुरूअ़ कर देंगे"** ऐसे लोगों को चाहिये कि फ़ौरन इस शैत़ानी वस्वसे की काट करते हुवे नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ कर दें, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से वोह गुनाहों से बचने में कामयाब हो जाएंगे । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने करीम, पारह 21, सूरतुल अ़न्कबूत की आयत नम्बर 45 में इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ (پ21، العنکبوت، 45)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक नमाज़ मन्अ़ करती है बे ह़याई और बुरी बात से ।

सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : जो शख़्स नमाज़ का पाबन्द होता है और इस को अच्छी त़रह़ अदा करता है, नतीजा येह होता है कि एक न एक दिन वोह उन बुराइयों को तर्क कर देता है जिन में मुब्तला था ।

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि एक अन्सारी जवान, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़ पढ़ा करता था और बहुत से कबीरा गुनाहों का इर्तिकाब करता था । हुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से उस की शिकायत की गई । फ़रमाया : उस की नमाज़ किसी रोज़ उस को इन बातों से रोक देगी । चुनान्चे, बहुत ही क़रीब ज़माने में उस ने तौबा की और उस का ह़ाल बेहतर हो गया ।

मुझे सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ दे दे जो नाराज़ तू हो गया तो कहीं का सदा के लिये हो जा राज़ी ख़ुदाया

पए ताजदारे ह़रम या इलाही रहूंगा न तेरी क़सम या इलाही हो मुझ नातुवां पर करम या इलाही

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नमाज़ बुराइयों से बचाती है। आइये ! इस से मुतअ़ल्लिक़ एक बहुत प्यारी ह़िकायत सुनते हैं।

नमाज़ की बरकत से चोर ताइब हो गया

मन्क़ूल है कि एक चोर रात के वक़्त ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ बसरिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا के घर में दाख़िल हुवा, उस ने दाएं बाएं हर त़रफ़ पूरे घर की तलाशी ली लेकिन सिवाए एक लोटे के कोई चीज़ न पाई। जब उस ने निकलने का इरादा किया, तो आप ने फ़रमाया : अगर तुम चालाक व होश्यार चोर हो, तो कोई शै लिये बिग़ैर नहीं जाओगे। उस ने कहा : मुझे तो कोई शै नहीं मिली। आप ने फ़रमाया : ऐ ग़रीब शख़्स ! इस लोटे से वुज़ू कर के कमरे में दाख़िल हो जा और दो रक्अ़त नमाज़ अदा कर, यहां से कुछ न कुछ ले के जाएगा। उस ने आप के कहने के मुत़ाबिक़ वुज़ू किया और जब नमाज़ के लिये खड़ा हुवा, तो ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا ने अपनी निगाहें आसमान की त़रफ़ उठा कर यूं दुआ़ की : ऐ मेरे आक़ा व मौला عَزَّوَجَلَّ ! येह शख़्स मेरे पास आया लेकिन इस को कुछ न मिला, अब मैं ने इसे तेरी बारगाह में खड़ा कर दिया है, इसे अपने फ़ज़्लो करम से मह़रूम न करना। जब वोह नमाज़ से फ़ारिग़ हुवा, तो उस को इबादत की लज़्ज़त नसीब हुई। चुनान्चे, वोह रात के आख़िरी ह़िस्से तक नमाज़ में मश्ग़ूल रहा। जब सह़री का वक़्त हुवा, तो आप उस के पास तशरीफ़ ले गईं, तो उसे ह़ालते सजदा में अपने नफ़्स को डांटते हुवे और येह कहते हुवे पाया : जब मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझ से पूछेगा : क्या तुझे ह़या न आई कि तू मेरी ना फ़रमानी करता रहा ? और मेरी मख़्लूक़ से गुनाह छुपाता रहा और अब गुनाहों की गठड़ी ले कर मेरी बारगाह में पेश है, जब वोह मुझे इ़ताब करेगा और अपनी बारगाहे रह़मत से दूर कर देगा, तो उस वक़्त मैं क्या जवाब दूंगा ? आप ने पूछा : ऐ भाई ! रात कैसी गुज़री ? बोला : ख़ैरिय्यत से गुज़री, आ़जिज़ी व इन्केसारी से मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में खड़ा रहा, तो उस ने मेरे टेढ़ेपन को दुरुस्त कर दिया, मेरा उ़ज़्र क़बूल फ़रमा लिया और मेरे गुनाहों को बख़्श दिया और मुझे मेरे मत़लूब व मक़्सूद तक पहुंचा दिया। (ह़िकायतें और नसीह़तें, स. 305)

महब्बत में अपनी गुमा या इलाही न पाऊं अपना पता या इलाही
रहूं मस्तो बेखुद मैं तेरी विला में पिला जाम ऐसा पिला या इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! नमाज़ कैसी प्यारी इबादत है कि एक चोर चोरी के इरादे से आया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नेक बन्दी, ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ बसरिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْها के कहने पर नमाज़ के लिये खड़ा हो गया, तो नमाज़ की लज़्ज़त व ह़लावत में ऐसा गुम हुवा कि सारी रात नमाज़ में मश्ग़ूल रहा और सुब्ह़ अपने गुनाहों से ताइब हो कर राहे रास्त पर आ गया मगर क्या वज्ह है कि एक ता'दाद ऐसी है जो नमाज़ पढ़ने के बा वुजूद भी ह़राम व गुनाह और ममनूआ़ते शरई से नहीं बच पाती । मां-बाप की ना फ़रमानी कर के उन की दिल आज़ारी का सबब बनती है, पर्दे के शरई अह़काम पर पूरी त़रह़ से अ़मल नहीं कर पाती, फ़िल्मों ड्रामों और गुनाहों भरे चेनल्ज़ देखने से बच नहीं पाती, गाली गलोच, ग़ीबत, चुग़ली, फ़ोह़्श गोई, दिल आज़ारी, लोगों की ह़क़ तलफ़ी, सूद और रिश्वत के लेन देन वग़ैरा वग़ैरा कबीरा गुनाहों से जान नहीं छूटती । ह़ैरत बालाए ह़ैरत कि नमाज़ पढ़ने के बा वुजूद हम अपना प्यारा प्यारा चेहरा जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत की निशानी पैदा फ़रमाई है और शहनशाहे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने शाही भी मौजूद है कि "दाढ़ी बढ़ाओ, मूंछें कतरवाओ और आतश परस्तों की मुख़ालिफ़त करो ।" (صحیح مسلم ،ص۱۲۵،رقم ۶۰۰،بتقدم وتاخر) फिर भी हम निहायत बे दर्दी के साथ इस महब्बत की निशानी को नोच, मुंड कर गन्दी नाली तक में बहा देने से गुरेज़ नहीं करते, ह़ालांकि दाढ़ी मुंडाना और कतरवा कर एक मुठ्ठी से कम कर देना, दोनों **ह़राम** है । आख़िर ऐसा क्यूं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सकता है कि हम नमाज़ की ज़ाहिरी और बात़िनी सुन्नतों और आदाब का सह़ीह़ त़ौर पर ख़याल न रखते हों, जिस के सबब अभी तक नमाज़ की बरकतों से मह़रूम हों । अगर सह़ीह़ त़ौर पर

वुज़ू कर के ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ उस की तमाम तर ज़ाहिरी व बातिनी सुन्नतों और आदाब को मल्हूज़ रखते हुवे नमाज़ पढ़ते, तो हम पर भी ज़रूर नमाज़ की बरकतें ज़ाहिर होतीं । बड़े अफ़्सोस की बात है कि हमारी एक ता'दाद तो सिरे से नमाज़ ही नहीं पढ़ती और जो नमाज़ पढ़ते भी हैं, उन में भी कई लोग नमाज़ के बुन्यादी मसाइल नहीं जानते, जिस की वज्ह से नमाज़ में ग़लतियों के सबब अपनी नमाज़ें ज़ाएअ़ करत बैठते हैं, लिहाज़ा हमें चाहिये कि नमाज़ों की पाबन्दी की पुख़्ता निय्यत करने के साथ साथ नमाज़ों की सह़ीह़ अदाएगी की त़रफ़ भी भरपूर तवज्जोह दें ताकि हमारी नमाज़ें ज़ाएअ़ होने से बच जाएं । अपनी नमाज़ों को ग़लतियों से बचाने, इस की अदाएगी का सह़ीह़ त़रीक़ा सीखने और नमाज़ के ज़रूरी मसाइल जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब **"नमाज़ के अह़काम"** का मुत़ालआ़ और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये । इस के इलावा 7 दिन का **फ़ैज़ाने नमाज़ कोर्स** करना और दा'वते इस्लामी की वेबसाइट पर मौजूद शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की V.C.D. **"नमाज़ का त़रीक़ा"** देखना भी इन्तिहाई मुफ़ीद है ।

किताब "नमाज़ के अह़काम" का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी वुज़ू व ग़ुस्ल के दुरुस्त त़रीक़े के साथ साथ नमाज़ के वाजिबात, मक्रूहात, मुफ़्सिदात (या'नी नमाज़ को तोड़ने वाली चीज़ें) और दीगर ज़रूरी मसाइल की मा'लूमात होनी चाहियें ताकि हमारी नमाज़ें ज़ाएअ़ न हों क्यूंकि हर आ़क़िलो बालिग़ मुसलमान पर जिस त़रह़ नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ है, इसी त़रह़ ह़स्बे ह़ाल नमाज़ के मसाइल भी सीखना भी फ़र्ज़ है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के तह़्त नमाज़ के मसाइल के बारे में 499 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल निहायत ही आसान किताब बनाम **"नमाज़ के अह़काम"** तालीफ़ फ़रमाई है ।

येह किताब दर ह़क़ीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के तह़रीर कर्दा बारह रसाइल का मजमूआ़ है जो कि यक़ीनन उम्मते मुस्लिमा के लिये एक अ़ज़ीम तोह़्फ़ा है। इस में वुज़ू व ग़ुस्ल के त़रीक़े से ले कर नमाज़ का त़रीक़ा, उस के फ़ज़ाइल, फ़राइज़, वाजिबात, सुन्नतें, मक्रूहात और मुफ़्सिदात तक का ज़िक्र किया गया है। इस के इलावा क़ज़ा नमाज़ों का त़रीक़ा, अज़ान और जवाबे अज़ान के कलिमात व फ़ज़ाइल, नमाज़े सफ़र, नमाज़े ईद, नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा और इस से मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी मसाइल भी बयान किये गए हैं। बिला शुबा येह किताब हर घर की ज़रूरत है, लिहाज़ा तमाम इस्लामी भाइयों को चाहिये कि मक्तबतुल मदीना से इस किताब को हदिय्यतन ह़ासिल कर के न सिर्फ़ ख़ुद इस का मुत़ालआ़ करें बल्कि अपने घर के दीगर अफ़राद को भी इस के मुत़ालए़ की तरग़ीब दिलाएं। इस्लामी बहनों के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब **"इस्लामी बहनों की नमाज़"** बहुत ही ज़बरदस्त किताब है, इसे इस्लामी बहनों को पढ़ना बेह़द ज़रूरी है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने नमाज़ की अहम्मिय्यत के मुतअ़ल्लिक़ बयान में सुना : ❖ क़ुरआन व अह़ादीस में नमाज़ की अहम्मिय्यत बता कर इसे पढ़ने का हुक्म दिया गया है ❖ नमाज़ के बहुत से दुन्यवी और उख़रवी फ़वाइद हैं ❖ नमाज़ में बीमारियों की शिफ़ा है ❖ नमाज़ इन्सान को बुरे कामों से बचाती है ❖ नमाज़ गुनाहों को मिटा देती है ❖ नमाज़ से रोज़ी में बरकत होती है। लिहाज़ा पांचों वक़्त बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने को अपनी सच्ची और पक्की आ़दत बना लीजिये क्यूंकि इसी नमाज़ ने क़ब्र में भी काम आना है और ह़श्र में भी काम आना है, लिहाज़ा ख़ुद को नमाज़ का आ़दी बनाइये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को पांच वक़्त जमाअ़त के साथ, पहली सफ़ में, तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़ अदा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं । शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث: ۱۷۵)

उन सब मुबल्लिग़ों के ख़्वाबों में अब करम हो
आक़ा जो सुन्नतों की ख़िदमत बजा रहे हैं

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 299)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब

आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**101 मदनी फूल**" सफ़ह़ा नम्बर 27 से सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब सीखते हैं ।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : तमाम सुरमों में बेहतर सुरमा "**इस्मिद**" है कि येह निगाह को रौशन करता और पल्कें उगाता है ।

(ابن ماجہ، ۴/ ۱۱۵، حدیث: ۳۴۹۷)

❖ पथ्थर का सुरमा इस्ति'माल करने में ह़रज नहीं और सियाह सुरमा या काजल ब क़स्दे ज़ीनत (या'नी ज़ीनत की निय्यत से) मर्द को लगाना मक्रूह है और ज़ीनत मक़्सूद न हो, तो कराहत नहीं । (फ़तावा हिन्दिया, 5 / 359)

❖ सुरमा सोते वक़्त इस्ति'माल करना सुन्नत है । (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 180)

❖ सुरमा इस्ति'माल करने के तीन मन्क़ूल त़रीक़ों का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : (1) कभी दोनों आंखों में तीन तीन सलाइयां (2) कभी दाईं (या'नी सीधी) आंख में तीन और बाईं (या'नी उल्टी) में दो (3) तो कभी दोनों आंखों में दो

दो और फिर आख़िर में एक सलाई को सुरमे वाली कर के उसी को बारी बारी दोनों आंखों में लगाइये। (شعب الایمان، ۵/۲۱۸-۲۱۹) ❖ इस त़रह़ करने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ तीनों पर अ़मल होता रहेगा। ❖ तकरीम के जितने भी काम होते, सब हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सीधी जानिब से शुरूअ़ किया करते, लिहाज़ा पहले सीधी आंख में सुरमा लगाइये फिर उल्टी आंख में।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब **बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन त़लब कीजिये और बग़ौर इन का मुत़ालआ़ फ़रमाइये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

इल्म ह़ासिल करो, जह्ल ज़ाइल करो *पाओगे राह़तें क़ाफ़िले में चलो*
सुन्नतें सीखने तीन दिन के लिये *हर महीने चलें क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है, उस का दुरूदे पाक मुझ तक पहुंचाया जाता है और मैं उस के लिये दुआ़ए रह़मत करता हूं और इस के इलावा उस शख़्स के लिये दस नेकियां लिखी जाती हैं।

(المعجم الاوسط، ۱/۴۴۶، حدیث: ۱۶۴۲)

बचें बेकार बातों से, पढ़ें ऐ काश ! कसरत से
तेरे महबूब पर हर दम दुरूदे पाक हम मौला

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 99)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيْر لِلطَّبَرَانِی ج۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ईदे क़ुरबान में जान क़ुरबान कर दी !

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की **इश्क़े रसूल** से माला माल किताब "**आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात**" के सफ़ह़ा 126 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं एक क़ाफ़िले के हमराह ह़ज्जे बैतुल्लाह शरीफ़ के लिये जा रहा था, रास्ते में एक नौजवान ह़ाजी देखा जो बिग़ैर ज़ादे राह (या'नी बिग़ैर सामाने सफ़र) पैदल चल रहा था, मैं ने उस को सलाम किया, उस ने सलाम का जवाब दिया । मैं ने पूछा : ऐ नौजवान ! कहां से आए हो ? उस ने जवाब दिया : उसी (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) के पास से । पूछा : कहां जा रहे हो ? कहा : उसी (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) के पास । पूछा : ज़ादे राह (या'नी सामाने सफ़र) कहां है ? बोला : उसी (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) के ज़िम्मए करम पर है । मैं ने कहा : येह त़वील रास्ता बिग़ैर तोशे (या'नी खाने, पीने) के त़ै नहीं होगा, तेरे पास कुछ है भी ? बोला : जी हां ! मैं ने घर से निकलते वक़्त पांच हुरूफ़ ज़ादे राह के त़ौर पर ले लिये थे । पूछा : वोह पांच हुरूफ़ कौन से हैं ? उस ने कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान (كٓهٰيٰعٓصٓ) । पूछा : इन हुरूफ़ से क्या मुराद है ? कहा : ك से "**काफ़ी**" या'नी किफ़ायत करने वाला, ھ से "**हादी**" या'नी हिदायत करने वाला, ی से "**पनाह**

देने वाला'' ع से ''**आ़लिम**'' या'नी जानने वाला, ص से ''**सादिक़**'' या'नी सच्चा, तो जिस का रफ़ीक़ काफ़ी व हादी व मुअ्वी (या'नी पनाह देने वाला) व आ़लिम और सादिक़ हो वोह कैसे ज़ाएअ़ या परेशान हो सकता है और उसे क्या ज़रूरत है कि ज़ादे राह और पानी उठाए फिरे ! ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि उस ह़ाजी का कलाम सुन कर मैं ने उस को अपनी क़मीस पेश की । उस ने क़बूल करने से इन्कार करते हुवे कहा : ऐ शैख़ ! दुन्या की क़मीस से बरहना रहना बेहतर है क्यूंकि **दुन्या की ह़लाल चीज़ों पर ह़िसाब और ह़राम चीज़ों पर अ़ज़ाब है**।

जब रात का अन्धेरा छा गया, तो उस ह़ाजी ने मुंह आसमान की त़रफ़ उठाया और इस त़रह़ ''**मुनाजात**'' (या'नी दुआ़) करने लगा : ''ऐ वोह पाक ज़ात ! जिस को बन्दों की इत़ाअ़त से ख़ुशी होती है और बन्दों के गुनाहों से कुछ नुक़्सान नहीं होता, मुझे वोह चीज़ या'नी इ़बादत अ़त़ा फ़रमा जिस से तुझे ख़ुशी होती है और वोह चीज़ या'नी गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दे जिस से तेरा कोई नुक़्सान नहीं ।'' जब लोगों ने एह़राम बांघ कर ''**लब्बैक**'' कही, तो वोह ख़ामोश था । मैं ने पूछा : तुम लब्बैक क्यूं नहीं कहते ? उस ने कहा : मुझे डर है कि मैं कहूं : लब्बैक और वोह फ़रमा दे : ''لَا لَبَّيْكَ وَلَا سَعْدَيْكَ وَلَا اَسْمَعُ كَلَامَكَ وَلَا اَنْظُرُ اِلَيْكَ'' न तेरी लब्बैक क़बूल है और न सा'दैक और न मैं तेरा कलाम सुनूं और न तेरी त़रफ़ देखूं फिर वोह चला गया । मैं ने उस ह़ाजी को सारे रास्ते में फिर कहीं न देखा, बिल आख़िर मिना शरीफ़ में वोह नज़र आ गया, उस वक़्त वोह कुछ अ़रबी अश्आ़र पढ़ रहा था, अश्आ़र पढ़ने के बा'द वोह गिड़गिड़ा कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! लोगों ने क़ुरबानियां कीं और तेरा क़ुर्ब ह़ासिल किया और मेरे पास तो कुछ भी नहीं जिस के साथ तेरा क़ुर्ब (या'नी नज़दीकी) ह़ासिल कर सकूं, सिवाए अपनी जान के, तो इसी को तेरी बारगाह में नज़्र करता हूं, तू इसे क़बूल फ़रमा ।'' येह कहने के बा'द उस ह़ाजी ने एक चीख़ मारी, ज़मीन पर गिरा और उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई । ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : फिर यकायक ग़ैब से एक आवाज़ गूंज उठी : येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का प्यारा है जो इ़श्क़े इलाही की तलवार से क़त्ल हुवा है फिर मैं ने उस ख़ुश नसीब ह़ाजी की तजहीज़ो तक्फ़ीन की । (आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, ब ह़वाला : رَوضُ الرَّياحين ص ٩٩)

महब्बत में अपनी गुमा या इलाही न पाऊं मैं अपना पता या इलाही
रहूं मस्तो बेख़ुद मैं तेरी विला में पिला जाम ऐसा पिला या इलाही
मैं बेकार बातों से बच के हमेशा करूं तेरी ह़म्दो सना या इलाही
मेरे दिल से दुन्या की चाहत मिटा कर कर उल्फ़त में अपनी फ़ना या इलाही
तू अपनी विलायत की ख़ैरात दे दे मेरे ग़ौस का वासित़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 105)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए़ से मा'लूम हुवा कि जब बन्दा **अल्लाह** तआ़ला की महब्बत में गुम हो जाए, तो वोह दूसरों से बे परवा हो जाता है। ग़ौर कीजिये ! कि उस नौजवान ह़ाजी को **अल्लाह** तआ़ला से कैसी महब्बत थी और **अल्लाह** तआ़ला की ज़ात पर उसे कैसा ज़बरदस्त तवक्कुल था कि ज़ादे राह (या'नी सामाने सफ़र) तक साथ नहीं लिया था और महब्बते इलाही में दूसरों से बे रग़बती का आ़लम येह था कि जब ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन्हें अपनी क़मीस देना चाही, तो उसे भी लेने से इन्कार कर दिया। यक़ीनन महब्बते इलाही जब किसी को नसीब हो जाए, तो उसे दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है) से बे परवा कर देती है। **अल्लाह** तआ़ला के महबूब बन्दे उस से कैसी महब्बत करते हैं ? इस का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये।

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : वोह लोग जिन्हों ने दुन्या में झूटे मा'बूदों की इबादत की होगी, **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत के दिन उन से फ़रमाएगा : अपने झूटे मा'बूदों समेत जहन्नम में चले जाओ ! तो वोह जहन्नम में नहीं जाएंगे क्यूंकि जानते हैं कि जहन्नम का अ़ज़ाब दाइमी (या'नी हमेशा के लिये) है फिर **अल्लाह** तआ़ला उन काफ़िरों के सामने मोमिनों से फ़रमाएगा : अगर तुम मुझ से महब्बत करते हो, तो जहन्नम में चले जाओ ! इतना सुनते ही ईमान वाले जहन्नम में छलांग लगाने के लिये तय्यार हो जाएंगे, ऐसे में अ़र्शे इलाही के नीचे से कोई निदा देने वाला येह आयते करीमा पढ़ेगा :

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ (۲، البقرة، ۱۶۵)

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और ईमान वाले सब से ज़ियादा **अल्लाह** *से महब्बत करते हैं।*

(تفسیر بغوی، ۱/۹۴ ملخصاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला के नेक बन्दों को हर शै से ज़ियादा महब्बत अपने रब عَزَّوَجَلَّ से होती है। बयान कर्दा आयते मुबारका के तह़्त तफ़्सीर "**सिरात़ुल जिनान**" जिल्द 1, सफ़ह़ा 264 पर है : **अल्लाह** तआ़ला के मक़्बूल बन्दे, तमाम मख़्लूक़ात से बढ़ कर **अल्लाह** तआ़ला से महब्बत करते हैं। महब्बते इलाही में जीना और महब्बते इलाही में मरना उन की ज़िन्दगी का मक़्सद होता है। अपनी हर ख़ुशी पर अपने रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा को तरजीह़ देना, नर्म व गुदाज़ बिस्तरों को छोड़ कर बारगाहे नियाज़ में सर ब सुजूद होना, यादे इलाही में रोना, रिज़ाए इलाही के हुसूल के लिये तड़पना, सर्दियों की त़वील रातों में क़ियाम और गर्मियों के लम्बे दिनों में रोज़े, **अल्लाह** तआ़ला के लिये महब्बत करना, उसी की ख़ात़िर दुश्मनी रखना, उसी की ख़ात़िर किसी को कुछ देना और उसी की ख़ात़िर किसी से रोक लेना, ने'मत पर शुक्र, मुसीबत में सब्र, हर ह़ाल में ख़ुदा पर तवक्कुल, अपने हर मुआ़मले को **अल्लाह** तआ़ला के सिपुर्द कर देना, अह़कामे इलाही पर अ़मल के लिये हमा वक़्त तय्यार रहना, दिल को ग़ैर की महब्बत से पाक रखना, **अल्लाह** तआ़ला के महबूबों से महब्बत और **अल्लाह** तआ़ला के दुश्मनों से नफ़रत करना, **अल्लाह** तआ़ला के प्यारों का नियाज़ मन्द रहना, **अल्लाह** तआ़ला के सब से प्यारे रसूल व महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दिलो जान से महबूब रखना, **अल्लाह** तआ़ला के कलाम की तिलावत, **अल्लाह** तआ़ला के मुक़र्रब बन्दों को अपने दिलों के क़रीब रखना, इन से महब्बत रखना, महब्बते इलाही में इज़ाफ़े के लिये इन की सोह़बत इख़्तियार करना, **अल्लाह** तआ़ला की ता'ज़ीम समझते हुवे इन की ता'ज़ीम करना, येह तमाम उमूर और इन के इ़लावा सेंकड़ों काम ऐसे हैं जो महब्बते इलाही की दलील भी हैं और उस के तक़ाज़े भी हैं।

(तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, स. 264)

क़ल्ब में याद तेरी बसी हो ज़िक्र लब पे तेरा हर घड़ी हो
मस्तियो बेख़ुदी और फ़ना की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 126)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने कि महब्बते इलाही के तक़ाज़े क्या क्या हैं ? या'नी अगर कोई शख़्स महब्बते इलाही का दा'वेदार है, तो उस के शबो रोज़ कैसे गुज़रने चाहियें ? उस का सर बारगाहे इलाही में झुका हुवा होना चाहिये, उस की आंखें यादे इलाही में तर होनी चाहियें, उस का दिल रिज़ाए इलाही के लिये बे क़रार होना चाहिये, दिन रोज़े में गुज़रे, तो रातें इबादत में बसर हों, **अल्लाह** तआ़ला से महब्बत करने वालों के अन्दाज़ क्या होते थे ? आइये ! सुनते हैं। चुनान्चे,

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब **"हिकायतें और नसीहतें"** सफ़हा 211 पर है : हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक दफ़्आ़ मैं एक पहाड़ में घूम फिर रहा था, जब मैं एक ऐसी वादी से गुज़रा जिस में बहुत से दरख़्त, नबातात और फल थे, तो मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत और हुस्ने कारीगरी के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करने लगा। अचानक मुझे एक आवाज़ सुनाई दी जिस ने मेरे सब आंसूओं को बहा दिया और मेरी आतशे इ़श्क़ भड़क उठी। चुनान्चे, मैं उस आवाज़ के पीछे पहाड़ के निचले हिस्से में एक ग़ार के दहाने तक पहुंच गया। वोह कलाम ग़ार के अन्दर से सुनाई दे रहा था। मैं अन्दर गया, तो वहां एक इबादत गुज़ार शख़्स को पाया, जो निहायत ही कमज़ोर था और उस पर मक़्बूलिय्यत के आसार नुमायां थे। मैं ने उस को येह कहते हुवे सुना : पाक है वोह ज़ात ! जिस ने उ़श्शाक़ के दिलों को अपनी बारगाह में मुनाजात के ज़रीए ज़िन्दा किया और उन को त़लबे मआ़श की मशक़्क़त से बे नियाज़ कर दिया। अब वोह सिर्फ़ उसी पर भरोसा करते हैं और उस ने उन्हें अपनी महब्बत के लिये चुन लिया, तो अब वोह सिर्फ़ उसी के मुश्ताक़ हैं। जब उस ने मुझे महसूस किया, तो मैं ने कहा : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ ऐ ग़मो के रफ़ीक़ और दुखों के

हम नशीन ! तो उस ने जवाब दिया : وَعَلَيْكَ السَّلَام आप को किस ने उस शख़्स का रास्ता दिखाया जिसे ख़ौफ़े इलाही ने मख़्लूक़ से अ़लाहिदा कर रखा है और जो अपने नफ़्स के मुहासबे की वज्ह से कलाम में फ़साहत से ग़ाफ़िल है ? तो मैं ने कहा : मुझे ग़ौरो फ़िक्र की रग़बत और पुर असरार औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی के बारे में जानने की ख़्वाहिश आप के पास लाई है । तो उस ने कहा : ऐ नौजवान ! बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे ऐसे हैं कि जिन के दिलों में उन की अपने महबूबे हक़ीक़ी से इन्तिहाई महब्बत असर अन्दाज़ होती है, तो उस के साथ शदीद महब्बत की बिना पर उन की अरवाह़ आ़लमे मलकूत में सैर करती हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जम्अ़ शुदा ख़ज़ानों को देखती हैं, तो ज़ाते बारी तआ़ला उन को अपने जमाल का मुशाहदा कराती है और वोह उस को इस त़रह़ देखते हैं कि उन के दिल उस की महब्बत में आबाद होते हैं और उन की अरवाह़ उस से मुलाक़ात के लिये उड़ती रहती हैं, वोह दुन्या व आख़िरत के बादशाह हैं फिर उस शख़्स ने रोना शुरूअ़ कर दिया और दुआ़ की : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन औलियाए किराम जैसे आ'माल की मुझे भी तौफ़ीक़ दे और मुझे भी इन के साथ मिला दे फिर उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया और उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह ख़ाइफ़ीन की सिफ़ात और आ़रिफ़ीन की अ़लामात हैं ।

रहे ज़िक्र आठों पहर मेरे लब पर — तेरा या इलाही तेरा या इलाही
मेरी ज़िन्दगी बस तेरी बन्दगी में — ही ऐ काश ! गुज़रे सदा या इलाही
न हों अश्क बरबाद दुन्या के ग़म में — मुह़म्मद के ग़म में रुला या इलाही
मुझे औलिया की महब्बत अ़त़ा कर — तू दीवाना कर ग़ौस का या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 106)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन हमें भी अपने अन्दर **अल्लाह** तआ़ला की महब्बत पैदा करने की कोशिश करनी चाहिये । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक बार अपने नबी, ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से फ़रमाया :

ऐ दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) ! अगर तू मुझ से महब्बत करना चाहता है, तो दुन्या की महब्बत को अपने दिल से निकाल दे क्यूंकि मेरी और दुन्या की महब्बत एक दिल में जम्अ़ नहीं हो सकतीं । ऐ दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) ! जो मुझ से महब्बत करता है, वोह रात को मेरे हुज़ूर तहज्जुद अदा करता है जब कि लोग सो रहे होते हैं, वोह तन्हाई में मुझे याद करता है, जब ग़ाफ़िल लोग मेरे ज़िक्र से ग़फ़्लत में पड़े होते हैं, वोह मेरी ने'मत पर शुक्र अदा करता है जब कि भूलने वाले मुझ से ग़फ़्लत इख़्तियार करते हैं ।

(حلیۃ الاولیاء، عبد العزیز بن ابی رواد، رقم ۱۱۹۰۶، ج ۸، ص ۲۱۱ ـ الی قولہ الاھلك, बहूरुदुमूअ़, स. 21)

किताब "अल्लाह वालों की बातें" का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की महब्बत का चराग़ अपने दिल में रौशन करने और **अल्लाह** वालों की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महब्बत के निराले अन्दाज़ जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब "**अल्लाह वालों की बातें**" का मुत़ालआ़ बेहद मुफ़ीद है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस किताब की अब तक 5 जिल्दें शाएअ़ हो चुकी हैं । इस किताब में बहुत से औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की ज़िन्दगी के नुमायां वाक़िआ़त, करामात, उन के फ़रामीन, शरई अह़कामात की पासदारी और महब्बते इलाही के निराले अन्दाज़ और वाक़िआ़त को बहुत जामेअ़ और ख़ूब सूरत अन्दाज़ में बयान किया गया है । तमाम इस्लामी भाइयों से मदनी इल्तिजा है कि न सिर्फ़ ख़ुद इस किताब का मुत़ालआ़ कीजिये बल्कि दूसरे इस्लामी भाइयों को भी इस की तरग़ीब दिलाइये । दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislami.net से इस किताब को रीड (या'नी पढ़ा) भी जा सकता है, डाउन लोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये ! अब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महब्बत करने वाले नेक बन्दों के कुछ मज़ीद वाक़िआ़त सुनते हैं ।

मेंढे की खाल

अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रह़मतुल्लिल आ़लमीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस ह़ाल में आते देखा कि उन्हों ने मेंढे की खाल कमर पर लपेट रखी थी, तो इरशाद फ़रमाया : उस शख़्स की त़रफ़ देखो जिस के दिल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रौशन कर दिया है। बेशक मैं ने उस को उस के वालिदैन के पास देखा कि वोह उसे बेहतरीन खाना खिलाते और उ़म्दा तरीन मशरूबात पिलाते थे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में उस का येह ह़ाल हो गया है जो तुम देख रहे हो। (حلیۃ الاولیاء، مصعب بن عمیر، ۱/ ۱۵۳، حدیث: ۳۴۳)

मुह़िब, मह़बूब के साथ होगा

मरवी है कि एक आ'राबी ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क़ियामत कब आएगी ? रसूले अकरम, शाहे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम ने उस के लिये क्या तय्यारी की है ? अ़र्ज़ की : मैं ने उस के लिये बहुत ज़ियादा (नफ़्ली) नमाज़ें और (नफ़्ली) रोज़े तो जम्अ़ नहीं किये, अलबत्ता मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करता हूं। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से इरशाद फ़रमाया : اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ اَحَبَّ आदमी उसी के साथ होगा जिस से मह़ब्बत करेगा। (ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء ان المرء مع من احب، ۴/ ۱۷۲، حدیث: ۲۳۹۲) (इस ह़दीस के रावी) ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने इस्लाम लाने के बा'द मुसलमानों को जितना इस बात पर ख़ुश होते देखा, उतना किसी और बात पर ख़ुश होते न देखा।

(المسند للامام احمد، مسند انس بن مالک النضر، ۴/ ۳۹۸، حدیث: ۱۳۰۶۶)

मुक़र्रब तुम ही हो

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का तीन आदमियों पर गुज़र हुवा जिन के बदन कमज़ोर और रंग बदला हुवा था। आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : तुम्हारे इस ह़ाल का सबब क्या है ? उन्हों ने अ़र्ज़

की : दोज़ख़ की आग का ख़ौफ़। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि ख़ाइफ़ीन को जहन्नम से अमान नसीब करे फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام का गुज़र उन के इ़लावा दीगर तीन अश्ख़ास पर हुवा जो उन से भी ज़ियादा कमज़ोर थे और रंग उन से भी ज़ियादा बदला हुवा था। इस्तिफ़्सार फ़रमाया : तुम्हारी इस ह़ालत का सबब क्या है ? उन्हों ने जवाब दिया : जन्नत का शौक़। इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि तुम्हें वोह अ़त़ा करे जिस के तुम उम्मीदवार हो फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام तीन और आदमियों के पास से गुज़रे जो साबिक़ा दोनों गिरोहों से ज़ियादा कमज़ोर और मुतग़य्यर रंग वाले थे और उन के चेहरों पर गोया नूर के आईने थे। ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन से फ़रमाया : तुम्हारी इस ह़ालत का सबब क्या है ? उन्हों ने जवाब दिया : हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महब्बत करते हैं। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने तीन बार कहा : तुम ही लोग मुक़र्रब हो (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़ियादा क़ुर्ब तुम लोगों को भी ह़ासिल है)।

क़ल्ब में याद तेरी बसी हो ज़िक्र लब पर तेरा हर घड़ी हो
मस्तियो बेख़ुदी और फ़ना की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 126)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर कीजिये ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महब्बत करने वालों का महब्बते इलाही में क्या ह़ाल हुवा करता था कि येह ह़ज़रात हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल इ़बाद की किस क़दर पाबन्दी किया करते, नेकियों की त़रफ़ रग़बत और गुनाहों से कैसी नफ़रत किया करते थे, इ़बादते इलाही की कसरत इन्हें कमज़ोर व निढाल कर दिया करती और इन की रंगत तब्दील कर दिया करती थी। आज हम अपनी ह़ालत पर ग़ौर करें कि नेकियां पल्ले नहीं और गुनाहों का बाज़ार इस क़दर गर्म है कि اَلْاَمَانُ وَالْحَفِيْظ। बद क़िस्मती से लोगों की भारी अक्सरिय्यत बे अ़मली का शिकार है, न तो हुक़ूक़ुल इ़बाद की अदाएगी का पास है और न ही हुक़ूक़ुल्लाह की पासदारी का कोई एह़सास, नेकियां करना नफ़्स के लिये बेह़द दुश्वार और इर्तिकाबे गुनाह बहुत आसान हो चुका है, मस्जिदों की वीरानी और गुनाहों भरी मख़्लूत

तफ़रीह़ गाहों की आबाद कारी दीन का दर्द रखने वालों को गोया ख़ून के आंसू रुलाती और तड़पा के रख देती है । टीवी, डिश ऐन्टीना, इन्टरनेट, सोशल मीडिया (Social Media) और केबल का ग़लत़ इस्ति'माल करने वालों की ता'दाद भी कम नहीं । तक्मीले ज़रूरिय्यात व हुसूले सहूलिय्यात की ह़द से ज़ियादा जिद्दो जह्द ने मुसलमानों की भारी ता'दाद को फ़िक्रे आख़िरत से यक्सर ग़ाफ़िल कर दिया है ।

गाली देना, तोह्मत लगाना, बद गुमानी करना, ग़ीबत करना, चुग़ली खाना, लोगों के ऐ़ब जानने की जुस्तजू में रहना, लोगों के ऐ़ब उछालना, झूट बोलना, झूटे वा'दे करना, किसी का माल नाह़क़ खाना, ख़ून बहाना, किसी को बिला इजाज़ते शरई तक्लीफ़ देना, क़र्ज़ दबा लेना, किसी की चीज़ आ़रियतन (या'नी वक़्ती त़ौर पर) ले कर वापस न करना, मुसलमानों को बुरे अल्क़ाब से पुकारना, किसी की चीज़ उसे ना गवार गुज़रने के बा वुजूद बिला इजाज़त इस्ति'माल करना, शराब पीना, जुवा खेलना, चोरी करना, बदकारी करना, फ़िल्में ड्रामे देखना, गाने बाजे सुनना, सूद व रिश्वत का लेन देन करना, मां-बाप की ना फ़रमानी करना और उन्हें सताना, अमानत में ख़ियानत करना, बद निगाही करना, औ़रतों का मर्दों की और मर्दों का औ़रतों की मुशाबहत (या'नी नक़्क़ाली) करना, बे पर्दगी, ग़ुरूर, तकब्बुर, ह़सद, रियाकारी, अपने दिल में किसी मुसलमान का बुग़्ज़ो कीना रखना, ग़ुस्सा आ जाने पर शरीअ़त की ह़दें तोड़ डालना, गुनाहों की ह़िर्स, हुब्बे जाह, बुख़्ल, ख़ुद पसन्दी वग़ैरा मुआ़मलात हमारे मुआ़शरे में बड़ी बेबाकी के साथ किये जाते हैं और इस के बा वुजूद हम इस ख़ुश फ़ह्मी में मुब्तला हैं कि हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सच्ची मह़ब्बत करते हैं ? ज़रा सोचिये ! क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सच्ची मह़ब्बत करने वालों की गुफ़्तार, उन का त़र्ज़े ज़िन्दगी और उन का किरदार ऐसा होता है ??? शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ऐसे नादानों को समझाते और नसीह़त के मदनी फूल अ़त़ा फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं :

बे नमाज़ी रहें, कुछ न रोज़े रखें उन को किस ने कहा आ़शिक़ाने रसूल ?
जो कि गाने सुनें, फ़िल्म बीनी करें उन को किस ने कहा आ़शिक़ाने रसूल ?
बद निगाही करें, बद कलामी करें उन को किस ने कहा आ़शिक़ाने रसूल ?
खाएं रिज़्क़े ह़राम, ऐसे हैं बद लगाम उन को किस ने कहा आ़शिक़ाने रसूल ?
अ़ह्द तोड़ा करें, झूट बोला करें उन को किस ने कहा आ़शिक़ाने रसूल ?
जो सताते रहें, दिल दुखाते रहें उन को किस ने कहा आ़शिक़ाने रसूल ?
चुग़लियों, तोह्मतों में जो मश्ग़ूल हों उन को किस ने कहा आ़शिक़ाने रसूल ?
गालियां जो बकें, ऐ़ब भी न ढकें उन को किस ने कहा आ़शिक़ाने रसूल ?

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 649)

ऐ काश ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सच्ची महब्बत करने वालों का सदक़ा हमें भी नसीब हो जाए और **ऐ काश** ! हम भी उन मुबारक हस्तियों के नक़्शे क़दम पर चलने वाले बन जाएं, मदनी इन्आ़म पर अ़मल करते हुवे सारी नमाज़ें बा जमाअ़त मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ अदा करें, माहे रमज़ान के फ़र्ज़ रोज़ों के साथ साथ नफ़्ल रोज़े रखने वाले बन जाएं, हमेशा सच बोलें, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर हो जाएं, मां-बाप और दीगर रिश्तेदारों के हुक़ूक़ अदा करने वाले बन जाएं । **ऐ काश** ! गुनाहों के क़रीब भी न जाएं, हमारी कोई नमाज़ क़ज़ा न हो, माहे रमज़ान का कोई रोज़ा ज़ाएअ़ न हो, ज़बान से हरगिज़ हरगिज़ झूट, ग़ीबत, चुग़ली और गाली गलोच न निकले, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुसलमानों की ह़क़ीक़ी महब्बत व हमदर्दी हमें नसीब हो जाए । **ऐ काश** ! ग़ीबत से हमें नजात मिल जाए ।

महब्बते इलाही के लिये ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़क़ीक़ी महब्बत ह़ासिल करने के लिये **अल्लाह** वालों के नक़्शे क़दम पर भी चलना चाहिये और साथ ही साथ महब्बते इलाही के हुसूल के लिये दुआ़ भी करनी चाहिये । ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام इन्तिहाई इबादत गुज़ार और महब्बते इलाही से सरशार होने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बरगुज़ीदा नबी होने के बा वुजूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस की महब्बत का सुवाल किया करते थे । चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام येह दुआ़ मांगा करते थे : اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ حُبَّکَ وَحُبَّ مَنْ یُّحِبُّکَ وَالْعَمَلِ الَّذِیْ یُبَلِّغُنِیْ حُبَّکَ या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से तेरी, तेरे मह़बूब बन्दों की मह़ब्बत का और उन आ'माल की मह़ब्बत का सुवाल करता हूं जो मुझे तेरी मह़ब्बत तक पहुंचा दें । اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ حُبَّکَ اَحَبَّ اِلَیَّ مِنْ نَّفْسِیْ وَمَالِیْ وَاَھْلِیْ وَمِنَ الْمَاءِ الْبَارِدِ ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपनी मह़ब्बत को मेरे लिये मेरी जानो माल, अहलो इ़याल और ठन्डे पानी से ज़ियादा मह़बूब बना दे । (مشکاۃ المصابیح کتاب الدعوات باب جامع الدعا، ۱/ ۴۶۵ حدیث: ۲۴۹۶)

मेरे दिल से दुन्या की चाहत मिटा कर कर उल्फ़त में अपनी फ़ना या इलाही
इ़बादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी करम हो करम या ख़ुदा या इलाही
तू अपनी विलायत की ख़ैरात दे दे मेरे ग़ौस का वासित़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 105)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे नबी, ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِ السَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस की मह़ब्बत की दुआ़ मांगा करते, लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि हम भी अपने रब عَزَّوَجَلَّ से उस की मह़ब्बत की दुआ़एं मांगा करें । यक़ीन कीजिये ! कि मह़ब्बते इलाही वोह अ़ज़ीम ने'मत है कि जिसे नसीब हो जाए, उसे इ़बादत की लज़्ज़त और ईमान की चाश्नी नसीब हो जाए ।

ईमान की चाश्नी

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : ثَلَاثٌ مَنْ کُنَّ فِیْہِ وَجَدَ بِھِنَّ حَلَاوَۃَ الْاِیْمَانِ जिस शख़्स के अन्दर तीन ख़स्लतें होंगी वोह उन के ज़रीए ईमान की मिठास पा लेगा । (1) اَنْ یَّکُوْنَ اللّٰہُ وَرَسُوْلُہٗ اَحَبَّ اِلَیْہِ مِمَّا سِوَاھُمَا **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे सब से ज़ियादा मह़बूब हों । (2) وَاَنْ یُّحِبَّ الْمَرْءَ لَا یُحِبُّہٗ اِلَّا لِلّٰہِ किसी से मह़ब्बत करे, तो रिज़ाए इलाही

के लिये करे । (3) وَاَنْ يَّكْرَهَ اَنْ يَّعُوْدَ فِى الْكُفْرِ كَمَا يَكْرَهُ اَنْ يُّوْقَدَ لَهٗ نَارٌ فَيُقْذَفَ فِيْهَا कुफ़्र से इतनी ही नफ़रत हो जितनी भड़क्ती आग में झोंक दिये जाने से नफ़रत होती है ।

(شعب الایمان، باب فی محبۃ اللہ عزوجل، ۱/۳۶۴، حدیث: ۴۰۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने कि एक मुसलमान के दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत काइनात की हर चीज़ से बढ़ कर होना और किसी से महब्बत या नफ़रत की बुन्यादी वज्ह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ामन्दी होना कितनी अ़ज़ीम ने'मतें हैं कि जिसे नसीब हो जाएं, उसे ईमान की ह़क़ीक़ी लज़्ज़त नसीब हो जाती है बल्कि ह़क़ तो येह है कि जो ख़ुश नसीब मुसलमान किसी ज़ाती मफ़ाद और दुन्यावी मक़्सद के बजाए सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये एक दूसरे से मेल जोल रखते हैं और जो सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये एक दूसरे से महब्बत करते हैं, उन्हें ईमान की मिठास ह़ासिल होने के साथ साथ येह सआ़दत भी नसीब होती है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन से ख़ुश होता, उन से महब्बत फ़रमाता है और क़ियामत के दिन ऐसों को बहुत ही अ़ज़ीमुश्शान क़द्रो मन्ज़िलत अ़त़ा होगी । आइये ! इस बारे में एक रिवायत सुनते हैं । चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का महबूब बने जो !

ह़ज़रते सय्यिदुना लाहिक़ बिन ह़मीद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन उ़ब्बाद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक शख़्स रिज़ाए इलाही के लिये अपने भाई से मुलाक़ात के लिये गया, रास्ते में एक अजनबी से मुलाक़ात हुई । उस ने पूछा : कहां जा रहे हो ? जवाब दिया : फ़ुलां से मुलाक़ात के लिये । पूछा : क्या तुम्हारी आपस में कोई रिश्तेदारी है जिसे तुम निभाने जा रहे हो ? कहा : नहीं ! पूछा : क्या उस का तुम पर कोई एह़सान है जिसे तुम चुकाने जा रहे हो ? कहा : नहीं ! मैं सिर्फ़ रिज़ाए इलाही के लिये उस से महब्बत करता हूं । उस ने कहा : मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी त़रफ़ भेजा है ताकि तुम्हें बताऊं कि रिज़ाए इलाही के लिये मुसलमान से महब्बत करने की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम से महब्बत फ़रमाता है ।

(अल्लाह वालों की बातें, 3 / 164)

गो येह बन्दा निकम्मा है बेकार इस से ले फ़ज़्ल से रब्बे ग़फ़्फ़ार
काम वोह जिस में तेरी रिज़ा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 138)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में से कुछ ऐसे लोग हैं जो न अम्बिया हैं, न शुहदा मगर क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उन का मक़ामो मर्तबा देख कर अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और शुहदा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن रश्क करेंगे । लोगों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमें बताइये कि वोह कौन लोग होंगे ? इरशाद फ़रमाया कि येह वोह लोग होंगे जो एक दूसरे से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की महब्बत की वज्ह से महब्बत करते रहे होंगे (ह़ालांकि) इन के दरमियान न तो रिश्तेदारी होगी और न ही माल के लेन देन का कोई मुआ़मला । ब ख़ुदा ! इन लोगों के चेहरे (क़ियामत के दिन) नूर होंगे और यक़ीनन येह लोग नूर के ऊपर होंगे और जब सब लोग ख़ौफ़ज़दा होंगे, उस वक़्त येह लोग बे ख़ौफ़ होंगे और जब लोग ग़मगीन होंगे, तो इन लोगों को कोई ग़म नहीं होगा ।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب الحب فی اللہ... الخ، ۲/۲۱۹، حدیث: ۵۰۱۲)

इसी त़रह़ एक और रिवायत में इरशाद फ़रमाया : वोह मुख़्तलिफ़ शहरों और क़बीलों से तअ़ल्लुक़ रखते होंगे, उन के दरमियान कोई रिश्तेदारी न होगी, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आपस में महब्बत और दोस्ती रखते होंगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन नूर के मिम्बर बिछा कर उन्हें उन पर बिठाएगा, उन के चेहरे नूरबार और कपड़े नूर के होंगे, क़ियामत के दिन लोग घबराहट में मुब्तला होंगे मगर वोह न घबराएंगे । (مسند امام احمد، ۸/۴۵۰، حدیث: ۲۲۹۶۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने सुना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महब्बत करने वालों और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की रिज़ा के लिये किसी से महब्बत करने वालों को कैसी शानो अ़ज़्मत अ़त़ा की जाएगी कि कल बरोज़े क़ियामत जब नफ़्सी नफ़्सी का आ़लम होगा, लोग परेशान होंगे, तो उन

ख़ुश नसीबों को कोई ग़म और परेशानी नहीं होगी और उन का बहुत ख़ूब सूरत अन्दाज़ में इस्तिक़्बाल किया जाएगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के लिये नूर के मिम्बर बिछाएगा और इ़ज़्ज़त व वक़ार की मस्नद पर बिठाएगा। लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि हम रिज़ाए इलाही के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत दिल में पैदा करें और उन की रिज़ा ही को अपनी दोस्ती और दुश्मनी का मे'यार बनाएं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस के लिये दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल एक बेहतरीन ज़रीआ़ है। दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में न सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत के जाम पिलाए जाते हैं बल्कि सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दोस्तों ही से दोस्ती का मदनी ज़ेहन दिया जाता है। इस मदनी माहोल की बरकत से रिज़ाए इलाही के लिये मुसलमानों से महब्बत व हमदर्दी का जज़्बा पैदा होता है और अपनी इस्लाह के साथ साथ सारी दुन्या के मुसलमानों की इस्लाह की कोशिश करने की कुढ़न भी पैदा होती है। लिहाज़ा आप दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की महब्बत मज़ीद बढ़ाने, प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें फैलाने, अपने आप को और दूसरे मुसलमानों को गुनाहों से बचाने और नेकियों की राह पर लाने के लिये **12 मदनी कामों** में अ़मली त़ौर पर शामिल हो कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाने वाले बन जाइये।

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम चौक दर्स

12 मदनी कामों में से रोज़ाना का एक मदनी काम "**चौक दर्स**" भी है जिस का मक़्सद बिल ख़ुसूस ऐसे मुसलमानों में नेकी की दा'वत को आ़म करना है जो मस्जिद की ह़ाज़िरी से महरूम और नमाज़ों से दूर रहते हैं। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम्हारा नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना **सदक़ा** है और तुम्हारा रास्ते से गन्दगी हटा देना **सदक़ा** है और तुम्हारा नमाज़ के लिये चलने में हर क़दम **सदक़ा** है।

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب فی اماطة الاذی عن الطریق، ۳/۴۶۶، رقم:۴۵۶۱)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ खुश क़िस्मत हैं वोह इस्लामी भाई कि जो **मदनी दर्स** (दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत) के ज़रीए रोज़ाना चौक दर्स दे कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाते हैं, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से वोह सदक़ा देने का सवाब पाएंगे । आइये ! बतौ़रे तरग़ीब **चौक दर्स** की एक ईमान अफ़रोज़ मदनी बहार सुनने के साथ साथ **चौक दर्स** देने या इस में शिर्कत की निय्यत भी करते हैं। चुनान्चे,

वफ़ात से क़ब्ल तौबा नसीब हो गई

बाबुल मदीना (कराची) के मुक़ीम एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है कि हमारे अ़लाक़े की जामेअ़ मस्जिद के बाहर इ़शा की नमाज़ के बा'द चौक दर्स होता था जिस में बहुत से इस्लामी भाई शिर्कत करते । एक दिन ह़स्बे मा'मूल बा'दे इ़शा चौक दर्स के लिये मुबल्लिग़ इस्लामी भाई तशरीफ़ लाए, तो आस पास मौजूद लोगों को दर्स में शिर्कत करने की दा'वत पेश की, एक इस्लामी भाई ने आगे बढ़ कर क़रीब ही रिक्शा स्टेन्ड पर मौजूद चौकीदार राजू भाई को भी **चौक दर्स** में शिर्कत की दा'वत पेश की । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ राजू भाई दा'वत क़बूल करते हुवे मदनी दर्स (दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत) में शरीक हो गए । दर्स के बा'द मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी ने रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ से क़ब्ल दर्स सुनने वालों को साबिक़ा गुनाहों से तौबा करवाई और दौराने दुआ़ ह़ाज़िरीन की मग़फ़िरत के लिये भी दुआ़ मांगी जिस पर सब ने ब आवाज़े बुलन्द **आमीन** कहा, दुआ़ के आख़िर पर दर्स सुनने वालों ने बुलन्द आवाज़ से दुरूदे पाक पढ़ा, राजू भाई ने दुरूदे पाक पढ़ते हुवे अंगूठे चूम कर आंखों से लगाए, बुलन्द आवाज़ से कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ पढ़ा और बे इख़्तियार ज़मीन पर गिर पड़े । एक इस्लामी भाई ने आगे बढ़ कर उन्हें उठाया, तो उस वक़्त वोह अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से मिल चुके थे । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शान ! कि राजू भाई **चौक दर्स** की बरकत से मौत से क़ब्ल तौबा करने की सआ़दत पा गए ।

*है तमन्नाए **अ़त्तार** या रब ! उन के जल्वों में यूं मौत आए*
झूम कर जब गिरे मेरा लाशा, थाम लें बढ़ के शाहे मदीना

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 189)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! एक मुसलमान को अपने ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ से जितनी महब्बत होनी चाहिये उतनी पूरी मख़्लूक़ में से किसी से भी नहीं होनी चाहिये, इसी में ईमान की अ़लामत व ह़लावत है । यक़ीनन हम में से हर शख़्स इस बात का दा'वेदार तो है कि मुझे अपने रब عَزَّوَجَلَّ से बहुत महब्बत है मगर बद क़िस्मती से हमारे आ'माल इस के बर ख़िलाफ़ हैं, गोया हमारा किरदार ही हमारी गुफ़्तार का सरासर इन्कार कर रहा होता है । हमारी अ़मली ह़ालत से तो ऐसा लगता है कि हमें अपने ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ से इतनी भी महब्बत नहीं जितनी मख़्लूक़ से है । किसी अ़क़्लमन्द ने सह़ीह़ कहा है कि "**करने वाले काम करो, वरना न करने वाले कामों में पड़ जाओगे ।**" बद क़िस्मती से आज कल हम न करने वाले कामों में ऐसे मसरूफ़ हो गए कि करने वाले कामों की त़रफ़ तवज्जोह ही न रही । दुन्या की फ़िक्र में ऐसे पड़े कि आख़िरत की फ़िक्र करना ही छोड़ दी, माल की महब्बत में ऐसे गिरिफ़्तार हुवे कि क़ियामत के दिन लिये जाने वाले ह़िसाब से बिल्कुल ही ग़ाफ़िल हो गए, मख़्लूक़ की महब्बत में ऐसे गुम हुवे कि ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ की याद ही दिल से भूला बैठे, गुनाहों की महब्बत में पड़े, तो तौबा से ही गए और आ़लीशान मकानात ता'मीर करने की फ़िक्र सर पर सुवार हुई, तो दाइमी घर या'नी क़ब्र को संवारने की त़रफ़ तवज्जोह ही न रही । ज़रा सोचिये ! हमें क्या काम करने थे और हम किन कामों में पड़े हुवे हैं ? ग़ौर कीजिये ! कहीं येह वोही दौर तो नहीं है जिस की ख़बर देते हुवे ग़ैब जानने वाले आक़ा, हमारे मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सदियों पहले ही हमें ख़बरदार फ़रमा दिया । चुनान्चे,

पांच की चाहत, पांच से ग़फ़्लत

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

سَيَأْتِيْ زَمَانٌ عَلٰى اُمَّتِيْ يُحِبُّوْنَ خَمْسًا وَيَنْسَوْنَ خَمْسًا

मेरी उम्मत पर वोह ज़माना जल्द आएगा कि वोह पांच से महब्बत रखेंगे और पांच को भूल जाएंगे। (1) يُحِبُّوْنَ الدُّنْيَا وَيَنْسَوْنَ الْاٰخِرَةَ दुन्या से महब्बत रखेंगे और आख़िरत को भूल जाएंगे। (2) وَيُحِبُّوْنَ الْمَالَ وَ يَنْسَوْنَ الْحِسَابَ माल से महब्बत रखेंगे और हिसाबे (आख़िरत) को भूल जाएंगे। (3) وَيُحِبُّوْنَ الْخَلْقَ وَيَنْسَوْنَ الْخَالِقَ मख़्लूक़ से महब्बत रखेंगे और ख़ालिक़ को भूल जाएंगे। (4) وَيُحِبُّوْنَ الذُّنُوْبَ وَيَنْسَوْنَ التَّوبَةَ गुनाहों से महब्बत रखेंगे और तौबा को भूल जाएंगे। (5) وَيُحِبُّوْنَ الْقُصُوْرَ وَيَنْسَوْنَ الْمَقْبَرَةَ महल्लात से महब्बत रखेंगे और क़ब्रिस्तान को भूल जाएंगे।

(مُکاشَفَۃُ الْقُلوب، الباب العاشر فی العشق، ص ۳۴)

जहां में हैं इ़ब्रत के हर सू नुमूने
मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तू ने
जो आबाद थे वोह महल अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है
मिले ख़ाक में अहले शां कैसे कैसे
मकीं हो गए ला मकां कैसे कैसे
हुवे नामवर बे निशां कैसे कैसे
ज़मीं खा गई नौजवां कैसे कैसे
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है
अजल ने न किसरा ही छोड़ा न दारा
इसी से सिकन्दर सा फ़ातेह़ भी हारा
हर इक ले के क्या क्या न ह़सरत सिधारा
पड़ा रह गया सब यूंही ठाठ सारा
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है
येही तुझ को धुन है रहूं सब से बाला
हो ज़ीनत निराली, हो फ़ैशन निराला
जिया करता है क्या यूंही मरने वाला ?
तुझे हुस्ने ज़ाहिर ने धोके में डाला
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है
वोह है ऐशो इ़शरत का कोई महल भी
जहां ताक में हर घड़ी हो अजल भी
बस अब अपने इस जह़ल से तू निकल भी
येह जीने का अन्दाज़ अपना बदल भी
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है
जब इस बज़्म से उठ गए दोस्त अक्सर
और उठते चले जा रहे हैं बराबर
येह हर वक़्त पेशे नज़र जब है मन्ज़र
यहां पर तेरा दिल बहलता है क्यूं कर
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

महब्बते इलाही की 7 अ़लामतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये ! दिल में महब्बते इलाही बढ़ाने के लिये कुरआनो ह़दीस और अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन की रौशनी में "**महब्बते ख़ुदावन्दी**" की **7 अ़लामतें** सुनते हैं।

﴿1﴾...कुरआने करीम की तिलावत करना और उस का तर्जमा व तफ़्सीर पढ़ना, समझना महब्बते इलाही की अ़लामत है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे जब उस का कलाम सुनते हैं और उस में ग़ौरो फ़िक्र करते हैं, तो उन की आंखों से सैले अश्क रवां हो जाता है। चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَ اِذَا سَمِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰۤى اَعْیُنَهُمْ تَفِیْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ (پ:۷، المائدۃ:۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जब सुनते हैं वोह जो रसूल की त़रफ़ उतरा, तो उन की आंखें देखो कि आंसूओं से उबल रही हैं इस लिये कि वोह ह़क़ को पहचान गए।*

मुकाशफ़तुल कुलूब में है : महब्बत का सिद्क़ तीन चीज़ों से ज़ाहिर होता है। (1) मुह़िब, महबूब की बातों को सब से अच्छा समझता है। (2) उस के लिये महबूब की मजलिस सब से बेहतर मजलिस होती है। (3) उस के नज़्दीक महबूब की रिज़ा सब से अ़ज़ीज़ होती है। (مکاشفۃ القلوب، الباب العاشر فی العشق، ص۳۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना सहल तुस्तरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महब्बत की अ़लामत येह है कि वोह शख़्स कुरआने पाक से महब्बत करे। महब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ और महब्बते रसूल की निशानी कुरआने करीम से महब्बत और हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत से लगाव रखना है।

(مکاشفۃ القلوب، الباب الحادی عشر فی طاعۃ اللہ و محبۃ رسولہ ص۳۷)

﴿2﴾...फ़राइज़ की अदाएगी के साथ साथ **नवाफ़िल का एहतिमाम** भी करे और येह तो वोह काम है जो महब्बत करने वाले को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महबूब और पसन्दीदा बन्दा बना देता है।

क़ुर्बे इलाही का ज़रीआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : जिस ने किसी वली को अज़िय्यत दी, मैं उस से ए'लाने जंग करता हूं और बन्दा मेरा कुर्ब सब से ज़ियादा फ़राइज़ के ज़रीए हासिल करता है और नवाफ़िल के ज़रीए मुसल्सल कुर्ब हासिल करता रहता है यहां तक कि मैं उस से महब्बत करने लगता हूं।

(بخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، ۴/۲۴۸، حدیث: ۶۵۰۲)

मैं पढ़ता रहूं सुन्नतें वक़्त ही पर
हों सारे नवाफ़िल अदा या इलाही

﴿3﴾...**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **ज़िक्र में मश्ग़ूल रहना** महब्बते इलाही की अ़लामत भी है और महब्बते इलाही हासिल होने का ज़रीआ़ भी। **फ़रमाने ख़ुदावन्दी** عَزَّوَجَلَّ है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ﴿۴۱﴾ وَّ سَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا ﴿۴۲﴾

(پ:۲۲، الاحزاب:۴۱، ۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** को बहुत याद करो और सुब्ह़ो शाम उस की पाकी बोलो।*

सरकारे दो आ़लम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मोअ़ज़्ज़म है : مَنْ اَحَبَّ شَيْئًا اَكْثَرَ ذِكْرَهٗ जो शख़्स जिस से महब्बत करता है, अक्सर उसी का ज़िक्र करता है। (کنز العمال، ۱/۲۱۷، حدیث ۱۸۲۵، الجزء الاول)

ह़ज़रते अबुल ह़सन ज़न्जानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इबादत की बुन्याद तीन चीज़ों आंख, दिल और ज़बान पर है। आंख इ़ब्रत के लिये, दिल ग़ौरो फ़िक्र के लिये और ज़बान सच्चाई का मर्कज़ और ज़िक्रो तस्बीह़ के लिये हो। (مکاشفة القلوب، الباب الحادی عشر فی طاعة الله و محبة رسوله، ص ۳۷)

ह़ज़रते सरी सक़्ती رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक बार ह़ज़रते शैख़ जुर्जानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के यहां पिसे हुवे सत्तू देखे, तो उन से कहा कि सत्तू के इ़लावा और कुछ क्यूं नहीं खाते ? उन्हों ने कहा : मैं ने खाना खाने और सत्तू पीने में सत्तर तस्बीह़ात का फ़र्क़ पाया है (या'नी जितना वक़्त खाना खाने में लगता है, उतनी देर में 70 तस्बीह़ात कर लेता हूं)। इस लिये चालीस साल से सिर्फ़ सत्तू खा रहा हूं ताकि तस्बीह़ात का वक़्त ज़ाएअ़ न हो।

(مکاشفة القلوب، الباب الحادی عشر فی طاعة الله و محبة رسوله، ص ۳۷)

मेरे दिल से दुन्या की चाहत मिटा कर
कर उल्फ़त में अपनी फ़ना या इलाही

﴾4﴿...ख़्वाहिशाते नफ़्स के बा वुजूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर अपनी पसन्द को क़ुरबान कर देना।

हुज्जतुल इस्लाम, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला की बन्दगी तीन चीज़ों का नाम है। अह़कामे शरीअ़त की पाबन्दी करना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मुक़र्रर कर्दा क़ज़ा व क़दर और तक़्सीम पर राज़ी रहना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात को क़ुरबान कर देना। (बेटे को नसीह़त, स. 37)

ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़त़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाया करते थे कि चालीस साल से मेरे नफ़्स को शहद खाने की ख़्वाहिश है लेकिन आज तक मैं ने इस की ख़्वाहिश पूरी नहीं की। (तज़किरतुल औलिया, स. 163)

ह़िर्से दुन्या निकाल दे दिल से
बस रहूं त़ालिबे रिज़ा या रब

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5﴿...अपना दिल दुन्या की महब्बत से ख़ाली कर के कुल्ली त़ौर पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर झुकाए रखना। मन्क़ूल है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य नाज़िल फ़रमाई कि ऐ ईसा ! मैं देखता हूं कि जब किसी बन्दे का दिल दुन्या व आख़िरत की महब्बत से पाक व साफ़ हो जाए, तो उसे अपनी महब्बत से भर देता हूं।

﴾6﴿...ऐसे तमाम कामों से दूर रहना जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल होने में रुकावट बनते हों।

ह़ज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महब्बत करने वाले की अ़लामत येह भी है कि हर उस चीज़ को छोड़ दे जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल कर दे और अपने आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा वाले कामों में मसरूफ़ रखे। (الزہدالکبیر,ص۷۸)

﴾7﴿...**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सच्ची महब्बत करने वाले नेक लोगों के नक़्शे क़दम पर चलना और उन की सोहबत इख़्तियार करना।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : हमेशा ऐसी सोहबत इख़्तियार करनी चाहिये जिस से इबादत का शौक़ और सुन्नत पर अ़मल करने का ज़ौक़ बढ़े। हम नशीन ऐसा हो जिसे देख कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ याद आ जाए, उस की बातों से नेकियों की त़रफ़ रग़बत बढ़े, दुन्या की महब्बत में कमी और आख़िरत की उल्फ़त में ज़ियादती हो। दोस्त ऐसा हो कि उस के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत में इज़ाफ़ा हो, ग़ैर सन्जीदा ह़रकतें करने वालों, फ़ैशन परस्तों और बे नमाज़ियों की सोहबत से बचना चाहिये।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! महब्बते इलाही बढ़ाने, रिज़ाए इलाही पाने, दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ जगाने, ईमान की ह़िफ़ाज़त की कुढ़न बढ़ाने, ख़ुद को अ़ज़ाबे क़ब्र व जहन्नम से डराने, गुनाहों की आ़दत मिटाने, अपने आप को सुन्नतों का पाबन्द बनाने, दिल में इ़श्क़े रसूल की शम्अ़ जलाने और जन्नतुल फ़िरदौस में मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस पाने का शौक़ बढ़ाने के लिये अच्छा माह़ोल और नेक लोगों की सोहबत ह़द दरजा ज़रूरी है क्यूंकि आज मुआ़शरे के ना क़ाबिले बयान ह़ालात में गुनाहों का ज़ोरदार सैलाब जिसे देखो बहाए लिये जा रहा है, ऐसे में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी मस्जिद भरो तह़रीक, दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल किसी ने'मते उ़ज़्मा से कम नहीं, इस से हर दम वाबस्ता रहिये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मजलिसे मदनी मुज़ाकरा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से दा'वते इस्लामी इस पुर फ़ितन दौर में महब्बते इलाही के जाम पिलाने और इ़श्क़े रसूल से दिलों को सरशार करने

के साथ साथ ख़िदमते दीन के तक़रीबन 103 शो'बाजात में सुन्नतों की धूमें मचा रही है, जिन में से एक शो'बा "**मजलिसे मदनी मुज़ाकरा**" भी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने "**इल्म बे शुमार ख़ज़ानों का मजमूआ़ है, जिन के ह़ुसूल का ज़रीआ़ सुवाल है**" के क़ौल को अ़मली जामा पहनाते हुवे सुवाल व जवाब का एक सिलसिला शुरूअ़ किया जिसे दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में "**मदनी मुज़ाकरा**" कहा जाता है। आ़शिक़ाने रसूल, मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब्ब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, मआ़शी व मुआ़शरती व तन्ज़ीमी मुआ़मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ क़िस्म के सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुवे जवाबात से नवाज़ते हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इ़ल्मो ह़िक्मत से भरपूर मदनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसलमानों को महकाने के लिये इन मदनी मुज़ाकरों को तह़रीरी रिसाले और ऑडियो (Audio), वीडियो (Video), सीडीज़ (CD's) की सूरत में पेश करने की कोशिश की जाती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अब तक मसजिले मदनी मुज़ाकरा कई ऑडियो केसेट और वीडियो सीडीज़ (VCD's) और तह़रीरी मदनी मुज़ाकरे पेश करने की सआ़दत भी ह़ासिल कर चुकी है और मज़ीद के लिये कोशिशें जारी हैं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है :

जिस ने मेरी सुन्नत से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث: ۱۷۵)

सुन्नतें आ़म करें, दीन का हम काम करें

नेक हो जाएं मुसलमान मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हाथ मिलाने की सुन्नतें और आदाब

आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**101 मदनी फूल**" से हाथ मिलाने की चन्द सुन्नतें व आदाब सुनते हैं । पहले दो **फ़रामैने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों :

❖ जब दो मुसलमान मुलाक़ात करते हुवे मुसाफ़ह़ा करते हैं और एक दूसरे से ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करते हैं, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के दरमियान सौ रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है, जिन में से निन्नानवे रह़मतें ज़ियादा पुर तपाक त़रीक़े से मिलने वाले और अच्छे त़रीक़े से अपने भाई से ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करने वाले के लिये होती हैं । (معجم اوسط، ۵/۳۸۰، رقم: ۷۶۷۲)

❖ जब दो दोस्त आपस में मिलते हैं और मुसाफ़ह़ा करते हैं और नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं, तो उन दोनों के जुदा होने से पहले पहले दोनों के अगले, पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं ।

(شعب الایمان، ۶/۴۷۱، حدیث: ۸۹۴۴)

❖ दो मुसलमानों का ब वक़्ते मुलाक़ात सलाम कर के दोनों हाथों से मुसाफ़ह़ा करना या'नी दोनों हाथ मिलाना सुन्नत है । ❖ रुख़्सत होते वक़्त भी सलाम कीजिये और हाथ भी मिला सकते हैं । ❖ हाथ मिलाते वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ कर हो सके तो येह दुआ़ भी पढ़ लीजिये : يَغْفِرُ اللهُ لَنَا وَ لَكُم (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए । ❖ दो मुसलमान हाथ मिलाने के

दौरान जो दुआ़ मांगेगें اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ क़बूल होगी, हाथ जुदा होने से पहले पहले दोनों की मग़फ़िरत हो जाएगी, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ। (مسند احمد، ۴/۲۸۶، حدیث: ۱۲۴۵۴) ❖ आपस में हाथ मिलाने से दुश्मनी दूर होती है। ❖ जितनी बार मुलाक़ात हो, हर बार हाथ मिला सकते हैं। ❖ दोनों त़रफ़ से एक एक हाथ मिलाना सुन्नत नहीं, मुसाफ़ह़ा दो हाथ से करना सुन्नत है। ❖ बा'ज़ लोग सिर्फ़ उंगलियां ही आपस में टकरा देते हैं येह भी सुन्नत नहीं। ❖ हाथ मिलाने के बा'द ख़ुद अपना ही हाथ चूम लेना मक्रूह है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, 3 / 471, मुलख़्ख़सन)

❖ हाथ मिलाने के बा'द अपनी हथेली चूम लेने वाले इस्लामी भाई अपनी आ़दत निकालें। ❖ अगर अम्रद (या'नी ख़ूब सूरत लड़के) से हाथ मिलाने में शह्वत आती हो, तो उस से हाथ मिलाना जाइज़ नहीं बल्कि अगर देखने से शह्वत आती हो, तो अब देखना भी गुनाह है। (دُرِّمُختار، ۲/۹۸) ❖ मुसाफ़ह़ा करते (या'नी हाथ मिलाते) वक़्त सुन्नत येह है कि हाथ में रूमाल वग़ैरा ह़ाइल न हो, दोनों हथेलियां ख़ाली हों और हथेली से हथेली मिलनी चाहिये।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, 3 / 471)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब **बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन त़लब कीजिये और बग़ौर इन का मुत़ालआ़ फ़रमाइये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

इल्म ह़ासिल करो, जह्ल ज़ाइल करो — पाओगे राह़तें क़ाफ़िले में चलो
सुन्नतें सीखने तीन दिन के लिये — हर महीने चलें क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 669, 670)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सौ रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर सौ मरतबा दुरूदे पाक पढ़े, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा। (مُعْجَم اَوسَط ج۵ص۲۵۲حدیث۲۷۳۵)

उन पर दुरूद जिन को कसे बेकसां कहें
उन पर सलाम जिन को ख़बर बे ख़बर की है

मुख़्तसर वज़ाह़त : हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर बेह़द दुरूदो सलाम हों जो बे सहारों का सहारा हैं और उन्हें हर बे ख़बर की भी ख़बर है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج۶ص۱۸۵حدیث۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा। ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा। ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा। ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा। ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा। ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! इस्लाम महज़ चन्द अ़क़ाइद व फ़राइज़ की अदाएगी का नाम नहीं बल्कि इस्लाम तो इन्सान को ज़िन्दगी गुज़ारने के सुनेहरी उसूल सिखाता और उन्हें ज़ुल्मत कदों (या'नी अन्धेरियों और तारीकियों) से निकाल कर इ़ल्म की रौशनी से चमकाता है। इन्सानी ज़िन्दगी का कोई गोशा ऐसा नहीं कि जहां इस्लाम रहनुमाई न फ़रमाता हो, इस्लाम ने जहां एक दूसरे के हुक़ूक़ (Rights) बयान फ़रमाए, वहीं इस्लाम से क़ब्ल मुआ़शरे के ज़ुल्मो सितम की चक्की में पिसी हुई औ़रत को ज़ुल्मो सितम की दलदल से निकाल कर उसे वोह तमाम जाइज़ हुक़ूक़ दिलाए जिन से वोह महरूम रखी जाती थी। अल ग़रज़! इस्लाम ने औ़रतों को इ़ज़्ज़त का ताज पहना कर उन्हें मुआ़शरे (Society) में वोह ह़क़ीक़ी मक़ाम दिया जिस का तसव्वुर भी इस्लाम से पहले या'नी ज़मानए जाहिलिय्यत में औ़रत के वहमो गुमान में न था। चुनान्चे,

दरया को जारी कर दिया फ़ारूक़े आ'ज़म ने!

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**करामाते फ़ारूक़े आ'ज़म**" में एक ह़िकायत नक़्ल फ़रमाते हैं : जब मिस्र

फ़त्ह हुवा, तो एक रोज़ अहले मिस्र ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : ऐ अमीर ! हमारे दरयाए नील की एक रस्म है, जब तक उस को अदा न किया जाए दरया जारी नहीं रहता । उन्हों ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया (या'नी सुवाल किया) : क्या ? कहा : हम एक कुंवारी लड़की को उस के वालिदैन से ले कर उ़म्दा लिबास और नफ़ीस ज़ेवर (Jewellery) से सजा कर दरयाए नील में डालते हैं । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : इस्लाम में हरगिज़ ऐसा नहीं हो सकता और इस्लाम पुरानी वाहियात रस्मों को मिटाता है । पस वोह रस्म मौक़ूफ़ रखी (या'नी रोक दी) गई और दरया की रवानी कम होती गई, यहां तक कि लोगों ने वहां से चले जाने का क़स्द (या'नी इरादा) किया । येह देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन, ख़लीफ़ए सानी, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में तमाम वाक़िआ़ लिख भेजा । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब में तह़रीर फ़रमाया : तुम ने ठीक किया, बेशक इस्लाम ऐसी रस्मों को मिटाता है । मेरे इस ख़त़ (Letter) में एक रुक़्आ़ है, उस को दरयाए नील में डाल देना । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जब अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़त़ पहुंचा और उन्हों ने वोह रुक़्आ़ उस ख़त़ में से निकाला, तो उस में लिखा था : (ऐ दरयाए नील !) अगर तू ख़ुद जारी है, तो न जारी हो और **अल्लाह** तआ़ला ने जारी फ़रमाया, तो मैं वाह़िदो क़ह्हार عَزَّوَجَلَّ से अ़र्ज़ गुज़ार हूं कि तुझे जारी फ़रमा दे । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह रुक़्आ़ दरयाए नील में डाला, एक रात में सोलह गज़ पानी बढ़ गया और येह रस्म मिस्र से बिल्कुल ख़त़्म हो गई । (करामाते फ़ारूक़े आ'ज़म, स. 15, (العظمہ لامام اصبہانی، ص۳۱۸، رقم ۹۴۰، ملخصاً

चाहें तो इशारों से अपने काया ही पलट दें दुन्या की
येह शान है ख़िदमतगारों की, सरदार का आ़लम क्या होगा

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हुक्मरानी का परचम दरयाओं के पानी पर भी लहराता था और दरयाओं की रवानी भी आप की ना फ़रमानी नहीं करती थी । येह भी मा'लूम हुवा कि

वुजूदे काइनात में इस्लामी ता'लीमात का नूर फैलने से पहले बहुत सी अ़जीबो ग़रीब ग़ैर शरई रुसूमात व ख़ुराफ़ात ने मुआ़शरे को अपनी लपेट में लिया हुवा था, मसलन जब दरयाए नील ख़ुश्क होने लगता, तो अहले मिस्र ने इस का येह दिल ख़राश ह़ल निकाला कि वोह लोग हर साल एक बे गुनाह नौजवान लड़की को ज़ेवरात से आरास्ता कर के उसे दरया की भेंट चढ़ाते (या'नी दरया में डाल दिया करते) और येह बातिल ख़याल क़ाइम कर लेते कि दरयाए नील को जारी रखने के लिये येह बहुत ज़रूरी है वरना येह ख़ुश्क (Dry) हो जाएगा मगर क़ुरबान जाइये ! निगाहे नुबुव्वत से फ़ैज़ याफ़्ता, बारगाहे रिसालत के ता'लीमो तरबिय्यत याफ़्ता, अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर कि जब आप को उन की इस जाहिलाना रस्म का इ़ल्म हुवा, तो औ़रतों के हुक़ूक़ के इस अ़लमबरदार और इस्लाम के शैदाई की ग़ैरते ईमानी को जोश आया और आप ने अपने इख़्तियारात (Authority) का इस्ति'माल करते हुवे अहले मिस्र की ख़िलाफ़े इस्लाम इस शर्मनाक रस्म का सख़्ती से नोटिस लिया और इसे फ़ौरी बन्द करवा कर औ़रतों का वक़ार बुलन्द किया और उन्हें उन का ह़क़ीक़ी मक़ाम दिलवाने में वोह शानदार किरदार अदा किया कि ख़ुद इन्सानिय्यत को भी आप पर फ़ख़्र रहेगा । बहर ह़ाल येह तो वोह दौर था कि जब इस्लाम जल्वागर हो चुका था, अगर हम इस्लाम से क़ब्ल या'नी ज़मानए जाहिलिय्यत में औ़रतों की ह़ैसिय्यत (Status) का जाइज़ा लें, तो हम पर येह ह़क़ीक़त ज़ाहिर हो जाएगी कि उन पर ढाए जाने वाले मज़ालिम अपनी इन्तिहा को पहुंचे हुवे थे । इस्लाम से पहले औ़रत को कैसी कैसी दिल सोज़ मुसीबतों का सामना करना पड़ता था । आइये ! इस बारे में सुनते हैं। चुनान्चे,

औ़रत इस्लाम से पहले

इस्लाम से पहले औ़रतों का ह़ाल बहुत ख़राब था, दुन्या में औ़रतों की कोई इ़ज़्ज़त व अहम्मिय्यत ही नहीं थी । मर्दों की नज़र में इस से ज़ियादा औ़रतों की कोई ह़ैसिय्यत ही नहीं थी कि वोह मर्दों की नफ़्सानी ख़्वाहिश पूरी करने का एक "**खिलौना**" थीं । औ़रतें दिन रात मर्दों की मुख़्तलिफ़ क़िस्म की ख़िदमत करती थीं यहां तक कि मेहनत, मज़दूरी कर के जो कुछ कमाती

थीं वोह भी मर्दों को दे दिया करती थीं मगर ज़ालिम मर्द फिर भी उन औ़रतों की क़द्र नहीं करते थे बल्कि जानवरों की त़रह़ उन को मारते पीटते थे, ज़रा ज़रा सी बात पर औ़रतों के कान, नाक वग़ैरा आ'ज़ा काट लिया करते थे और कभी तो क़त्ल भी कर डालते थे। बाप के मरने के बा'द उस के लड़के जिस त़रह़ बाप की जाएदाद और सामान के मालिक हो जाया करते थे, इसी त़रह़ अपने बाप की बीवियों के मालिक बन जाया करते थे और उन औ़रतों को ज़बरदस्ती लौन्डियां बना कर रख लिया करते थे। औ़रतों को उन के मां-बाप, भाई, बहन या शौहर की मीरास में से कोई ह़िस्सा नहीं मिलता था, न औ़रतें किसी चीज़ की मालिक हुवा करती थीं। अ़रब के बा'ज़ क़बीलों में येह ज़ालिमाना दस्तूर था कि बेवा हो जाने के बा'द औ़रतों को घर से बाहर निकाल कर एक छोटे से तंगो तारीक झोंपड़े में एक साल तक क़ैद में रखा जाता था। वोह झोंपड़े से बाहर नहीं निकल सकती थीं, न ग़ुस्ल करती थीं, न कपड़े बदल सकती थीं, खाना, पानी और अपनी सारी ज़रूरतें उसी झोंपड़े में पूरी करती थीं। बहुत सी औ़रतें तो घुट घुट कर मर जाती थीं और जो ज़िन्दा बच जाती थीं, तो एक साल के बा'द उन के दामन में ऊंट की मेंगनियां डाल दी जाती थीं और उन को मजबूर (Force) किया जाता था कि वोह किसी जानवर के बदन से अपने बदन को रगड़ें फिर सारे शहर का उसी गन्दे लिबास में चक्कर लगाएं और इधर उधर ऊंट की मेंगनियां फेंकती हुई चलती रहें। येह इस बात का ऐ'लान होता था कि उन औ़रतों की इद्दत ख़त्म हो गई है। इसी त़रह़ दूसरी ख़राब रस्में भी थीं जो ग़रीब औ़रतों के लिये मुसीबतों और बलाओं का पहाड़ बनी हुई थीं और बेचारी मुसीबत की मारी औ़रतें घुट घुट कर अपनी ज़िन्दगी के दिन गुज़ारती थीं। सालहा साल तक येह ज़ुल्मो सितम की मारी दुख्यारी औ़रतें अपनी इस बेकसी और लाचारी पर रोती बिलबिलाती और आंसू बहाती रहीं मगर दुन्या में कोई भी उन औ़रतों के ज़ख़्मों पर मरहम रखने वाला और उन के आंसूओं को पोंछने वाला दूर दूर तक नज़र नहीं आता था, न दुन्या में कोई भी उन के दुख, दर्द की फ़रयाद सुनने वाला था, न किसी के दिल में उन औ़रतों के लिये रह़मो करम का कोई जज़्बा था।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

औ़रत इस्लाम के बा'द

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस्लाम से पहले औ़रतों पर होने वाले ज़ुल्मो सितम को रोकने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस्लामी अह़कामात दे कर भेजा । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद से सारी दुन्या में अनोखा इन्क़िलाब बरपा हुवा और लाचार औ़रतों के भी दुख, दर्द दूर हो गए । जब हमारे आक़ा, दुखों के मल्जा व मावा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से **"दीने इस्लाम"** ले कर तशरीफ़ लाए, तो दुन्या भर की सताई हुई औ़रतों की क़िस्मत का सितारा चमक उठा । इस्लाम की बदौलत ज़ालिम मर्दों के ज़ुल्मो सितम से कुचली और रौंदी हुई औ़रतों का दरजा इस क़दर बुलन्दो बाला हुवा कि इ़बादात व मुआ़मलात बल्कि ज़िन्दगी (Life) और मौत के हर मर्ह़ले और हर मोड़ पर औ़रतों को बा वक़ार मक़ाम ह़ासिल हुवा । मर्दों की त़रह़ औ़रतों के भी हुक़ूक़ मुक़र्रर हो गए, उन के हुक़ूक़ की ह़िफ़ाज़त के लिये अह़कामे ख़ुदावन्दी नाज़िल हुए, औ़रतों को मालिकाना हुक़ूक़ ह़ासिल हो गए, औ़रतें अपने मह्र की रक़मों, अपनी तिजारतों, अपनी जाएदादों की मालिक बना दी गईं और अपने मां-बाप, भाई, बहन, औलाद और शौहर की मीरासों की वारिस क़रार दी गईं । अल ग़रज़ ! वोह औ़रतें जो मर्दों की जूतियों से ज़ियादा ज़लीलो ख़्वार और इन्तिहाई मजबूर व लाचार थीं, वोह मर्दों के दिलों का सुकून और उन के घरों की मलिका बन गईं । चुनान्चे, क़ुरआने करीम ने साफ़ साफ़ लफ़्ज़ों में ए'लान फ़रमा दिया :

خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْۤا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّ رَحْمَةً ؕ (پ:۲۱، روم:۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स से जोड़े बनाए कि उन से आराम पाओ और तुम्हारे आपस में मह़ब्बत और रह़मत रखी ।*

अब कोई मर्द न औ़रतों को मार पीट सकता है, न उन को घरों से निकाल सकता है और न कोई उन के माल व अस्बाब या जाएदादों को छीन सकता है बल्कि हर मर्द पर मज़्हबी त़ौर पर औ़रतों के हुक़ूक़ अदा करने लाज़िम हैं । (जन्नती ज़ेवर, स. 39-42, मुलख़्ख़सन, बित्तग़य्युर क़लील)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने सुना कि इस्लाम कितना प्यारा मज़हब है कि जिस ने दुन्या में पहली बार सिसक्ती बिलक्ती इस मज़लूम हस्ती के आंसूओं को अपने दामने करम में जज़्ब किया, इस के ज़ख़्मों पर शफ़्क़त व महब्बत का मरहम रखा, इसे ज़ुल्मो सितम की चक्की में पिसता छोड़ने के बजाए मुआ़शरे का इ़ज़्ज़तदार फ़र्द बनाया । अल ग़रज़ ! इस्लाम ने औ़रत पर ढाए जाने वाले मज़ालिम का बाब (Gate) हमेशा के लिये बन्द कर दिया और इसे वोह तमाम जाइज़ हुक़ूक़ दिलवाए कि जिस की येह ह़क़दार थी, बिला शुबा औ़रतों पर इस्लाम का येह वोह अ़ज़ीमुश्शान एह़सान है कि ता क़ियामत जिस पर इन्सानिय्यत को भी फ़ख़्र रहेगा ।

याद रहे ! औ़रत अपनी ज़िन्दगी में मुख़्तलिफ़ मराह़िल से गुज़रती है, मसलन कभी बेटी के रूप में तो कभी बहन के रूप में, कभी बीवी के रूप में और कभी मां के रूप में नज़र आती है । औ़रत चाहे किसी भी रूप में हो जब भी उस के साथ कोई ना इन्साफ़ी हुई, तो इस्लाम ने उस के जज़्बात व एह़सासात को ज़र्रा बराबर भी ठेस न पहुंचने दी बल्कि उसे ज़ुल्म व जब्र के भंवर से निकाल कर एक नई ज़िन्दगी बख़्शी । ख़ुसूसन इस्लाम से क़ब्ल बेटियों के मुआ़मले में बरसों से जारी ज़ालिमाना व वह़्शियाना रुसूमात व ख़ुराफ़ात का बाब बन्द करने और मुआ़शरे के अन्दर उन्हें एक मुन्फ़रिद मक़ाम दिलवाने में दीने इस्लाम का किरदार लाइक़े तह़्सीन है । आइये ! इस्लाम से क़ब्ल उन नन्ही कलियों के साथ होने वाले अज़िय्यत नाक सुलूक की दर्द भरी दास्तान सुनते हैं और इ़ब्रत के मदनी फूल चुनते हैं । चुनान्चे,

इस्लाम से क़ब्ल बेटी की ह़ैसिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस्लाम से पहले लड़कियों के साथ जानवरों से बदतर सुलूक होता, तो कहीं पैदा होते ही उन्हें ज़मीन में ज़िन्दा ही दफ़्न कर दिया जाता क्यूंकि उस ज़ालिम मुआ़शरे में बेटी की पैदाइश को बाइ़से शर्मिन्दगी समझा जाता था । बसा अवक़ात किसी शख़्स को मा'लूम होता कि उस के यहां बेटी की विलादत हुई है, तो वोह कई दिनों तक लोगों के सामने न आता और ग़ौर करता कि वोह इस मुआ़मले में क्या करे ? आया ज़िल्लत बरदाश्त कर के बेटी की परवरिश करे या शर्मिन्दगी से बचने के लिये

अपनी बेटी को ज़िन्दा ज़मीन में दफ़्न कर दे । जैसा कि पारह 14, सूरतुन्नह्ल की आयत नम्बर 58 और 59 में इरशाद होता है :

وَ اِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِیْمٌ ۚ(۵۸) یَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖؕ اَیُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ یَدُسُّهٗ فِی التُّرَابِؕ اَلَا سَآءَ مَا یَحْكُمُوْنَ(۵۹) (پ14، النحل، 58)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जब उन में किसी को बेटी होने की ख़ुश ख़बरी दी जाती है, तो दिन भर उस का मुंह काला रहता है और वोह ग़ुस्सा खाता है, लोगों से छुपता फिरता है इस बिशारत की बुराई के सबब, क्या उसे ज़िल्लत के साथ रखेगा या उसे मिट्टी में दबा देगा, अरे ! बहुत ही बुरा हुक्म लगाते हैं।*

लेकिन उस पथ्थर दिल मुआ़शरे में ऐसे रह़म दिल लोग भी मौजूद थे कि जो बच्चियों की बेकसी पर ख़ून के आंसू बहाते और जहां तक मुमकिन होता बच्चियों को ज़िन्दा दफ़्न होने से बचाने की कोशिशें करते । मसलन अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चचाज़ाद भाई और ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद, ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल को जब पता चलता कि फ़ुलां के हां लड़की पैदा हुई है और वोह उस को ज़िन्दा दफ़्न करना चाहता है, तो दौड़ कर उस के पास जाते और उस बच्ची की परवरिश और उस की शादी वग़ैरा के अख़राजात (Expense) की ज़िम्मेदारी उठाते और इस त़रह़ उस नन्ही कली को खिलने से पहले मसल दिये जाने से बचा लेते ।

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'सआ़ बिन नाजिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का भी येही मा'मूल था । चुनान्चे, आप ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने ज़मानए जाहिलिय्यत में 360 बच्चियों को ज़िन्दा दफ़्न होने से बचाया और हर एक के बदले दो दो दस माह वाली ह़ामिला ऊंटनियां और एक एक ऊंट बत़ौरे फ़िद्या उन के बापों को दिया । क्या मुझे इस अ़मल का कोई अज्र मिलेगा ? तो सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस अ़मल का अज्र तो तुम्हें मिल गया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें इस्लाम लाने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमाई और ने'मते ईमान से सरफ़राज़ कर दिया । (معجم کبیر، ۸/ ۷۷، حدیث: ۷۴۱۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने कि इस्लाम से पहले उन भोली भाली, नाज़ुक कलियों को किस क़दर दर्दनाक अन्दाज़ में कुचला गया, उन पर ज़मीन तंग कर दी गई, उन से जीने का ह़क़ छीना गया और उन पथ्थर दिल बापों ने उन फूल जैसी बेटियों को ज़माने की मलामत के डर से अपने ही हाथों हलाकत की वादियों में धकेलने में कोई कसर न छोड़ी थी। अल ग़रज़ ! दौरे जाहिलिय्यत में बेटियां ख़ानदान की इ़ज़्ज़त नहीं बल्कि नुहूसत की अ़लामत समझी जाती थीं। अफ़्सोस ! कि इस तरक़्क़ी याफ़्ता दौर में भी ज़मानए जाहिलिय्यत की यादें ताज़ा करने वालों की कमी नहीं, आज भी बा'ज़ नादान मुसलमान ऐसे हैं जो बेटियों से मह़ब्बत करने और उन पर शफ़्क़त व मेहरबानी का हाथ रखने के बजाए बेटी के वुजूद से नफ़रत करते हैं, उस बेचारी को पैदाइश से क़ब्ल मां के पेट में ही मरवा दिया जाता है जब कि दुन्या में आने वाली बा'ज़ बच्चियों को माओं समेत मौत की नींद सुला दिया जाता है या उस बच्ची को कचरा कून्डी में फेंक दिया जाता है जहां वोह नन्ही सी बच्ची कुत्ते, बिल्लियों और चील, कव्वों की ख़ूराक बन जाती है या फिर उन्हें मुख़्तलिफ़ फ़लाही व समाजी इदारों के ह़वाले कर दिया जाता है। यक़ीनन येह सब इ़ल्मे दीन से दूरी का नतीजा है। अगर हम इस्लामी ता'लीमात का जाइज़ा लें, तो हमें मा'लूम होगा कि इस्लाम ने बेटियों के साथ होने वाली बद सुलूकी और ज़ुल्म व ज़ियादती से मन्अ़ फ़रमाया और रह़मते आ़लम, सरापा जूदो करम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन की परवरिश करने और इन से हुस्ने सुलूक से पेश आने पर जन्नत में दाख़िले की बिशारतें अ़ता फ़रमाई हैं। आइये ! इस के मुतअ़ल्लिक़ 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनते हैं। चुनान्चे,

इस्लाम में बेटियों का मक़ामो मर्तबा

1. इरशाद फ़रमाया : जिस शख़्स की बेटी हो, तो वोह उसे ज़िन्दा दफ़्न न करे, उसे ज़लील न समझे और अपने बेटे को उस पर तरजीह़ न दे, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में दाख़िल करेगा। (ابوداو، ۴/۴۳۵، حدیث۵۱۴۶)
2. इरशाद फ़रमाया : बेटियों को बुरा मत कहो, मैं भी बेटियों वाला हूं। बेशक बेटियां तो बहुत मह़ब्बत करने वालियां, ग़म गुसार और बहुत ज़ियादा मेहरबान होती हैं। (فردوس الاخبار، ۲/۴۱۵، حدیث:۷۵۵۶)

3. इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स 3 बेटियों या बहनों की इस त़रह़ परवरिश करे कि उन को अदब सिखाए और उन से मेहरबानी का बरताव करे यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें बे नियाज़ कर दे। (मसलन उन का निकाह़ हो जाए) तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जन्नत वाजिब फ़रमा देता है। येह इरशादे नबवी सुन कर एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर कोई शख़्स 2 लड़कियों की परवरिश करे ? तो इरशाद फ़रमाया : उस के लिये भी येही अज्रो सवाब है। (रावी फ़रमाते हैं) : यहां तक कि अगर लोग एक (बेटी) का ज़िक्र करते, तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बारे में भी येही फ़रमाते। (شرح السنہ، کتاب البر والصلۃ، باب ثواب کافل الیتیم، ۶/۴۵۲، الحدیث: ۳۳۵۱)

4. इरशाद फ़रमाया : जब किसी के हां लड़की पैदा होती है, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के घर फ़िरिश्तों को भेजता है जो आ कर कहते हैं : ऐ घर वालो ! तुम पर सलामती हो फिर फ़िरिश्ते उस बच्ची को अपने परों के साए में ले लेते हैं और उस के सर पर हाथ फेरते हुवे कहते हैं कि येह एक कमज़ोर जान है जो एक कमज़ोर जान से पैदा हुई है, जो शख़्स इस कमज़ोर जान की परवरिश की ज़िम्मेदारी लेगा, तो क़ियामत तक मददे ख़ुदा उस के शामिले ह़ाल रहेगी।

(مجمع الزوائد، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی الاولاد، ۸/۲۸۵، حدیث: ۱۳۴۸۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मक्की मदनी सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने न सिर्फ़ अपने इरशादात से बेटी के ह़क़ीक़ी मक़ाम को उजागर फ़रमाया है बल्कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने किरदार से भी हमें येही सिखाया है कि एक अ़क़्लमन्द बाप को अपनी बेटी के साथ किस त़रह़ का सुलूक करना चाहिये। आइये ! बत़ौरे तरग़ीब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अपनी प्यारी और लाड़ली शहज़ादी, शहज़ादिये कौनैन, सय्यिदा ख़ातूने जन्नत, फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर शफ़्क़त व मेहरबानी की एक ईमान अफ़रोज़ झलक मुलाह़ज़ा कीजिये और अपना ईमान ताज़ा कीजिये। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदतुना बीबी फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जब मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा शफ़्क़त में ह़ाज़िर होतीं, तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खड़े हो जाते और उन का हाथ पकड़ कर उसे बोसा देते

फिर उन को अपने बैठने की जगह पर बिठाते । इसी त़रह़ जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सय्यिदतुना बीबी फ़ात़िमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا के हां तशरीफ़ ले जाते, तो वोह देख कर खड़ी हो जातीं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक हाथ अपने हाथ में ले कर चूमतीं और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी जगह पर बिठातीं । (ابوداود، کتاب الادب، باب ماجاء فی القیام، ۴/۴۵۴حدیث: ۵۲۱۷)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदनी क़ाफ़िला

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़दीसे पाक से मा'लूम हुवा कि बेटियों पर शफ़्क़त व मेहरबानी करना और उन्हें ख़ुश रखना हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नते मुबारका है, लिहाज़ा वालिदैन को चाहिये कि वोह बेटियों की पैदाइश पर ग़मगीन होने, उन्हें अपने लिये बाइ़से शर्मिन्दगी समझने, दिल छोटा करने या ख़ानदान वालों के त़ा'नों की परवा करने के बजाए उन से मह़ब्बत व शफ़्क़त का बरताव करें, उन की जाइज़ ख़्वाहिशात का एह़तिराम (Respect) करें, ह़त्तल इमकान उन्हें ख़ुश रखने की कोशिश करें, ख़ुलूसे दिल से उन की ता'लीमो तरबिय्यत और उन की परवरिश करने की सआ़दत ह़ासिल कर के इस के नतीजे में मिलने वाले सवाबे आख़िरत को अपने पेशे नज़र रखें ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बेटियों की अहम्मिय्यत उजागर करने और उन के हुक़ूक़ की बजा आवरी का ज़ेह्न देने के लिये दा'वते इस्लामी अपनी कोशिशें जारी रखे हुवे है । आप भी इस मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये और 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये । 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम **''मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करना''** भी है । मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की बरकत से जहां ख़ुद **इल्मे दीन** सीखने का बेहतरीन मौक़अ़ मिलता है, वहीं मुआ़शरे के ऐसे अफ़राद तक **''नेकी की दा'वत''** पहुंचाने की भी सआ़दत ह़ासिल होती है जो **इल्मे दीन से दूरी** और **जहालत** की वज्ह से गुनाहों के दलदल में फंसे हुवे हैं, जो दीने इस्लाम की मा'लूमात न होने की वज्ह से **औ़रतों के हुक़ूक़** को पामाल कर रहे हैं । मदनी क़ाफ़िलों का मक़्सद

बे नमाज़ियों को नमाज़ की दा'वत दे कर उन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर मस्जिद में ह़ाज़िरी के लिये लाने की कोशिश करना है। मदनी क़ाफ़िलों का एक मक़्सद मसाजिद की आबाद कारी भी है और मसाजिद को आबाद करने वालों के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीसे पाक में फ़रमाया गया है कि बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घरों को आबाद करने वाले ही **अल्लाह** वाले हैं। (معجم اوسط، ۲/۵۸، رقم: ۲۵۰۲)

आइये ! मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की सआ़दत पाने के लिये बत़ौरे तरग़ीब मदनी क़ाफ़िले की एक मदनी बहार सुनते हैं। चुनान्चे,

दिल का दर्द दूर हो गया !

पक्का क़ल्आ़, ज़मज़म नगर, ह़ैदराबाद (बाबुल इस्लाम, सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : अचानक मेरे दिल में दर्द हुवा, जब दवाओं से फ़ाइदा न हुवा, तो बाबुल मदीना कराची आ कर जिन्नाह़ अस्पताल में दिल का ऑप्रेशन करवाया मगर तक्लीफ़ ख़त्म होने के बजाए मज़ीद बढ़ गई । दर्द की बे शुमार दवाएं इस्ति'माल कीं लेकिन फ़ाइदा न हुवा, आख़िरे कार एक इस्लामी भाई की इनफ़िरादी कोशिश के नतीजे में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र पर रवाना हो गया । मदनी क़ाफ़िले में किसी क़िस्म की दवा इस्ति'माल की, न ही किसी चीज़ से परहेज़ किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की बरकत से **अल्लाह** तआ़ला ने मेरे मरज़ को दूर कर दिया।

है शिफ़ा ही शिफ़ा मरह़बा ! मरह़बा ! आ के ख़ुद देख लें, क़ाफ़िले में चलो
दिल में गर दर्द हो, डर से रुख़ ज़र्द हो पाओगे फ़र्ह़तें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 674)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्लाम में मां का मक़ाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! औ़रत मां के रूप में वोह अ़ज़ीम हस्ती है कि जिस का वुजूद बाइसे बरकत है, जो घर की ज़ीनत है, घर का सुकून जिस के दम से क़ाइम रहता है, जिसे मह़ब्बत के साथ देखने से ह़ज्जे मक़्बूल का सवाब मिलता है, जिस की ख़िदमत रिज़ाए इलाही का सबब है और जिस

के बिग़ैर घर उजड़ा हुवा चमन लगता है । इसी की गोद से अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن जैसी जलीलुल क़द्र हस्तियों ने जन्म लिया । मां के एह़सानात की कोई ह़द नहीं, मां तक्लीफ़ों पर सब्र करती है, मां औलाद की ख़्वाहिशात की ख़ातिर अपनी ख़्वाहिशात को क़ुरबान कर देती है, मां औलाद की विलादत, दूध पिलाने, उस की तरबिय्यत और रातों को जागने की तक्लीफ़ें उठाती है । मां भूकी सो जाती है मगर औलाद को भूका सोने नहीं देती, अल ग़रज़ ! मां अपनी औलाद के सुख की ख़ातिर सब कुछ बरदाश्त कर लेती है मगर अफ़्सोस ! कि बदले में इसे दुख और तक्लीफ़ें ही मिलती है । मां के हुक़ूक़ पर डाका डाला गया और इसे हर दौर में तख़्तए मश्क़ बनाया जाता रहा, ख़ुसूसन बुढ़ापे में इस के साथ जो कुछ सुलूक किया जाता रहा है उस के तसव्वुर (Imagination) से ही बदन के रौंगटे खड़े हो जाते हैं (والحفیظ الامان) । लिहाज़ा इस्लाम ने इस दुख, दर्द की मारी मां के दुखों का मदावा करने के लिये सब से पहले आवाज़े ह़क़ बुलन्द की और दुन्या को बताया कि मां वोह मोह़तरम हस्ती है कि जिस के हुक़ूक़ की अदाएगी के बिग़ैर चारा नहीं, रब की रिज़ा मां की रिज़ा मन्दी में पोशीदा है, इन्सान चाहे कितने ही बड़े मक़ाम व मन्सब पर पहुंच जाए मगर मां की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी से बरिय्युज़्ज़िम्मा नहीं हो सकता । आइये ! बत़ौरे तरग़ीब मां की शानो अ़ज़मत में एक ह़दीसे पाक सुनते हैं । चुनान्चे,

हुस्ने अख़्लाक़ का ज़ियादा ह़क़्दार कौन ?

एक शख़्स रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे हुस्ने अख़्लाक़ का ज़ियादा ह़क़्दार कौन है ? इरशाद फ़रमाया : तुम्हारी मां । उस ने दोबारा अ़र्ज़ की : इस के बा'द कौन ? इरशाद फ़रमाया : तुम्हारी मां । तीसरी बार अ़र्ज़ की : इस के बा'द कौन ? तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस मरतबा भी येही इरशाद फ़रमाया : तुम्हारी मां । उस ने फिर अ़र्ज़ की : इस के बा'द कौन ? तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तेरा बाप ।

(بخاری، کتاب الادب، باب من احق الناس بحسن الصحبۃ، حدیث: ۵۹۷۱، ۴/۹۳)

ज़ख़्मी उंगली

ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : सर्दियों की एक सख़्त रात में मेरी वालिदा ने मुझ से पानी मांगा, मैं आबख़ोरा (या'नी गिलास) भर कर ले आया मगर मां को नींद आ गई थी, मैं ने जगाना मुनासिब न समझा, पानी का आबख़ोरा लिये इस इन्तिज़ार में मां के क़रीब खड़ा रहा कि बेदार हों तो पानी पेश करूं । खड़े खड़े काफ़ी देर हो चुकी थी और आबख़ोरे से कुछ पानी बह कर मेरी उंगली पर जम कर बर्फ़ बन गया था । बह़र ह़ाल जब वालिदए मोह़तरमा बेदार हुईं, तो मैं ने आबख़ोरा पेश किया, बर्फ़ की वज्ह से चिपकी हुई उंगली (Finger) जूंही आबख़ोरे (या'नी गिलास) से जूदा हुई, उस की खाल उधड़ गई और ख़ून बहने लगा । मां ने देख कर फ़रमाया : येह क्या ? मैं ने सारा माजरा अ़र्ज़ किया । उन्हों ने हाथ उठा कर दुआ़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं इस से राज़ी हूं, तू भी इस से राज़ी रह ।

(समुन्दरी गुम्बद, स. 4)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मां–बाप की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी और उन से मह़ब्बत के एह़सास को उगाजर करते हुवे कितने प्यारे अन्दाज़ में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला की बारगाह में दुआ़ कर रहे हैं कि :

मुत़ीअ़ अपने मां–बाप का कर मैं उन का
हर इक हुक्म बजा लाऊं या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 101)

रिसाला "समुन्दरी गुम्बद" का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस्लाम में मां की शानो अ़ज़मत और मक़ामो मर्तबा किस क़दर बुलन्दो बाला है कि कोई लाख कोशिश कर ले मगर फिर भी इस अ़ज़ीम हस्ती का ह़क़ अदा कर नहीं सकता । यक़ीनन येह इस्लाम के एह़सानात में से निहायत अ़ज़ीमुश्शान एह़सान और माओं के लिये बाइ़से फ़ख़्र है । क़ुरबान जाइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पर कि जिन्हों ने मुसलमानों के सीनों में मां की अहम्मिय्यत (Importance) उजागर करने के लिये एक बहुत ही प्यारा रिसाला बनाम "**समुन्दरी गुम्बद**" तह़रीर फ़रमाया ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस रिसाले में आप ने मां-बाप ख़ुसूसन माओं के हुक़ूक़, उन की अहम्मिय्यत, उन की फ़रमां बरदारी व ना फ़रमानी करने वालों के वाक़िआ़त और उन से मुतअ़ल्लिक़ आयात और अह़ादीसे त़य्यिबा को जम्अ़ फ़रमाया है। आज ही इस रिसाले को मक्तबतुल मदीना के बस्ते से हदिय्यतन त़लब कीजिये, ख़ुद भी पढ़िये और ज़ियादा ता'दाद में तक़्सीमे रसाइल की तरकीब फ़रमाइये। दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislami.net से इस रिसाले को रीड (या'नी पढ़ा) भी जा सकता है, डाउन लोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है।

इस्लाम में बहन का मक़ाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ इस्लाम ने माओं के हुक़ूक़ मुतअ़य्यन फ़रमाए हैं, इसी त़रह़ इस्लाम ने सगी बहन के हुक़ूक़ भी उजागर फ़रमाए और अपने मानने वालों को अपनी सगी व रज़ाई बहनों के साथ भी हुस्ने सुलूक से पेश आने का दर्स दिया है क्यूंकि बहनें ही भाइयों के नख़रे बरदाश्त करती हैं, उन की फ़रमाइशें पूरी करती हैं, दुख, सुख की घड़ी में भाइयों का साथ देती हैं, वालिदा के इन्तिक़ाल के बा'द घर का सारा काम काज अपने ज़िम्मे ले कर वालिदा की कमी महसूस नहीं होने देतीं जब कि ज़मानए जाहिलिय्यत में इन के साथ इन्तिहाई बुरा सुलूक किया जाता था, मसलन इस्लाम से पहले सगी बहनों से निकाह़ की मुआ़शरती बुराई आ़म थी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे हमेशा के लिये यूं ह़राम फ़रमा दिया :

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ (پ4، النسآء، 23)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ह़राम हुई तुम पर तुम्हारी माएं और बेटियां और बहनें।*

औ़रतों के सब से बड़े ख़ैर ख़्वाह, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भाइयों को बहनों की इ़ज़्ज़तों का रखवाला बनाते हुवे यूं इरशाद फ़रमाया : जिस की तीन बेटियां या तीन बहनें या दो बेटियां या दो बहनें हों और उस ने उन के साथ हुस्ने सुलूक किया और उन के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता रहा, तो उसे जन्नत मिलेगी। (ترمذی، ۳/۳۶۷، حدیث: ۱۹۲۳) बल्कि दूसरी जगह तो चारों उगलियों को जोड़ कर येह दिल नशीन ख़ुश ख़बरी सुनाई कि ऐसा शख़्स जन्नत में यूं मेरे साथ होगा। (مسند احمد، مسند، ۴/۳۱۳، حدیث: ۱۲۵۹۴)

रह़मते कौनेन, नानाए ह़सनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने अ़मल से अपनी रज़ाई (या'नी दूध शरीक) बहन ह़ज़रते शीमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا के साथ यूं हुस्ने सुलूक फ़रमाया कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी रज़ाई बहन के लिये क़ियाम फ़रमाया । (سبل الهدى والرشاد، ٥/٣٣٣) अपनी मुबारक चादर बिछाई फिर इरशाद फ़रमाया : मांगो, तुम्हें अ़त़ा किया जाएगा, सिफ़ारिश करो, तुम्हारी सिफ़ारिश क़बूल की जाएगी । (دلائل النبوة، 5 / 200) इस मिसाली करम नवाज़ी के दौरान आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक आंखों से आंसू बह रहे थे । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह भी इरशाद फ़रमाया : अगर चाहो तो इ़ज़्ज़त व तकरीम के साथ हमारे पास रहो, जब वोह वापस जाने लगीं, तो हुज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़े गन्जूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने 3 ग़ुलाम और एक लौन्डी, एक या दो ऊंट भी अ़त़ा फ़रमाए । जब मक़ामे जिइ़र्राना में दोबारा इस रज़ाई बहन से मुलाक़ात हुई, तो भेड़ बकरियां भी अ़त़ा फ़रमाईं । (سبل الهدى والرشاد، ٥/٣٣٣ ملتقطاً)

नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से फ़रमाया : अपनी लौन्डी अपनी बहन को दे कर सिलए रेह़मी करो, इस में तुम्हारे लिये भलाई है । (مؤطا امام مالک، ٢/٤٤٩، حدیث: ١٨٥٥) ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने अपनी 7 या 9 बहनों की मह़ज़ निगेहदाश्त, उन की कंघी चोटी और अच्छी तरबिय्यत की ख़ातिर एक बेवा औ़रत से निकाह़ किया । (مسلم، ص٥٩٣، ٥٩٤، حدیث: ٣٦٣٨، ٣٦٤١)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी रज़ाई बहन के साथ किस क़दर शफ़ीक़ व मेहरबान थे कि जिस त़रह़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात, सह़ाबिय्यात और दीगर ख़ादिमाओं رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ के साथ हुस्ने सुलूक और उन की दिलजूई फ़रमाया करते थे, इसी त़रह़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं और नवाज़िशों का सिलसिला अपनी रज़ाई बहन के साथ भी क़ाबिले दीद था कि जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रज़ाई बहन ह़ज़रते शीमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होतीं, तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन की तशरीफ़ आवरी पर ख़ुशी से खड़े हो जाते, इन की दिलजूई फ़रमाते और इन पर ख़ूब नवाज़िशें भी फ़रमाते ।

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस पाकीज़ा अ़मल में हमारे लिये नसीह़त के मदनी फूल मौजूद हैं क्यूंकि आज हम में से कई इस्लामी भाई, बहनों वाले हैं मगर क्या हम अपनी बहनों के साथ मह़ब्बतों भरा सुलूक करते हैं या नहीं ? क्या हमारी बहनें भी हम से राज़ी हैं या नहीं ? क्या हम ने उन्हें विरासत से मह़रूम तो नहीं कर दिया ? क्या हम अपनी बहनों को झाड़ते, मारते या गालियां तो नहीं देते ? क्या हम अपनी बहनों को ख़ुश रखने का एहतिमाम करते हैं ? क्या हम उन्हें अपने यहां होने वाली तक़रीबात में बुलाते हैं या नहीं ? क्या हम उन के हुक़ूक़ को पामाल (Destroy) तो नहीं करते ? बहर ह़ाल हमें चाहिये कि हम इस्लामी ता'लीमात को मश्अ़ले राह बनाते हुवे अपनी बहनों के मुआ़मले में शफ़ीक़ व मेहरबान भाई जैसा किरदार अदा करें और अपने आप को ऐसे माह़ोल से वाबस्ता रखें कि जहां पर हमें बहनों के हुक़ूक़ की बजा आवरी का भरपूर ज़ेह्न दिया जाता हो ।

मजलिसे मदनी इन्आ़मात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल हमें दीगर रिश्तेदारों के साथ साथ बहनों के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आने और उन के हुक़ूक़ की रिआ़यत करने का मदनी ज़ेह्न देता है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी तब्लीग़े दीन के 100 से ज़ाइद शो'बाजात में नेकी की दा'वत की धूमें मचाने में मसरूफ़ है। इन्ही शो'बाजात में से एक शो'बा "**मजलिसे मदनी इन्आ़मात**" भी है । इस मजलिस का बुन्यादी मक़्सद इस्लामी भाइयों, इस्लामी बहनों, जामिआ़तुल मदीना व मदारिसुल मदीना के त़लबा व त़ालिबात को बा अ़मल बनाना और उन्हें मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की तरग़ीब (Persuasion) दिलाना है, इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63 मदनी इन्आ़मात हैं ।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इरशाद फ़रमाते हैं कि **काश** ! दीगर फ़राइज़ व सुनन की बजा आवरी के साथ साथ तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इन मदनी

इन्आ़मात को भी अपनी ज़िन्दगी का दस्तूर बना लें और तमाम ज़िम्मेदाराने दा'वते इस्लामी अपने ह़ल्क़े में इन मदनी इन्आ़मात को आ़म करें ताकि हर मुसलमान अपनी क़ब्रो आख़िरत की बेहतरी के लिये इन को इख़्लास के साथ अपना कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मदनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोसी बनने का अ़ज़ीम तरीन इन्आ़म पा ले। आइये ! हम सब निय्यत करते हैं कि न सिर्फ़ ख़ुद मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की कोशिश करेंगे बल्कि दूसरों को भी इस पर अ़मल करने की तरग़ीब दिलाएंगे। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्लाम में बीवी का मक़ाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस्लाम से पहले माल के लिये जानवरों और दूसरे साज़ो सामान की त़रह़ बीवियों को भी रह्न (या'नी गिरवी) रख दिया जाता। (بخاری، کتاب الرھن، باب رھن السلاح، ۲/ ۱۴۸، رقم: ۲۵۱۰، ماخوذا) ऐसे में रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सूरत में इस्लाम का नूर बिख़ेरता हुवा ऐसा सूरज त़ुलूअ़ हुवा जिस ने औ़रत को न सिर्फ़ ज़ुल्मो सितम से छुटकारा दिया बल्कि मर्दों पर उस के हुक़ूक़ मुक़र्रर फ़रमाए। येह इस्लाम ही तो है जिस ने निकाह़ के ज़रीए औ़रत से क़ाइम होने वाले रिश्ते को मर्द के आधे ईमान का मुह़ाफ़िज़ क़रार दिया। येह इस्लाम ही तो है जिस ने बीवियों को शौहरों की जानिब से मिलने वाले ह़क़्क़े महर और बेवा हो जाने की सूरत में शौहर की विरासत में से हुक़ूक़ अ़त़ा फ़रमाए। इस्लाम ने न सिर्फ़ इस सोच (Thought) की ह़ौसला शिकनी की कि **"बीवी शौहर के पाउं की जूती है"** बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बीवियों को शौहरों के आराम और सुकून का ज़रीआ़ इरशाद फ़रमाया। (پارہ ۲۱، روم: ۲۱) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बीवियों के मुतअ़ल्लिक़ शौहरों को हुक्म फ़रमाया : وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन से अच्छा बरताव करो।) (پارہ ۴، النساء: ۱۹) इस्लाम ने ही बीवियों के साथ अच्छा बरताव करने वाले को सब से बेहतरीन क़रार दिया। चुनान्चे,

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सब से बेहतर वोह है जो अपने अहल के लिये बेहतर हो और मैं तुम सब से अपने अहल के

लिये बेहतर हूं। (ترمذی،۵/۴۷۵، حدیث:۳۹۲۱) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम बिन मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा : शौहर पर बीवी का क्या ह़क़ है ? तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब वोह खाए, तो उसे भी खिलाए, जब लिबास पहने, तो उसे भी पहनाए, उस के चेहरे पर न मारे, न उसे बद सूरत कहे और (अगर समझाने के लिये) उस से अ़लाह़िदगी इख़्तियार करनी ही पड़े, तो घर में ही (अ़लाह़िदगी) करे। (ابن ماجہ، ۲/۴۰۹، رقم ۱۸۵۰)

ज़मानए जाहिलिय्यत में ऐसा भी होता था कि शौहर अपनी बीवियों से माल त़लब करते, अगर वोह देने से इन्कार करतीं, तो कई कई साल उन के **"पास न जाने"** की क़सम खा लेते। इस्लाम ने इस ज़ुल्म को मिटाया और ऐसी क़सम खाने वालों के लिये सालों की मुद्दत को ख़त्म फ़रमा कर सिर्फ़ चार महीने की मुद्दत मुअ़य्यन फ़रमा दी। अल ग़रज़ ! इस्लाम ने ही ह़क़ीक़ी मा'ना में बीवियों को मुआ़शरे में एक मुन्फ़रिद मक़ामो मर्तबा अ़त़ा फ़रमाया, उन के ह़ुक़ूक़ मुक़र्रर फ़रमाए और शौहरों को उन के साथ अच्छा सुलूक करने का दर्स दिया। बिलफ़र्ज़ अगर किसी की बीवी बद मिज़ाज हो, बद कलामी कर जाती हो या खाना वग़ैरा पकाते वक़्त किसी चीज़ में कमी बेशी कर देती हो, तो शौहर को चाहिये कि वोह आपे से बाहर होने, गालियां बकने, उसे घर से निकालने, मैके भेजने या त़लाक़ देने की धमकियां देने के बजाए समझदारी का मुज़ाहरा करते हुवे हमेशा दरगुज़र से काम ले और एक अच्छे शौहर की त़रह़ अपनी बीवी के एह़सानात को याद रखे कि येही वोह चीज़ है कि जिस की इस्लाम हमें ता'लीम इरशाद फ़रमाता है। चुनान्चे,

बीवियों से मुतअ़ल्लिक़ इस्लामी ता'लीमात

तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन में है कि एक शख़्स अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में अपनी बीवी की शिकायत ले कर ह़ाज़िर हुवा। जब वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरवाज़े पर पहुंचा, तो उन की ज़ौजा उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को नाराज़ी के आ़लम में गुफ़्तगू करते सुना। वोह शख़्स येह कहते हुवे वापस लौट गया कि मैं तो अपनी बीवी की शिकायत करने के इरादे से इन के पास आया था (मगर) येही मुआ़मला तो ख़ुद इन के साथ भी है (लिहाज़ा येह क्यूं कर मेरा मस्अला ह़ल कर पाएंगे ?)।

अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे बुलवाया और आने का मक़्सद दरयाफ़्त फ़रमाया। उस ने अ़र्ज़ की : मैं तो आप की बारगाह में अपनी बीवी की शिकायत करने के इरादे से आया था, जब मैं ने (आप के बारे में) आप की ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की गुफ़्तगू सुनी, तो (मायूस हो कर) वापस लौट गया। अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से इरशाद फ़रमाया : मेरी बीवी के मुझ पर चन्द हुक़ूक़ (Rights) हैं (या'नी मुझे उस से चन्द फ़वाइद ह़ासिल होते हैं) जिन की बिना पर मैं उस से दरगुज़र करता हूं। (1) वोह मेरे लिये जहन्नम से आड़ है, उस की वज्ह से मेरा दिल ह़राम से बचा रहता है (या'नी मैं उस के ज़रीए़ ख़्वाहिशे नफ़्स की तस्कीन कर लेता हूं और यूं ह़राम काम से बच जाता हूं) (2) जब मैं अपने घर से निकल जाता हूं, तो वोह मेरी ख़ज़ान्ची और मेरे माल की निगेहबान बन जाती है (3) मेरी धोबन है, मेरे कपड़े धोती है (4) मेरे बच्चे की परवरिश करती है और (5) मेरे लिये रोटियां और खाना पकाती है। येह सुन कर वोह शख़्स बोला कि बेशक मुझे भी अपनी बीवी से वोही फ़ाइदे ह़ासिल होते हैं जो आप को ह़ासिल हैं मगर मैं ने उस के साथ कभी दरगुज़र से काम न लिया, लिहाज़ा अब मैं भी दरगुज़र से काम लूंगा।

(تنبیہ الغافلین، باب حق المرأۃ علی الزوج، ص۲۸۰)

बना दो सब्रो रिज़ा का पैकर बनूं ख़ुश अख़्लाक़ ऐसा सरवर
रहे सदा नर्म ही त़बीअ़त नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 208)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस्लाम की त़रफ़ से औ़रतों पर किये जाने वाले एह़सानात और इन्हें मुआ़शरे में दिये जाने वाले मक़ाम की चन्द झल्कियां आप ने सुनीं। ❖ इस्लाम से क़ब्ल औ़रतों के साथ जानवरों जैसा सुलूक किया जाता था। ❖ इस्लाम ने औ़रतों पर ढाए जाने वाले मज़ालिम का बाब हमेशा के लिये बन्द फ़रमा कर इन्हें मुआ़शरे का बा इ़ज़्ज़त फ़र्द

बनाया । ❖ इस्लाम ही औ़रतों के हुक़ूक़ की हि़फ़ाज़त (Safety) का सब से बड़ा अ़लमबरदार है । ❖ इस्लाम से क़ब्ल बेटियों के वुजूद को मन्हूस समझा जाता और उन्हें ज़िन्दा दफ़्ना दिया जाता था । ❖ इस्लाम ने ही बेटियों के साथ होने वाली ना इन्साफ़ियों को ख़त्म कर के इन्हें जीने का पूरा ह़क़ दिया । ❖ इस्लाम ने ही मां के हुक़ूक़ को उजागर फ़रमाया और बता दिया कि मां वोह मोह़तरम हस्ती है जिस के हुक़ूक़ की अदाएगी के बिग़ैर चारा नहीं । ❖ इस्लाम ने ही बहनों के हुक़ूक़ बयान फ़रमाए और भाइयों को इन के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आने का दर्स दिया । ❖ इस्लाम ने ही निकाह़ के ज़रीए औ़रत से क़ाइम होने वाले रिश्ते को मर्द के आधे ईमान की हि़फ़ाज़त का ज़रीआ़ क़रार दिया । ❖ इस्लाम ने ही बीवियों के साथ अच्छा बरताव करने वालों को सब से बेहतर क़रार दिया ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं । शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशाए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث: ۱۷۵)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

घर में आने जाने की सुन्नतें और आदाब

(1) जब घर से बाहर निकलें, तो येह दुआ़ पढ़िये :

بِسْمِ اللهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बिग़ैर न त़ाक़त है, न कुव्वत । (ابوداود، د، ج۴ ص۴۲۰ حدیث۵۰۹۵) اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ इस दुआ़ को पढ़ने की बरकत से सीधी राह पर रहेंगे, आफ़तों से

हिफ़ाज़त होगी और اللّٰہُ الصَّمَد عَزَّوَجَلَّ की मदद शामिले हाल रहेगी। (2) अपने घर में आते जाते महारिम व महरिमात (मसलन मां-बाप, भाई, बहन, बाल बच्चे वग़ैरा) को सलाम कीजिये (3) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लिये बिग़ैर मसलन **बिस्मिल्लाह** कहे बिग़ैर जो घर में दाख़िल होता है, शैतान भी उस के साथ दाख़िल हो जाता है। (4) अगर ऐसे मकान (ख़्वाह अपने ख़ाली घर) में जाना हो कि उस में कोई न हो, तो येह कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْن (या'नी हम पर और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों पर सलाम) फ़िरिश्ते इस सलाम का जवाब देंगे। (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص ۶۸۲) या इस त़रह़ कहे : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ (या'नी या नबी आप पर सलाम) क्यूंकि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़े मुबारक मुसलमानों के घरों में तशरीफ़ फ़रमा होती है। (شرح الشّفاء للقاری ج۲ ص۱۱۸) (5) जब किसी के घर में दाख़िल होना चाहें, तो इस त़रह़ कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم क्या मैं अन्दर आ सकता हूं ? (6) अगर दाख़िले की इजाज़त न मिले, तो ब ख़ुशी लौट जाइये, हो सकता है किसी मजबूरी के तह़्त साह़िबे ख़ाना ने इजाज़त न दी हो। (7) जवाब में नाम बताने के बा'द दरवाज़े से हट कर खड़े हों ताकि दरवाज़ा खुलते ही घर के अन्दर नज़र न पड़े। (8) किसी के घर जाएं, तो वहां के इन्तिज़ामात पर बेजा तन्क़ीद न कीजिये, इस से उस की दिल आज़ारी हो सकती है। (9) वापसी पर अहले ख़ाना के ह़क़ में दुआ़ भी कीजिये और शुक्रिया भी अदा कीजिये और सलाम भी और हो सके तो कोई सुन्नतों भरा रिसाला वग़ैरा भी तोह़्फ़तन पेश कीजिये।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब **बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन त़लब कीजिये और बग़ौर इन का मुत़ालआ़ फ़रमाइये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

मुझ को जज़्बा दे सफ़र करता रहूं परवर दगार
सुन्नतों की तरबिय्यत के क़ाफ़िले में बार बार

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब कभी दाख़िले मस्जिद हों, याद आने पर ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लिया करें कि जब तक मस्जिद में रहेंगे, ए'तिकाफ़ का सवाब मिलता रहेगा । याद रखिये ! मस्जिद में खाने, पीने, सोने या सह़री, इफ़्तारी करने, यहां तक कि आबे ज़मज़म या दम किया हुवा पानी पीने की भी शरअ़न इजाज़त नहीं ! अलबत्ता अगर ए'तिकाफ़ की निय्यत होगी, तो येह सब चीज़ें ज़िमनन जाइज़ हो जाएंगी । ए'तिकाफ़ की निय्यत भी सिर्फ़ खाने, पीने या सोने के लिये नहीं होनी चाहिये बल्कि इस का मक़्सद **अल्लाह** करीम की रिज़ा हो । **फ़तावा शामी** में है : अगर कोई मस्जिद में खाना, पीना, सोना चाहे, तो ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ले, कुछ देर ज़िक्रुल्लाह करे फिर जो चाहे करे (या'नी अब चाहे तो खा, पी या सो सकता है) ।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने राह़त निशान है :

مَا جَلَسَ قَوْمٌ مَجْلِسًا لَمْ يَذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْهِ، وَلَمْ يُصَلُّوْا عَلٰى نَبِيِّهِمْ اِلَّا كَانَ عَلَيْهِمْ تِرَةً فَاِنْ شَآءَ عَذَّبَهُمْ وَاِنْ شَآءَ غَفَرَ لَهُم

जो लोग किसी ऐसी मजलिस में बैठते हैं जिस में न तो वोह **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करते हैं और न ही अपने नबी (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं, तो (क़ियामत के दिन) वोह मजलिस उन के लिये ह़सरत का बाइ़स होगी । पस **अल्लाह** पाक चाहे, तो उन्हें अ़ज़ाब दे और चाहे, तो बख़्श दे ।

(ترمذی، کتاب الدعوات، باب فی القوم یجلسون ولا یذکرون اللہ، ۵/۲۴۷، حدیث: ۳۳۹۱)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आइये ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲)

मदनी फूल :- बयान में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

۞ निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा। ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम के लिये जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा। ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा। ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने आ'ला ह़ज़रत! 10 शव्वालुल मुकर्रम आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की विलादते मुबारक का दिन है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه वोह अ़ज़ीम हस्ती हैं जो इबादत, तक़्वा व परहेज़गारी, इ़श्क़े रसूल, आ़जिज़ी व इन्केसारी और इल्मो अ़मल के ह़क़ीक़ी पैकर थे। اِنْ شَآءَ الله आज के इस हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में हम बरकत व रह़मत ह़ासिल करने के लिये **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه **के आ'ला किरदार** की चन्द झल्कियां और ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त सुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगे। आइये! पहले एक नसीह़त आमोज़ वाक़िआ़ सुनिये। चुनान्चे,

तक़ब्बुर से आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की ना गवारी

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, मौलाना सय्यिद अय्यूब अ़ली रज़वी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का बयान है : एक साह़िब आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा करते और आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه भी कभी कभी उन के यहां तशरीफ़ ले जाया करते

थे । एक मरतबा हुज़ूर (आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) उन के यहां तशरीफ़ फ़रमा थे कि उन के महल्ले का एक बेचारा ग़रीब मुसलमान टूटी हुई पुरानी चारपाई पर जो सेहन (Courtyard) के किनारे पड़ी थी, झिजकते हुवे बैठा ही था कि साहिबे ख़ाना ने निहायत कड़वे तेवरों (या'नी गुस्से वाली नज़रों) से उस की त़रफ़ देखना शुरूअ़ किया, यहां तक कि वोह नदामत (या'नी शर्मिन्दगी) से सर झुकाए उठ कर चला गया । आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को साहिबे ख़ाना के इस मग़रूराना अन्दाज़ से सख़्त तक्लीफ़ पहुंची मगर कुछ फ़रमाया नहीं । कुछ दिनों बा'द वोह आप (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) के यहां आए । आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपनी चारपाई पर जगह दी, वोह बैठे ही थे कि इतने में करीम बख़्श नामी ह़ज्जाम (Barber) हुज़ूर (आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की दाढ़ी) का ख़त़ बनाने के लिये आए, वोह इस फ़िक्र में थे कि कहां बैठूं ? आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : भाई करीम बख़्श ! क्यूं खड़े हो ? मुसलमान आपस में भाई भाई हैं और उन साहिब के बराबर में बैठने का इशारा फ़रमाया । वोह बैठ गए फिर उन साहिब के गुस्से की येह कैफ़िय्यत थी कि जैसे सांप फुंकारें मारता है, वोह फ़ौरन उठ कर चले गए फिर कभी न आए ।

(ह़यातेआ'ला ह़ज़रत, स. 105, मुलख़्ख़सन)

ऐ आ़शिक़ाने इमाम अह़मद रज़ा ! आप ने सुना कि आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दीनी भाईचारे और मुसलमानों में बराबरी की फ़ज़ा क़ाइम रखने के बारे में कैसा ज़बरदस्त मदनी ज़ेह्न रखते थे । आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अ़मली त़ौर पर हमें बता दिया कि कोई मुसलमान चाहे कितना ही अमीरो कबीर हो, दुन्यवी इ़ज़्ज़त व मर्तबे वाला हो या किसी आ'ला ख़ानदान से तअ़ल्लुक़ रखता हो, उसे हरगिज़ हरगिज़ येह ह़क़ नहीं पहुंचता कि किसी मुसलमान को अपने से मा'मूली जाने, किसी जाइज़ पेशे वाले को लोगों के सामने ज़लील करे बल्कि एक मुसलमान होने की ह़ैसिय्यत से हर एक के साथ अच्छा सुलूक करना, आने वाले का दिल ख़ुश करने के लिये मुस्कुरा कर मिलना, उसे इ़ज़्ज़त के साथ बिठाना और मुसलमानों में बराबरी क़ाइम रखना इस्लाम की रौशन ता'लीमात का ह़िस्सा है मगर अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस !

आज हम इस्लामी ता'लीमात को छोड़ कर न जाने किस त़रफ़ चल पड़े हैं ? और अपनी क़ौम (Nation), ज़बान (Language) और नसब (Caste) के सबब फ़ख़्र करते और ख़ुद को दूसरों से अफ़्ज़लो आ'ला जानते हैं, ह़ालांकि **अल्लाह** पाक के नज़दीक वोही मुसलमान ज़ियादा इ़ज़्ज़त व मर्तबे वाला है जो तक़्वा व परहेज़गारी में दूसरों से ज़ियादा हो । चुनान्चे, पारह 26, सूरतुल हुजुरात की आयत नम्बर 13 में इरशाद होता है :

اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿۱۳﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : *बेशक* ***अल्लाह*** *के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह है जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है, बेशक* ***अल्लाह*** *जानने वाला, ख़बरदार है ।*

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! आज हमारा मुआ़शरा इन्तिहाई तेज़ी के साथ तबाही व बरबादी की त़रफ़ बढ़ रहा है, जिसे देखो वोह अपने ख़ानदान और क़ौम को अफ़्ज़ल समझते हुवे फ़ख़्र करता और दूसरी बिरादरी वालों को घटिया समझने लगा है, जिस की वज्ह से इस्लामी भाईचारा ख़त्म होता जा रहा है, आपस में नफ़रतें और दुश्मनियां जड़ पकड़ती जा रही हैं, बसा अवक़ात येह दुश्मनियां और लड़ाई, झगड़े, मार धाड़ से बढ़ कर क़त्लो ग़ारत गरी तक पहुंच जाती हैं जब कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! तुम्हारा रब्बे करीम एक है और तुम्हारे वालिद एक हैं । सुन लो ! किसी अ़रबी को अ़जमी (ग़ैरे अ़रबी) पर, किसी अ़जमी (ग़ैरे अ़रबी) को अ़रबी पर, किसी गोरे को काले पर और किसी काले को गोरे पर कोई फ़ज़ीलत ह़ासिल नहीं, अलबत्ता जो परहेज़गार है वोह दूसरों से अफ़्ज़ल है, बेशक **अल्लाह** पाक की बारगाह में तुम में से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह है जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है ।

(شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، فصل فی حفظ اللسان عن الفخر بالاباء، ۴/۲۸۹، حدیث: ۵۱۳۷)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने आ'ला हज़रत ! इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का एक कारनामा येह भी है कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उम्मत की आसानी और ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के तह़्त इल्म को फैलाने के लिये निहायत उ़म्दा और ज़बरदस्त तर्जमए कुरआन "**कन्ज़ुल ईमान**" को ज़बानी लिखवा दिया, जिस को उ़लमाए किराम ने बिल्कुल शरीअ़त के मुत़ाबिक़ पाया।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बेशक कुरआने पाक **अल्लाह** करीम के अह़कामात के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने का त़रीक़ा बताने वाली एक मुकम्मल किताब है, कुरआने करीम दुन्या में रहने वाले मुसलमानों के लिये हिदायत ह़ासिल करने का बेहतरीन ज़रीआ़ है मगर कुरआन के अल्फ़ाज़ के मआ़नी और उस में मौजूद **अल्लाह** पाक के अह़कामात को जानने के लिये उस का तर्जमा भी इन्तिहाई ज़रूरी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه कुरआने करीम के मौजूदा तमाम उर्दू तर्जमों में सब से बेहतरीन उर्दू तर्जमा "**तर्जमए कुरआन, कन्ज़ुल ईमान**" है। लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम अपनी मसरूफ़ ज़िन्दगी में से कुछ वक़्त निकाल कर कुरआने पाक की तिलावत करने का मा'मूल बनाएं।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तर्जमा व तफ़्सीर के साथ रोज़ाना तिलावते कुरआन करने के लिये इस्लामी भाइयों के लिये **मदनी इन्आ़म नम्बर 21** में फ़रमाते हैं : क्या आज आप ने कन्ज़ुल ईमान से कम अज़ कम तीन आयात (मअ़ तर्जमा व तफ़्सीर) तिलावत करने या सुनने की सआ़दत ह़ासिल की ? अगर हम इस मदनी इन्आ़म पर रोज़ाना अ़मल करें, तो कुरआने करीम की तिलावत की बरकत से हमारे घरों में ख़ैरो बरकत होती रहेगी, तर्जमा व तफ़्सीर के साथ पढ़ने की बरकत से इल्मे दीन में इज़ाफ़ा होगा, कुरआने करीम को समझने में आसानी होगी, मा'लूमात का ख़ज़ाना ह़ासिल होगा। मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाली अ़ज़ीमुश्शान तफ़्सीर बनाम "**सिरात़ुल जिनान**" का भी मुत़ालआ़ कीजिये, इस तफ़्सीर में भी बहुत अच्छे अन्दाज़ से मा'लूमात का ख़ज़ाना उम्मते मुस्लिमा तक पहुंचाने की कोशिश की गई है।

आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और ईसारे मुस्लिमीन

ऐ आ़शिक़ाने इमाम अह़मद रज़ा ! आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के आ'ला किरदार की एक दलील येह भी है कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपनी मह़बूब और पसन्दीदा चीज़ें भी दूसरों को पेश कर दिया करते थे । आइये ! इस बारे में आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सीरत का एक दिलचस्प वाक़िआ़ सुनिये । चुनान्चे,

छत्री ह़ाजत मन्द को अ़त़ा फ़रमा दी

मौसिमे बरसात में बा'ज़ अवक़ात मस्जिद की ह़ाज़िरी दौराने बारिश हुवा करती थी । ह़ाजी किफ़ायतुल्लाह साह़िब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इस तक्लीफ़ को मह़सूस करते हुवे एक छत्री (Umbrella) ख़रीद कर नज़्र (या'नी तोह़्फ़े में पेश) की और अपने ही पास रख ली । जब आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه काशानए अक़्दस से तशरीफ़ लाते, तो ह़ाजी साह़िब छत्री लगा कर मस्जिद तक ले जाते । अभी कुछ ही दिन गुज़रे थे कि एक ह़ाजत मन्द ने छत्री का सुवाल किया, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़ौरन छत्री ह़ाजी साह़िब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से ले कर उस ह़ाजत मन्द को अ़त़ा फ़रमा दी । (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, स. 118)

ऐ आ़शिक़ाने आ'ला ह़ज़रत ! आप ने सुना कि हमारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه में ईसार व सख़ावत का कैसा जज़्बा था ! जो ज़रूरत के बा वुजूद अपनी चीज़ें दूसरों को दे दिया करते थे । आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को अच्छी त़रह़ मा'लूम था कि इस्लाम हमें आपस में हमदर्दी करने का दर्स देता है, मुसलमानों के साथ ख़ैर ख़्वाही का दर्स देता है, एक दूसरे के दिल में मह़ब्बत पैदा करने के लिये जाइज़ त़रीक़े से तह़ाइफ़ देने की ता'लीम देता है, इसी लिये आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ख़ैर ख़्वाही करते हुवे ख़ुशी ख़ुशी अपनी ज़ात पर दूसरे मुसलमान भाई को तरजीह़ दी । ह़दीसे पाक में है : जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर (दूसरे को) तरजीह़ दे, तो **अल्लाह** पाक उसे बख़्श देता है ।

(جمع الجوامع، حرف الہمزہ، ۳/ ۳۸۴ حدیث: ۹۵۷۲)

फ़तवा नवेसी मअ़ "फ़तावा रज़विय्या" का तआ़रुफ़

ऐ आ़शिक़ाने आ'ला हज़रत ! आ'ला हज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने अपनी मेहनत व कोशिश से दीन की ऐसी बे मिसाल इल्मी ख़िदमात सर अन्जाम दीं कि आज तक आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के कारनामों की धूम मची हुई है । इन्ही कारनामों में से एक बेहतरीन और ज़बरदस्त इल्मी कारनामा "**फ़तावा रज़विय्या**" की 30 जिल्दें हैं, जो तक़रीबन 22000 सफ़्हात, 6847 सुवालात के जवाबात और 206 रसाइल पर मुश्तमिल है जब कि हज़ारों मसाइल भी दरमियान में बयान हुवे हैं ।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ "**फ़तावा रज़विय्या**" कुरआने करीम, ह़दीसे रसूल, इजमाअ़ और फ़ुक़हाए किराम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن के जुज़्इय्यात से आरास्ता हर क़िस्म के मसाइल का ऐसा ख़ूब सूरत गुलदस्ता है जो रहती दुन्या तक के लोगों के दिलों और फ़िक्रों को अपनी महकी महकी ख़ुश्बूओं से महकाता और आ'ला हज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के मज़ारे मुबारक में आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के बुलन्द दरजों में मज़ीद इज़ाफ़े का सबब बनता रहेगा । اِنۡ شَآءَ اللّٰہ

आ'ला हज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ और हुक़ूक़ुल इबाद !

ऐ आ़शिक़ाने इमाम अह़मद रज़ा ! आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के आ'ला किरदार का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ **अल्लाह** पाक के हुक़ूक़ की अदाएगी के साथ साथ बन्दों के हुक़ूक़ के बारे में भी बहुत हुस्सास थे क्यूंकि आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ को मा'लूम था कि बन्दों के हुक़ूक़ का मुआ़मला **अल्लाह** करीम के हुक़ूक़ से भी ज़ियादा नाज़ुक है । आइये ! बन्दों के हुक़ूक़ का एह़सास करने के बारे में आ'ला हज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ का दिलचस्प वाक़िआ़ सुनिये और आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की सीरत पर अ़मल करने की निय्यत कीजिये । चुनान्चे,

बच्चे से मुआ़फ़ी मांगी

एक मरतबा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ बरेली शरीफ़ की मस्जिद में ए'तिकाफ़ में बैठे थे ।

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इफ़्तार के बा'द खाना न खाते बल्कि सिर्फ़ पान खाते थे जब कि सह़री के वक़्त घर से सिर्फ़ एक छोटे से पियाले में फ़ीरीनी (Custard) (या'नी एक क़िस्म की खीर जो दूध, चीनी और चावलों के आटे से बनती है) वोह और एक पियाली में चटनी आया करती थी, वोह नोश फ़रमाया करते थे। एक दिन शाम को पान नहीं आए और आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की येह पुख़्ता आ़दत थी कि खाने की कोई चीज़ त़लब नहीं फ़रमाते थे। चुनान्चे, ख़ामोश रहे लेकिन त़बीअ़त में ना गवारी ज़रूर पैदा हुई। मग़रिब से तक़रीबन 2 घन्टे बा'द एक बच्चा पान लाया। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उसे एक थप्पड़ मार कर फ़रमाया : इतनी देर में लाया ? लेकिन बा'द में आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को ख़याल आया कि इस बेचारे का तो कोई क़ुसूर न था ! क़ुसूर तो देर से भेजने वाले का था। चुनान्चे, सह़री के बा'द उस बच्चे को बुलवाया जो शाम को पान देर में लाया था और फ़रमाया : शाम को मैं ने ग़लत़ी की जो तुम्हारे चपत मारी, देर से भेजने वाले का क़ुसूर था, लिहाज़ा तुम मेरे सर पर थप्पड़ मारो ! और टोपी उतार कर इसरार फ़रमाते रहे। ए'तिकाफ़ में बैठे लोग येह सुन कर परेशान हो गए, वोह बच्चा भी बहुत परेशान हो कर कांपने लगा। उस ने हाथ जोड़ कर अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मैं ने मुआ़फ़ किया। फ़रमाया : तुम ना बालिग़ हो, तुम्हें मुआ़फ़ करने का ह़क़ नहीं ! तुम थप्पड़ मारो ! मगर वोह मारने की हिम्मत न कर सका। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपना बक्स (Box) मंगवा कर मुठ्ठी भर पैसे निकाले और वोह पैसे दिखा कर फ़रमाया : मैं तुम को येह दूंगा, तुम थप्पड़ मारो ! मगर बेचारा येही कहता रहा : हुज़ूर ! मैं ने मुआ़फ़ किया। आख़िरे कार आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस का हाथ पकड़ कर बहुत से थप्पड़ अपने सरे मुबारक पर लगाए और फिर उस को पैसे दे कर रुख़्सत कर दिया। (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, 1 / 107, मुलख़्ख़सन)

ऐ आ़शिक़ाने आ'ला ह़ज़रत ! आप ने सुना कि आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने चाहने वालों को अ़मली त़ौर पर येह बता दिया कि चाहे कोई कितने ही बड़े मन्सब (Post) पर फ़ाइज़ क्यूं न हो ! अगर उस से किसी का दिल दुख जाए, तो उसे मुआ़फ़ी मांगने में हरगिज़ शर्म मह़सूस नहीं करनी चाहिये क्यूंकि

हुक़ूक़ुल इ़बाद का मुआ़मला इन्तिहाई नाज़ुक है । इस की वज्ह से बन्दा बहुत से गुनाहों में मुब्तला हो सकता है, जो इस के लिये दुन्यावी और उख़रवी नुक़्सानात का बाइ़स बन सकते हैं, मसलन बन्दों के हुक़ूक़ अदा न करने से बन्दा दूसरों का दिल दुखाने जैसे कबीरा गुनाह में मुब्तला हो सकता है और येही दिल दुखाने, ह़सद करने, दिल में दुश्मनी रखने और दुश्मनियां करने जैसे कई गुनाहों पर उभार सकती है । इन गुनाहों में पड़ने के सबब ग़ीबतों, चुग़लियों, तोह्मतों, बद गुमानियों और कई कबीरा गुनाहों का दरवाज़ा भी खुल जाता है । जिन के हुक़ूक़ ज़ाएअ़ किये, उन्हें राज़ी करने के लिये क़ियामत के दिन अपनी नेकियां भी देनी पड़ सकती हैं और नेकियां न होने की सूरत में उन लोगों के गुनाहों का बोझ उठा कर जन्नत से महरूम हो कर इ़ब्रतनाक अन्जाम से वासिता पड़ सकता है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और शफ़्क़त व ख़ैर ख़्वाही

ऐ आ़शिक़ाने इमाम अह़मद रज़ा ! आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सीरते मुबारका का एक पहलू येह भी है कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दुआ़ मांगते वक़्त अपने रिश्तेदारों, दोस्तों, मह़ब्बतो अ़क़ीदत रखने वालों, मुरीदों और दीगर मुसलमानों के लिये दुआ़ करने का ख़ुसूसी एहतिमाम फ़रमाते थे । आइये ! इस की चन्द मिसालें मुलाह़ज़ा कीजिये ।

दुआ़ के लिये फ़ेह्रिस्त बनाई

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नमाज़े फ़ज्र के बा'द अपने अवरादो वज़ाइफ़ के आख़िर में उन सब के लिये नाम ले कर दुआ़ फ़रमाया करते थे । लोग इस बात की आरज़ू रखते थे कि उन के नाम भी इस फ़ेह्रिस्त में शामिल हो जाएं ।

सब के लिये दुआ़ करता हूं

ह़ज़रते सय्यिद अय्यूब अ़ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक दिन मैं बहुत परेशान था, दुआ़ का त़ालिब हुवा, तो आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने दुआ़ फ़रमाई और साथ ही मुझे और मेरे भाई सय्यिद क़नाअ़त अ़ली से इरशाद

फ़रमाया : तुम दोनों का नाम भी मैं ने दुआ़ की फ़ेह्रिस्त में शामिल कर लिया है जो आहिस्ता आहिस्ता बहुत लम्बी हो गई है, येह तमाम नाम मुझे याद हैं, रोज़ाना सब के लिये नाम ले कर दुआ़ करता हूं।

(फ़ैज़ाने आ'ला ह़ज़रत, स. 180, मुलख़्ख़सन)

जनाज़े में क्सरत से दुआ़ मांगते

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तमाम अ़वामे अहले सुन्नत के लिये दर्द महसूस करने वाला दिल रखते थे। चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अक्सर जनाज़ों में तशरीफ़ ले जाते और मय्यित से हमदर्दी का यूं इज़्हार फ़रमाते कि दौराने जनाज़ा और जनाज़े के बा'द मय्यित के लिये कसरत से दुआ़ फ़रमाते थे। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जिस ख़ुश क़िस्मत की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाते, तो वहां मौजूद लोगों को ऐसा मा'लूम होता कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपनी पुर ज़ोर शफ़ाअ़त से उस की मग़फ़िरत करवा रहे हैं। (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, स. 552, मुलख़्ख़सन)

मां-बाप, उस्ताद और तमाम मुसलमानों के लिये दुआ़ की अहम्मिय्यत

ऐ आ़शिक़ाने इमाम अह़मद रज़ा ! हमें भी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सीरत अपनाते हुवे न सिर्फ़ अपने लिये बल्कि अपने मां-बाप, असातिज़ए किराम, रिश्तेदारों और तमाम मुसलमानों के लिये भी दुआ़ करनी चाहिये। ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल शैख़ अस्बहानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से रिवायत की। हम से ज़िक्र किया गया है : जो शख़्स मुसलमान मर्दों और औ़रतों के लिये भलाई की दुआ़ करता है, क़ियामत के दिन जब उन की मजलिसों पर गुज़रेगा, एक कहने वाला कहेगा : येह वोह है जो तुम्हारे लिये दुन्या में भलाई की दुआ़ करता था। पस वोह उस की शफ़ाअ़त करेंगे और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ कर के उसे जन्नत में ले जाएंगे।

(फ़ज़ाइले दुआ़, स. 86, मुलख़्ख़सन)

कुरआने करीम में मुसलमानों के लिये दुआ़ करने के बारे में **अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है :

وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ (پ۲۶، محمد: ۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ऐ ह़बीब ! अपने ख़ास ग़ुलामों और आ़म मुसलमान मर्दों और औ़रतों के गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगो ।

ह़दीस में है : रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ (या'नी ऐ **अल्लाह** पाक ! मेरी मग़फ़िरत फ़रमा) कहते सुना । फ़रमाया : अगर सब मुसलमानों को दुआ़ में शामिल करता, तो तेरी दुआ़ मक़्बूल होती । (ردّ المحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، آداب الصلاۃ، مطلب: فی الدعاء بغیر العربیۃ، ۲/۲۸۶)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम

"मद्रसतुल मदीना बालिग़ान"

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर हम भी गुनाहों से बच कर फ़िक्रे आख़िरत का जज़्बा बढ़ाने, नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने, अपने वालिदैन को सवाब पहुंचाने और दुआ़एं करने के जज़्बे से सरशार होना चाहते हैं, तो आज ही आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लें । याद रहे ! ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से रोज़ाना का एक मदनी काम "**मद्रसतुल मदीना बालिग़ान**" में पढ़ना या पढ़ाना भी है ।

❖ اَلْحَمْدُ لِلّٰه मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की बरकत से दुरुस्त क़ुरआने करीम पढ़ना नसीब होता है । ❖ मद्रसतुल मदीना बालिग़ान नमाज़, वुज़ू और ग़ुस्ल वग़ैरा ज़रूरी अह़काम सीखने का बेहतरीन ज़रीआ़ है । ❖ मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में ह़ाज़िरी की बरकत से अच्छी सोह़बत मिलती है । ❖ मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की बरकत से क़ुरआने करीम पढ़ने, पढ़ाने की सआ़दत मिलती है । ❖ मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की बरकत से इल्मे दीन की दौलत नसीब होती है । ❖ मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की बरकत से मस्जिद में बैठने का सवाब मिलता है ।

12 मदनी कामों में से रोज़ाना के इस मदनी काम "**मद्रसतुल मदीना बालिग़ान**" की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना के रिसाले "**मद्रसतुल मदीना बालिग़ान**" का मुत़ालआ़ कीजिये । तमाम ज़िम्मेदाराने दा'वते इस्लामी, बिल ख़ुसूस मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की मजालिस के निगरान व अराकीन तो लाज़िमी इस रिसाले का मुत़ालआ़ फ़रमाएं । येह रिसाला मक्तबतुल मदीना पर दस्तयाब होने के साथ साथ दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislami.net से पढ़ा भी जा सकता है ।

इस रिसाले के मुत़ालए़ की बरकत से आप जान सकेंगे : ❖ तिलावते कुरआने पाक की अहम्मिय्यत व ज़रूरत। ❖ अहले सुफ़्फ़ा और कुरआने पाक। ❖ तरबिय्यत की अहम्मिय्यत। ❖ दुरुस्त कुरआने पाक पढ़ने का शरई हुक्म । ❖ मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के त़ालिबे इल्म मुफ़्ती कैसे बने ? ❖ आदाबे मसाजिद । ❖ मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के तअ़ल्लुक़ से मदनी मुज़ाकरों के मदनी फूल । ❖ मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मदनी मश्वरों से मुन्तख़ब मदनी फूल । ❖ मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के तअ़ल्लुक़ से एह़तियात़ों और मुफ़ीद मा'लूमात पर मुश्तमिल सुवाल व जवाब वग़ैरा । आइये ! मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की बरकत पर मुश्तमिल एक मदनी बहार सुनिये । चुनान्चे,

बद निगाही की आ़दत से नजात मिल गई

बाबुल मदीना के मुक़ीम इस्लामी भाई आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले फ़िल्में ड्रामे देखने, गाने बाजे सुनने और बद निगाही करने के आ़दी थे, नमाज़ों की पाबन्दी का भी ज़ेह्न न था । किसी इस्लामी भाई ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे उन्हें मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में शिर्कत की दा'वत दी, उन्हों ने मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में पढ़ना शुरूअ़ कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) की बरकत से हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत का मा'मूल बन गया और वोह अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद हो कर नमाज़ी और मस्जिद में दर्स देने वाले बन गए । اَلْحَمْدُ لِلّٰه फ़िल्में ड्रामे, गाने बाजे, बद

निगाही वग़ैरा गुनाहों को छोड़ दिया और अपने घर वालों पर भी इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे उन्हें भी नमाज़ी बनाने की कोशिशों में मसरूफ़ हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की महब्बते आ'ला हज़रत

ऐ आशिक़ाने आ'ला हज़रत ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का शुमार आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से सच्ची महब्बत करने वालों में होता है, जिन्हें आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की शख़्सिय्यत और आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इल्मी कारनामों ने बहुत मुतअस्सिर किया है। येही वज्ह है कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه, इमामे अहले सुन्नत, आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ता'लीमात के मुताबिक़ दीने मतीन की इन्तिहाई शानदार अन्दाज़ में ख़िदमात सर अन्जाम दे रहे हैं जिस का वाज़ेह सुबूत आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तासीर भरी तहरीरें, सुन्नतों भरे बयानात और इल्मो हिक्मत से भरपूर मदनी मुज़ाकरे हैं जो तर्जमए कुरआन कन्ज़ुल ईमान, फ़तावा रज़विय्या के जुज़्इय्यात और हदाइक़े बख़्शिश के रिक़्क़त व सोज़ से भरपूर अश्आ़र से ख़ुश्बूदार होते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه इसी अक़ीदतो महब्बत का सदक़ा है कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपनी ज़िन्दगी का पहला रिसाला आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सीरत के बारे में लिखा जिस का नाम **''तज़किरए इमाम अहमद रज़ा''** रखा और येह 25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सिने 1393 हि. को **''यौमे रज़ा''** के मौक़अ़ पर जारी किया गया।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से अक़ीदत का अन्दाज़ा इस बात से भी अच्छी तरह लगाया जा सकता है कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने मदनी मुज़ाकरों और मुलाक़ात के लिये आने वाले उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम, जामिअ़तुल मदीना के तलबए किराम और आ़म लोगों को आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के तरीक़े पर क़ाइम रहने और इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की कोई बात समझ न आने की सूरत में इख़्तिलाफ़ न करने की ताकीद फ़रमाते हैं। जैसा कि :

एक बार आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इरशाद फ़रमाया : आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के अक़ूल (या'नी फ़रमान) पर हमारी उ़क़ूल (या'नी अ़क़्लें) क़ुरबान ! आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का (हर) अक़ूल हमें क़बूल (है) । एक मरतबा जामिअ़ातुल मदीना के मुफ़्ती कोर्स के त़लबा से इरशाद फ़रमाया : आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जो कि **अल्लाह** पाक के वली, सच्चे आ़शिक़े रसूल और हमारे मुत्तफ़िक़ा बुज़ुर्ग हैं, इन की अ़क़ीदत को दिल की गहराई के अन्दर संभाल कर रखना बेह़द ज़रूरी (Necessary) है ।

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : اَلْبَرَكَةُ مَعَ اَكَابِرِكُمْ बरकत तुम्हारे बुज़ुर्गों के साथ है । (مستدرک، کتاب الایمان، ۱/ ۲۳۸، حدیث: ۲۱۸) आप में से अगर किसी का मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से इख़्तिलाफ़ का मा'मूली सा भी ज़ेह्न बनना शुरूअ़ हो जाए, तो समझ लीजिये **مَعَاذَاللہ** आप की बरबादी के दिन शुरूअ़ हो गए, लिहाज़ा फ़ौरन होश्यार हो जाइये और इख़्तिलाफ़ के ख़याल को ह़र्फ़े ग़लत़ की त़रह़ दिमाग़ से मिटा दीजिये । फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का बयान कर्दा कोई मस्अला बिलफ़र्ज़ आप का ज़ेह्न क़बूल न करे, तब भी उस के बारे में अ़क़्ल के घोड़े मत दौड़ाइये बल्कि न समझ पाने को अपनी अ़क़्ल ही की कोताही (Lackness) तसव्वुर कीजिये ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और ख़ुद्दारी !

ह़ज़रते मौलाना सय्यिद अय्यूब अ़ली साह़िब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का बयान है : एक साह़िब ने (आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बारगाह में) बदायूनी पेड़ों (या'नी मिठाई) की हांडी पेश की । आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने (उन से) फ़रमाया : कैसे तक्लीफ़ फ़रमाई ? उन्हों ने कहा : सलाम करने के लिये ह़ाज़िर हुवा हूं । आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه सलाम का जवाब दे कर कुछ देर ख़ामोश रहे और फिर पूछा : कोई काम है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : कुछ नहीं ! हुज़ूर ! सिर्फ़ मिज़ाज पूछने के लिये आया था । इरशाद फ़रमाया : इनायत व नवाज़िश ।

और काफ़ी देर ख़ामोश रहने के बा'द फिर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने मुख़ातब हो कर फ़रमाया : कुछ फ़रमाइयेगा ? उन्हों ने फिर नफ़ी में जवाब दिया। इस के बा'द आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने वोह शीरीनी मकान में भिजवा दी। अब वोह साह़िब थोड़ी देर बा'द एक ता'वीज़ की दरख़ास्त करते हैं। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने तो आप से 3 बार पूछा था मगर आप ने कुछ नहीं बताया, अच्छा तशरीफ़ रखिये। और अपने भान्जे अ़ली अह़मद ख़ान साह़िब (जो ता'वीज़ दिया करते थे) के पास से ता'वीज़ मंगा कर उन साह़िब को अ़त़ा फ़रमाया और साथ ही ह़ाजी किफ़ायतुल्लाह साह़िब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का इशारा पाते ही मकान से वोह मिठाई की हांडी मंगवा कर सामने रख दी। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने वोह मिठाई इन अल्फ़ाज़ के साथ वापस फ़रमा दी कि "**इस हांडी को साथ लेते जाइये ! मेरे यहां ता'वीज़ बिक्ता नहीं है।**" उन्हों ने बहुत कुछ मा'ज़िरत की मगर क़बूल न फ़रमाया, बिल आख़िर बेचारे अपने मिठाई वापस लेते गए।

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, स. 92, मुलख़्ख़सन)

मजलिसे मद्रसतुल मदीना बालिग़ान

ऐ आ़शिक़ाने आ'ला ह़ज़रत ! बयान कर्दा वाक़िए़ से मा'लूम हुवा ! आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه सिर्फ़ रिज़ाए इलाही के लिये दीनी कामों में मख़्लूक़े ख़ुदा की मदद फ़रमाया करते थे और इस काम के बदले किसी भी क़िस्म का नज़राना क़बूल नहीं फ़रमाते थे। लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम भी रिज़ाए इलाही के लिये ह़ाजत मन्द मुसलमानों की मदद व ख़ैर ख़्वाही करें, उन के काम आएं और उन की ज़रूरतों को ह़त्तल इमकान पूरा करने की भरपूर कोशिश किया करें। मख़्लूक़े ख़ुदा की ख़ैर ख़्वाही और हमदर्दी का जज़्बा اَلْحَمْدُ لِلّٰه फ़ैज़ाने आ'ला ह़ज़रत से माला माल आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में घोल घोल कर पिलाया जाता है। लिहाज़ा आप भी इस मदनी माह़ोल से मज़बूती के साथ वाबस्ता रहिये और दा'वते इस्लामी के साथ ख़िदमते दीन के कामों में मश्ग़ूल हो कर अपनी क़ब्रो आख़िरत संवारिये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी ख़िदमते दीन के कमो बेश 107 शो'बाजात में फ़िक्रे रज़ा को आ़म करने में मसरूफ़ है । इन्ही में से एक शो'बा "**मद्रसतुल मदीना बालिग़ान**" भी है, जिस में बालिग़ या'नी बड़ी उ़म्र के इस्लामी भाइयों को मुख़्तलिफ़ मक़ामात (मसलन मसाजिद, दफ़ातिर, मार्कीट, दुकान वग़ैरा) और मुख़्तलिफ़ अवक़ात में **फ़ी सबीलिल्लाह** नाज़िरा ता'लीमे कुरआन के साथ साथ नमाज़ के बुन्यादी मसाइल बताए जाते हैं, सुन्नतें और आदाब सिखाए जाते हैं । मुल्क व बैरूने मुल्क मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की ता'दाद तादमे बयान तक़रीबन 24238 और पढ़ने वालों की ता'दाद तक़रीबन 142650 है । इसी त़रह़ बड़ी उ़म्र की इस्लामी बहनों में भी कुरआने पाक की ता'लीम को आ़म करने की कोशिश की जा रही है । मद्रसतुल मदीना बालिग़ात में पढ़ने वालियों की ता'दाद तक़रीबन 63 हज़ार से ज़ाइद है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सीरत का एक रौशन बाब येह भी है कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कसीर मसरूफ़िय्यात के बा वुजूद जमाअ़त से नमाज़ पढ़ा करते थे, ह़त्ता कि बीमारी की ह़ालत में भी आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नमाज़ की जमाअ़त तक भी नहीं छोड़ते थे । आइये ! इस ज़िम्न में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सीरत का एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुनिये । चुनान्चे,

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और नमाज़े बा जमाअ़त की पाबन्दी

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पाउं का अंगूठा पक गया था, उन के ख़ास जर्राह़ (Surgeon) (या'नी ज़ख़्मों और फोड़े फुन्सियों का इ़लाज करने वाले डॉक्टर) ने इस अंगूठे का ऑप्रेशन किया । पट्टी (Bandage) बांधने के बा'द उन्हों ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! अगर ह़रकत न करेंगे, तो येह ज़ख़्म दस, बारह रोज़ में ठीक हो जाएगा, वरना ज़ियादा वक़्त लगेगा । वोह येह कह कर चले गए । येह कैसे मुमकिन हो सकता है कि मस्जिद की ह़ाज़िरी और जमाअ़त

की पाबन्दी छोड़ दी जाए । जब ज़ोहर का वक़्त आया, तो आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने वुज़ू किया, खड़े न हो सकते थे, तो बैठ कर बाहर दरवाज़े तक आ गए, लोगों ने कुर्सी पर बिठा कर मस्जिद में पहुंचा दिया और उसी वक़्त महल्ले और ख़ानदान वालों ने येह तै़ किया कि हर अज़ान के बा'द हम सब में से चार मज़बूत़ आदमी कुर्सी ले कर ह़ाज़िर हो जाया करेंगे और पलंग से ही कुर्सी पर बिठा कर मस्जिद की मेह़राब के क़रीब बिठा दिया करेंगे । येह सिलसिला तक़रीबन एक माह तक बड़ी पाबन्दी से चलता रहा, जब ज़ख़्म अच्छा हो गया और आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ख़ुद चलने के क़ाबिल हो गए, तो येह सिलसिला ख़त्म हुवा । आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की नमाज़ तो नमाज़, जमाअ़त का छोड़ना भी बिला उ़ज़्रे शरई़ शायद किसी साह़िब को याद न होगा ।

(फ़ैज़ाने आ'ला ह़ज़रत, स. 136, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

फ़िक्रे आ'ला ह़ज़रत और दा'वते इस्लामी

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी इ़ल्मे दीन को फैलाने और दीने मतीन की ख़िदमत करने में आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के तह़रीर कर्दा 10 रौशन उसूलों पर अ़मल करने की कोशिश कर रही है । आइये ! वोह 10 उसूल और उन की रौशनी में आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मुख़्तसरन दीनी ख़िदमात मुलाह़ज़ा कीजिये ।

(1) फ़रमाने आ'ला ह़ज़रत : अ़ज़ीमुश्शान मदारिस खोले जाएं, जिन में ता'लीम का बा क़ाइ़दा सिलसिला हो ।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ इस मक़्सद के तह़्त आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी ने मुल्क व बैरूने मुल्क 602 जामिआ़तुल मदीना (लिल बनीन व लिल बनात), 2980 मदारिसुल मदीना (लिल बनीन व लिल बनात) और 53 दारुल मदीना (लिल बनीन व लिल बनात) क़ाइम किये हैं ।

(2) **फ़रमाने आ'ला हज़रत :** त़लबा को वज़ाइफ़ मिलें कि किसी भी त़रह़ उन में शौक़े इ़ल्मे दीन पैदा हो।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी मदारिस व जामिआ़त के रिहाइशी त़लबा को बेहतरीन ता'लीमी निज़ाम के साथ साथ उन्हें खाने, पीने, रिहाइश और मजलिसे त़िब्बी इ़लाज के तह़्त मुफ़्त मेडीकल की सहूलिय्यात भी फ़राहम करती है जब कि तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह या'नी शरई मसाइल में महारत का कोर्स और तख़स्सुस फ़िल ह़दीस या'नी इ़ल्मे ह़दीस में महारत का कोर्स करने वाले त़लबा की ख़िदमत में इन सहूलिय्यात के इ़लावा ता'लीमी अख़राजात के लिये मुनासिब रक़म भी पेश करती है।

(3) **फ़रमाने आ'ला हज़रत :** उ़म्दा कारकर्दगी पर मुदर्रिसों (या'नी असातिज़ए किराम) को भारी तनख़ाहें दी जाएं ताकि जान तोड़ कर कोशिश करें।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه इस उसूल पर अ़मल करते हुवे आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी जामिआ़तुल मदीना और मदारिसुल मदीना के असातिज़ए किराम और मोअ़ल्लिमात को माहाना बेहतरीन तनख़ाह पेश करने के साथ साथ बोनस और मुक़र्ररा छुट्टियां न करने की सूरत में हर छे महीने बा'द उन छुट्टियों की रक़म भी पेश करती है। सिर्फ़ येही नहीं बल्कि मुमताज़, बेहतर और मुनासिब दरजा बन्दी के ए'तिबार से सालाना इज़ाफ़ा भी किया जाता और त़ै शुदा मुद्दत के ह़िसाब से ग्रेड और तनख़ाह में भी इज़ाफ़ा किया जाता है। इस के इ़लावा मजलिसे त़िब्बी इ़लाज के तह़्त असातिज़ए किराम और मोअ़ल्लिमात को फ़्री मेडीकल की सहूलत भी फ़राहम की जाती है।

(4) **फ़रमाने आ'ला हज़रत :** त़लबा की त़बीअ़तों को परखा (आज़माया) जाए, जो जिस काम के ज़ियादा मुनासिब देखा जाए, उसे बेहतरीन वज़ीफ़ा (या'नी ता'लीमी अख़राजात के लिये रक़म) दे कर उस काम में लगाया जाए। यूं उन में कुछ मुदर्रिसीन (असातिज़ए किराम), कुछ मुबल्लिग़ीन (दर्सो बयान करने वाले), कुछ मुसन्निफ़ीन (किताबें तह़रीर करने वाले) बनाए जाएं फिर तस्नीफ़ (किताबें तह़रीर करने) में भी तक़्सीम कारी हो, कोई किसी फ़न पर,

कोई किसी फ़न पर (महारत हासिल करे) और (**5**) उन में जो तय्यार होते जाएं, तनख़ाहें दे कर मुल्क में फैलाए जाएं कि तह़रीर, तक़रीर और वा'ज़ (दर्सो बयान) के ज़रीए़ दीन और मज़हब को फैलाएं।

बयान कर्दा उसूल के तह़्त अगर त़लबा को सलाहि़य्यत के ए'तिबार से काम में लगाने के ह़वाले से देखें, तो आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़्त क़ाइम जामिअ़तुल मदीना से फ़ारिग़ होने के बा'द अगर कोई मदनी पढ़ाने का अहल व ख़्वाहिश मन्द हो, तो उसे तद्रीसी कोर्स करवाया जाता और फिर जामिअ़तुल मदीना में उस्ताद मुक़र्रर किया जाता है। मुफ़्ती बनने की सलाहि़य्यत व ख़्वाहिश रखने वाले मदनी को शरई़ मसाइल और इस के बा'द फ़तवा लिखने की मश्क़ करवाई जाती है। इन तमाम मराहि़ल में काम्याबी के बा'द दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत में अपनी ख़िदमात फ़राहम करने का मौक़अ़ दिया जाता है। किताबें लिखने और तह़क़ीक़ करने की अहलिय्यत रखने वाले मदनी उ़लमा को इ़ल्मी व तह़क़ीक़ी शो'बे "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" में मौक़अ़ फ़राहम किया जाता है। मदनी उ़लमा को इंगलिश, अ़रबी और चाइनीज़ वग़ैरा ज़बानें सिखा कर मुख़्तलिफ़ मुल्कों में जामिआ़त, मदारिस, मसाजिद और दारुस्सुन्नह में भेजा जाता है। अब तक 100 से ज़ाइद मदनी उ़लमा बैरूने मुल्क मुख़्तलिफ़ ख़िदमात सर अन्जाम दे रहे हैं।

(**6**) **फ़रमाने आ'ला ह़ज़रत :** तस्नीफ़ (या'नी किताबें लिखने) की क़ाबिलिय्यत रखने वालों को नज़राने दे कर उन से मज़हब की ह़िमायत और बद मज़हबों के रद्द में मुफ़ीद कुतुबो रसाइल तस्नीफ़ कराए (या'नी लिखवाए) जाएं और (**7**) तस्नीफ़ शुदा (लिखे गए) रसाइल उ़म्दा और ख़ुश ख़त़ छाप कर मुल्क में मुफ़्त शाएअ़ किये जाएं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इन दोनों उसूलों पर अ़मल करते हुवे "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की सूरत में कमो बेश 11 साल से तह़रीरी काम सर अन्जाम देने

की सआ़दत ह़ासिल कर रही है । इस मुख़्तसर से अ़र्से में 500 के क़रीब कुतुबो रसाइल मक्तबतुल मदीना के तआ़वुन से शाएअ़ हो कर मन्ज़रे आ़म पर आ चुके हैं और 320 से ज़ाइद कुतुबो रसाइल का मुख़्तलिफ़ ज़बानों में तर्जमा किया जा चुका है जब कि दरजनों किताबों का तर्जमा जारी है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه **''मजलिसे तक़्सीमे रसाइल''** के तह़्त कसीर आ़शिक़ाने रसूल तक मुफ़्त कुतुबो रसाइल और **''माहनामा फ़ैज़ाने मदीना''** पहुंचाए जाते हैं जब कि कसीर उ़लमाए अहले सुन्नत और दीगर शख़्सय्यात को माहाना बुन्याद पर भी कुतुबो रसाइल तोह़्फ़े के तौ़र पर पेश किये जाते हैं ।

(8) **फ़रमाने आ'ला ह़ज़रत :** शहरों शहरों आप के सफ़ीर निगरान रहें, जहां जिस क़िस्म के मुबल्लिग़ या तस्नीफ़ (किताब लिखने) की ह़ाजत हो, आप को इत्तिलाअ़ दें । आप दुश्मने इस्लाम के मुक़ाबले में अपने उ़लमा, मेगज़ीन और रिसाले भेजते रहें ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! ख़िदमते दीन और फ़रोग़े इल्मे दीन के सिलसिले में इस उसूल पर भी आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी काफ़ी ह़द तक अ़मल पैरा है, जिस की एक कड़ी दा'वते इस्लामी के मुल्क व बैरूने मुल्क सुन्नतों की ख़िदमत के लिये सफ़र करने वाले मदनी क़ाफ़िले और दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ीन और अराकीने शूरा के वक़्तन फ़-वक़्तन नेकी की दा'वत की ख़ातिर दौरे भी हैं । इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की भी मुख़्तलिफ़ मजालिस क़ाइम की गई हैं । इस के इलावा मुल्क व बैरूने मुल्क प्रिन्ट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के ज़रीए़ बड़े पैमाने पर कुतुबो रसाइल भी पहुंचाए जा रहे हैं ।

(9) **फ़रमाने आ'ला ह़ज़रत :** जो हम में (दीनी) काम के क़ाबिल मौजूद हों मगर अपनी मआ़श (रिज़्क़े ह़लाल कमाने) में मश्ग़ूल हैं, वज़ाइफ़ (तनख़ाहें) मुक़र्रर कर के उन्हें मआ़शी (रोज़ी रोटी की) फ़िक्रों से आज़ाद किया जाए और जिस (दीनी) काम में उन्हें महारत हो, वोह काम करवाया जाए ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़्त एक शो'बा बनाम "**मदनी का तक़र्रुर**" क़ाइम किया गया । इस शो'बे के तह़्त फ़िक्रे मआ़श में मश्ग़ूल क़ाबिल और बा सलाह़िय्यत मदनी उ़लमा से राबित़ा कर के उन की सलाह़िय्यतों के ए'तिबार से दा'वते इस्लामी के कमो बेश 107 शो'बाजात में से किसी शो'बे में अच्छी तनख़ाह पर उन का तक़र्रुर किया जाता है । सिर्फ़ 4 साल में इस शो'बे के तह़्त 2000 से ज़ाइद मदनी उ़लमा का मुख़्तलिफ़ शो'बाजात में तक़र्रुर हो चुका है ।

(**10**) मज़्हबी अख़्बार शाएअ़ हों और वक़्तन फ़-वक़्तन हर क़िस्म के ह़िमायते मज़्हब में मज़ामीन तमाम मुल्क में ब क़ीमत व बिला क़ीमत रोज़ाना या कम अज़् कम हफ़्तावार पहुंचाते रहें । (फ़तावा रज़विय्या, 29 / 599, मुलख़्ख़सन)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه दा'वते इस्लामी "**मदनी चेनल**" और "**आई-टी**" के ज़रीए़ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जब कि दीगर कुतुबो रसाइल छापने के साथ साथ "**माहनामा फ़ैज़ाने मदीना**" की इशाअ़त की सूरत में प्रिन्ट मीडिया के ज़रीए़ "**फ़िक्रे रज़ा**" को आ़म करने में मसरूफ़ है ।

अल्लाह करीम, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के तुफ़ैल आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" को मज़ीद तरक़्क़ियां अ़त़ा फ़रमाए ।

آمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मुत़ालआ़ करने के मदनी फूल

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आइये ! मुत़ालआ़ करने के बारे में चन्द मदनी फूल सुनने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं । पहले 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिये :

1. फ़रमाया : बेशक इल्म सीखने से आता है । (کنز العمال، ۱۰/۱۰۴، حدیث: ۲۹۲۵۲)
2. फ़रमाया : दुन्या ला'नती है, **अल्लाह** पाक के ज़िक्र, उस के दोस्त और दीनी इल्म पढ़ने और पढ़ाने वाले के इलावा इस की हर चीज़ भी ला'नती है । (ترمذی، کتاب الزہد، ۴/۱۴۴، حدیث: ۲۳۲۹)

❖ मुत़ालआ़ ईमान की मज़बूत़ी का बाइस है। (मुत़ालआ़ क्या, क्यूं और कैसे ?, स. 16) ❖ मुत़ालआ़ करने से इल्म बढ़ता है। (मुत़ालआ़ क्या, क्यूं और कैसे ?, स. 17) ❖ मुत़ालआ़ रब्बे करीम की पहचान का ज़रीआ़ है। (मुत़ालआ़ क्या, क्यूं और कैसे ?, स. 18) ❖ मुत़ालआ़ करने से काइनात में ग़ौरो फ़िक्र करने का ज़ेह्न बनता है। (मुत़ालआ़ क्या, क्यूं और कैसे ?, स. 18) ❖ मुत़ालआ़ करने से अ़क़्ल में इज़ाफ़ा होता है। (मुत़ालआ़ क्या, क्यूं और कैसे ?, स. 19) ❖ मुत़ालआ़ इन्सान की दीनी व दुन्यावी दोनों तरक़्क़ियों का सबब बनता है। (मुत़ालआ़ क्या, क्यूं और कैसे ?, स. 19) ❖ मुत़ालआ़ त़बीअ़त में चुस्ती, निगाहों में तेज़ी और ज़ेह्नो दिमाग़ को ताज़गी अ़त़ा करता है। (मुत़ालआ़ क्या, क्यूं और कैसे ?, स. 19, मुलख़्ख़सन) ❖ ऐसी कुतुब, रसाइल और अख़्बारात से हमेशा दूर रहिये जो ईमान के लिये ज़ह्रे क़ातिल, ह़या ख़त्म करने और अख़्लाक़ तबाह करने वाले हों। (मुत़ालआ़ क्या, क्यूं और कैसे ?, स. 29) ❖ अपने बुज़ुर्गों के ह़ालात जानने और उन की पैरवी करने के लिये उन की सीरत पर मुश्तमिल कुतुब का मुत़ालआ़ भी ज़रूरी है। (मुत़ालआ़ क्या, क्यूं और कैसे ?, स. 33) ❖ इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब तुम कोई इल्म ह़ासिल करने लगो या मुत़ालआ़ करना चाहो, तो बेहतर है कि तुम्हारा इल्म व मुत़ालआ़ नफ़्स को पाक करने और दिल की इस्लाह़ का बाइस हो। (मुत़ालआ़ क्या, क्यूं और कैसे ?, स. 32) ❖ कुव्वते ह़ाफ़िज़ा के लिये जहां और दवाएं इस्ति'माल और वज़ाइफ़ किये जाते हैं, वहीं एक दवा "**मुत़ालआ़**" भी है। (मुत़ालआ़ क्या, क्यूं और कैसे ?, स. 36) ❖ कोशिश कीजिये कि किताब हर वक़्त साथ रहे कि जहां मौक़अ़ मिले कुछ न कुछ मुत़ालआ़ कर लिया जाए और किताब की सोह़ूबत भी मिले। (मुत़ालआ़ क्या, क्यूं और कैसे ?, स. 36) ❖ मुत़ालआ़ करने के बा'द तमाम मुत़ालए़ को इब्तिदा से इन्तिहा तक सरसरी नज़र से देखा जाए और उस का एक ख़ुलासा अपने ज़ेह्न में नक़्श कर लिया जाए। (मुत़ालआ़ क्या, क्यूं और कैसे ?, स. 112) ❖ अपना एह़तिसाब करना भी फ़ाइदा मन्द है कि मुझे इस मुत़ालए़ से क्या ह़ासिल हुवा ? और कौन सा मवाद ज़ेह्न नशीन हुवा और कौन सा नहीं ? (मुत़ालआ़ क्या, क्यूं और कैसे ?, स. 112)

❖ किसी बात को याद करने के लिये आंखें बन्द कर के याद दाश्त पर ज़ोर देना मुफ़ीद है । (मुत़ालआ़ क्या, क्यूं और कैसे ?, स. 117) ❖ जो मुत़ालआ़ करें, उसे अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ अपने घर वालों और दोस्तों से बयान करें, इस त़रह़ भी मा'लूमात का ज़ख़ीरा काफ़ी मुद्दत तक दिमाग़ में मह़फ़ूज़ रहेगा । (मुत़ालआ़ क्या, क्यूं और कैसे ?, स. 112) ❖ जो कुछ पढ़ें, उस की दोहराई (Repeat) करते रहिये । (मुत़ालआ़ क्या, क्यूं और कैसे ?, स. 112) ❖ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी मुज़ाकरों में इल्मे दीन के रंग बिरंगे मदनी फूल इरशाद फ़रमाते हैं, इन मदनी मुज़ाकरों की बरकत से अपने इल्म पर अ़मल करने, उसे दूसरों तक पहुंचाने और मज़ीद मुत़ालआ़ करने का जज़्बा पैदा होता है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब कभी दाख़िले मस्जिद हों, याद आने पर ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लिया करें कि जब तक मस्जिद में रहेंगे, ए'तिकाफ़ का सवाब मिलता रहेगा । याद रखिये ! मस्जिद में खाने, पीने, सोने या सह्‌री, इफ़्तारी करने, यहां तक कि आबे ज़मज़म या दम किया हुवा पानी पीने की भी शरअ़न इजाज़त नहीं ! अलबत्ता अगर ए'तिकाफ़ की निय्यत होगी, तो येह सब चीज़ें ज़िमनन जाइज़ हो जाएंगी । ए'तिकाफ़ की निय्यत भी सिर्फ़ खाने, पीने या सोने के लिये नहीं होनी चाहिये बल्कि इस का मक़्सद **अल्लाह** करीम की रिज़ा हो । **फ़तावा शामी** में है : अगर कोई मस्जिद में खाना, पीना, सोना चाहे, तो ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ले, कुछ देर ज़िक्रुल्लाह करे फिर जो चाहे करे (या'नी अब चाहे तो खा, पी या सो सकता है) ।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :
حَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَصَلُّوْا عَلَيَّ فَاِنَّ صَلَاتَكُمْ تَبْلُغُنِيْ तुम जहां भी रहो मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ा करो क्यूंकि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंच जाता है । (معجمِ کبیر، ۳/۸۲، رقم:۲۷۲۹)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आइये ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث:۵۹۴۲)

मदनी फूल :- बयान में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

बयान सुनने की नियतें

۞ निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम के लिये जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! मुह़द्दिसीने किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن वोह मुक़द्दस हस्तियां हैं जिन की शानो अ़ज़मत और मक़ामो मर्तबा बहुत ही बुलन्दो बाला है । इन ह़ज़रात ने इ़श्क़े रसूल के जज़्बे से सरशार हो कर अपनी सारी ज़िन्दगी ह़दीसे पाक की तरवीजो इशाअ़त (Propagation) में गुज़ार दी । इन बुज़ुर्ग हस्तियों में जो मक़ामो मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को नसीब हुवा, वोह अपनी मिसाल आप है । चूंकि शव्वालुल मुकर्रम के मुबारक महीने में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की पैदाइश हुई थी और इसी महीने में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का उ़र्से मुबारक भी है, लिहाज़ा इसी मुनासबत से आज हम मश्हूर मुह़द्दिस, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का मुख़्तसर तआ़रुफ़ और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की पाकीज़ा सीरत के मुख़्तलिफ़ पहलूओं के बारे में सुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगे । आइये ! पहले ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के ज़ौक़े इ़बादत पर मुश्तमिल एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुन कर अपने अन्दर ज़ौक़े इ़बादत को बेदार करने की कोशिश करते हैं । चुनान्चे,

इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का ज़ौक़े इ़बादत

एक मरतबा मश्हूर मुह़द्दिस, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के बा'ज़ शागिर्दों ने दा'वत दी, तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه तशरीफ़ ले गए । जब नमाज़े ज़ोहर का वक़्त हुवा, तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने

नमाज़ पढ़ी फिर नवाफ़िल शुरूअ़ फ़रमा दिये। जब फ़ारिग़ हुवे, तो क़मीस का एक किनारा उठाते हुवे किसी से कहा : देखो ! मेरी क़मीस के अन्दर क्या चीज़ है ? देखा तो एक ज़हरीला कीड़ा था जिस ने 16 या 17 मक़ामात पर डंक मारा था, जिस के सबब आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का जिस्मे मुबारक सूज चुका था। लोगों ने कहा : जब इस ने पहला डंक मारा था, तो आप उसी वक़्त नमाज़ से बाहर क्यूं न हुवे ? फ़रमाया : मैं ने एक सूरत शुरूअ़ कर रखी थी, दिल ने चाहा कि वोह पूरी हो जाए (तो फिर सलाम फेरूंगा)। (تاریخ بغداد، ۲/۱۳)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आइये ! मुह़द्दिस की ता'रीफ़ सुनते हैं। चुनान्चे,

मुह़द्दिस की ता'रीफ़

जो अह़ादीसे नबवी में मसरूफ़ व मश्ग़ूल हो, उसे "**मुह़द्दिस**" कहा जाता है। (نزهة النظر فی توضیح نخبة الفکر، ص۴۱)

विलादत व सिलसिलए नसब

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! मश्हूर मुह़द्दिस, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादत मश्हूर शहर "**बुख़ारा**" में 13 शव्वाल सिने 194 (हिजरी) बरोज़ जुमुआ़ बा'द नमाज़े अ़स्र हुई। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का नाम "**मुह़म्मद**" और कुन्यत "**अबू अ़ब्दुल्लाह**" है। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का सिलसिलए नसब येह है : मुह़म्मद बिन इस्माईल बिन इब्राहीम बिन मुग़ीरा। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पर दादा "**मुग़ीरा**" खेती बाड़ी करने वाले और ग़ैरे ख़ुदा की इ़बादत करने वाले थे लेकिन बा'द में ह़ाकिमे बुख़ारा "**यमान जु'फ़ी**" के हाथ पर इस्लाम लाए। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने तक़रीबन 62 साल की उ़म्र पाई और (यकुम शव्वाल) सिने 256 हिजरी बरोज़ हफ़्ता ईदुल फ़ित्र की रात बीमारी की ह़ालत में विसाले ज़ाहिरी फ़रमाया। समरक़न्द (उज़्बुकिस्तान) से कुछ फ़ासिले पर "**ख़रतन्क**" नामी बस्ती में आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का आ़लीशान मज़ारे मुबारक है। (ارشاد الساری، ترجمة الامام بخاری، ۱/۵۵-۵۶ ملتقطاً، اشعة اللمعات، ۱/۹-۱۳ ملتقطاً)

अल्क़ाबात

"अमीरुल मोमिनीन फ़िल ह़दीस", **"ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस"**, **"मुह़द्दिस"**, **"मुफ़्ती"**, **"ह़िबरुल इस्लाम"** वग़ैरा आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मश्हूर अल्क़ाबात हैं।

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के असातिज़ा की ता'दाद

(ह़ज़रते सय्यिदुना) इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के असातिज़ए किराम की ता'दाद 1080 है। (नुज़्हतुल क़ारी, 1 / 119)

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के शागिर्दों की ता'दाद

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (ह़ज़रते सय्यिदुना) इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इन्तिक़ाल फ़रमाया (तो) 90000 शागिर्द मुह़द्दिस (या'नी इल्मे ह़दीस के जानने वाले) छोड़े। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 238)

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वालिदे मोह़तरम का मुख़्तसर तआ़रुफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वालिदे माजिद ज़बरदस्त आ़लिमे दीन थे, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه, इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के उस्ताज़, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सोह़बत में रहते थे, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه रिवायत फ़रमाने वाले और इल्मे ह़दीस के जानने वाले थे, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا, इन के शागिर्दों और उस ज़माने के इल्मे ह़दीस जानने वालों से रिवायत करते थे, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की दुआ़एं बहुत ज़ियादा मक़्बूल होती थीं, ऐसे कि बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करते कि "मेरी सब दुआ़एं दुन्या ही में न क़बूल कर ले, कुछ आख़िरत के लिये रहने दे।" ह़लाल खाने के ऐसे पाबन्द थे कि ह़राम तो ह़राम, मश्कूक चीज़ों से भी बचते थे, ह़त्ता कि विसाले ज़ाहिरी के वक़्त फ़रमाया : मेरे पास जितना भी माल है, उस में एक दिरहम भी शको शुब्हे वाला नहीं है।

(नुज़्हतुल क़ारी, 1 / 107, मुलख़्ख़सन, ارشاد الساری، ترجمۃ الامام بخاری، ۱/۵۵)

इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की बीनाई लौट आई

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ अभी छोटी उ़म्र के थे कि आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के वालिदे माजिद رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का इन्तिक़ाल हो गया और फिर परवरिश की तमाम तर ज़िम्मेदारियां आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की वालिदए माजिदा رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہَا ने संभालीं । बचपन शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की आंखों की रौशनी जाती रही, वालिदए माजिदा رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہَا इस सदमे से रोती रहतीं और गिड़गिड़ा कर दुआ़ मांगा करतीं । एक रात सोते में क़िस्मत का सितारा चमक उठा, दिल की आंखें खुल गईं, ख़्वाब में देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام तशरीफ़ लाए हैं और फ़रमा रहे हैं कि आप अपने बेटे की आंखों की रौशनी की वापसी के लिये दुआ़एं मांगती रही हैं, मुबारक हो ! कि आप की दुआ़ क़बूल हो चुकी है, **अल्लाह** पाक ने आप के बेटे की आंखों की रौशनी बह़ाल फ़रमा दी है । जब सुब्ह़ हुई, तो देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की आंखें (Eyes) रौशन हो चुकी थीं । (تفہیمُ البخاری، ۱/۴ ملخصاً)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आप ने सुना कि **अल्लाह** करीम ने मां की दुआ़ में कैसी तासीर रखी है कि मां जब अपनी औलाद के ह़क़ में दुआ़ करती है, तो रब्बे करीम उस के उठे हुवे हाथों की लाज रखता और औलाद के ह़क़ में उस की दुआ़ क़बूल फ़रमाता है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ मां वोह मेहरबान हस्ती है जो औलाद के लिये रो रो कर दुआ़एं करती है, मां की दुआ़ जन्नत में ले जाती है, मां की दुआ़ रब्बे करीम का फ़रमां बरदार बनाती है, मां की दुआ़ बुराइयों से बचाती है, मां की दुआ़ औलाद को मक़ामे विलायत तक पहुंचा देती है, मां की दुआ़ औलाद की क़िस्मत संवार देती है, मां की दुआ़ औलाद के ह़क़ में क़बूल होती है, मां की दुआ़ काम्याबियां दिलाती है, मां की दुआ़ रह़मत उतरने का सबब है, मां की दुआ़ गुनाहों की मुआ़फ़ी का ज़रीआ़ है, मां की दुआ़ की बरकत से रब्बे करीम औलाद से मुसीबतों और आज़माइशों को टाल देता है ।

अल्लाह करीम हमें अपनी मां की ख़िदमत करने, उन की फ़रमां बरदारी करने, उन्हें राज़ी रखने और उन से दुआएं लेने वाले काम करने की तौफ़ीक़ व सआ़दत नसीब फ़रमाए। آمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! अगर हम मुह़द्दिसीने किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की सीरते मुबारका का जाइज़ा लें, तो उन की पाकीज़ा सीरत में हमें येह मदनी फूल जगमगाता हुवा दिखाई देगा कि इन ह़ज़रात ने इ़ल्मे ह़दीस ह़ासिल करने और अह़ादीसे रसूल का फ़ैज़ान आ़म करने की ख़ातिर अपना सब कुछ क़ुरबान कर दिया, ह़त्ता कि इस राह में अपने घर बार को ख़ैर आबाद कह कर दूर दराज़ मुल्कों और शहरों का सफ़र तै़ कर के इ़ल्मे ह़दीस ह़ासिल किया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ चूंकि यादगारे अस्लाफ़ थे, लिहाज़ा आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने मुह़द्दिसीने किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे इसी मक़्सद की ख़ातिर अपना वत़न छोड़ा, दूर दराज़ शहरों का सफ़र इख़्तियार फ़रमाया और इन्तिहाई कम उ़म्र में ही मैदाने ह़दीस में अपनी सलाह़िय्यतों का भरपूर इस्ति'माल किया। आइये ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के शौक़े इ़ल्म की चन्द झल्कियां मुलाह़ज़ा कीजिये। चुनान्चे,

ज़मानए ता'लीम

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ जब दस साल के हुवे, तो इब्तिदाई और ज़रूरी ता'लीम ह़ासिल कर चुके थे, **अल्लाह** पाक ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के दिल में इ़ल्मे ह़दीस ह़ासिल करने का शौक़ पैदा किया, तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने **"बुख़ारा"** में (इ़ल्मे ह़दीस ह़ासिल करने के लिये एक मद्रसे में) दाख़िला ले लिया, इ़ल्मे ह़दीस इन्तिहाई मेह़नत से ह़ासिल किया। 16 साल की उ़म्र में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ अपने बड़े भाई और वालिदा के साथ ह़ज करने के लिये मक्के मदीने में ह़ाज़िर हुवे,

वालिदा और भाई तो ह़ज से फ़ारिग़ होने के बा'द वापसी वत़न आ गए मगर आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ मज़ीद इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये वहीं रहे और 18 साल की उ़म्र में आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने वहीं पर ही एक किताब **''क़ज़ाया अस्सह़ाबा व त्ताबेईन''** तस्नीफ़ फ़रमाई।

(तज़किरतुल मुह़द्दिसीन, स. 172, मुलख़्ख़सन, (ارشاد الساری،ترجمۃ الامام بخاری،۱/ ۵۶ ملخصًا

हुसूले इ़ल्म के लिये सफ़र

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने 6 साल ह़िजाज़े मुक़द्दस (या'नी अ़रब शरीफ़ का वोह ह़िस्सा जिस में मक्कए पाक, मदीनए पाक और त़ाइफ़ के अ़लाक़े शामिल हैं) में रह कर ख़ूब इ़ल्मे दीन ह़ासिल किया। इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने कई सफ़र इख़्तियार फ़रमाए, 2 मरतबा शाम, मिस्र और जज़ीरा, 4 मरतबा बसरा और कई दफ़्आ़ (इराक़ के शहर) कूफ़ा और बग़्दाद भी तशरीफ़ ले गए।

(سیر اعلام النبلاء، ابو عبداللہ البخاری۔۔۔ الخ، ذکر حفظہ۔۔ الخ، ۱۰/ ۲۸۵ ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक अपने बन्दों को जिन ने'मतों से नवाज़ता है, उन में से एक **''याद रखने वाली कुव्वत''** की ने'मत भी है, जिस के ज़रीए़ इन्सान दुन्या भर की मा'लूमात को अपने दिमाग़ की मेमोरी (Memory) में आसानी से मह़फ़ूज़ कर लेने पर कुदरत पा लेता है और इस से भरपूर फ़ाइदा उठाता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का शुमार भी उन्ही ख़ुश नसीबों में होता है जिन्हें **अल्लाह** पाक ने याद रखने वाली कुव्वत की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया था। आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने बारगाहे इलाही से मिलने वाली इस शानदार ने'मत और बे मिसाल ज़हानत के ज़रीए़ हज़ारों अह़ादीसे मुबारका को अपने दिलो दिमाग़ में मह़फ़ूज़ कर लिया था। आइये ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की याद रखने वाली कुव्वत की चन्द दिल नशीन झल्कियां सुनते हैं। चुनान्चे,

एक हज़ार अह़ादीस ज़बानी बयान फ़रमा दीं !

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ (ख़ुरासान के एक मश्हूर शहर) "**बल्ख़**" तशरीफ़ ले गए । लोगों ने आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ से ह़दीस सुनाने की फ़रमाइश की, तो आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने एक हज़ार अह़ादीसे मुबारका ज़बानी बयान फ़रमा दीं । (سیر اعلام النبلاء، ابو عبد اللہ البخاری۔۔۔الخ، ۱۰/۲۸۹)

16 दिन में 15 हज़ार अह़ादीस

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अबी ह़ातिम और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाशिद बिन इस्माईल رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہِمَا बयान करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ छोटी उ़म्र में हमारे साथ ह़दीस के लिये शहर "**बसरा**" के उ़लमाए किराम की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते थे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के इलावा हम तमाम साथी अह़ादीस को मह़फ़ूज़ करने के लिये तह़रीर कर लेते थे । 16 दिन (Sixteen Days) गुज़र जाने के बा'द एक रोज़ हम ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ को डांटा कि तुम ने अह़ादीस मह़फ़ूज़ न कर के इतने दिनों की मेह़नत ज़ाएअ़ कर दी । येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने हम से कहा : अच्छा तुम अपने तह़रीरी सफ़ह़ात ले आओ ! चुनान्चे हम अपने अपने सफ़ह़ात ले आए । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने अह़ादीस सुनानी शुरूअ़ कर दीं, यहां तक कि उन्हों ने 15000 से ज़ियादा अह़ादीस बयान कर डालीं, जिन्हें सुन कर हमें यूं गुमान होता था कि गोया हमें येह रिवायात ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने ही लिखवाई हैं । (ارشاد الساری، ترجمۃ الامام بخاری، ۱/۵۹)

सत्तर हज़ार ह़दीसों के ह़ाफ़िज़

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन मुजाहिद رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सलाम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे, तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सलाम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन मुजाहिद رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ से फ़रमाया : अगर आप कुछ देर पहले आ जाते, तो मैं आप को वोह बच्चा दिखाता जिस को सत्तर हज़ार ह़दीसें याद हैं । येह ह़ैरत

में मुब्तला करने वाली बात सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के दिल में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से मुलाक़ात का शौक़ पैदा हुवा । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सलाम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बारगाह से फ़ारिग़ होने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को तलाश करना शुरूअ़ कर दिया । जब (ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से) मुलाक़ात हुई, तो ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : क्या सत्तर हज़ार अह़ादीस को याद करने वाले आप ही हैं ? येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अ़र्ज़ की : जी हां ! मुझे तो इस से भी ज़ियादा अह़ादीस याद हैं और जिन सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और ताबेईन से मैं ह़दीस रिवायत करता हूं, उन में से अक्सर की तारीख़े पैदाइश, रिहाइश और तारीख़े विसाल को भी मैं जानता हूं । (ارشادالساری،ترجمۃالامامالبخاری،۱/۵۹)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

سُبْحٰنَ الله ! आप ने सुना कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का ह़ाफ़िज़ा कितना शानदार था ! आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने बचपन ही में न सिर्फ़ सत्तर हज़ार से ज़ाइद अह़ादीसे करीमा को याद फ़रमा लिया बल्कि उन ह़दीसों को रिवायत करने वाले अक्सर बुज़ुर्गों की तारीख़े पैदाइश, रिहाइश और तारीख़े विसाल को भी याद कर लिया । बिला शुबा येह **अल्लाह** पाक के ख़ास फ़ज़्लो एह़सान और नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ुसूसी फ़ैज़ान का कमाल था कि लोग आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की याद रखने वाली क़ुव्वत की ता'रीफ़ किया करते थे जब कि आज हमारे ह़ाफ़िज़े कमज़ोर (Weak) होते जा रहे हैं, हमें तो गुज़रे हुवे कल की मा'मूली बातें भी याद नहीं रहतीं, ईसवी महीने और उन की तारीख़ें तो याद रहती हैं मगर अफ़्सोस ! मदनी या'नी चांद के महीनों और उन की तारीख़ों से बे ख़बर रहते हैं, चीज़ों के ह़िसाब किताब में अक्सर परेशानी का शिकार हो जाते हैं, नमाज़ों की रक्आ़त के बारे में शुकूको शुब्हात में मुब्तला हो जाते हैं कि कितनी पढ़ लीं और कितनी बाक़ी रह गईं ? किसी किताब या रिसाले को कई कई बार पढ़ लेने के बा वुजूद भी

उस के मज़ामीन या मसाइल हमारे दिलो दिमाग़ में महफ़ूज़ नहीं हो पाते । बहर हाल अगर हम अपने हाफ़िज़े को मज़बूत़ बनाना चाहते हैं, भूलने की बीमारी से नजात पाना चाहते हैं, हाफ़िज़े को मज़बूत़ बनाने के त़रीक़े जानना चाहते हैं और भूलने की बीमारी पैदा करने वाले अस्बाब के बारे में मा'लूमात हासिल करना चाहते हैं, तो इस के लिये मक्तबतुल मदीना की किताब "**हाफ़िज़ा कैसे मज़बूत़ हो** ?" का मुत़ालआ़ फ़रमाइये । दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislami.net से इस किताब को पढ़ा भी जा सकता है, डाउन लोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है ।

हाफ़िज़ा मज़बूत़ करने का आसान वज़ीफ़ा

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْكَامِلِ وَعَلٰى اٰلِهٖ كَمَا لَا نِهَايَةَ لِكَمَالِكَ وَعَدَدَ كَمَالِهٖ

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत नक़्ल फ़रमाते हैं : अगर किसी शख़्स को निस्यान या'नी भूल जाने की बीमारी हो, तो वोह मग़रिब और इशा के दरमियान इस दुरूदे पाक को कसरत से पढ़े, اِنْ شَآءَ الله हाफ़िज़ा क़वी हो जाएगा । (मदनी पंजसूरह, स. 169)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! उ़मूमन देखा गया है कि जब कोई शख़्स अपने किसी कारनामे के सबब अ़वाम व ख़वास में मश्हूर हो जाए, तो वोह अपने आप को "**कुछ**" समझने लगता है, दूसरों को ह़क़ारत की नज़र से देखता है, अपने काम काज अपने हाथों से करने में शर्म और ज़िल्लत महसूस करता है, दुन्यवी ह़िर्स व लालच और मज़ीद शोहरत का भूत उस पर सुवार हो जाता है और वोह दुन्यवी लज़्ज़ात में डूब कर फ़िक्रे आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाता है लेकिन क़ुरबान जाइये ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पर ! लाखों ह़दीसें याद कर लेने के बा वुजूद ग़ुरूरो तकब्बुर को कभी अपने क़रीब भी भटकने न दिया, आ़जिज़ी व इन्केसारी का दामन थामे रखा, अ़मली त़ौर पर सादगी अपनाई और दौराने त़ालिबे इल्मी से ही ज़ोह्दो क़नाअ़त को इख़्तियार फ़रमा लिया । चुनान्चे,

इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की आ़जिज़ी व इन्केसारी

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के ख़ुसूसी शागिर्द मुह़म्मद बिन ह़ातिम वर्राक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बयान करते हैं : एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बुख़ारा के क़रीब मुसाफ़िरों के ठहरने का मकान बना रहे थे, ख़िदमत करने वाले और अ़क़ीदत मन्द ह़ज़रात भी आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के साथ थे मगर इस के बा वुजूद आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ अपने हाथों से ईंटें उठा उठा कर दीवार में लगा रहे थे। मैं ने आगे बढ़ कर कहा : आप रहने दीजिये, येह ईंटें मैं लगा देता हूं। इरशाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन येह अ़मल मुझे फ़ाइदा देगा।

(ارشادالساری،ترجمۃالامام بخاری،۱/۶۵)

सूखी रोटी तनावुल फ़रमाते

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने त़लबे इ़ल्म के दौरान बसा अवक़ात सूखी घास खा कर भी वक़्त गुज़ारा, कभी कभार एक दिन में आ़म त़ौर पर सिर्फ़ दो या तीन बादाम खाया करते थे। एक मरतबा बीमार पड़ गए, ह़कीमों ने बतलाया कि सूखी रोटी खा खा कर इन की अंतड़ियां सूख चुकी हैं। उस वक़्त आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने बताया कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ 40 साल (Forty Years) से ख़ुश्क रोटी खा रहे हैं और इस अ़र्से में सालन को बिल्कुल भी हाथ नहीं लगाया। (तज़किरतुल मुह़द्दिसीन, स. 182)

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! आप ने सुना कि **अल्लाह** वालों में इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने का कैसा ज़बरदस्त मदनी जज़्बा हुवा करता था जो सालन के बिग़ैर सूखी रोटी खा कर भी इन्तिहाई ज़ौको शौक़ के साथ इ़ल्मे दीन सीखने में मश्ग़ूल रहा करते थे जब कि आज हमारा मुआ़शरा दुन्यवी उ़लूमो फ़ुनून की डिग्रियों और माल जम्अ़ करने की ख़ातिर दिन रात मसरूफ़े अ़मल दिखाई देता है मगर दीनी मदारिस व जामिआ़त में बेहतरीन और मुफ़्त सहूलिय्यात के बा वुजूद पढ़ने वालों की ता'दाद इन्तिहाई कम नज़र आती है और ह़ाल येह है कि बहुत से लोग शरीअ़त के बुन्यादी फ़राइज़ व वाजिबात से ग़ाफ़िल नज़र आते हैं। जैसा कि :

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान में है : इल्मे दीन सीखना सिर्फ़ किसी एक ख़ास गिरोह का काम नहीं बल्कि अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ इल्म सीखना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है लेकिन निहायत अफ़्सोस की बात है ! कि आज मुसलमानों की एक बड़ी ता'दाद इल्मे दीन से दूर नज़र आती है। नमाज़ियों को देखें, तो चालीस चालीस साल नमाज़ पढ़ने के बा वुजूद हाल येह है कि किसी को वुज़ू करना नहीं आता, तो किसी को ग़ुस्ल का तरीक़ा मा'लूम नहीं, कोई नमाज़ के फ़राइज़ को सहीह तरीक़े से अदा नहीं करता, तो कोई वाजिबात नहीं जानता, किसी की क़िराअत दुरुस्त नहीं, तो किसी का सजदा ग़लत है। येही हाल दीगर इबादात का है, ख़ुसूसन जिन लोगों ने हज किया हो, उन को मा'लूम है कि हज में किस क़दर ग़लतियां की जाती हैं, इन में अक्सरिय्यत उन लोगों की होती है जो येह कहते नज़र आते हैं कि बस हज के लिये चले जाओ ! जो कुछ लोग कर रहे होंगे वोही हम भी कर लेंगे। जब इबादात का येह हाल है, तो दीगर फ़र्ज़ उलूम का हाल क्या होगा ? यूंही हसद, बुग़्ज़, कीना, तकब्बुर, ग़ीबत, चुग़ली, बोहतान और न जाने कितने ऐसे उमूर हैं जिन के बारे में जानना फ़र्ज़ है लेकिन एक ता'दाद को इन की ता'रीफ़ें बल्कि इन की फ़र्ज़िय्यत तक का इल्म नहीं होता। येह वोह चीज़ें हैं जिन का गुनाह होना उ़मूमन लोगों को मा'लूम होता है और वोह चीज़ें जिन के बारे में बिल्कुल बे ख़बर हैं जैसे ख़रीदो फ़रोख़्त, मुलाज़मत, मस्जिद व मद्रसा और दीगर बहुत सी चीज़ें ऐसी हैं जिन के बारे में लोगों को येह तक मा'लूम नहीं कि इन के कुछ मसाइल भी हैं, बस हर तरफ़ एक अ़जीब सी कैफ़िय्यत है, ऐसी सूरत में हमें चाहिये कि ख़ुद भी इल्मे दीन सीखें और जिन पर उस का बस चलता हो, उन्हें भी इल्मे दीन सीखने की तरग़ीब दिलाए। अगर तमाम वालिदैन अपनी औलाद को, तमाम असातिज़ा अपने शागिर्दों को, तमाम पीर साहिबान अपने मुरीदों को और तमाम अफ़्सरान व साहिबे इक्तिदार हज़रात अपने मातहूतों को इल्मे दीन की तरफ़ लगा दें, तो कुछ ही अ़र्से में हर तरफ़ इल्मे दीन का दौर दौरा हो जाएगा और लोगों के मुआ़मलात ख़ुद बख़ुद शरीअ़त के मुताबिक़ होते

जाएंगे । आज कल जो नाज़ुक सूरते ह़ाल है इस का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि एक मरतबा सुनारों (ज्यूलर्ज़) की एक बड़ी ता'दाद को एक जगह जम्अ़ किया गया, जब उन से तफ़्सील के साथ उन का त़रीक़ए कार मा'लूम किया गया, तो वाज़ेह़ हुवा कि इस वक़्त सोने चांदी की तिजारत का जो त़रीक़ा राइज है, वोह तक़रीबन 80 फ़ीसद ख़िलाफ़े शरीअ़त है और ह़क़ीक़त येह है कि हमारी दीगर तिजारतें और मुलाज़मतें भी कुछ इसी क़िस्म की सूरते ह़ाल से दो चार हैं । जब मुआ़मला इतना नाज़ुक है, तो हर शख़्स अपनी ज़िम्मेदारी को महसूस कर सकता है, इस लिये हर शख़्स पर ज़रूरी है कि इ़ल्मे दीन सीखे और ह़त्तल इमकान दूसरों को सिखाए या इस राह पर लगाए ।

(सिरातुल जिनान, 6 / 290, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम

"बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़ा"

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आप ने सुना कि फ़र्ज़ उ़लूम सीखना किस क़दर ज़रूरी व अहम है, लिहाज़ा सुस्ती उड़ाइये, ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो जाइये और फ़र्ज़ उ़लूम सीखने, सिखाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये और ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों को अपना ओढ़ना बिछौना बना लीजिये । ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम **"बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़ा"** भी है जिस में नमाज़े फ़ज्र से फ़राग़त के बा'द मस्जिद में रोज़ाना 3 आयात की तिलावत मअ़ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान और तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान / तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान या तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, मदनी दर्स (दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत 4 सफ़ह़ात) और आख़िर में शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या ज़ियाइय्या अ़त्तारिय्या भी पढ़ा और सुना जाता है, इस के बा'द शजरे के कुछ न कुछ अवरादो वज़ाइफ़ और इश्राक़ व चाश्त के नवाफ़िल पढ़ने की भी तरकीब होती है ।

12 मदनी कामों में यौमिया इस मदनी काम "**बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़ा**" की तफ़्सीली मा'लूमात जानने के लिये मक्तबतुल मदीना के रिसाले "**बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़ा**" का मुत़ालआ़ कीजिये । तमाम इस्लामी भाई इस रिसाले का लाज़िमी मुत़ालआ़ फ़रमाएं । येह रिसाला मक्तबतुल मदीना के बस्ते पर दस्तयाब होने के साथ साथ दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislami.net से भी पढ़ा जा सकता है ।

इस रिसाले की बरकत से आप जान सकेंगे : ❖ बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़ा किसे कहते हैं ? ❖ मदनी ह़ल्क़ा लगाने का त़रीक़ा । ❖ अस्लाफ़ के मदनी ह़ल्क़े । ❖ मदनी ह़ल्क़े के मा'मूलात की वज़ाह़त । ❖ फ़ैज़ाने सुन्नत के बारे में मुफ़ीद बातें । ❖ शजरह शरीफ़ पढ़ने की बरकतें । ❖ दुआ़ के फ़वाइद । ❖ इश्राक़ व चाश्त की बरकतें । ❖ मदनी ह़ल्क़ा लगाने के फ़वाइद और ❖ मदनी ह़ल्क़ा लगाने की चन्द एह़तियातें वग़ैरा ।

❖ اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े की बरकत से मस्जिद में बैठने का सवाब ह़ासिल होता है । ❖ बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े की बरकत से तिलावते क़ुरआन करने और सुनने का शरफ़ ह़ासिल होता है । ❖ बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़ा क़ुरआने करीम को तर्जमा व तफ़्सीर के साथ समझने का बेहतरीन ज़रीआ़ है । ❖ बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े की बरकत से मदनी इन्आ़मात पर अ़मल होता है । ❖ बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े की बरकत से इश्राक़ व चाश्त के नवाफ़िल पढ़ने का मौक़अ़ मिलता है । ❖ बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े में बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم اَجْمَعِيْن के ज़िक्रे ख़ैर पर मुश्तमिल शजरह शरीफ़ पढ़ने, सुनने का शरफ़ ह़ासिल होता है और बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم اَجْمَعِيْن का तज़किरा करना बाइ़से रह़मत है । चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है । (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء، ۷ / ۳۳۵، رقم: ۱۰۷۵۰) लिहाज़ा आप भी इस मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहिये और "**बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े**" में शिर्कत कर के इस की बरकतें लूटने वालों में शामिल हो जाइये । आइये ! आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्तगी की एक ईमान अफ़रोज़ मदनी बहार सुनिये । चुनान्चे,

बुलन्द आवाज़ से कलिमए त़य्यिबा पढ़ना शुरूअ़ कर दिया

बाबुल इस्लाम के एक मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी, आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्तगी से पहले बहुत ज़ियादा मॉडर्न थे, ख़ुश नसीबी से उन्हें आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल नसीब हो गया, सुन्नतों पर अ़मल करने वाले आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तरबिय्यत की बरकत से नेकी की दा'वत की धूमें मचाने लगे। मदनी माह़ोल से वाबस्तगी के कुछ ही अ़र्से बा'द शव्वालुल मुकर्रम में एक रात नमाज़े इ़शा पढ़ कर फ़ारिग़ हुवे, तो अचानक सीने में दर्द (Pain) महसूस हुवा जो बढ़ता ही चला गया, डॉक्टर्ज़ के पास ले जाया गया, दवा से कुछ फ़र्क़ न पड़ा मगर फिर अचानक बुलन्द आवाज़ से कलिमए त़य्यिबा का विर्द शुरूअ़ कर दिया, उन के साह़िबज़ादे ने इस त़रह़ अचानक कलिमए त़य्यिबा का विर्द करने की वज्ह पूछी। तो उन्हों ने फ़रमाया : बेटा ! सामने देखो ! मेरे पीरो मुर्शिद, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه कलिमए त़य्यिबा पढ़ने की तल्क़ीन फ़रमा रहे हैं। येह कह कर दोबारा बुलन्द आवाज़ से कलिमए त़य्यिबा पढ़ना शुरूअ़ कर दिया और इसी त़रह़ कलिमए त़य्यिबा का विर्द करते करते उन का विसाल हो गया।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

अह़ादीसे मुबारका की ता'ज़ीम

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! बिला शुबा येह एक ह़क़ीक़त है कि जिस से इ़श्क़ हो जाता है, उस से निस्बत रखने वाली हर चीज़ से भी इ़श्क़ हो जाता है, मसलन मह़बूब के घर, उस के दरो दीवार, ह़त्ता कि मह़बूब के गली कूचों तक से अ़क़ीदत का तअ़ल्लुक़ (Relation) क़ाइम हो जाता है फिर भला जो इ़श्क़े नबी में गुम हो चुका हो, वोह आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत के सबब आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अह़ादीसे मुबारका से मह़ब्बत क्यूं न रखेगा और क्यूं न उन का अदबो एह़तिराम करेगा !

اَلْحَمْدُلِلّٰه हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का शुमार भी उन्ही बा कमाल हस्तियों में होता है जो अदब व ता'ज़ीम के पैकर और सच्चे आ़शिक़े रसूल थे। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अदब व ता'ज़ीम का दामन थाम कर इ़श्क़े मुस्त़फ़ा के गहरे समुन्दर में डूब कर लाखों अह़ादीसे करीमा में से **"सह़ीह़ बुख़ारी"** की सूरत में सह़ीह़ तरीन अह़ादीसे मुबारका का क़ीमती ख़ज़ाना जम्अ़ कर के उम्मते सरकार को अ़त़ा फ़रमाया। आइये ! इस मुबारक किताब की शानो अ़ज़मत सुनिये और झूमिये। चुनान्चे,

इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का ह़दीस लिखने का अन्दाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : اَلْحَمْدُلِلّٰه मैं ने **"सह़ीह़ बुख़ारी"** में तक़रीबन छे हज़ार अह़ादीस ज़िक्र की हैं। हर ह़दीस को लिखने से पहले ग़ुस्ल करता, दो रक्अ़त नफ़्ल नमाज़ अदा करता और इस्तिख़ारा करता, जब किसी ह़दीस की सिह्हत पर दिल जमता, तो उसे किताब में शामिल कर लेता। (هدی الساری، مقدمة، ۱/۱۰, नुज़्हतुल क़ारी, स. 130)

छे लाख ह़दीसों के ह़ाफ़िज़

एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं : मुझे छे लाख ह़दीसें याद हैं, जिन में से चुन चुन कर 16 साल में, मैं ने इस जामेअ़ (बुख़ारी) को लिखा है, मैं ने इसे अपने और **अल्लाह** पाक के दरमियान दलील बनाया है।

(مقدمہ فتح الباری، ص۱۰)

मैं ने अपनी इस किताब में सिर्फ़ सह़ीह़ अह़ादीस दाख़िल की हैं और जिन ह़दीसों को मैं ने इस ख़याल से कि किताब बहुत लम्बी न हो जाए, छोड़ दिया, वोह इस से बहुत ज़ियादा हैं। (नुज़्हतुल क़ारी, स. 130)

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने दीगर भी कई किताबें (मसलन अत्तारीख़ुल कबीर, अत्तारीख़ुल औसत़, अत्तारीख़ुस्सग़ीर, किताबुज़्ज़ुअ़फ़ा, ख़ल्क़े अफ़्आ़लुल इबाद, अल मुस्नदुल कबीर, किताबुल अ़लल, अल अदबुल मुफ़रद वग़ैरा) लिखी हैं मगर सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का वोह

अ़ज़ीम कारनामा है जिस ने न सिर्फ़ अ़वाम व ख़वास में मक़्बूलिय्यत की मे'राज पाई बल्कि बारगाहे रिसालत से भी इसे मक़्बूलिय्यत का ए'ज़ाज़ अ़ता हुवा, यूं कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّمَ ने इसे अपनी त़रफ़ मन्सूब करते हुवे "**मेरी किताब**" फ़रमाया। चुनान्चे,

बारगाहे रिसालत में सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ की मक़्बूलिय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़ैद मरवज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं एक मरतबा मक्के शरीफ़ में मक़ामे इब्राहीम और ह़जरे अस्वद के दरमियान सो रहा था कि मेरा नसीब जागा और ख़्वाब देखा कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّمَ फ़रमा रहे हैं : ऐ अबू ज़ैद ! किताबे शाफ़ेई का दर्स कब तक दोगे ? हमारी किताब का दर्स क्यूं नहीं देते ? आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّمَ ! मेरी जान आप (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّمَ) पर क़ुरबान ! आप (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّمَ) की किताब कौन सी है ? मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : जामेए़ मुह़म्मद बिन इस्माईल या'नी इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की किताब "**बुख़ारी शरीफ़**"।

(बोस्तानुल मुह़द्दिसीन, स. 275, मुलख़्ख़सन)

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! ग़ौर फ़रमाइये ! जिस किताब को रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّمَ पसन्द फ़रमाएं और उसे अपनी त़रफ़ मन्सूब फ़रमाएं, तो अन्दाज़ा लगाइये कि उसे पढ़ने, सुनने और उस का ख़त्म करने वालों को इस की कैसी कैसी बरकतें नसीब होंगी। आइये ! तरग़ीब के लिये ख़त्मे बुख़ारी की चन्द बरकतें मुलाह़ज़ा कीजिये। चुनान्चे,

ख़त्मे बुख़ारी के फ़वाइद

(बा'ज़) आ़रिफ़ीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से मन्क़ूल है : अगर किसी मुश्किल में सह़ीह़ बुख़ारी को पढ़ा जाए, तो वोह मुश्किल ह़ल हो जाती है और जिस किश्ती (Boat) में सह़ीह़ बुख़ारी हो, वोह ग़र्क़ नहीं होती। ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर

رَحْمَۃُ اللهِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ख़ुश्क साली में सह़ीह़ बुख़ारी पढ़ने से बारिश हो जाती है। (तज़किरतुल मुह़द्दिसीन, स. 198) मश्हूर मुह़द्दिस, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُ اللهِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : सख़्ती के वक़्त, दुश्मन के ख़ौफ़, मरज़ की सख़्ती और दीगर बलाओं में इस किताब का पढ़ना इलाज का काम देता है, अक्सर इस का तजरिबा हो चुका है।

(बोस्तानुल मुह़द्दिसीन, स. 274, मुलख़्ख़सन)

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللهِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बा'दे कुरआन शरीफ़ सह़ीह़ तर किताब "**बुख़ारी शरीफ़**" मानी गई है। मुसीबतों में ख़त्मे बुख़ारी किया जाता है, जिस की बरकत और **अल्लाह** पाक के फ़ज़्ल से मुसीबतें टल जाती हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 11, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

मजलिसे इस्लाह़ बराए क़ैदियान

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आप ने सुना कि "**सह़ीह़ बुख़ारी**" कैसी बरकतों वाली किताब है और इस की बरकत से कैसे कैसे मसाइल ह़ल हो जाते हैं। तो आइये ! आप भी फ़ैज़ाने इमाम बुख़ारी और फ़ैज़ाने सह़ीह़ बुख़ारी से माला माल होने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर ख़िदमते दीन के लिये अपनी ख़िदमात पेश कीजिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी दुन्या भर में ख़िदमते दीन के कमो बेश 107 शो'बाजात में सुन्नतों की धूमें मचा रही है, जिन में से एक शो'बा "**मजलिसे इस्लाह़ बराए क़ैदियान**" भी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! इस मजलिस के ज़रीए़ मुसलमान क़ैदियों की सुन्नतों भरी तरबिय्यत के लिये दुन्या के कई जेलख़ानों (Jails) में मदनी काम की तरकीब है। मुल्के अमीरे अहले सुन्नत की कई जेलों में ता'लीमे कुरआन के लिये मद्रसे क़ाइम हो चुके हैं, اِنْ شَآءَ الله तमाम जेलों में येह मदारिस क़ाइम

किये जाएंगे । कई जेलों में रोज़ाना शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल से दर्स दिया जाता है, मुख़्तलिफ़ जेलों में माहाना व हफ़्तावार इजतिमाए ज़िक्रो ना'त का सिलसिला भी होता है, दुख्यारे क़ैदियों को **"मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या"** के दिये हुवे ता'वीज़ात **फ़ी सबीलिल्लाह** पहुंचाए जाते हैं, रिहाई पाने वालों की तरबिय्यत के लिये मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ का एहतिमाम किया जाता है, मसलन 41 दिन का मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स, 63 दिन का मदनी तरबिय्यती कोर्स, 12 रोज़ा मदनी कोर्स, इमामत कोर्स और मुदर्रिस कोर्स वग़ैरा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! उ़मूमन एक आ़म इन्सान जब तक दुन्या में ज़िन्दा रहता है, उस वक़्त तो वोह दूसरों को फ़ाइदा पहुंचाने पर क़ुदरत रखता है मगर मरते ही येह सिलसिला ख़त्म हो जाता है मगर औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की शानो अ़ज़्मत इस क़दर बुलन्दो बाला होती है कि जब तक येह ह़ज़रात इस दुन्याए फ़ानी में अपनी ज़ाहिरी ह़यात के साथ मौजूद रहते हैं, तो नेक हों या बुरे सभी को फ़ैज़याब फ़रमाते और हर त़रफ़ अपनी बरकतें लूटाते हैं फिर जब येह ह़ज़रात अपने मज़ारे अक़्दस में तशरीफ़ ले जाते हैं, तो वहां भी उन की ज़ात और उन के मज़ार शरीफ़ से बरकात ज़ाहिर होती रहतीं और लोग फ़ैज़याब होते रहते हैं । आइये ! बा'दे विसाल ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की एक करामत और आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मज़ार शरीफ़ की एक बरकत मुलाह़ज़ा कीजिये । चुनान्चे,

सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वसीले से दुआ़

अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुब्की رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के विसाले ज़ाहिरी के (200 साल) बा'द समरक़न्द में बारिशें न होने की वज्ह से लोग पानी की बूंद बूंद को तरस गए, लोगों ने कई बार नमाज़े इस्तिस्क़ा पढ़ी और दुआ़एं मांगीं लेकिन बारिश न हुई फिर

एक नेक शख़्स जो दुन्या से बे रग़बती और तक़्वा व परहेज़गारी की वज्ह से मश्हूर था, शहर के क़ाज़ी के पास गया और उसे मश्वरा दिया कि तुम शहर के लोगों को ले कर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की क़ब्र पर जाओ और वहां जा कर **अल्लाह** पाक से बारिश की दुआ़ मांगो, शायद **अल्लाह** पाक तुम्हारी दुआ़ क़बूल फ़रमा ले । क़ाज़ी ने येह मश्वरा क़बूल कर लिया और लोगों के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की क़ब्र पर आया, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के वसीले से दुआ़एं कीं और गिर्या व ज़ारी की, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से दुआ़ क़बूल होने के लिये सिफ़ारिश की, निहायत ही ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से दुआ़ मांगी । उसी वक़्त आसमान पर बादल छा गए, सात रोज़ (Seven Days) तक मुसल्सल बारिश होती रही और इतनी बारिश हुई कि लोगों के लिये मक़ामे "**ख़रतन्क**" से "**समरक़न्द**" तक पहुंचना भी मुश्किल हो गया (ख़रतन्क से समरक़न्द तक सिर्फ़ 3 मील का फ़ासिला है) ।

(طبقات الشافعیۃ الکبری، الطبقۃ الثانیۃ، ۲/ ۲۳۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن और अहले ह़क़ उ़लमाए किराम का येह मा'मूल रहा है कि वोह अपनी मुश्किलात के ह़ल के लिये औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के मज़ारात पर ह़ाज़िरी दिया करते और मन की मुरादें पाते थे । आइये ! बरकत ह़ासिल करने के लिये बुज़ुर्गों के मज़ारात पर जाने की बरकात के बारे में 2 रिवायात सुनिये । चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन इब्राहीम ख़ल्लाल ह़म्बली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुझे जब कोई ह़ाजत पेश आती, तो मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मूसा बिन जा'फ़र رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का वसीला पेश करता हूं, **अल्लाह** करीम मेरी मुश्किल को आसान कर के मुझे मेरी मुराद अ़त़ा फ़रमा देता है ।

(تاریخ بغداد، مقدمۃ المصنف، باب ماذکر فی مقابر بغداد ... الخ، ۱/ ۱۳۳)

शाफ़ेइय्यों के अ़ज़ीम पेश्वा, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इद्रीस शाफ़ेई رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मुझे जब कोई ह़ाजत पेश आती है, तो मैं दो रक्अ़त नमाज़ अदा कर के ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के मज़ार शरीफ़ पर जा कर **अल्लाह** करीम से दुआ़ मांगता हूं, **अल्लाह** पाक मेरी ह़ाजत जल्द पूरी कर देता है।

(الخیرات الحِسان، الفصل الخامس والثلاثون، ص ۹۴ ملتقطاً)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने रमज़ान ! रमज़ानुल मुबारक के बा'द शव्वालुल मुकर्रम की आमद आमद है। ख़ुश नसीब मुसलमान इस महीने में एहतिमाम के साथ ईदुल फ़ित्ऱ के बा'द 6 रोज़े रखने की सआ़दत ह़ासिल करते और इस की बरकतें पाते हैं। आइये ! हम भी शश ईद के रोज़ों के फ़ज़ाइल सुनते हैं ताकि हमें भी येह रोज़े रखने और इन की बरकतों से फ़ैज़याब होने की सआ़दत नसीब हो। चुनान्चे,

शश ईद के रोज़ों के फ़ज़ाइल

1. इरशाद फ़रमाया : जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे फिर छे दिन शव्वाल में रखे, तो गुनाहों से ऐसे निकल गया, जैसे आज ही मां के पेट से पैदा हुवा है। (مجمع الزوائد، کتاب الصیام، باب فیمن صام... الخ، ۳/۴۲۵، حدیث: ۵۱۰۲)
2. इरशाद फ़रमाया : जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे फिर उन के बा'द छे शव्वाल में रखे, तो ऐसा है जैसे उ़म्र भर का रोज़ा रखा।

(مسلم، کتاب الصیام، باب استحباب صوم... الخ، ص ۵۹۲، حدیث: ۲۷۵۸)

3. इरशाद फ़रमाया : जिस ने ईदुल फ़ित्ऱ के बा'द (शव्वाल में) छे रोज़े रख लिये, तो उस ने पूरे साल के रोज़े रखे कि जो एक नेकी लाएगा, उसे दस मिलेंगी। (ابن ماجه، کتاب الصیام، باب الصیام ستة ایام... الخ، ۲/۳۳۳، حدیث: ۱۷۱۵)

ख़लीले मिल्लत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद ख़लील ख़ान क़ादिरी बरकाती رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : येह रोज़े ईद के बा'द मुसल्सल रखे जाएं तब भी ह़रज नहीं और बेहतर येह है कि हर हफ़्ते में दो रोज़े और

ईदुल फ़ित्र के दूसरे रोज़ एक रोज़ा रख ले और पूरे माह में रखे, तो और भी मुनासिब (Suitable) मा'लूम होता है। (सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, स. 347, मुलख़्ख़सन) अल ग़रज़ ! ईदुल फ़ित्र का दिन छोड़ कर सारे महीने में जब चाहें शश ईद के रोज़े रख सकते हैं, लिहाज़ा तमाम इस्लामी भाई येह निय्यत कीजिये कि अगर ज़िन्दगी सलामत रही, तो ख़ुद भी शश ईद के रोज़े रख कर इन की बरकतें ह़ासिल करेंगे और दूसरों को भी येह रोज़े रखने की भरपूर तरग़ीब दिलाएंगे। اِنْ شَآءَ الله

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ह़दीसे पाक के बारे में मदनी फूल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे आइये ! ह़दीसे पाक के बारे में चन्द मदनी फूल सुनने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं। पहले 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिये :

1. फ़रमाया : जो शख़्स दीनी मुआ़मलात के बारे में चालीस ह़दीसें याद कर के मेरी उम्मत तक पहुंचा देगा, **अल्लाह** पाक (क़ियामत के दिन) उस को इस शान के साथ उठाएगा कि वोह फ़क़ीह होगा, मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा और उस के लिये गवाही दूंगा।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب العلم، الفصل الثالث، ۱/۶۸، حدیث: ۲۵۸)

2. फ़रमाया : **अल्लाह** पाक उस को तरो ताज़ा रखे जो मेरी ह़दीस को सुने, याद रखे और दूसरों तक पहुंचाए। (ترمذی، ۴/۲۹۸، حدیث: ۲۶۶۵)

❖ इस्लाम में कलामुल्लाह (या'नी कुरआने करीम) के बा'द कलामे रसूलिल्लाह (या'नी अह़ादीसे मुबारका) का दरजा है। (मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 2) ❖ हर इन्सान पर हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام की इत़ाअ़त फ़र्ज़ है और येह इत़ाअ़त बिग़ैर ह़दीस व सुन्नत जाने ना मुमकिन है। (मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 9) ❖ अह़ादीस से इन्कार के बा'द कुरआन पर ईमान का दा'वा बात़िले महज़ है। (नुज़्हतुल क़ारी, 1 / 36) ❖ जब तक येह मा'लूम न हो जाए कि येह वाक़ेई ह़दीसे मुबारका है, उस वक़्त तक बयान न करें। (फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म, 2 / 451) ❖ आक़ा عَلَيْهِ السَّلَام का फ़रमान है : जब तक तुम्हें यक़ीनी इ़ल्म न हो, मेरी त़रफ़ से ह़दीस बयान करने

से बचो ! जिस ने जान बूझ कर मेरी त़रफ़ झूट मन्सूब किया, उसे चाहिये कि वोह अपना ठिकाना दोज़ख़ में बना ले । (ترمذی، کتاب تفسیر القرآن عن رسول اللہ،باب ماجاء فی الذی۔۔۔الخ، ۴/۴۳۹،حدیث: ۲۹۶۰)

❖ ऐस ऐम ऐस (SMS) के ज़रीए बिग़ैर ह़वाले के कोई भी ह़दीस आगे न भेजें जब तक किसी सुन्नी दुरुस्त अ़क़ीदे वाले मुफ़्ती साह़िब या किसी सुन्नी आ़लिमे दीन से तस्दीक़ न करवा लें । (फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म, 2 / 440)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब कभी दाख़िले मस्जिद हों, याद आने पर ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लिया करें कि जब तक मस्जिद में रहेंगे, ए'तिकाफ़ का सवाब मिलता रहेगा । याद रखिये ! मस्जिद में खाने, पीने, सोने या सह़री, इफ़्त़ारी करने, यहां तक कि आबे ज़मज़म या दम किया हुवा पानी पीने की भी शरअ़न इजाज़त नहीं ! अलबत्ता अगर ए'तिकाफ़ की निय्यत होगी, तो येह सब चीज़ें ज़िमनन जाइज़ हो जाएंगी । ए'तिकाफ़ की निय्यत भी सिर्फ़ खाने, पीने या सोने के लिये नहीं होनी चाहिये बल्कि इस का मक़्सद **अल्लाह** करीम की रिज़ा हो । **फ़तावा शामी** में है : अगर कोई मस्जिद में खाना, पीना, सोना चाहे, तो ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ले, कुछ देर ज़िक्रुल्लाह करे फिर जो चाहे करे (या'नी अब चाहे तो खा, पी या सो सकता है) ।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ كَانَتْ شَفَاعَةٌ لَّهٗ عِنْدِيْ يَوْمَ الْقِيَامَة जो मुझ पर जुमुआ़ के दिन दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा, मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा ।

(جمع الجوامع، ۷/۱۹۹، حدیث: ۲۲۳۵۲)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आइये ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲)

मदनी फूल : बयान में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

बयान सुनने की निय्यतें

۞ निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम के लिये जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मक्कए पाक वोह अ़ज़ीम और मुक़द्दस तरीन शहर है जिस के फ़ज़ाइल क़ुरआन व अहादीस में बयान हुवे हैं । आइये ! आज के इस हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में हम भी इस पाकीज़ा शहर के फ़ज़ाइल व ख़ुसूसिय्यात के बारे में सुनते हैं । पारह 4, सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 96 में इरशादे बारी है :

اِنَّ اَوَّلَ بَیْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِیْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّ هُدًى لِّلْعٰلَمِیْنَۚ (۹۶)

(پ۴، اٰلِ عمران:۹۶)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : *बेशक सब से पहला घर जो लोगों की इबादत के लिये बनाया गया वोह है जो मक्का में है, बरकत वाला है और सारे जहान वालों के लिये हिदायत है ।*

बयान कर्दा आयते मुक़द्दसा के तह़्त **"तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान"** में लिखा है : रूए ज़मीन पर इबादत के लिये सब से पहले जो घर तय्यार हुवा, वोह ख़ानए का'बा है । ह़दीस शरीफ़ में है : का'बए मुअ़ज़्ज़मा, बैतुल मक़्दिस से चालीस साल क़ब्ल बनाया गया । (بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، ۱۱-باب، ۲/۴۲۷، حدیث:۳۳۶۶) और फ़िरिश्तों का क़िब्ला बैतुल मा'मूर है जो आसमान में है और ख़ानए का'बा के बिल्कुल ऊपर है । (کنزالعمال، کتاب الفضائل، باب فی فضائل الامکنة، ۷/۴۹، الجزء الرابع عشر، حدیث: ۳۸۰۸۱)

का'बए मुअ़ज़्ज़मा की ख़ुसूसिय्यात

इस आयत और इस के बा'द वाली आयत में का'बए मुअ़ज़्ज़मा की बहुत सी ख़ुसूसिय्यात बयान हुई हैं : (1) सब से पहली इबादत गाह है कि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इस की त़रफ़ नमाज़ पढ़ी । (2) तमाम लोगों

की इ़बादत के लिये बनाया गया जब कि बैतुल मक़्दिस मख़्सूस वक़्त में ख़ास लोगों का क़िब्ला रहा। (3) मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में वाक़ेअ़ है जहां एक नेकी का सवाब एक लाख है। (4) इस का ह़ज फ़र्ज़ किया गया। (5) ह़ज हमेशा सिर्फ़ इसी का हुवा, बैतुल मक़्दिस क़िब्ला ज़रूर रहा है लेकिन कभी उस का ह़ज न हुवा। (6) इसे अम्न का मक़ाम क़रार दिया। (7) इस में बहुत सी निशानियां रखी गईं जिन में एक मक़ामे इब्राहीम (भी) है।

(तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, 2 / 14, 15)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बैतुल्लाह शरीफ़ का ह़ज करना वोह अ़ज़ीम और उ़म्दा इ़बादत है कि आ़शिक़ाने रसूल इस अ़ज़ीम इ़बादत को करने के लिये गिड़गिड़ा कर दुआ़एं मांगते हैं, दूसरों से दुआ़एं करवाते हैं, इस मक़्सद को पाने की ख़ातिर कमेटियां डालते हैं, अपनी ह़लाल कमाई में से कुछ न कुछ अलग से जम्अ़ करते हैं फिर मख़्सूस रक़म जम्अ़ हो जाने के बा'द फ़रीज़ए ह़ज की अदाएगी के लिये इस उम्मीद पर दरख़ास्तें (Applications) जम्अ़ करवाते हैं कि اِنْ شَآءَ اللّٰہ अब की बार उन का नाम भी क़ुरआ़ अन्दाज़ी में निकलेगा और वोह भी ह़ज की सआ़दत पा कर वहां के दिलरुबा नज़्ज़ारों से अपनी आंखें ठन्डी करेंगे, मक़ामाते मुक़द्दसा पर जा कर रो रो कर अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगेंगे, अपना ह़ाले दिल सुनाएंगे और दुन्या व आख़िरत की भलाइयां त़लब करेंगे फिर जिस का नाम क़ुरआ़ अन्दाज़ी में निकल आता है, तो उस की ख़ुशी की इन्तिहा नहीं रहती क्यूंकि कुछ ही दिनों बा'द वोह ख़्वाब में नहीं बल्कि ह़क़ीक़त में उस शहरे मह़बूब या'नी मक्कए मुकर्रमा की ह़ुदूद में दाख़िल हो जाएगा जिस की शानो अ़ज़मत क़ुरआने करीम में बयान हुई है। चुनान्चे, पारह 30, सूरतुल बलद की आयत नम्बर 1 और 2 में इरशादे बारी है :

لَاۤ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِۙ(۱) وَ اَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِۙ(۲) (پ۳۰، البلد: ۱تا۲)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : *मुझे इस शहर की क़सम ! जब कि तुम इस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हो।*

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुफ़स्सिरीने किराम (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) का इस बात पर इजमाअ़ (या'नी इत्तिफ़ाक़) है कि इस आयते मुबारका में **अल्लाह** पाक ने जिस शहर की क़सम ज़िक्र फ़रमाई है, वोह मक्कए मुकर्रमा है। इसी आयते मुबारका की त़रफ़ इशारा करते हुवे अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّمَ की जनाब (बारगाह) में यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّمَ ! मेरे मां-बाप आप पर फ़िदा हों ! आप की फ़ज़ीलत **अल्लाह** पाक के हां इतनी बुलन्द है कि आप की ह़याते मुबारका की ही **अल्लाह** करीम ने क़सम ज़िक्र फ़रमाई है, न कि दूसरे अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की और आप का मक़ामो मर्तबा उस के हां इतना बुलन्द है कि उस ने لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ के ज़रीए आप के मुबारक क़दमों की ख़ाक की क़सम ज़िक्र फ़रमाई है।

(फ़तावा रज़विय्या, 5 / 556, شرح زرقانی علی المواهب، الفصل الخامس۔۔۔ الخ، ۸/۴۹۳)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ कुरआने करीम मक्के शरीफ़ की शानो अ़ज़मत की गवाही दे रहा है, इसी त़रह़ मुख़्तलिफ़ अह़ादीसे मुबारका में भी मक्कए पाक के अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ाइल को बयान किया गया है। आइये ! दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّمَ सुनते हैं ताकि हमारे दिलो दिमाग़ में भी इस मुक़द्दस शहर की शानो अ़ज़मत मज़ीद वाज़ेह़ हो जाए। चुनान्चे,

1. इरशाद फ़रमाया : لَا يَدْخُلُ الدَّجَّالُ مَكَّةَ وَلَا الْمَدِيْنَةَ मक्के और मदीने में दज्जाल दाख़िल नहीं हो सकेगा। (مسند امام احمد، ۱۰/۸۵، حدیث: ۲۶۱۰۶)
2. इरशाद फ़रमाया : जिस शख़्स की ह़ज या उ़मरह करने की निय्यत थी और इसी ह़ालत में उसे ह़-रमैन या'नी मक्के या मदीने में मौत आ गई, तो **अल्लाह** पाक उसे क़ियामत के दिन इस त़रह़ उठाएगा कि उस पर न ह़िसाब होगा, न अ़ज़ाब। एक दूसरी रिवायत में है : بُعِثَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ वोह क़ियामत के दिन अम्न वाले लोगों में उठाया जाएगा। (مصنف عبد الرزاق، ۹/۱۷۴، حدیث: ۱۷۴۷۹)

मक्कए मुकर्रमा के बा बरकत मक़ामात

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! शहरे महबूब या'नी मक्कए मुकर्रमा में फ़ज़ीलत व बरकत वाले बहुत से मक़ामात मौजूद हैं मगर उन सब में का'बे शरीफ़ को सब से ज़ियादा फ़ज़ीलत हासिल है । आइये ! बरकत हासिल करने के लिये ख़ानए का'बा की शानो अ़ज़मत मुलाहज़ा कीजिये । चुनान्चे,

का'बा सोने की ज़न्जीरों में बांध कर महशर में लाया जाएगा

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं, तौरात शरीफ़ में है : **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन अपने 7 लाख मुक़र्रब फ़िरिश्तों को भेजेगा जिन में से हर एक के हाथ में सोने की एक ज़न्जीर होगी । **अल्लाह** पाक फ़रमाएगा : जाओ ! और का'बे को इन ज़न्जीरों में बांध कर महशर की त़रफ़ ले आओ । फ़िरिश्ते जाएंगे, उसे ज़न्जीरों से बांध कर खींचेंगे और एक फ़िरिश्ता पुकारेगा : ऐ का'बतुल्लाह ! चल ! तो का'बए मुबारका कहेगा : मैं नहीं चलूंगा ! जब तक मेरा सुवाल पूरा न हो जाए । आसमान से एक फ़िरिश्ता पुकारेगा : तू सुवाल कर ! तो का'बा शरीफ़ **अल्लाह** पाक से अ़र्ज़ करेगा : ऐ **अल्लाह** पाक ! तू मेरे पड़ोस में दफ़्न किये गए मोमिनीन के ह़क़ में मेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा । तो का'बा शरीफ़ एक आवाज़ सुनेगा : मैं ने तेरी दरख़ास्त क़बूल फ़रमा ली । हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : फिर मक्कए पाक में दफ़्न होने वालों को उठाया जाएगा जिन के चेहरे सफ़ेद होंगे, वोह सब एह़राम की ह़ालत में का'बे के गिर्द जम्अ़ हो कर तल्बिया (या'नी लब्बैक) कह रहे होंगे । फिर फ़िरिश्ते कहेंगे : ऐ का'बा ! अब चल ! तो वोह कहेगा : मैं नहीं चलूंगा ! जब तक कि मेरी दरख़ास्त क़बूल हो जाए । आसमान से एक फ़िरिश्ता पुकारेगा : तू मांग ! तुझे दिया जाएगा । तो का'बा शरीफ़ कहेगा : ऐ **अल्लाह** पाक ! तेरे गुनहगार बन्दे जो इकठ्ठे हो कर दूर दूर से मेरे पास आए, उन्हों ने अपने घर वालों और दोस्तों को छोड़ा, उन्हों ने ज़ियारत के शौक़ और फ़रमां बरदारी में निकल कर तेरे हुक्म के मुत़ाबिक़ अरकाने ह़ज अदा किये, तो मैं तुझ से सुवाल करता हूं कि उन के ह़क़ में मेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा, उन को क़ियामत की घबराहट से अम्न अ़त़ा फ़रमा और उन्हें मेरे आस पास जम्अ़ कर दे । तो एक फ़िरिश्ता

पुकारेगा : ऐ का'बा ! उन में ऐसे लोग भी होंगे जिन्हों ने तेरे त़वाफ़ के बा'द गुनाह किये होंगे और उन पर अड़ कर अपने ऊपर दोज़ख़ को वाजिब कर लिया होगा । तो का'बा अ़र्ज़ करेगा : ऐ **अल्लाह** पाक ! उन गुनहगारों के ह़क़ में भी मेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा जिन पर दोज़ख़ वाजिब हो चुका है । तो **अल्लाह** पाक फ़रमाएगा : मैं ने उन के ह़क़ में तेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाई । तो वोही फ़िरिश्ता पुकारेगा : जिस ने का'बे की ज़ियारत की थी, वोह दीगर लोगों से अलग हो जाए । **अल्लाह** पाक उन सब को का'बे के आस पास जम्अ़ कर देगा, उन के चेहरे सफ़ेद होंगे और वोह जहन्नम से बे ख़ौफ़ हो कर त़वाफ़ करते हुवे तल्बिया (या'नी लब्बैक) कहेंगे । फिर फ़िरिश्ता पुकारेगा : ऐ का'बतुल्लाह ! चल ! तो का'बा शरीफ़ (इस त़रह़) तल्बिया (या'नी लब्बैक) कहेगा :

لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ، وَالْخَيْرُ كُلُّهٗ، بِيَدَيْكَ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ، اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ

फिर फ़िरिश्ते उस को खींच कर मैदाने महशर तक ले जाएंगे । (الروض الفائق ص٦٦)

लश्करे सुलैमान और का'बा

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का तख़्त हवा में उड़ता जा रहा था, जब का'बे शरीफ़ से गुज़रा, तो का'बा रोया और **अल्लाह** पाक की बारगाह में अ़र्ज़ की : एक नबी, तेरे अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से और एक लश्कर, तेरे लश्करों से गुज़रा, न मुझ में उतरा, न नमाज़ पढ़ी । इस पर **अल्लाह** पाक ने इरशाद फ़रमाया : न रो ! मैं तेरा ह़ज अपने बन्दों पर फ़र्ज़ करूंगा, जो तेरी त़रफ़ ऐसे टूटेंगे जैसे परिन्दे अपने घोंसले की त़रफ़ और ऐसे रोते हुवे दौड़ेंगे जिस त़रह़ ऊंटनी अपने बच्चे के शौक़ में, तेरे शहर में रसूले अन्वर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पैदा करूंगा जो मुझे सब नबियों (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) से ज़ियादा प्यारा है । (تفسیر بغوی، ۳/۳۵۱ملخّصاً)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने सुना कि **अल्लाह** पाक ने मक्के शरीफ़ को कैसी अ़ज़ीमुश्शान ख़ुसूसिय्यात व बरकात से नवाज़ा है, लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम दुन्यावी उल्झनों में उल्झे रहने के बजाए मक्के मदीने की ह़ाज़िरी के लिये कोशिशें जारी रखें, इस के लिये **अल्लाह** पाक

की बारगाह में रो रो कर दुआ़एं मांगें, मां-बाप और **अल्लाह** पाक के मक़्बूल बन्दों की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर उन से दुआ़एं करवाएं, इस उम्मीद पर कि कभी तो बाबे करम खुलेगा, कभी तो हमारा भी बुलावा आ जाएगा और कभी तो हमारा नाम भी खुश नसीब ह़ाजियों की फ़ेह्रिस्त (List) में शामिल होगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! शहरे मक्का को सिर्फ़ येही एक शरफ़ ह़ासिल होता तो भी इस की शानो अ़ज़मत के लिये काफ़ी था कि इस मुबारक सर ज़मीन पर बैतुल्लाह शरीफ़ अपनी बरकतें लुटा रहा है मगर क़ुरबान जाइये ! इस के इलावा भी इस मुबारक शहर के फ़ज़ाइल व ख़ुसूसिय्यात हैं और वोह इस क़दर ज़ियादा हैं कि दिल चाहता है बस बयान करते और सुनते चले जाएं क्यूंकि इस मुक़द्दस शहर (Holy City) में जगह जगह नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم से निस्बत रखने वाली मुक़द्दस व यादगार मसाजिद, कुंवें, ग़ारें, ता'मीरात और मज़ाराते मुक़द्दसा वग़ैरा मौजूद हैं। आइये ! बरकत ह़ासिल करने के लिये मक्के शरीफ़ की चन्द ख़ुसूसिय्यात के बारे में सुनिये और अपने दिल में इस पाकीज़ा शहर की अ़ज़मत मज़ीद बढ़ाने का सामान कीजिये। चुनान्चे,

मक्कए मुकर्रमा की चन्द ख़ुसूसिय्यात

﴾1﴿...प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक्के शरीफ़ में पैदा हुवे।

क़बूलिय्यते दुआ़ का मक़ाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा कुत़्बुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जिस मुबारक मक़ाम पर रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत हुई, उस मक़ाम पर दुआ़ क़बूल होती है। (بلد الامین، ص۲۰۱)

ख़लीफ़ा हारून रशीद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की वालिदए मोह़तरमा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا ने यहां मस्जिद ता'मीर करवाई थी। आज कल इस मकाने अ़ज़मत निशान की जगह लाइब्रेरी (Library) क़ाइम है और उस पर येह बोर्ड लगा हुवा है : ''مَكْتَبَةُ مَكَّةَ الْمُكَرَّمَة''। (आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 237)

﴾2﴿...नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने दीने इस्लाम की तब्लीग़ का आग़ाज़ यहीं से फ़रमाया।

﴾3﴿...यहीं का'बा शरीफ़ है, इसी का त़वाफ़ किया जाता है और नमाज़ में दुन्या भर से इसी त़रफ़ मुंह किया जाता है। आइये ! त़वाफ़े का'बा के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّمَ सुनते हैं :

त़वाफ़े का'बा के फ़ज़ाइल

1. जिस ने गिन कर त़वाफ़ के 7 फेरे किये और फिर 2 रक्अ़तें अदा कीं, तो येह एक ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर है और त़वाफ़ करते हुवे आदमी के हर क़दम के बदले उस के लिये दस नेकियां लिखी जाती हैं और उस के दस गुनाह मिटा दिये जाते हैं और दस दरजात बुलन्द कर दिये जाते हैं। (مسند امام احمد، ۲/۲۰۲، حدیث: ۴۴۶۲)
2. जो बैतुल्लाह के त़वाफ़ के 7 फेरे करे और उस में कोई बेहूदा बात न करे, तो येह एक ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर है। (معجم کبیر، ۲۰، ص ۳۶۰، حدیث: ۸۴۵)
3. जिस ने 50 बार बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ किया, तो वोह गुनाहों से ऐसा निकल गया जैसे उस दिन कि (अपनी) मां के पेट से पैदा हुवा था।

(ترمذی، ابواب الحج، باب ماجاء فی فضل الطواف، حدیث: ۸۶۶، ص ۱۷۳۳)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿...मस्जिदुल ह़राम शरीफ़, मक्के शरीफ़ में है जिस में एक नमाज़ का सवाब एक लाख नमाज़ों के बराबर है। जैसा कि :

मस्जिदे ह़राम में नमाज़ पढ़ने का सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : मेरी इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ना मस्जिदे ह़राम के इ़लावा दीगर मसाजिद में एक हज़ार नमाज़ें पढ़ने से अफ़्ज़ल है और मस्जिदे ह़राम में एक नमाज़ पढ़ना दीगर मसाजिद में एक लाख नमाज़ें पढ़ने से अफ़्ज़ल है। (مسند احمد، مسند جابر بن عبد اللہ، ۵/۱۰۸، رقم: ۱۴۷۰۰)

﴾5﴿...आबे ज़मज़म का कुंवां भी यहीं पर वाक़ेअ़ है।

आबे ज़मज़म की बरकतें

आबे ज़मज़म की बरकतें बयान करते हुवे नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आबे ज़मज़म हर उस मक़्सद के लिये है जिस मक़्सद के लिये उसे पिया जाए, अगर तुम उसे शिफ़ा की ग़रज़ से पियोगे, तो **अल्लाह** पाक तुम्हें शिफ़ा देगा, अगर तुम उसे पनाह ह़ासिल करने के लिये पियोगे, तो **अल्लाह** पाक तुम्हें पनाह अ़त़ा फ़रमाएगा, अगर तुम उसे अपनी प्यास बुझाने के लिये पियोगे, तो **अल्लाह** पाक तुम्हारी प्यास बुझा देगा। (इस ह़दीसे पाक को रिवायत करने वाले बयान करते हैं कि) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا जब आबे ज़मज़म पीते, तो येह दुआ मांगते : اَللّٰهُمَّ اَسْاَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَّرِزْقًا وَّاسِعًا وَّشِفَاءً مِّنْ كُلِّ دَاءٍ ऐ **अल्लाह** पाक ! मैं तुझ से फ़ाइदा देने वाला इ़ल्म, कुशादा रिज़्क़ और हर बीमारी से शिफ़ा का सुवाल करता हूं।

(مستدرک، کتاب المناسک، باب ماء زمزم لما شرب لہ، ۲/۱۳۲، رقم: ۱۷۸۲)

﴿6﴾...ह़जरे अस्वद और मक़ामे इब्राहीम भी इसी मुक़द्दस शहर में हैं।

ह़जरे अस्वद और मक़ामे इब्राहीम

ह़जरे अस्वद जन्नती पथ्थर है, रुक्न (या'नी ह़जरे अस्वद) और मक़ामे (इब्राहीम) दो जन्नती याक़ूत हैं। पहले बहुत नूरानी थे, **अल्लाह** पाक ने इन का नूर छुपा दिया, अगर ऐसा न होता, तो येह मश्रिक़ो मग़रिब को चमकाते। (तफ़्सीरे नईमी, 1 / 630) जब संगे अस्वद दीवारे का'बा में क़ाइम किया गया, तो उस की रौशनी चारों त़रफ़ दूर तक जाती थी, जहां तक उस की रौशनी पहुंची वहां तक ह़रम की ह़ुदूद मुक़र्रर हुईं, जिस में शिकार करना मन्अ़ है और संगे अस्वद का रंग बिल्कुल सफ़ेद था, गुनहगारों के हाथों से सियाह (काले रंग का) हो गया। (तफ़्सीरे नईमी, स. 680, 681)

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे चूमा है। अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूफ़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : ऐ ह़जरे अस्वद ! मैं जानता हूं तू पथ्थर है, फ़ाइदा व नुक़्सान का मालिक नहीं ! अगर मैं ने नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم को तुझे चूमते न देखा होता, तो तुझे कभी न चूमता। (بلد الامین، ص ۶۱)

रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन येह पथ्थर उठाया जाएगा, इस की दो आंखें होंगी जिस से देखेगा, ज़बान होगी जिस से बोलेगा और अपने आप को चूमने वाले के ह़क़ में गवाही देगा।

(ترمذی، ۲/۲۸۶، حدیث: ۹۶۳)

इस का छूना गुनाहों को मिटाता है। नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّمَ ने अपने नबी होने का ए'लान भी न फ़रमाया था, उस वक़्त भी येह पथ्थर मुबारक आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّمَ को सलाम कहता था। इस पथ्थर शरीफ़ को फिर एक मरतबा अपनी अस्ल शक्ल पर कर दिया जाएगा, क़ियामत के दिन इस की लम्बाई और चौड़ाई जबले अबी क़ुबैस जितनी होगी।

(بلد الامین، ص ۶۲۔ الجامع اللطیف لابن ظہیرۃ، ص ۳۷-۳۸)

﴿7﴾...सफ़ा व मरवह भी इसी शहर में हैं। येह दोनों पहाड़ **अल्लाह** पाक की निशानियों में से हैं। चुनान्चे, पारह 2, सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 158 में इरशादे बारी है :

اِنَّ الصَّفَا وَ الْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآىٕرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَیْتَ اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْهِ اَنْ یَّطَّوَّفَ بِهِمَا ؕ وَ مَنْ تَطَوَّعَ خَیْرًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِیْمٌ ﴿۱۵۸﴾

(پ۲، البقرۃ: ۱۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : *बेशक सफ़ा और मरवह* **अल्लाह** *की निशानियों में से हैं, तो जो इस घर का ह़ज या उ़मरह करे, उस पर कुछ गुनाह नहीं कि इन दोनों के चक्कर लगाए और जो कोई अपनी त़रफ़ से भलाई करे, तो बेशक* **अल्लाह** *नेकी का बदला देने वाला, ख़बरदार है।*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

मीक़ात का बयान

﴿8﴾...मीक़ात के बाहर से आने वाले बिग़ैर एह़राम के मक्के में दाख़िल नहीं हो सकते।

मीक़ात की ता'रीफ़

मीक़ात उस जगह को कहते हैं कि मक्कए पाक जाने वाले आफ़ाक़ी को बिग़ैर एह़राम वहां से आगे जाना जाइज़ नहीं, चाहे तिजारत या किसी भी ग़रज़

से जाता हो, यहां तक कि मक्कए पाक के रहने वाले भी अगर मीक़ात की हुदूद (मसलन त़ाइफ़ या मदीनए पाक) जाएं, तो उन्हें भी अब बिग़ैर एह़राम मक्कए पाक आना नाजाइज़ है। (रफ़ीकुल ह़-रमैन, स. 63)

﴾9﴿...दुन्या भर से मुसलमान ह़ज की सआ़दत पाने के लिये यहीं मक्कए पाक ह़ाज़िर होते हैं।

﴾10﴿...जो इस शहरे मुक़द्दस में दाख़िल हो जाए, अम्न पाने वाला होगा। चुनान्चे, पारह 1, सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 126 में इरशाद होता है :

وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا (پ۱، البقرة:۱۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और याद करो जब इब्राहीम ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! इस शहर को अम्न वाला बना दे।

﴾11﴿...मक्कए पाक की एक ख़ुसूसिय्यत येह भी है कि दिन का कुछ वक़्त यहां की गर्मी पर सब्र कर लेने वाले को जहन्नम की आग से दूर किया जाता है। चुनान्चे,

मक्के की गर्मी पर सब्र की फ़ज़ीलत

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ صَبَرَ عَلٰى حَرِّ مَكَّةَ سَاعَةً مِّنْ نَهَارٍ تَبَاعَدَتْ مِنْهُ النَّارُ

जो शख़्स दिन के कुछ वक़्त मक्के की गर्मी पर सब्र करे, दोज़ख़ की आग उस से दूर हो जाती है। (اخبار مكة، ۲/۳۱۱، حديث: ۱۵۶۵)

ग़ारे ह़िरा

﴾12﴿...यहां ग़ारे ह़िरा है, जहां मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّمَ पर पहली वह़्य नाज़िल हुई। रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّمَ अपने रसूल होने का ए'लान करने से पहले ग़ारे ह़िरा में ज़िक्र व फ़िक्र में मश्ग़ूल रहे हैं। येह क़िब्ले की जानिब वाक़ेअ़ है। नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّمَ पर पहली वह़्य इसी ग़ार में उतरी जो कि اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ ۚ से مَا لَمْ یَعْلَمْ ؕ तक 5 आयतें हैं। येह ग़ार मुबारक मस्जिदुल ह़राम से मश्रिक़ की त़रफ़ तक़रीबन 3 मील के फ़ासिले पर वाक़ेअ़ "**जबले ह़िरा**" पर है। इस मुबारक पहाड़ को "**जबले नूर**" भी

कहते हैं । **"ग़ारे हिरा" "ग़ारे सौर"** से अफ़्ज़ल है क्यूंकि ग़ारे सौर ने तीन दिन (Three Days) तक रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّمَ के क़दम चूमे जब कि ग़ारे हिरा नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّمَ की मुबारक सोहबत से ज़ियादा अ़र्सा मुशर्रफ़ हुवा। (आ़शिक़ाने रसूल की 130 हिकायात, स. 241, मुलख़्ख़सन)

﴾13﴿...मक्कए पाक की एक ख़ुसूसिय्यत येह भी है कि यहां पर हर मौसिम के फल (Fruits) मिलते हैं।

﴾14﴿...और ﴾15﴿...मे'राजुन्नबी और चांद के दो टुक्ड़े होने के मो'जिज़ात इसी शहर में ज़ाहिर हुवे।

चांद दो टुक्ड़े हो गया

कुफ़्फ़ारे मक्का ने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّمَ से मो'जिज़ा त़लब किया, तो करीम आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّمَ ने चांद को दो टुक्ड़े कर के दिखा दिया, एक टुक्ड़ा **"जबले अबी कुबैस"** पर नज़र आया और दूसरा टुक्ड़ा **"जबले कुऐ़क़िआ़न"** पर देखा गया। इस त़रह़ चांद को दो पारा कर के हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّمَ ने मक्कए पाक के ग़ैर मुस्लिमों को दिखा दिया और फ़रमाया : तुम लोग गवाह हो जाओ। (تفسیر جلالین، ص۴۴۰، پ۲۷، القمر:۱)

﴾16﴿...दुन्या का सब से पहला पहाड़ जबले अबी कुबैस यहीं वाक़ेअ़ है।

जबले अबी क़ुबैस

जबले अबी कुबैस दुन्या का सब से पहला पहाड़ है जो मस्जिदुल ह़राम के बाहर सफ़ा व मरवह के क़रीब वाक़ेअ़ है। इस पहाड़ पर दुआ़ क़बूल होती है, अहले मक्का ख़ुश्क साली के मौक़अ़ पर इस पहाड़ पर आ कर दुआ़ मांगते थे। ह़दीसे पाक में है : ह़जरे अस्वद जन्नत से यहीं नाज़िल हुवा था। (الترغیب والترہیب، ۲/۹۴، حدیث:۱۷۸۲) इस पहाड़ को **"अल अमीन"** भी कहा गया है। तूफ़ाने नूह़ में ह़जरे अस्वद इस पहाड़ (Mountain) पर ह़िफ़ाज़त से तशरीफ़ फ़रमा रहा। एक रिवायत के मुत़ाबिक़ का'बे शरीफ़ की ता'मीर के मौक़अ़ पर इस पहाड़ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام को पुकार कर अ़र्ज़ की : ह़जरे अस्वद इधर है। (بلد الامین، ص۲۰۴ ملخصاً)

मन्क़ूल है : रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने इसी पहाड़ पर तशरीफ़ ला कर चांद के दो टुक्ड़े फ़रमाए थे। चूंकि मक्कए मुकर्रमा पहाड़ों के दरमियान घिरा हुवा है, चुनान्चे, इस पर से चांद देखा जाता था। पहली (दूसरी और तीसरी) रात के चांद को हिलाल कहते हैं, लिहाज़ा इस जगह पर यादगार के लिये "**मस्जिदे हिलाल**" ता'मीर की गई। बा'ज़ लोग इसे "**मस्जिदे बिलाल**" भी कहते हैं। (आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 238, मुलख़्ख़सन)

﴾17﴿...नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने यहां अपनी ह़याते ज़ाहिरी के 53 बरस गुज़ारे।

﴾18﴿...ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम महदी رَضِیَ اللهُ عَنْه का ज़ुहूर मक्के शरीफ़ में ही होगा। (आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 200, मुलख़्ख़सन)

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम

"यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़"

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मक्के मदीने की ह़ाज़िरी की ह़क़ीक़ी तड़प पाने और दिल में इश्क़े रसूल को बढ़ाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाना एक बेहतरीन अ़मल है। लिहाज़ा इस मदनी माह़ोल में रच बस जाइये और 12 मदनी कामों में वक़्त देने का मा'मूल बनाइये। 12 मदनी कामों में से हफ़्तावार एक मदनी काम "**यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़**" भी है। छुट्टी वाले दिन शहर के अ़लाक़ों और अत़राफ़ के गांव, गोठों में जा कर वहां की मसाजिद को आबाद करने के साथ साथ मक़ामी आ़शिक़ाने रसूल को नेकी की दा'वत दे कर इ़ल्मे दीन सीखने, सिखाने की तरकीब की जाती है।

❖ اَلْحَمْدُ لِلّٰه यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़ इस्लामी भाइयों को सुन्नतें व आदाब और मदनी दर्स वग़ैरा का त़रीक़ा सिखाने का बेहतरीन ज़रीआ़ है। ❖ यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़ की बरकत से मसाजिद आबाद होती हैं। ❖ यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़ की बरकत से मस्जिद में गुज़रने वाला हर हर लम्ह़ा इबादत में शुमार होगा। ❖ यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़ की बरकत से

मस्जिद से महब्बत करने और उस में अपना ज़ियादा से ज़ियादा वक़्त गुज़ारने की फ़ज़ीलत हासिल होगी ।

नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये अच्छी सोहबत बहुत ज़रूरी है, वरना बसा अवक़ात इन्सान नेकियों के फ़ज़ाइल पढ़ या सुन कर अपना ज़ेहन तो बना लेता है कि "**अब मुझे अल्लाह पाक की ना फ़रमानी नहीं करनी, बस अब नेकियों से ही दिल लगाना है**" मगर बुरी सोहबत आड़े आती है जो नेकियों पर इस्तिक़ामत मिलने में रुकावट बनती है । बसा अवक़ात न करने वाले काम इन्सान का वक़्त बरबाद करने के साथ साथ बहुत सारी नेकियों से भी महरूम कर देते हैं और अच्छी सोहबत इन्सान को नेक बनाती और बुराइयों से पीछा छुड़ाती है । आइये ! तरग़ीब के लिये अच्छी सोहबत की एक मदनी बहार सुनिये । चुनान्चे,

ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदारी

मुल्के अमीरे अहले सुन्नत में मुक़ीम इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्तगी से पहले बे अ़मली की ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे । नमाज़, रोज़ों के मुआ़मले में सुस्ती करना और बद अख़्लाक़ी से पेश आना उन का मा'मूल बन चुका था, न **अल्लाह** पाक के हुक़ूक़ की परवा, न ही बन्दों के हुक़ूक़ का ख़याल । एक इस्लामी भाई उन्हें हफ़्तावार इजतिमाअ़ की दा'वत पेश करते मगर वोह टाल दिया करते थे और यूं कमो बेश 10 साल गुज़र गए । एक दफ़्आ़ उन्ही के एक दोस्त (Friend) ने उन्हें हफ़्तावार इजतिमाअ़ की इस ख़ूब सूरत अन्दाज़ में दा'वत पेश की, कि उन के दिल में भी शिर्कत की ख़्वाहिश पैदा हुई और अगले ही हफ़्ते वोह उन के साथ इजतिमाअ़ में जा पहुंचे । इजतिमाअ़ में बहुत सुकून मिला, सुन्नतों भरा बयान और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ से उन के दिल में बहुत असर हुवा फिर वोह भी पाबन्दी से शरीक होने लगे । اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन का चेहरा सुन्नत के मुताबिक़ एक मुठ्ठी दाढ़ी से जगमगाने लगा, इजतिमाई ए'तिकाफ़ की बरकतें लूटने का मौक़अ़ मिला और वोह भी सुन्नतों के सांचे में ढल गए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मक्कए पाक की ह़ाज़िरी की तड़प अपने अन्दर पैदा करने का ज़रीआ़ येह भी है कि हम बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की सीरत का मुत़ालआ़ करें क्यूंकि येह ह़ज़रात मक्के मदीने की सर ज़मीन से सच्ची अ़क़ीदतो मह़ब्बत फ़रमाया करते थे । इन मक़ामात से इन की मह़ब्बत का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि बा'ज़ बुज़ुर्गों का येह मा'मूल था कि वोह किसी और मुल्क या शहर के रिहाइशी होने के बा वुजूद भी मक्कए पाक के फ़ुयूज़ो बरकात ह़ासिल करने की ग़रज़ से ज़िन्दगी (Life) का कसीर ह़िस्सा शहरे मह़बूब की ख़ुश्बूदार व ख़ुश गवार फ़ज़ाओं में सांसें लेते गुज़ारा करते और हर साल इस्तिक़ामत के साथ बैतुल्लाह शरीफ़ के ह़ज की सआ़दत से भी फ़ैज़याब होते । **अल्लाह** करीम इन **अल्लाह** वालों के सदक़े में हमें भी ज़ियारते मक्का व मदीना की ने'मत से माला माल फ़रमाए ।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मजलिसे ह़ज्जो उ़मरह

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मक्के मदीने की ह़क़ीक़ी मह़ब्बत का जाम पीने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये और दीने मतीन का पैग़ाम आ़म करने के लिये दा'वते इस्लामी का साथ दीजिये । اَلْحَمْدُ لِلّٰه आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी कमो बेश 107 शो'बाजात में नेकी की दा'वत की धूमें मचाने में मसरूफ़ है, इन्ही में से एक "**मजलिसे ह़ज्जो उ़मरह**" भी है । मजलिसे ह़ज्जो उ़मरह, ह़ज व उ़मरह के लिये जाने वाले इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की बा क़ाइ़दा मदनी तरबिय्यत करने, उन्हें बारगाहे इलाही और बारगाहे मुस्त़फ़ा के आदाब और ज़रूरी मसाइल सिखाने के लिये क़ाइम की गई है । इस मजलिस में शामिल तरबिय्यत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन इस्लामी भाई हर साल ह़ज के मौसिमे बहार में ह़ाजी कैम्पों में जा कर ह़ाजियों की मदनी तरबिय्यत करते हैं जब कि मुबल्लिग़ात इस्लामी बहनें, ह़ज्जनों की तरबिय्यत करती हैं ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه इस मजलिस के तह़्त ह़ज व ज़ियारते मदीना के लिये मक्के मदीने जाने वालों को अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तह़रीर कर्दा

किताबें "**रफ़ीकुल ह़-रमैन**" और "**रफ़ीकुल मो'तमिरीन**" भी तोह़्फ़तन पेश की जाती हैं ताकि **अल्लाह** पाक के घर के मेहमान और ह़बीबे ख़ुदा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّمَ के दीवाने इस इ़बादत को अच्छे त़रीक़े से बजा लाने में कामयाब हो जाएं। **अल्लाह** पाक "**मजलिसे ह़ज्जो उ़मरह**" को मज़ीद बरकतें अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم

सफ़र करने की सुन्नतें और आदाब

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! आइये! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**अबू जह्ल की मौत**" सफ़ह़ा नम्बर 21 से सफ़र करने की सुन्नतें और आदाब सुनने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं।

❖ जब सफ़र करना हो, तो बेहतर येह है कि पीर, जुमा'रात या हफ़्ते को करे। (फ़तावा रज़विय्या, 23 / 400, मुलख़्ख़सन) ❖ सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने सय्यिदुना जुबैर बिन मुत़इ़म رَضِیَ اللهُ عَنْه को सफ़र में अपने सब दोस्तों से ज़ियादा ख़ुश ह़ाल रहने के लिये रवानगी से पहले येह विर्द पढ़ने की तल्क़ीन फ़रमाई: (1) सूरए काफ़िरून (2) सूरए नस्र (3) सूरए इख़्लास (4) सूरए फ़लक़ (5) सूरए नास। हर सूरत एक एक बार और हर एक की इब्तिदा में بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم और सब से आख़िर में भी एक बार **बिस्मिल्लाह** पूरी पढ़ लीजिये (इस त़रह़ सूरतें पांच होंगी और बिस्मिल्लाह शरीफ़ छे बार)। सय्यिदुना जुबैर बिन मुत़इ़म رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं: मैं यूं तो माल वाला था मगर जब सफ़र करता, तो (सब दोस्तों से ज़ियादा) बुरे ह़ाल वाला हो जाता, जब से येह सूरतें सफ़र से पहले हमेशा पढ़नी शुरूअ़ कीं, इन की बरकत से वापसी तक ख़ुश ह़ाल और दौलत मन्द रहता। (ابویعلی، ۶/۲۶۵، حدیث:۷۳۸۲)

❖ आईना, सुरमा, कंघा, मिस्वाक साथ रखे कि सुन्नत है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 1, 6 / 1051)

❖ रास्ते की चढ़ाई की त़रफ़ या सीढ़ियों पर चढ़ते हुवे, बस वग़ैरा जब सड़क की ऊंची जानिब जा रही हो, तो "**अल्लाहु अक्बर**" और सीढ़ियों या निचली जानिब से उतरते हुवे "سُبْحٰنَ اللّٰه" कहिये। ❖ मन्ज़िल पर उतरते वक़्त येह पढ़िये:

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ط

*(तर्जमा : मैं **अल्लाह** करीम के कामिल कलिमात के वासिते से सारी मख़्लूक़ के शर से पनाह मांगता हूं)*

اِنْ شَآءَ اللّٰه हर नुक़्सान से बचेगा। (الحِصنُ الحصین، ص۸۲) ❖ दौराने सफ़र भी नमाज़ में हरगिज़ कोताही न हो। ❖ रास्ते में बस ख़राब हो जाए, तो ड्राईवर या मालिकाने बस वग़ैरा को कोसने और बक बक कर के अपनी आख़िरत दाव पर लगाने के बजाए सब्र से काम लीजिये और जन्नत की त़लब में ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल हो जाइये। ❖ भीड़ के मौक़अ़ पर किसी कमज़ोर या मरीज़ को देखें, तो सवाब की निय्यत से उस को बस वग़ैरा में इसरार कर के अपनी सीट पेश कर दीजिये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब कभी दाख़िले मस्जिद हों, याद आने पर ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लिया करें कि जब तक मस्जिद में रहेंगे, ए'तिकाफ़ का सवाब मिलता रहेगा । याद रखिये ! मस्जिद में खाने, पीने, सोने या सह्‌री, इफ़्तारी करने, यहां तक कि आबे ज़मज़म या दम किया हुवा पानी पीने की भी शरअ़न इजाज़त नहीं ! अलबत्ता अगर ए'तिकाफ़ की निय्यत होगी, तो येह सब चीज़ें जाइज़ हो जाएंगी । ए'तिकाफ़ की निय्यत भी सिर्फ़ खाने, पीने या सोने के लिये नहीं होनी चाहिये बल्कि इस का मक़्सद **अल्लाह** करीम की रिज़ा हो । **फ़तावा शामी** में है : अगर कोई मस्जिद में खाना, पीना, सोना चाहे, तो ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ले, कुछ देर ज़िक्रुल्लाह करे फिर जो चाहे करे (या'नी अब चाहे तो खा, पी या सो सकता है) ।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : زَيِّنُوْا مَجَالِسَكُمْ بِالصَّلَاةِ عَلَيَّ فَاِنَّ صَلَاتَكُمْ عَلَيَّ نُوْرٌ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता किया करो क्यूंकि तुम्हारा मुझ पर दुरूद पढ़ना क़ियामत के दिन तुम्हारे लिये नूर होगा ।

(جامع صغیر، حرف الزای، ص ۲۸۰، حدیث: ۴۵۸۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आइये ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (معجم کبیر، ۱۸۵/۶، حدیث: ۵۹۴۲)

नुक्ता : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

۞ निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा। ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम के लिये जब तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा। ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा। ۞ इजतिमाअ़ के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! मदीने शरीफ़ का ज़िक्रे ख़ैर होते ही मदीने के आ़शिक़ों के दिल ख़ुशी से झूम उठते हैं, चेहरे पर मुस्कुराहट आ जाती है, ख़ुशी की कैफ़िय्यत बन जाती है, कुछ की आंखें यादे मदीना में अश्कबार हो जाती हैं, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीवाने जुदाई में तड़पते हैं, शौक़ के आ़लम में ज़बान पर बे इख़्तियार "**मदीना मदीना**" की रट लग जाती है। मदीने शरीफ़ की अ़ज़मत व फ़ज़ीलत का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि जिस प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से हम बे पनाह महब्बत करते हैं, ख़ुद वोह आक़ा करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीने से बहुत महब्बत किया करते हैं। लिहाज़ा महब्बते रसूल का तक़ाज़ा येह है कि हम भी न सिर्फ़ मीठे मदीने की महब्बत बल्कि मदीने के कूचा व बाज़ार की महब्बत, वहां के गुलशन व सहरा की महब्बत, उस के दरो दीवार की महब्बत, उस के फूल ह़त्ता कि उस के कांटे तक की महब्बत अपने दिल में बसाए रखें, उस की याद में तड़पें और उस की बा अदब ह़ाज़िरी की न सिर्फ़ आरज़ू करें बल्कि **अल्लाह** करीम से इस की दुआ़एं भी मांगें। आइये ! मदीने के फ़ज़ाइल, ख़ुसूसिय्यात और मदीनए पाक के बा'ज़ मक़ामाते मुक़द्दसा के बारे में सुनते हैं। पहले एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुनिये। चुनान्चे,

दरे रसूल पर हाज़िर होने वाला बख़्शा गया

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़र्ब हिलाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक बार मैं रौज़ए रसूल पर ह़ाज़िर था कि एक आ'राबी (अ़रब के देहात का रहने वाला) आया और बारगाहे रिसालत में इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** पाक ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم पर जो सच्ची किताब उतारी है, उस में (पारह 5, सूरतुन्निसा की) येह आयत भी मौजूद है :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا۝۶۴

(پ۵، النسآء: ۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : *और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म कर बैठे थे, तो ऐ ह़बीब ! तुम्हारी बारगाह में ह़ाज़िर हो जाते फिर* **अल्लाह** *से मुआ़फ़ी मांगते और रसूल (भी) उन की मग़्फ़िरत की दुआ़ फ़रमाते, तो ज़रूर* **अल्लाह** *को बहुत तौबा क़बूल करने वाला, मेहरबान पाते ।*

ऐ मेरे आक़ा व मौला ! मैं **अल्लाह** पाक से अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी त़लब करते हुवे ह़ाज़िरे दरबार हूं और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** पाक की बारगाह में अपने लिये सिफ़ारिश करने वाला बनाता हूं । येह कह कर वोह आ़शिक़े रसूल रोने लगा और उस की ज़बान पर येह अश्आ़र जारी थे :

يَا خَيْرَ مَنْ دُفِنَتْ بِالْقَاعِ اَعْظُمُهٗ ۔۔۔ فَطَابَ مِنْ طِيْبِهِنَّ الْقَاعُ وَالْاَكَمُ

رُوْحِيَ الْفِدَاءُ لِقَبْرٍ اَنْتَ سَاكِنُهٗ ۔۔۔ فِيْهِ الْعِفَافُ وَفِيْهِ الْجُوْدُ وَالْكَرَمُ

तर्जमा : *ऐ वोह बेहतरीन ज़ात ! जिस का मुबारक वुजूद इस ज़मीन में दफ़्न किया गया, तो इस की उ़म्दगी और पाकीज़गी से मैदान और टीले ख़ुश्बूदार हो गए । मेरी जान फ़िदा हो इस क़ब्रे अन्वर पर जिस में आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा हैं, जिस में पाक दामनी, सख़ावत और अ़फ़्वो करम का बहुत बड़ा ख़ज़ाना है ।*

वोह आ़शिक़े रसूल काफ़ी देर तक इन अश्आ़र को दोहराता रहा फिर अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगता हुवा रोती हुई आंखों से वहां से रुख़्सत हो गया । ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़र्ब हिलाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

जब मैं सोया, तो ख़्वाब में सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हुई । आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : उस आ'राबी से मिलो, उसे ख़ुश ख़बरी सुनाओ कि **अल्लाह** पाक ने मेरी सिफ़ारिश की वज्ह से उस की मग़फ़िरत फ़रमा दी है । (معجم ابن عساکر، ص۲۰۱، ۲۰۰ملخّصًا)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! "जो रोता है उस का काम होता है" की खुली ह़क़ीक़त बयान कर्दा ह़िकायत से हमारे सामने वाज़ेह़ हो गई कि उस आ'राबी का रोना, करीम आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार में तड़पना, रह़ीम आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم को पुकारना, मेहरबान आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में आंसू बहाना काम आ गया और प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे मग़फ़िरत की ख़ुश ख़बरी अ़त़ा फ़रमा दी । मा'लूम हुवा ! बारगाहे मुस्त़फ़ा से आज भी मग़फ़िरत के परवाने तक़्सीम होते हैं, आज भी गुनाहगारों को दामने रह़मत में छुपाया जाता है, आज भी बे सहारों की बिगड़ियां बनती हैं, आज भी ग़म के मारों के ग़म दूर किये जाते हैं और आज भी ख़ाली झोलियां भरी जाती हैं ।

दुन्या में आज ऐसे कई लोग मौजूद होंगे जिन के पास बे इन्तिहा मालो दौलत है, जिन्हों ने दुन्या भर की सैर भी की होगी मगर आह ! आ़शिक़ाने रसूल के मर्कज़े अ़क़ीदत **"मदीनए मुनव्वरा"** और उस के ह़सीन मक़ामात की ज़ियारत से मह़रूम होंगे जब कि दूसरी जानिब वोह आ़शिक़ाने रसूल भी होंगे जिन के पास मदीने शरीफ़ जाने के लिये न तो माल था और न ही जाने के अस्बाब मगर ज़ियारते मदीना के लिये उन का रोना, उन की सच्ची तड़प, मुसल्सल दुआ़एं और मुख़्लिसाना कोशिशें रंग लाईं, अस्बाब बनते चले गए और बिल आख़िर उन्हें भी मदीनए पाक और सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद की ज़ियारत का जाम पीना नसीब हो गया ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! मदीनए त़य्यिबा वोह बरकत व अ़ज़्मत वाला मुक़द्दस व मोह़तरम मक़ाम है, जो वहां जाता है उस का वापस आने को जी नहीं चाहता क्यूंकि मदीनए त़य्यिबा में हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم का

रौज़ए अन्वर और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم से मन्सूब बे शुमार यादगारें मौजूद हैं, मदीनए त़य्यिबा में ऐसा दिली सुकून मिलता है जो दुन्या के किसी शहर और किसी ख़ूब सूरत मक़ाम पर भी नहीं मिलता । लिहाज़ा अगर कभी मदीने शरीफ़ जाते हुवे कोई परेशानी आ जाए या मदीनए त़य्यिबा में कोई तक्लीफ़ इस्तिक़्बाल करे, तो सब्र कर के सआ़दत समझ कर उसे क़बूल कर लेना चाहिये कि वहां तक्लीफ़ पर सब्र करने वालों के लिये **अल्लाह** पाक के महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी शफ़ाअ़त की ख़ुश ख़बरी अ़त़ा फ़रमाई है । चुनान्चे,

मदीनए त़य्यिबा की तक्लीफ़ पर सब्र की फ़ज़ीलत

रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स मेरी ज़ियारत का इरादा करते हुवे आया वोह क़ियामत के दिन मेरी ह़िफ़ाज़त में रहेगा । जो शख़्स मदीने में रिहाइश इख़्तियार करेगा और मदीने की तकालीफ़ पर सब्र करेगा, तो मैं क़ियामत के दिन उस की गवाही दूंगा और उस की शफ़ाअ़त करूंगा । जो शख़्स ह़-रमैन (या'नी मक्के मदीने) में से किसी एक में मरेगा, **अल्लाह** पाक उस को इस ह़ाल में क़ब्र से उठाएगा कि वोह क़ियामत के ख़ौफ़ से अम्न में रहेगा । (مشکاۃ المصابیح، ۱/۵۱۲، حدیث ۲۷۵۵)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़ाने रसूल के लिये मदीने शरीफ़ के रास्ते का हर कांटा भी फूल की त़रह़ है, लिहाज़ा सफ़रे मदीना के दौरान अगर कोई परेशानी आ जाए, कोई तंग करे, धक्का दे, मिज़ाज के ख़िलाफ़ बात कह दे, अचानक कोई ज़मीनी या आसमानी आफ़त आ जाए, तो इस मौक़अ़ पर बे सब्री करना, रोना धोना करना, उलझना, बदला लेना और शिक्वे शिकायात करना बहुत बड़ी महरूमी का सबब बन सकता है । यूंही जितना अ़र्सा मदीनए पाक की फ़ज़ाओं में गुज़रे, तो कोशिश कीजिये कि अदबो ता'ज़ीम का दामन हाथों से छूटने न पाए ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! **अल्लाह** वाले मदीनए पाक का बहुत ज़ियादा अदबो एह़तिराम बजा लाते हैं । आइये ! एक ज़बरदस्त आ़शिक़े रसूल बुज़ुर्ग की

मदीने से महब्बत और वहां के अदब के बारे में 2 दिल नशीन वाक़िआ़त सुनते हैं। चुनान्चे,

﴾1﴿...मदीने से महब्बत का अन्दाज़

मालिकिय्यों के अ़ज़ीम पेश्वा, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ज़बरदस्त आ़शिक़े रसूल और मदीनए मुनव्वरा का बहुत ज़ियादा अदब (Respect) करने वाले थे। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मदीने में रहने के बा वुजूद क़ज़ाए ह़ाजत के लिये ह़रमे मदीना से बाहर तशरीफ़ ले जाते और ह़रम शरीफ़ की हुदूद से बाहर जा कर अपनी त़बई ह़ाजत (मसलन इस्तिनजा वग़ैरा) से फ़ारिग़ होते। (बोस्तानुल मुह़द्दिसीन, स. 19)

﴾2﴿...इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और ता'ज़ीमे ख़ाके मदीना

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के दरवाज़े पर ख़ुरासान या मिस्र के घोड़े बंधे हुवे देखे, उन से ज़ियादा उ़म्दा घोड़े मैं ने कभी न देखे थे। मैं ने अ़र्ज़ की : येह कितने उ़म्दा घोड़े हैं ! तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं येह सब आप को तोह़्फ़े (Gift) में देता हूं। मैं ने अ़र्ज़ की : एक घोड़ा आप अपने लिये रख लीजिये। फ़रमाया : मुझे **अल्लाह** पाक से ह़या आती है कि इस मुबारक ज़मीन को अपने घोड़े के क़दमों तले रोन्दूं जिस में **अल्लाह** पाक के महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं। (इह़याउल उ़लूम, 1 / 114, मुलख़्ख़सन)

سُبْحٰنَ الله ! आप ने सुना कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه किस क़दर ज़बरदस्त आ़शिक़े रसूल, मदीने शरीफ़ से महब्बत और उस का अदब करने वाले थे। चूंकि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه आ़लिमे मदीना भी थे, लिहाज़ा अदब आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की त़बीअ़त में कूट कूट कर भरा हुवा था जब कि आज हमारे मुआ़शरे को इ़ल्म व अदब दोनों की बहुत ज़ियादा ज़रूरत है, इ़ल्म की दौलत पास होगी, तो अदब की सआ़दत भी मिलेगी और इ़ल्म से ख़ाली होंगे, तो ख़त़रा है कि बे अदबी की गहरी खाई में जा गिरें। ख़ुसूसन सफ़रे मदीना

के दौरान तो फूंक फूंक कर क़दम रखना और ख़ूब ख़ूब अदबो ता'ज़ीम करना बहुत ही ज़ियादा ज़रूरी है।

याद रहे ! येह वोह बारगाह है जिस का अदब हमारे रब्बे करीम ने हमें सिखाया है, लिहाज़ा इस मुआ़मले में थोड़ी सी सुस्ती का मुज़ाहरा करना बहुत बड़े नुक़्सान का सबब है। आइये ! इस बारे में एक इ़ब्रतनाक वाक़िआ़ सुनिये और इ़ब्रत ह़ासिल कीजिये। चुनान्चे,

मदीने के दही की बे अदबी का वबाल

एक शख़्स मदीनए मुनव्वरा में हर वक़्त रोता और मुआ़फ़ी मांगता रहता। जब उस से इस की वज्ह पूछी गई, तो उस ने जवाब दिया : एक दिन मैं ने मदीने शरीफ़ के दही को खट्टा और ख़राब कह दिया। येह कहते ही मेरी विलायत चली गई और मुझ पर ग़ज़ब हुवा कि ऐ दियारे मह़बूब के दही को ख़राब कहने वाले ! निगाहे मह़ब्बत से देख ! मह़बूबे करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم की गली की हर हर चीज़ उ़म्दा है। (बहारे मस्नवी, स. 128, माख़ूज़न)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मदीने जाने वालों की क़िस्मत पर क़ुरबान ! उन का मुक़द्दर बुलन्दी पर होता है, उन के नसीब चमक रहे होते हैं, वोह सआ़दतों की मे'राज को पहुंच जाते हैं, उन की ख़ुशी देखने वाली होती है, उन पर रह़मते इलाही की छमाछम बारिशें बरस्ती हैं और ऐसा क्यूं न हो कि रौज़ए अन्वर की ज़ियारत का जाम पीने वाले ख़ुश नसीबों को तो रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी सच्ची ज़बान से शफ़ाअ़त का परवाना अ़त़ा फ़रमाया है। चुनान्चे,

शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है

प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ زَارَ قَبْرِیْ وَجَبَتْ لَهٗ شَفَاعَتِیْ जिस ने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की, उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई।

(دارقطنی، کتاب الحج، ۲/ ۳۵۱، حدیث: ۲۶۶۹)

سُبْحٰنَ اللہ ! ज़रा सोचिये तो सही ! वोह कैसा अ़ज़्मतों और बरकतों वाला मक़ाम है जिस की ज़ियारत करें, तो शफ़ाअ़त की ख़ैरात मिले, वहां रहें, तो बरकतें अ़ता हों और अगर वहीं दम निकल जाए, तो शफ़ाअ़त के ह़क़दार बन जाएं ।

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अल्लाह करीम ने शहरे मदीने को बे शुमार ख़ुसूसिय्यात से नवाज़ा है । आइये ! बरकत ह़ासिल करने के लिये मदीने शरीफ़ की चन्द ख़ुसूसिय्यात के बारे में सुनते हैं और अपने दिल में इस पाकीज़ा शहर की अ़ज़्मत मज़ीद बढ़ाने का सामान करते हैं । चुनान्चे,

मदीनए मुनव्वरा की 14 ख़ुसूसिय्यात

(1) ज़मीन का कोई ऐसा शहर नहीं जिस के मुबारक नाम इतने ज़ियादा हों जितने मदीने शरीफ़ के हैं, ह़त्ता कि बा'ज़ उ़लमाए किराम ने इस के 100 नाम तह़रीर फ़रमाए हैं । (2) मदीनए पाक ऐसा पाकीज़ा शहर है जिस की मह़ब्बत और याद में दुन्या में सब से ज़ियादा ज़बानों और ता'दाद में क़सीदे लिखे गए, लिखे जा रहे और लिखे जाते रहेंगे । (3) प्यारे नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस की त़रफ़ हिजरत की और यहीं तशरीफ़ फ़रमा रहे । (4) **अल्लाह** पाक ने इस का नाम त़ाबा रखा । (5) मोह़तरम नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते, तो मदीने शरीफ़ के क़रीब पहुंच कर उस से मह़ब्बत और शौक़ की वज्ह से अपनी सुवारी तेज़ कर देते । (6) मदीने शरीफ़ में आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक दिल सुकून पाता । (7) यहां की धूल मिट्टी अपने चेहरए अन्वर से साफ़ न फ़रमाते और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को भी इस से मन्अ़ फ़रमाते और इरशाद फ़रमाते : ख़ाके मदीना में शिफ़ा है । (जज़्बुल कुलूब, स. 22) (8) जब कोई मुसलमान ज़ियारत की निय्यत से मदीने शरीफ़ आता है, तो फ़िरिश्ते रह़मत के तोह़फ़ों से उस का इस्तिक़्बाल करते हैं । (जज़्बुल कुलूब, स. 211) (9) रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीने शरीफ़ में मरने की तरग़ीब इरशाद फ़रमाई । (10) यहां मरने वाले की प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे । (11) जो वुज़ू कर के आए और

मस्जिदे नबवी शरीफ़ में नमाज़ अदा करे, उसे ह़ज का सवाब मिलता है । (12) हुजरए मुबारका और मिम्बरे पाक के दरमियान की जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ (या'नी जन्नत की कियारी) है। (13) मस्जिदे नबवी शरीफ़ में एक नमाज़ पढ़ना, पचास हज़ार नमाज़ों के बराबर है। (ابن ماجہ، ۲/۱۷۶، حدیث: ۱۴۱۳) (14) मदीने शरीफ़ की सर ज़मीन पर मज़ारे मुस्त़फ़ा है जहां सुब्ह़ो शाम सत्तर सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते ह़ाज़िर होते हैं।

(आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात मअ़ मक्के मदीने की ज़ियारतें, स. 259 ता 262, मुल्तक़त़न)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खाना खिलाया

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन नफ़ीस तूनिसी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं एक बार मदीनए मुनव्वरा में सख़्त भूक के आ़लम में नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं भूका हूं। अचानक आंख लग गई, किसी ने जगा दिया और मुझे साथ चलने की दा'वत दी। चुनान्चे, मैं उन के साथ उन के घर आया। मेज़बान ने खजूरें, घी और गन्दुम की रोटी पेश कर के कहा : पेट भर कर खा लीजिये क्यूंकि मुझे मेरे जद्दे अमजद और रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप की मेज़बानी का हुक्म दिया है, आइन्दा भी जब कभी भूक महसूस हो, हमारे पास तशरीफ़ लाया करें।

(حُجَّةُ اللهِ عَلَى الْعٰلَمِين، ص۵۷۳)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आइये ! मदीने शरीफ़ की ह़ाज़िरी का एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुनते हैं।

ऐ ज़ाइरे रौज़ए अन्वर ! मग़फ़िरत याफ़्ता लौट जाओ

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर पर ह़ाज़िरी दे कर येह दुआ़ की : या **अल्लाह** ! मैं ने तेरे

ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत की, अब तू मुझे ना मुराद न लौटा। आवाज़ आई : ऐ बन्दे ! हम ने तुम्हें अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم की पाकीज़ा क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत की इजाज़त ही तब दी जब तुम्हें पाक करना मन्ज़ूर किया, अब तुम और तुम्हारे साथ ज़ियारत करने वाले मग़्फ़िरत याफ़्ता लौट जाओ ! बेशक **अल्लाह** पाक तुम से और उन से राज़ी हो गया जिन्हों ने प्यारे नबी, मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर का दीदार किया। (الروض الفائق، ص٣٠٦)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आप ने सुना कि आक़ा करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर की ज़ियारत करना किस क़दर सआ़दत व बरकत का बाइ़स है कि रौज़ए अन्वर की ज़ियारत करने वालों को बारगाहे इलाही से मग़्फ़िरत के परवाने तक़्सीम किये जाते हैं, तो कितने ख़ुश नसीब हैं वोह आ़शिक़ाने रसूल जो मदीनए पाक की ह़ाज़िरी का शरफ़ पा चुके, जिन्हों ने सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के ह़सीन जल्वों को देख कर अपने कलेजे ठन्डे किये, जिन्हों ने मस्जिदे नबवी के दिलकश मनारों की ज़ियारत का जाम पिया, जिन्हों ने आक़ा करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم के मिम्बरो मेह़राब को अपने सर की आंखों से देखने का ए'ज़ाज़ ह़ासिल किया। यक़ीनन यादे मदीना उन्हें अब भी बे क़रार रखती होगी, जब वोह तसावीर में उन मनाज़िर को देखते होंगे, तो उन की आंखें अश्कबार हो जाती होंगी, दिल बेक़ाबू होने लगता होगा।

ऐ काश ! रब्बे करीम उन आ़शिक़ाने रसूल के तुफ़ैल हम गुनाहगारों को भी ह़ाज़िरिये मदीना की सआ़दत अ़त़ा फ़रमा दे। **ऐ काश** ! आक़ा करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم हमें भी अपने क़दमों में बुला लें। **ऐ काश** ! हमें भी सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के पुरनूर जल्वे देखना नसीब हो जाएं। **ऐ काश** ! हमें भी सुनेहरी जालियों के सामने खड़े हो कर दुरूदो सलाम पढ़ने की सआ़दत नसीब हो जाए। **ऐ काश** ! हमें भी ईमानो आ़फ़िय्यत के साथ मीठे मदीने में मौत और जन्नतुल बक़ीअ़ में दो गज़ ज़मीन नसीब हो जाए।

याद रहे ! मदीने शरीफ़ में मरना और जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न होना बहुत बड़ी सआ़दत मन्दी की बात है। जैसा कि :

मदीने में मरने की फ़ज़ीलत

नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنِ اسْتَطَاعَ اَنْ يَّمُوْتَ بِالْمَدِيْنَةِ فَلْيَمُتْ بِهَا तुम में से जिस से हो सके कि वोह मदीने में मरे, तो मदीने ही में मेरे, فَاِنِّيْ اَشْفَعُ لِمَنْ يَمُوْتُ بِهَا क्यूंकि मैं मदीने में मरने वाले की शफ़ाअ़त करूंगा। (ترمذی، کتاب المناقب، باب فی فضل المدینة، ۵/۴۸۳، حدیث: ۳۹۴۳)

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : (क़ियामत में जब सब को क़ब्रों से उठाया जाएगा) सब से पहले मेरी फिर अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا) की क़ब्रें खुलेंगी फिर मैं जन्नतुल बक़ीअ़ वालों के पास जाऊंगा, तो वोह मेरे साथ जम्अ़ होंगे फिर मैं अहले मक्का का इन्तिज़ार करूंगा, ह़त्ता कि मक्के मदीने के दरमियान उन्हें भी अपने साथ कर लूंगा।

(ترمذی، ابواب المناقب، باب (مر: تابع ۱۷، ت: ۵۶) ... الخ، ۵/۳۸۸، حدیث: ۳۷۱۲)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

यादे मदीना

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हम मदीनए पाक के फ़ज़ाइल व ख़ुसूसिय्यात और वहां के मक़ामाते मुक़द्दसा का ज़िक्रे ख़ैर सुन रहे हैं। याद रहे ! ज़िक्रे मदीना आ़शिक़ाने रसूल के लिये दिलो जान को सुकून देता है, दुन्या की जितनी ज़बानों में जिस क़दर कलाम मदीने शरीफ़ की जुदाई और इस के दीदार की आरज़ू में पढ़े गए हैं, उतने दुन्या के किसी और शहर या सर ज़मीन के लिये नहीं पढ़े गए। जिसे एक बार भी मदीने का दीदार हो जाता है, वोह अपने आप को ख़ुश क़िस्मत समझता और मदीने में गुज़रे हुवे ख़ूब सूरत लम्ह़ात को हमेशा के लिये यादगार क़रार देता है। आ़शिक़ाने मदीना इस की जुदाई में तड़पते और ज़ियारत के बेह़द मुश्ताक़ रहते हैं। मदीना क्या है ? और मदीने से इ़श्क़ कैसा होना चाहिये ? मदीने से जुदाई के वक़्त हमारे जज़्बात कैसे होने चाहियें ? इस के लिये बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की सीरत और उन का किरदार हमारे लिये बेहतरीन नुमूना है। चुनान्चे,

मैं छोड़ कर मदीना नहीं जाता, नहीं जाता !

ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से पूछा : क्या आप का कोई घर है ? फ़रमाया : नहीं ! तो उस ने आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में तीन हज़ार (Three Thousand) दीनार पेश करते हुवे कहा : इन से घर ख़रीद लीजिये । आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने दीनार ले कर रख लिये और उन्हें ख़र्च न किया । जब ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद मदीने शरीफ़ से जाने लगा, तो उस ने आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : आप को हमारे साथ चलना होगा क्यूंकि मैं ने इरादा किया है कि लोगों को ह़दीसे पाक की मश्हूर किताब "**मुअत्ता़**" पर जम्अ़ करूं, जिस त़रह़ अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللهُ عَنْه ने लोगों को एक क़ुरआन पर जम्अ़ किया था । आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : लोगों को सिर्फ़ "**मुअत्ता़**" पर जम्अ़ करने का तो कोई जवाज़ नहीं क्यूंकि रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن मुख़्तलिफ़ शहरों में चले गए, वहां उन्हों ने अह़ादीस बयान फ़रमाईं जिस की वज्ह से अब मिस्र के हर शख़्स के पास अह़ादीस का इ़ल्म है और रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी इरशाद फ़रमाया : मेरी उम्मत का इख़्तिलाफ़ "**रह़मत**" है ।

(جامع الاصول فی احادیث الرسول لابن اثیر، الباب الرابع فی ذکر الائمة، الامام مالك، ۱/۱۲۱)

और रहा मदीना छोड़ कर तुम्हारे साथ जाना, तो इस की भी कोई सूरत नहीं क्यूंकि फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم है : मदीना उन के लिये बेहतर है, अगर वोह समझें । (مسلم، کتاب الحج، باب فضل المدینة، حدیث: ۱۳۶۳، ص ۷۱۰) एक रिवायत में है : मदीना (गुनाहों के) मैल को ऐसे छुड़ाता है जैसे भट्टी लोहे का ज़ंग दूर करती है । (مسلم، کتاب الحج، باب المدینة تنفی شرارها، حدیث: ۱۳۸۱، ص ۷۱۶۔ حلیة الاولیاء، مالك بن انس، ، حدیث: ۸۹۴۲، ج ۶، ص ۳۶۱) फिर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद से फ़रमाया : येह रहे तुम्हारे दीनार ! चाहो तो इन्हें ले लो और चाहो तो छोड़ दो, या'नी तुम मुझे इसी वज्ह से मदीना छोड़ने पर पाबन्द करते हो कि तुम ने मेरे साथ अच्छा सुलूक किया है, तो (सुनो !) मैं मदीने शरीफ़ पर दुन्या को तरजीह़ नहीं देता ।

(इह़याउल उ़लूम, 1 / 113, मुलख़्ख़सन)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को कई मरतबा सफ़रे ह़ज व सफ़रे मदीना की सआ़दत ह़ासिल हुई, जिन में मजमूई तौ़र पर जो कैफ़िय्यत रही उसे पूरी त़रह़ तो बयान नहीं किया जा सकता, अलबत्ता आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के एक सफ़रे मदीना के मुख़्तसर अह़वाल सुनते हैं । चुनान्चे,

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सफ़रे मदीना

जब मदीनए पाक की त़रफ़ आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की रवानगी की मुबारक घड़ी आई, तो एयरपोर्ट (Airport) पर आ़शिक़ाने रसूल आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को अल वदाअ़ कहने के लिये मौजूद थे । मदीने के दीवानों ने आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को ह़ल्क़े (या'नी दाइरे) में ले कर ना'तें पढ़ना शुरूअ़ कर दीं, इ़श्क़े रसूल में डूबी हुई ना'तों ने आ़शिक़ाने मदीना की इ़श्क़ की आग को मज़ीद भड़का दिया, ग़मे मदीना में उठने वाली आहों और सिस्कियों से फ़ज़ा सोगवार हुई जा रही थी, ख़ुद आ़शिक़े मदीना, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की कैफ़िय्यत बड़ी अ़जीब थी, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की आंखों से आंसू जारी थे, बिल आख़िर इसी आ़लम में सफ़रे मदीना का आग़ाज़ हुवा । जैसे जैसे मन्ज़िल क़रीब आती रही, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इ़श्क़ की शिद्दत भी बढ़ती रही, उस पाक सर ज़मीन पर पहुंचते ही आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने जूते उतार लिये । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उस पाक सर ज़मीन के आदाब का इस क़दर ख़याल रखते कि सिने 1406 हि. के सफ़रे ह़ज में आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की त़बीअ़त नासाज़ थी, सख़्त नज़्ला हो गया, नाक से शिद्दत के साथ पानी बह रहा था, इस के बा वुजूद आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने कभी भी मदीनए पाक की सर ज़मीन पर नाक नहीं सिन्की बल्कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की हर अदा से अदब ज़ाहिर होता रहा । जब तक मदीने शरीफ़ में रहे ह़त्तल इमकान गुम्बदे ख़ज़रा को पीठ न होने दी । (तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 32 ता 34, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम

"हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा"

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ग़मे मदीना में बे क़रार रहने और मदीने की यादों का असीर बनने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के साथ वाबस्ता हो जाइये, अ़मली तौ़र पर ख़िदमते दीन को अपना ओढ़ना बिछौना बना लीजिये और 12 मदनी कामों में ख़ूब बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये । 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "**हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा**" भी है ।

इस मदनी काम के बे शुमार दीनी व दुन्यवी फ़ाइदे हैं : ❖ اَلْحَمْدُ لِلّٰه मदनी मुज़ाकरे की बरकत से मदीनए पाक व मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़श्क़ की दौलत मिलती है । ❖ मदनी मुज़ाकरे की बरकत से गुनाहों से बचने का ज़ेह्न मिलता है । ❖ मदनी मुज़ाकरे की बरकत से इ़ल्मे दीन ह़ासिल होता है । ❖ मदनी मुज़ाकरे की बरकत से दीनी मा'लूमात (Islamic Information) के साथ साथ अख़्लाक़ी तरबिय्यत भी नसीब होती है ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! कई इस्लामी भाई मदनी मुज़ाकरे की बरकत से अपनी गुनाहों भरी ज़िन्दगी से तौबा कर चुके हैं । आइये ! निय्यत करते हैं कि हम भी हर हफ़्ते मदनी मुज़ाकरा देखने को यक़ीनी बनाएंगे और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी मदनी मुज़ाकरा देखने की दा'वत देते रहेंगे, اِنْ شَآءَ الله । हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरे के इ़लावा मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर भी मदनी मुज़ाकरों का सिलसिला होता है, मसलन मोह़र्रमुल ह़राम के 10 मदनी मुज़ाकरे, माहे रबीउ़ल अव्वल (बारहवीं शरीफ़) के 12 मदनी मुज़ाकरे, माहे रबीउ़ल आख़िर (ग्यारहवीं शरीफ़) के 11 मदनी मुज़ाकरे, माहे रमज़ान में रोज़ाना 2 मदनी मुज़ाकरे, माहे ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम के 10 मदनी मुज़ाकरे वग़ैरा ।

12 मदनी कामों में से हफ़्तावार इस मदनी काम "**हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा**" की तफ़्सीली मा'लूमात जानने के लिये मक्तबतुल मदीना के रिसाले "**हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा**" का मुत़ालआ़ कीजिये । तमाम ज़िम्मेदाराने दा'वते इस्लामी बिल ख़ुसूस हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा की मजालिस के

निगरान व अराकीन तो इस रिसाले का लाज़िमी मुत़ालआ़ फ़रमाएं । येह रिसाला मक्तबतुल मदीना पर दस्तयाब होने के साथ साथ दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislami.net से भी पढ़ा जा सकता है । आइये ! तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार सुनिये और पाबन्दी के साथ मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत करने की निय्यत कीजिये । चुनान्चे,

गुनाहों से तौबा कर ली !

मुल्के अमीरे अहले सुन्नत के एक इस्लामी भाई मुआ़शरे के दीगर नौजवानों की त़रह़ कई अख़्लाक़ी बुराइयों में मुब्तला थे, मसलन फ़िल्में, ड्रामे देखना, खेल, कूद में वक़्त बरबाद करना, मोबाइल और इन्टरनेट में वक़्त ज़ाएअ़ करना उन का पसन्दीदा काम था । एक दिन उन्हें मदनी चेनल पर मदनी मुज़ाकरा देखने की सआ़दत नसीब हुई । اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मदनी मुज़ाकरा देखने और सुनने की बरकत से उन्हें काफ़ी सुकून मिला और उन्हों ने अपने पिछले तमाम गुनाहों से तौबा कर ली, फ़राइज़ व वाजिबात पर अ़मल करने में मश्ग़ूल हो गए और चेहरे पर एक मुठ्ठी दाढ़ी सजा ली है, **अल्लाह** करीम का मज़ीद करम येह हुवा कि वालिदैन ने ख़ुशी से उन्हें आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी कामों के लिये "**वक़्फ़े मदीना**" कर दिया ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

मजलिसे मदनी मुज़ाकरा

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! आप ने सुना कि मदनी मुज़ाकरा सुनने से कैसी कैसी बरकतें मिलती हैं ! लिहाज़ा सुस्ती भगाइये और अपने काम काज से वक़्त निकाल कर पाबन्दी के साथ हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा सुनने की आ़दत बनाइये । اَلْحَمْدُ لِلّٰه आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी दुन्या भर में ख़िदमते दीन के कमो बेश 107 शो'बाजात में सुन्नतों की धूमें मचा रही है, जिन में से एक शो'बा "**मजलिसे मदनी मुज़ाकरा**" भी है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास

क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **''इल्म बे शुमार ख़ज़ानों का मजमूआ़ है, जिन के हुसूल का ज़रीआ़ सुवाल है''** के क़ौल को अ़मली जामा पहनाते हुवे सुवाल व जवाब का एक सिलसिला शुरूअ़ फ़रमाया है, जिसे दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में **''मदनी मुज़ाकरा''** कहा जाता है। आ़शिक़ाने रसूल मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़तो त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब, अख़्लाक़ियात व इस्लामी मा'लूमात, मुआ़शी, मुआ़शरती व तन्ज़ीमी मुआ़मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त (Topics) के बारे में मुख़्तलिफ़ सुवालात करते हैं और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत से भरपूर और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुवे जवाबात से नवाज़ते हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه मजलिसे मदनी मुज़ाकरा के तह़्त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इ़ल्मो ह़िक्मत से भरपूर जवाबात की ख़ुश्बू से दुन्या भर के मुसलमानों को महकाने के लिये इन मदनी मुज़ाकरों को तह़रीरी रिसालों और मेमोरी कार्ड्ज़ (Memory Cards) की सूरत में पेश करने की कोशिशें जारी हैं। **अल्लाह** करीम मजलिसे मदनी मुज़ाकरा को मज़ीद बरकतें अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

मदीनए त़य्यिबा के बा बरकत मक़ामात

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़ाने रसूल का मर्कज़ या'नी मीठा मीठा मदीना सारे का सारा नूर वाला है और आज भी वहां मुख़्तलिफ़ दिलकश मसाजिद और मुक़द्दस मक़ामात अपनी बरकतें लुटा रहे हैं। मश्हूर मुह़द्दिस, ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहल्वी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इ़श्क़ो मस्ती में डूब कर कितनी प्यारी बात कही है कि दिल की नज़र रखने वाले येह जानते हैं कि मक्के मदीने के पहाड़ों और वादियों में किस क़दर नूरानिय्यत ज़ाहिर हो रही है। बेशक इस का सबब येही है कि इन तमाम जगहों (Places) में कोई भी ऐसा ज़र्रा नहीं जिस पर नज़रे मुबारक न पड़ी हो और वोह दीदारे मुस्त़फ़ा से फ़ैज़याब न हुवा हो। (जज़्बुल कुलूब, स. 148)

आइये ! बरकत ह़ासिल करने के लिये मदीनए पाक की चन्द मसाजिद और मोह़्तरम व बरकत वाले मक़ामात का मुख़्तसर ज़िक्र सुनते हैं ।

﴾1﴿...मस्जिदे क़ुबा शरीफ़

मदीनए पाक से तक़रीबन 3 किलोमीटर जुनूब मग़रिब की त़रफ़ "**क़ुबा**" नामी एक क़दीमी गांव है जहां येह बरकत वाली मस्जिद (या'नी मस्जिदे क़ुबा) बनी हुई है । क़ुरआने करीम और अह़ादीसे मुबारका में इस मस्जिद के फ़ज़ाइल निहायत एहतिमाम से बयान फ़रमाए गए हैं । मस्जिदे नबवी शरीफ़ से दरमियानी चाल से चल कर तक़रीबन 40 मिनट में आ़शिक़ाने रसूल मस्जिदे क़ुबा पहुंच सकते हैं । हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم हर हफ़्ते को कभी पैदल, तो कभी सुवारी पर **मस्जिदे क़ुबा** तशरीफ़ ले जाते थे ।

(بُخاری، ۱/ ۴۰۲، حدیث: ۱۱۹۳)

आइये ! मस्जिदे क़ुबा में ह़ाज़िर हो कर नमाज़ पढ़ने के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم सुनिये । चुनान्चे,

मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ पढ़ने के फ़ज़ाइल

1. इरशाद फ़रमाया : मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ पढ़ना "**उ़मरे**" के बराबर है ।

(ترمذی، ۱/۳۴۸، حدیث: ۳۲۴)

2. इरशाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने अपने घर में वुज़ू किया फिर मस्जिदे क़ुबा में जा कर नमाज़ पढ़ी, तो उसे "**उ़मरे**" का सवाब मिलेगा ।

(ابنِ ماجہ، ۲/ ۱۷۵، حدیث: ۱۴۱۲)

﴾2﴿...मस्जिदे ग़मामा

मक्के शरीफ़ या जद्दा शरीफ़ से जब मदीने शरीफ़ आते हैं, तो मस्जिदे नबवी शरीफ़ आने से पहले ऊंचे गुम्बदों वाली एक निहायत ही ख़ूब सूरत मस्जिद आती है, येही "**मस्जिदे ग़मामा**" है। हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने 2 हिजरी में पहली बार ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्ह़ा की नमाज़ इस मक़ाम पर खुले मैदान में अदा फ़रमाई, यहीं आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने बारिश (Rain)

के लिये दुआ़ फ़रमाई, दुआ़ फ़रमाते ही बादल आए और बारिश बरसनी शुरूअ़ हो गई। "**बादल**" को अ़रबी ज़बान में ग़मामा कहते हैं, इसी निस्बत से इसे अब "**मस्जिदे ग़मामा**" कहते हैं। यहां खुला मैदान था, पहली सदी के मुजद्दिद, अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने यहां मस्जिद ता'मीर करवाई। आइये ! अब चन्द मज़ीद मुक़द्दस मक़ामात के बारे में सुनते हैं। चुनान्चे,

﴾3﴿...जन्नत की क्यारी

मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم के हुजरए मुबारका (जिस में सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم का मज़ारे अन्वर है) और नूरानी मिम्बर (जहां नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया करते थे) का दरमियानी ह़िस्सा जिस की लम्बाई 22 मीटर और चौड़ाई 15 मीटर है "**जन्नत की क्यारी**" है। चुनान्चे, प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : مَابَیْنَ بَیْتِیْ وَمِنبَرِیْ رَوْضَۃٌ مِّنْ رِّیَاضِ الْجَنَّۃِ मेरे घर और मिम्बर की दरमियानी जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है। (بخاری،۱/ ۴۰۲ ،حدیث:۱۱۹۵) आ़म बोल चाल में लोग इसे "**रियाज़ुल जन्नह**" कहते हैं मगर अस्ल लफ़्ज़ "**रौज़तुल जन्नह**" है।

मज़ारे सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा और रज़ाई भाई हैं, ए'लाने नुबुव्वत के दूसरे साल इस्लाम लाए और 15 शव्वाल (3 हिजरी) ग़ज़्वए उ़हुद में शहीद हुवे। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का मज़ारे अन्वार उ़हुद शरीफ़ के क़रीब वाक़ेअ़ है। साथ ही ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا के मज़ारात भी हैं। ग़ज़्वए उ़हुद में 70 (Seventy) सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने जामे शहादत नोश किया था, उन में से अक्सर शुहदाए उ़हुद भी साथ ही बनी हुई चार दीवारी में आराम फ़रमा हैं।

क़ब्र व दफ़्न के आदाब

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आइये ! क़ब्र व दफ़्न के बारे में चन्द अह़काम सुनने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं : ❖ एक क़ब्र में एक से ज़ियादा बिग़ैर ज़रूरत दफ़्न करना जाइज़ नहीं और ज़रूरत हो, तो कर सकते हैं । (बहारे शरीअ़त, 1 / 846, फ़तावा हिन्दिया, 1 / 166) ❖ जनाज़ा क़ब्र से क़िब्ले की जानिब रखना मुस्तह़ब है ताकि मय्यित क़िब्ले की त़रफ़ से क़ब्र में उतारी जाए, क़ब्र की पाउं की जानिब वाली जगह रख कर सर की त़रफ़ से न लाएं । (बहारे शरीअ़त, 1 / 844) ❖ ज़रूरत के मुत़ाबिक़ दो या तीन और बेहतर येह है कि त़ाक़तवर और नेक आदमी क़ब्र में उतरें । औ़रत की मय्यित मह़ारिम उतारें, येह न हों, तो दीगर रिश्तेदार, येह भी न हों, तो परहेज़गारों से उतरवाएं । (फ़तावा हिन्दिया, 1 / 166) ❖ औ़रत की मय्यित को उतारने से ले कर तख़्ते लगाने तक किसी कपड़े से छुपाए रखें । ❖ क़ब्र में उतारते वक़्त येह दुआ़ पढ़ें : بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰه (تنویر الابصار،۳/۱۶۶) ❖ मय्यित को सीधी करवट पर लिटाएं और उस का मुंह क़िब्ले की त़रफ़ कर दें और कफ़न की बन्दिश खोल दें कि अब ज़रूरत नहीं, न खोली, तो भी ह़रज नहीं । (फ़तावा हिन्दिया, 1 / 166, جوہرہ،ص۱۴۰) ❖ कफ़न की गिरह खोलने वाला येह दुआ़ पढ़े : اَللّٰهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا اَجْرَهٗ وَلَا تَفْتِنَّا بَعْدَهٗ या'नी ऐ **अल्लाह** पाक ! हमें इस के सवाब से मह़रूम न कर और हमें इस के बा'द फ़ितने में न डाल । (حاشیۃ الطحطاوی علی مراق الفلاح ص۶۰۹) ❖ क़ब्र कच्ची ईंटों से बन्द कर दीजिये, अगर ज़मीन नर्म हो, तो (लक्ड़ी के) तख़्ते लगाना भी जाइज़ है । (बहारे शरीअ़त, 1 / 844) ❖ अब मिट्टी दी जाए, मुस्तह़ब येह है कि सिरहाने की त़रफ़ से दोनों हाथों से 3 बार मिट्टी डालें । पहली बार कहें : مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ, दूसरी बार : وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ, तीसरी बार : وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى कहें । अब बाक़ी मिट्टी फावड़े वग़ैरा से डाल दें । (جوہرہ،ص۱۴۱) ❖ जितनी मिट्टी क़ब्र से निकली है, उस से ज़ियादा डालना मक्रूह है । (फ़तावा हिन्दिया, 1 / 166) क़ब्र चौखूंटी (या'नी चार कोनों वाली) न बनाएं बल्कि इस में ढाल रखें, जैसे ऊंट का कोहान । (दफ़्न के

बा'द) इस पर पानी छिड़कना बेहतर है । क़ब्र एक बालिश्त ऊंची हो या मा'मूली सी ज़ाइद । (बहारे शरीअ़त, 1 / 846, मुलख़्ख़सन) ❖ दफ़्न के बा'द क़ब्र पर अज़ान देना कारे सवाब (सवाब का काम) और मय्यित के लिये निहायत नफ़्अ़ बख़्श (फ़ाइदा देने वाला) है । (फ़तावा रज़विय्या, 5 / 370, माख़ूज़न) ❖ मुस्तह़ब येह है कि दफ़्न के बा'द क़ब्र पर सूरए बक़रह का अव्वल व आख़िर पढ़ें । सिरहाने (या'नी सर की जानिब) الٓمّٓ ता مُفْلِحُوْن तक और पाइंती (या'नी पाउं की त़रफ़) اٰمَنَ الرَّسُوْلُ से ख़त्मे सूरत तक पढ़ें । (बहारे शरीअ़त, 1 / 846) ❖ शजरह या अ़ह्द नामा क़ब्र में रखना जाइज़ है और बेहतर येह है कि मय्यित के मुंह के सामने क़िब्ले की जानिब त़ाक़ खोद कर उस में रखें बल्कि "**दुर्रे मुख़्तार**" में कफ़न पर अ़ह्द नामा लिखने को जाइज़ कहा है और फ़रमाया : इस से मग़फ़िरत की उम्मीद है । ❖ मय्यित के सीने और पेशानी पर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ लिखना जाइज़ है । यूं भी हो सकता है कि पेशानी पर **बिस्मिल्लाह शरीफ़** लिखें और सीने पर कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ मगर नहलाने के बा'द कफ़न पहनाने से पेश्तर (पहले) कलिमे की उंगली से लिखें, रौशनाई (Ink) से न लिखें । (बहारे शरीअ़त, 1 / 848) ❖ क़ब्र से मय्यित की हड्डियां बाहर निकल पड़ें, तो उन हड्डियों को दफ़्न करना वाजिब है । (फ़तावा रज़विय्या, 9 / 406, माख़ूज़न)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

शोबा बयानाते दावते इस्लामी का तआ़रुफ़

बयान की अहम्मिय्यत

तक़रीर और बयान की अहम्मिय्यत किसी से पोशीदा नहीं है। इस के ज़रीए़ कम वक़्त में कई अफ़राद तक अपना मक़्सूद पहुंचाया जा सकता है। आज के दौर में **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन व अह़कामात और दीनी तालीमात लोगों तक पहुंचाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ बयान भी है। ख़ुद रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने बयान व तक़रीर को रौनक़ बख़्शी, आप के दिलकश व दिल नशीन बयानात का असर था कि लोगों के दिलों की दुन्या तब्दील होने लगी, जहालत के अन्धेरे छटने लगे और इस्लाम की रौशनी पूरी दुन्या में फैलने लगी। बयान के मुतअ़ल्लिक़ आप عَلَيْهِ السَّلَام का फ़रमाने आ़लीशान है : बेशक बाज़ बयान जादू (की त़रह़ असर अंगेज़) होते हैं। (مسند احمد، مسند المكيين، ۵/۳۷۷، حديث : ۱۵۸۶۱) रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم से सह़ाबए किराम और फिर इन के बाद उम्मत के नेक लोगों ने दीन की इशाअ़त के लिए तक़रीर और बयान के सिलसिले को आगे बढ़ाया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه दावते इस्लामी ने दीन की तब्लीग़ के लिए जो ज़राएअ़ इख़्तियार किए हैं उन में से एक "**तक़रीर व बयान**" भी है। दावते इस्लामी के तह़्त मुल्क व बैरूने मुल्क होने वाले हज़ारों इजतिमाआ़त में लाखों आ़शिक़ाने रसूल इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें शिर्कत करती हैं, इन इजतिमाआ़त का एक अहम जुज़ बयान भी है। अमीरे अहले सुन्नत की इनायतों और दावते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा की शफ़्क़तों की बदौलत मुल्के मुर्शिद के इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों में अलग एक बयान होता है और बैरूने मुल्क के इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के इजतिमाआ़त में अलग एक बयान होता है। येह तमाम बयानात दावते इस्लामी की मजलिस अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का शोबा "**बयानाते दावते इस्लामी**" तय्यार करता है।

शोबे की ज़िम्नी तक़्सीम

काम की बेहतरी और बर वक़्त तक्मील के लिए शोबा बयानाते दावते इस्लामी इस वक़्त **तीन** ज़िम्नी शोबों पर मुश्तमिल है।

1. **शोबा बयानाते दावते इस्लामी बराए मुल्के मुर्शिद :** दुन्या भर के हफ़्तावार इजतिमाआ़त में होने वाले बयानात इसी शोबे में उर्दू ज़बान में तय्यार और फ़ाइनल किए जाते हैं। फिर येही बयानात मुख़्तलिफ़ ज़बानों में तर्जमा कर के दुन्या भर में भेजे जाते हैं।
2. **शोबा बयानाते दावते इस्लामी बराए इस्लामी बहनें :** इस शोबे का बुन्यादी मक़्सद मुल्के मुर्शिद में इस्लामी बहनों के हफ़्तावार इजतिमाआ़त के बयानात को तमाम ज़रूरी मराहि़ल से गुज़ार कर किताबी सूरत में शाएअ़ करवाना है। हर चार महीनों के बयानात एक जिल्द की सूरत में शाएअ़ किए जाते हैं। अब तक येह शोबा मोहर्रमुल ह़राम ता रबीउ़ल आख़िर 1441 के बयानात बनाम **इस्लामी बयानात जिल्द 1** की सूरत में शाएअ़ कर चुका है, जुमादल ऊला ता शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1441 के बयानात बनाम **इस्लामी बयानात जिल्द 2** भी शाएअ़ कर चुका है, जबकि **इस्लामी बयानात जिल्द 3** पर शोबे में काम जारी है।
3. **शोबा बयानाते दावते इस्लामी बराए बैरूने मुल्क :** इस शोबे के तह़्त बैरूने मुल्क में होने वाले इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के हफ़्वातार इजतिमाआ़त के बयानात पर काम किया जाता है।

बयानात की तय्यारी के अहम मराहि़ल

शोबा बयानात में तय्यार होने वाले तमाम तर बयानात तक़रीबन 16 मराहि़ल से गुज़ार कर फ़ाइनल किए जाते हैं। मराहि़ल और उन की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

1. **इन्तिख़ाबे मौज़ूअ़ :** सब से पेहले शोबा बयानात में मुकम्मल 1 साल के बयानात की फ़ेहरिस्त तय्यार होती है । इस्लामी साल के ईवेन्ट्स का भी ख़याल रखा जाता है और कोशिश की जाती है कि मौक़अ़ मुनासबत और अय्याम के एतिबार से ही मौज़ूअ़ का इन्तिख़ाब किया जाए ।
2. **तलाशे मवाद :** फ़ेहरिस्त फ़ाइनल हो जाने के बाद मुख़्तलिफ़ इस्लामी भाई इस के लिए तलाशे मवाद में लग जाते हैं, इस के लिए मौज़ूअ़ के मुत़ाबिक़ बुज़ुर्गाने दीन की तसानीफ़, दावते इस्लामी के मुबल्लिग़ीन, बिल ख़ुसूस अमीरे अहले सुन्नत और अराकीने शूरा के उसी मौज़ूअ़ पर होने वाले बयानात से मदद ली जाती है । इस के साथ साथ दावते इस्लामी के शोबे आई-टी की त़रफ़ से तय्यार कर्दा सॉफ़्टवियर और मक्तबए शामिला से भी तलाशे मवाद किया जाता है ।
3. **जम्अ़ मवाद :** तलाशे मवाद के बाद इस की सक़ाहत को परखा जाता है, इस्लामी भाई अपने मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मेदार को किसी भी मौज़ूअ़ पर जम्अ़ होने वाला सारा मवाद चेक करवाता है और बाहमी मुशावरत से त़ै किया जाता है कि कौन सा मवाद बयान में शामिल किया जाए । यूं उसे सरसरी तरतीब दी जाती है और बयान का ख़ाका बनाया जाता है ।
4. **बयान की तरतीब :** बयान के ख़ाके के बाद उसे मुकम्मल तरतीब दिया जाता है । छोटे साइज़ के तक़रीबन 24 से 25 सफ़ह़ात मौज़ूअ़ से मुतअ़ल्लिक़ मवाद के होते हैं जबकि 5 से 7 सफ़ह़ात में तन्ज़ीम से मुतअ़ल्लिक़ मवाद भी बयान में शामिल किया जाता है ।
5. **फ़ॉर्मेशन :** मुकम्मल बयान तरतीब देने के बाद उस की जुज़्वी फ़ॉर्मेशन भी की जाती है । कभी ऐसा भी होता है कि शोबे के बाज़ इस्लामी भाई बयान बनाते हुवे फ़ॉर्मेशन भी करते चले जाते हैं । अगर ऐसा न हुवा हो तो बयान की तरतीब के बाद फ़ॉर्मेशन की जाती है ।

6. **शोबा ज़िम्मेदार का इसे फ़ाइनल करना :** फ़ॉर्मेशन के बाद मातहूत इस्लामी भाई बयान शोबा ज़िम्मेदार को भेज देता है। जहां अज़ अव्वल ता आख़िर मुकम्मल बयान गेहरी नज़र से चेक किया जाता है। जहां तब्दीली की ह़ाजत हो वहां मवाद या तरतीब को तब्दील भी किया जाता है और मुकम्मल बयान को फ़ाइनल किया जाता है।
7. **निगराने इ़ल्मिय्या से बयान की तन्ज़ीमी तफ़्तीश :** शोबा ज़िम्मेदार के फ़ाइनल कर लेने के बाद निगराने अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या व रुक्ने मर्कज़ी मजलिसे शूरा ह़ाजी अबू माजिद मुह़म्मद शाहिद मदनी अ़त्तारी مدظلہ बयान की तन्ज़ीमी तफ़्तीश करते हैं और ज़रूरतन बयान में मुनासिब तब्दीलियां करते हैं।
8. **मुकम्मल बयान की तफ़्तीश व तख़रीज :** निगराने इ़ल्मिय्या से बयान फ़ाइनल होने के बाद मुकम्मल बयान की तख़रीज व तफ़्तीशे तख़रीज होती है। तमाम ह़वालाजात अस्ल कुतुब से शामिल करने की सई की जाती है।
9. **दारुल इफ़्ता के मुफ़्ती साह़िब से मुकम्मल बयान की शरई तफ़्तीश :** तख़रीज व तफ़्तीशे तख़रीज के बाद बयान शरई तफ़्तीश के लिए दारुल इफ़्ता के मुफ़्ती साह़िब के पास भेजा जाता है जो मुकम्मल बयान की शरई तफ़्तीश करते हैं और जहां तब्दीली की ह़ाजत हो उस की इस्लाह़ भी फ़रमाते हैं।
10. **मजलिसे तराजिम से इंगलिश अल्फ़ाज़ की चेकिंग :** उर्दू के बाज़ अल्फ़ाज़ ऐसे हैं जिन की जगह अंग्रेज़ी के अल्फ़ाज़ ज़ियादा इस्तिमाल किए जाते हैं। दारुल इफ़्ता से आने के बाद बयान में मुश्किल अल्फ़ाज़ को हटा कर आसान उर्दू अल्फ़ाज़ वरना ब्रेकेट में इंगलिश अल्फ़ाज़ भी शामिल किए जाते हैं। फिर उन अल्फ़ाज़ की इंगलिश चेकिंग के लिए बयान मजलिसे तराजिम को भेजा जाता है जो उन इंगलिश अल्फ़ाज़ को सियाक़ो सबाक़ की रौशनी में चेक करते हैं और ज़रूरी तब्दीलियां भी करते हैं।

11. **पेज सेटअप :** इन तमाम मराहि़ल से गुज़रने के बाद अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के तै़ शुदा मदनी फूलों के मुत़ाबिक़ मुकम्मल बयान का पेज सेटअप किया जाता है।

12. **फ़ाइनल प्रूफ़ रीडिंग :** यूं तो अब तक कई बार बयान की सरसरी प्रूफ़ रीडिंग हो चुकी होती है मगर ग़लत़ी के इमकान को ख़त्म करने के लिए इस मर्ह़ले पर मुकम्मल बयान की अज़ अव्वल ता आख़िर बारीक नज़र से प्रूफ़ रीडिंग की जाती है। बयान में मौजूद आयाते करीमा और उन के तर्जमे का भी तक़ाबुल किया जाता है।

13. **निगराने मुल्के मुर्शिद काबीना से बयान की तन्ज़ीमी तफ़्तीश :** इन तमाम मराहि़ल से गुज़ार कर इस्लामी भाइयों का बयान निगराने मुल्के मुर्शिद काबीना व रुक्ने मर्कज़ी मजलिसे शूरा ह़ाजी अबू रजब मुह़म्मद शाहिद अ़त्तारी دَظَّلَّہُ के पास भेज दिया जाता है जो बयान को अज़ अव्वल ता आख़िर पढ़ते और उस की तन्ज़ीमी तफ़्तीश फ़रमाते और ज़रूरत पड़ने पर बयान में तब्दीलियां भी करवाते हैं, इन से चेक हो कर बयान दोबारा अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या आता है और उस में ज़रूरतन तब्दीलियां की जाती हैं और बयान काबीना दफ़्तर भेजा जाता है। फिर काबीना दफ़्तर से वोह बयान फ़ाइनल कर के मुल्के मुर्शिद भर में मुतअ़ल्लिक़ा मक़ामात तक पहुंचा दिया जाता है।

14. **बैरूने मुल्क के एतिबार से तब्दीलियां :** इस्लामी भाइयों का फ़ाइनल होने वाला येही बयान बाद में मुल्के मुर्शिद के सिवा दुन्या भर में होता है। यूं हर बयान में बैरूने मुल्क के एतिबार से भी तब्दीलियां की जाती हैं। और उसे इस्लामी बहनों के एतिबार से भी तय्यार किया जाता है।

15. **इस्लामी बहनों के अन्दाज़ में तय्यारी :** इस्लामी भाइयों का बयान जब पेज सेटअप के मराहि़ल से गुज़र जाता है तो अब उसी बयान को इस्लामी

बहनों के अन्दाज़ में तय्यार किया जाता है और इस्लामी बहनों के एतिबार से उस में मुनासिब तब्दीलियां की जाती हैं। मुज़क्कर के सीग़ों और जुम्लों को मोअन्नस के सीग़ों और जुम्लों में तब्दील किया जाता है और जो मवाद इस्लामी बहनों से मुतअ़ल्लिक़ नहीं होता उसे भी बयान से हटा दिया जाता है।

16. **इस्लामी बहनों की आ़लमी मजलिसे मुशावरत से चेकिंग :** बयान को इस्लामी बहनों के अन्दाज़ में ढाल कर इस्लामी बहनों की आ़लमी मजलिसे मुशावरत से चेक करवाया जाता है और उन के निशान ज़दा मक़ामात पर तब्दीलियां की जाती हैं।

शोबा बयानाते दावते इस्लामी की कारकर्दगी

1. اَلْحَمْدُ لِلّٰه मार्च 2014 से दिसम्बर 2019 तक हफ़्तावार और दीगर इजतिमाआ़त के लिए इस शोबे में साढ़े चार सौ (450) से ज़ाइद बयानात तय्यार हो चुके हैं।
2. इस के साथ साथ शोबा बयानाते दावते इस्लामी (मुल्के मुर्शिद) और मक्तबतुल मदीना के तआ़वुन से मुल्के मुर्शिद के इस्लामी भाइयों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में होने वाले बयानात की पेहली जिल्द **''सुन्नतों भरे बयानात''** के नाम से **शाबानुल मुअ़ज़्ज़म सिने 1439 हिजरी मुताबिक़ 27 अगस्त सिने 2017 ईसवी** में मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ हो कर मन्ज़रे आ़म पर आ चुकी है। इस दीदा ज़ेब जिल्द में 4 इस्लामी महीनों यानी **मोहर्रमुल हराम ता रबीउ़ल आख़िर** के इस्लाही मौज़ूआ़त पर 18 सुन्नतों भरे बयानात शामिल किए गए हैं।
3. मज़ीद बरआं कि शोबा बयानाते दावते इस्लामी (बराए इस्लामी बहनें / मुल्के मुर्शिद) और मक्तबतुल मदीना के तआ़वुन से मुल्के मुर्शिद की इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त के बयानात के लिए

एक किताब बनाम "**इस्लामी बयानात**" जिल्द 1, **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम सिने 1441 हिजरी मुत़ाबिक़ 11 अगस्त सिने 2019 ईसवी** में मक्तबतुल मदीना से छप कर शाएअ़ हो चुकी है। इस दीदा ज़ेब जिल्द में भी 4 इस्लामी महीनों यानी **मोह़र्रमुल ह़राम ता रबीउ़ल आख़िर** के इस्लामी मौज़ूआ़त पर 19 सुन्नतों भरे बयानात शामिल हैं।

4. इसी त़रह़ शोबा बयानाते दावते इस्लामी (बराए इस्लामी बहनें) और मक्तबतुल मदीना के तआ़वुन से मुल्के मुर्शिद की इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त के बयानात के लिए दूसरी किताब बनाम "**इस्लामी बयानात**" जिल्द 2, **रबीउ़ल आख़िर 1441 सिने हिजरी मुत़ाबिक़ दिसम्बर 2019 सिने ईसवी** में छप कर शाएअ़ हो चुकी है। इस जिल्द में भी 4 इस्लामी महीनों यानी **जुमादल ऊला ता शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1441 हि. मुत़ाबिक़ जनवरी 2020 ता अप्रेल 2020 सिने ईसवी** के इस्लाही मौज़ूआ़त पर 17 बयानात शामिल हैं।
5. जबकि **इस्लामी बयानात जिल्द 3** पर शोबे में काम जारी है। اِنْ شَآءَ الله अप्रेल की इब्तिदा में येह किताब भी शाएअ़ हो जाएगी और मक्तबतुल मदीना पर दस्तयाब होगी।

मुल्कि मुर्शिद के इजतिमाआ़त व शुरकाए इजतिमाआ़त की तादाद

अब तक की मालूमात के मुत़ाबिक़ सिर्फ़ मुल्के मुर्शिद में इस्लामी भाइयों के होने वाले इजतिमाआ़त की तादाद 751 है जिस में लाखों इस्लामी भाई शरीक होते हैं। जबकि इस्लामी बहनों के होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त की तादाद 7340 और शुरकाए इजतिमाअ़ की तादाद 241462 है। मुल्के मुर्शिद भर में जहां जहां भी हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त होते हैं वहां तमाम मक़ामात पर होने वाले बयानात का मौज़ूअ़ एक ही होता है।

बैरूने मुल्क के इजतिमाआ़त व शुरकाए इजतिमाआ़त की तादाद

शोबा बयानाते दावते इस्लामी (मुल्के मुर्शिद) से जो बयानात फ़ाइनल हो जाते हैं कुछ माह के फ़र्क़ से वोही बयानात ज़रूरी तब्दीलियों के साथ बैरूने मुल्क के इस्लामी भाइयों के लिए मुरत्तब किए जाते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه तादमे तह़रीर बैरूने मुल्क में इस्लामी भाइयों के इजतिमाआ़त की मजमूई तादाद 747 और शुरकाए इजतिमाआ़त की तादाद 33808 है जबकि इस्लामी बहनों के इजतिमाआ़त के मक़ामात की तादाद 3047 और शरीक होने वाली इस्लामी बहनों की तादाद 106786 है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमेरात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मामूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ






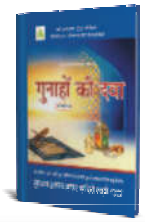

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली 011-23284560
❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद, गुजरात 9327168200
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र 09022177997
❁ हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टांकी, हैदराबाद, तेलंगाना (040) 2 45 72 786

E-mail : maktabadelhi@gmail.com / **Website :** www.dawateislamihind.net